# ओ. हेनरी की कहानियाँ

( The Pocket Book of O. Henry Stories )
Edited by Harry Hansen

मूल सम्पादक
**हैरी हान्सन**

अनुवादक
**प्रो. सत्यप्रकाश जोशी**

पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई
मूल्य : ७५ नये पैसे

प्रथम संस्करण १९६०

मुद्रक : बा. ग. ढवळे, कर्नाटक मुद्रणालय, चिराबाजार, बम्बई २

प्रकाशक : जी. एल. मीरचंदानी, पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लि.,
२४९, डा. दादाभाई नवरोजी रोड, बम्बई १

# ओ. हेनरी के विषय में दो शब्द :

हैरी हान्सन

लगभग पचास वर्षों से अमरीका के हजारों पाठकों को ओ. हेनरी की कहानियों में 'अलिफ-लैला' के आनन्द की जादुई कुंजी मिल चुकी है। सन् १९०० से १९१० तक अपने अत्यन्त व्यस्त रचना-काल में, उसने लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखीं, जो पुरुषों और नारियों के सौभाग्य पर व्यंगपूर्ण टिप्पणियाँ करती हैं और जिनमें शहर के नीरस जीवन को रोमांस की तूलिका से छू दिया गया है। जब उसने लिखना शुरू किया, तब जार्ज एड अपने "फेबल्स इन स्लैंग" के साथ खिलवाड़ करता था और फिनले पीटर डुन्ने, 'मिस्टर डूले' के द्वारा राजनीतिज्ञों का उपहास कर रहा था। ओ. हेनरी की लोकप्रियता इन दोनों से अधिक जीवित रही। उसके जीवन-कथाकार, राबर्ट एच. डेविस का कहना है कि मैं जब कभी उदास होता हूँ तो ओ. हेनरी पढ़ने लगता हूँ। उसकी कहानियों को पढ़ने का आग्रह आज भी उतना ही है।

ओ. हेनरी, 'विलियम सिडनी पोर्टर' का उपनाम है। उसका जन्म ११ सितम्बर १८६२ के दिन ग्रीन्सबरो एन. सी., में हुआ और मृत्यु ५ जून १९१० को न्यूयार्क में। पिछले वर्षों में वह अपना बीच का नाम 'सिडनी' ही लिखा करता था। पन्द्रह वर्ष की उम्र में उसने स्कूल छोड़ दिया, पर उसकी पढ़ने लिखने की आतुरता नहीं छूटी। बचपन में उसने ग्रीन्सबरो की एक दवाईयों की दुकान में काम किया था, जहाँ अब तक उसकी जयन्ती मनायी जाती है। उन्नीस वर्ष की अवस्था में वह अपना स्वास्थ्य सुधारने के लिए टेक्साज प्रदेश के गोचरों में रहने चला गया। वहाँ उसने घुड़सवारी सीख ली और जँगली, अड़ियल घोड़ों को भी वश में करने लगा। फिर आस्टिन में उसे खेती-बाड़ी के दफ्तर में नौकरी मिल गयी।

अपने आसपास के चित्रमय जीवन की जिन वस्तुओं का भी उसे परिचय हुआ, वे सब की सब उसकी कहानियों में छन आयीं। यही कारण है कि उसकी कहानियाँ अधिकतर चरागाहों के प्रदेश, मध्य अमरीका या न्यूयार्क में घटित होती हैं। शहरी जीवन की कहानियों में, जिनके लिए वह

प्रसिद्धि है, जीवन की विडम्बनाओं की स्वीकृति है। वे उसके अपने कटु अनुभवों के प्रतिबिम्ब हैं। अपने पन्द्रह वर्ष के जिस टेक्सास प्रवास में उसने विवाह किया और एक पुत्री का पिता बना, उसी में खेदजनक घटनाओं ने उसकी उमंगों को ढँक लिया। उसे किसी बैंक में नोट गिनने का काम मिल गया, लेकिन कुछ ही दिनों में उसके हिसाब में कुछ हजारेक डालर की गड़बड़ का पता चलने पर, वह नौकरी भी छूट गयी। ऐसा लगता है कि उसके मालिक उसे सजा दिलाना नहीं चाहते थे, इसीलिए वह बिना रोक टोक, लगभग एक वर्ष तक होस्टन शहर के एक अखबार में काम करता रहा। तब, शायद गिरफ्तरी से बचने के लिए वह न्यू ओर्लियन्स चला गया, जहाँ से उसने ट्रूजिलो और होण्डूरास का टिकट कटा लिया। 'केबेजस एण्ड किंग्स' नामक उसकी सर्वप्रथम पुस्तक में वर्णित, साहस और जीवट की सारी कहानियों का घटनास्थल यहीं से मिला है। अपनी पत्नी की बीमारी ने उसे वापिस आस्टिन बुला लिया। उसके लौटते ही वह मर गयी। तब खयानत के अपराध में उस पर मुकदमा चला और सजा हो गयी।

विल पोर्टर, तीन वर्ष और तीन महीनों तक जेल में रहा। वह अपनी सजा को उत्साहपूर्वक झेलने वाला एक सदाचारी कैदी था। लेकिन उसके जीवन पर इस काल की काली छाया हमेशा दिखाई पड़ती रही। यहीं से उसमें गरीबों के प्रति दया का भाव उत्पन्न हुआ और यहीं से उसकी कई श्रेष्ठ कहानियों का जन्म हुआ, जिनमें से 'हृदय परिवर्तन' नामक कहानी के आधार पर खेला गया 'उर्फ जिम्मी वेलण्टाइन' नामक नाटक, उस समय का सर्वश्रेष्ठ नाटक सिद्ध हुआ। जेल के सिपाहियों के ओरन हेनरी नामक कप्तान से ही उसके उपनाम को खोज निकाला गया है। पोर्टर ने सोचा कि हस्ताक्षर करने के लिए 'ओ. हेनरी' ही काफी है। उसने जब लिखना शरू किया तो सम्पादकों से अपना नाम गुप्त रखने की भी प्रार्थना की।

न्यूयार्क में ओ. हेनरी, मैडिसन चौक और इरविंग प्लैस के मुहल्लों के कमरों में रहता और अपनी कहानियों से पैसा कमा कमा कर किराया चुकाने के लिए भीषण संघर्ष करता रहता। राबर्ट एच. डेविस, बार्टलेट मारिस, इरविन एस. काब आदि मित्रों ने और दूसरे कई लखकों और सम्पादकों ने उसके कमरों का वर्णन किया है। वह एक बाहर वाले कमरे में

रहता था, जिसकी खिड़कियाँ फर्श तक फैली हुई थीं। यहाँ बैठ कर वह राहगीरों की ओर घूरता रहता और उनके इर्द गिर्द जीवट के जाल बुनता रहता। उसने आशावादी, एकाकी सामान्य व्यक्तियों को अपनी कहानियों के पात्र बनाना शरू किया। उसने उन लड़कियों की कल्पना की, जो धंधा और प्यार पाने के लिए, शहरों में भटकने आती हैं; वे युवक, जो दूसरों से अधिक लाभ खोजते हैं और वे शराबी तथा अयोग्य आदमी, जो दुर्भाग्य को भी अहंकार से झेलते हैं तथा कभी कभी कहानियों के पात्रों की तरह भावुकता प्रदर्शित करते हैं, उसके कथानायक बने।

यदि कथावस्तु दुखान्त हुई तो ओ. हेनरी उसमें स्थानीय बोलियों का नमक मिर्च लगा देता। उसके लिए कोई घटना इतनी नीरस नहीं थी कि जिसमें वह चमक न पैदा कर सके। ठीक इसी जगह आ कर उसने उस चरम बिन्दु या मोड़ का आविष्कार किया, जिससे उसकी अनेक कहानियों का अन्त अप्रत्याशित बनने लगा। "सजा हुआ कमरा," "छत पर का कमरा" और "वासन्ती मेनू" जैसी छोटी कहानियों में तो यह स्पष्ट है ही, कुछ बड़ी कहानियों में भी इस तत्व के दर्शन होते हैं। अमरीका के श्रोताओं में, पुराने ज़माने के आग के चारों ओर बैठ कर कहानियाँ सुनने के युग से, इस प्रकार के किस्सों के प्रति विशेष लगाव रहा है। ओ. हेनरी की कहानियाँ इन्हीं परम्परागत कथाओं की विस्तृत प्रतिकृतियाँ मालूम देती हैं। कथानक का तो वह जादूगर था और ऐसी ऐसी कल्पनारम्य परिस्थितियाँ निर्माण करने में वह सिद्धहस्त था, जहाँ उसके पात्र जीवन जीते नहीं, बल्कि उससे खिलवाड़ करते प्रतीत होते हैं। पाठकों का मनोरंजन करना उसका ध्येय था और उनकी कौतूहल वृत्ति को जगाये रखने के लिए, उसने अपने पात्रों से तरह तरह के तमाशे करवाये हैं। वे रोमांस के भूखे, बुरे वक्त का हिम्मत से मुकाबला करने वाले, कुलीनता का ढोंग करने वाले और आधुनिक 'अलिफ-लैला' की रंगीन दुनियाँ में विचरने वाले चित्रित किये गये हैं। मनुष्य का सर्वस्पर्शी और सागोपाँग विश्लेषण उसने शायद ही कहीं किया हो। उसने तो मनुष्य का, आधुनिक शहरी जीवन के भवँर में फँसे हुए, असहाय व्यक्ति के रूप में ही, दर्शन कराया। 'स्नेह दीप' कहानी की नान्सी को सिर्फ एक दुकान में काम करने के कारण, एक दुकानदार लड़की मानने से वह इन्कार कर देता है और कहता है, "ऐसी कोई किस्म नहीं होती। आज के भ्रष्ट समाज की किस्म खोजने की आदत

पड़ गयी है।" उसने मनुष्य को इतना गिरा हुआ शायद ही चित्रित किया हो कि वह अपनी कमजोरियों के लिए शर्मिंदा भी न हो। उसकी सब कहानियों के नीचे सहृदयता और सहानुभूति की अन्तर्धारा बह रही है। जीवन में भूले भटके या पिछड़े हुए, हर बदनसीब को वह मनुष्यता के व्यापक कुटुम्ब में स्थान देने को सदा तत्पर रहा। कभी कभी वे उसका मनोरंजन करते हैं, कभी अपने जीवन की विडम्बनाओं से उसे दुखी कर देते हैं और कभी वह भावुक भी हो उठता है। परन्तु हर हालत में, वह भाग्य की हर छेड़छाड़ को स्वीकार कर लेता है और उसके खलनायक भी हास्यास्पद ही हो पाते हैं — दुष्ट नहीं।

ओ. हेनरी की कला, उसकी दूसरी किताब 'द फोर मिलियन' में निखर उठी, जिससे उसे काफी लोकप्रियता भी मिली। प्रथम बार प्रकाशित होने के चालीस वर्ष बाद, उसकी 'उपहार' नामक कहानी का चल चित्र बना। उसकी अन्य कहानियों के कई संकलन प्रकाशित हुए जैसे 'स्नेह दीप' (१९०७), 'पश्चिम की आत्मा' (१९०७), 'शहर की आवाज़' (१९०८), 'भाग्यचक्र' (१९०९), 'विकल्प' (१९०९), 'धन्धे की बात' (१९१०), 'जीवन चक्र' (१९१०)। उसकी मृत्यु के बाद तीन किताबें और छपीं — 'सफेदपोश ठग', 'आवारा' और 'भूले भटके'।

लेखक में यदि प्राणशक्ति और महत्वाकांक्षा हो, तो कहानी कहने का कोई नुसखा स्थायी नहीं रह सकता। ओ. हेनरी की कहानियाँ उसके जीवन काल में अत्यन्त प्रसिद्ध रहीं और यह भी कहा जा सकता है कि अपनी रचनाओं और अपनी विचारधारा, दोनों में, मनुष्य स्वभाव की नुमाइशी वृत्ति के प्रति असन्तोष प्रदर्शित करते हुए उसने हृदय की गहराइयों में उतरने की कोशिश की। वह मनुष्य के सच्चे रूप को छिपाने वाले, रूढ़ि और विश्वास के हर पर्दे को चीर कर, सत्य के दर्शन कराना चाहता था। वह कहा करता था कि सत्य की सच्ची अनुभूति केवल कथासाहित्य में ही हो सकती है। अपने निजी अनुभव से इस निष्कर्ष पर पहुँच कर, ओ. हेनरी ने विद्वानों के इस विश्वास को फिर से स्थापित कर दिया कि ऐतिहासिक तथ्य की अपेक्षा, कल्पना ही सौन्दर्य का अधिक प्रभावशाली आविष्कार करती है। पेशेवर कहानीकारों द्वारा भी कहानी-कला में परिवर्तन किया जा रहा था। मनुष्य के बर्तीव को

प्रभावित करने वाले हर हेतु के मूल, मानसिक और शारीरिक कमियों में ढूँढ़े जाने लगे थे और व्यक्ति के जीवन पर सामाजिक और आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन किया जाने लगा था। यदि जीवित रहता तो ओ. हेनरी कहाँ पहुँचता—यह कहना कठिन है, पर उसका योगदान काफी होता।

आज ओ. हेनरी की कहानियाँ, उसके युग के प्रतीक के रूप में ही पढ़ीं जातीं हैं। जिस प्रकार ब्रेट हार्ट की कथाएँ, पश्चिमी सीमाप्रदेश के खान के मजदूरों, जुआरियों और ठेकेदारों को पुनर्जीवित कर देती हैं, उसी प्रकार ओ. हेनरी की कहानियाँ, सन १९०० के आसपास की दुनियाँ खड़ी कर देती हैं। जब उसने घुड़सवारों का मज़ाक उड़ाया, तब स्पेन की लड़ाई के घुड़सवारों की याद ताज़ा थी। अमरीकनों को मध्य अमरीका के छोटे छोटे राज्य, उतने ही विचित्र लगते हैं, जितना कि उसकी कहानी में वर्णित अञ्चूरिया! रिचर्ड हार्डिंग डेविस ने वहाँ के क्रान्तिकारियों और साहसी व्यक्तियों को अमर कर दिया। 'कलंकित धन' की बात द्वारा, उसने अनैतिक व्यापारों द्वारा कमाये हुए अपरिमित धन के प्रति, जन साधारण का रोष ही व्यक्त किया। आजकल के पाठक को, उसकी कहानियों में वर्णित रुपये की क्रयशक्ति जान कर आश्चर्य ही होगा। उसकी एक कहानी के अनुसार, सम्पूर्ण आमिष आहार पचास सैंट में मिल सकता था और साठ सैंट वाले भोजन में तो शराब भी सम्मिलित रहती थी। १९०२ में न्यूयार्क आ जाने के बाद, उसने अपने मित्र अल जेनिंग्स को जो पत्र लिखा, उसके हर शब्द से सन्तोष झलकता है। वह लिखता है— "मैं जितना काम कर सकता हूँ, उतना मुझे मिल जाता है। पहिली अगस्त से मेरी मासिक आय, औसतन १५० डालर हो जाती है।"

स्वभाव से वह संकोची और मितभाषी था। अपने कुछ घनिष्ट मित्रों—जो मुख्यतः अखबारों के सम्पादक थे— की सोहबत और जरा सी शराब उसे प्रिय थी। उसे हमेशा समय की कमी रहती थी, क्योंकि उसकी कहानियाँ अत्यन्त छोटी होती थीं और उनके बदले में उसे जो कुछ मिलता, तुरन्त समाप्त हो जाता था। सम्पादकों की निरन्तर माँग के नीचे वह पिसता रहा। उसके लिए जीवन एक अस्तव्यस्त व्यापार था, जिसमें पुरस्कार मिलने का ढंग बड़ा सनकी है। फिर भी उसने, इस व्यवहार की

हर धूप छाँह का स्वागत, मुस्करा कर किया। उसकी कहानियों में भाग्य और संयोग, महत्वपूर्ण पार्ट अदा करते हैं। दुख और पीड़ा भी पर्याप्त मात्रा में है, परन्तु कड़वाहट कहीं नहीं घुसने पायी है ४७ वर्ष की छोटी-सी आयु में नियति ने जब उसकी इहलीला समाप्त कर दी, तब तक उसकी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ तो शायद लिखी भी नहीं गयी थीं, परन्तु उसने जो कुछ भी लिखा, उसकी कथासाहित्य पर अमिट छाप रहेगी और उसकी कुछ कहानियाँ तो अमर रहेंगी।

# अनुक्रमणिका

# उपहार

एक डालर और सत्तासी सेंट। बस! इनमें से भी साठ सैंट के पैनी। पैनी, जो कभी मोदी, कभी भाजीवाले, कभी कसाई के साथ होशियारी बरत कर, एक-एक दो-दो करके बचाये गये थे, जिनसे सौदा करने में कंजूस होने का मूक आरोप सहते सहते शर्म से गाल लाल हो जाँय! दैला ने तीन बार गिना। एक डालर और सतासी सेंट। और दूसरे ही दिन था क्रिसमस!

ऐसी परिस्थिति में अपने गन्दे, नन्हे पलंग पर गिर कर बिलखने के सिवाय और चारा ही क्या था? तो दैला ने वही किया। इससे इस विचार की पुष्टि होती है कि ज़िन्दगी आहों, उसाँसों और मुस्कानों का नाम है, जिसमें भी उसाँसों की ही प्रधानता है।

आइये, जब तक यह गृहिणी दुख की एक सीमा से दूसरी में जा रही है, हम उसके मकान पर एक नज़र डाल लें। आठ डालर प्रति सप्ताह का सजा हुआ फ़्लैट, जिसका वर्णन तो क्या किया जाय, इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि कम आमदनी वाले लोग ऐसे ही मकान ढूँढ़ा करते हैं।

नीचे ड्योढ़ी पर एक लैटरबक्स, जिसमें कोई पत्र नहीं आता; और एक बिजली का बटन, जिसको दबा कर कोई आदमी घण्टी की आवाज़ नहीं निकाल सकता। वहीं पर लगी हुई एक दफ्ती पर लिखा है—'श्री जेम्स दिलिंघम यंग'।

'दिलिंघम' शब्द उस समय जोड़ा गया था जब पहिले कभी समृद्धि थी और जब उन्हें हर हफ्ते तीस डालर मिला करते थे। अब, जब आमदनी घट कर बीस डालर हो गयी है, 'दिलिंघम' के अक्षर धुँधले दिखाई पड़ते हैं मानो वे अपने प्रथम अक्षर 'दि' में सिकुड़ जाने की इच्छा करते हों। जब कभी श्री जेम्स दिलिंघम यंग घर लौटते और ऊपर अपने फ़्लैट में पहुँचते, उन्हें 'जिम' नाम से पुकारा जाता और श्रीमती जेम्स दिलिंघम यंग, जिनसे हम दैला के नाम से परिचित हो चुके हैं, उन्हें आलिंगन में कस लेती।

दैला ने रोना बन्द किया और पाउडर लगाने का कपड़ा अपने गालों पर फिराने लगी। वह खिड़की के पास खड़ी हो गयी और मकान के पिछवाड़े, अहाते पर घूमती हुई सफेद बिल्ली को यों ही देखती रही। कल क्रिसमस का दिन है और उसके पास केवल एक डालर और सतासी सैंट हैं जिससे जिम के लिए उपहार खरीद सके। कितने महीनों से वह एक-एक पैनी कर के बचा रही है और उसका यह नतीजा! एक हफ्ते में बीस डालर से क्या होता है? खर्चा उसके अन्दाज़ से ज्यादा हो गया था। ऐसा हमेशा ही होता आया है। जिम के लिए उपहार खरीदने को केवल एक डालर सतासी सैंट। उसका प्यारा जिम! उसके लिए कोई बढ़िया चीज़ लाने की योजना बनाने में उसने कितनी सुखद घड़ियाँ बिता दीं थीं। कोई बढ़िया, अनूठी और कीमती चीज़—कुछ ऐसी जो जिम के पास रहने का सौभाग्य पाने की योग्यता रखती हो।

कमरे की दो खिडकियों के बीच एक बड़ा दर्पण था। शायद आपने आठ डालर वाले कमरे में कभी बड़ा दर्पण देखा हो। कोई बहुत दुबला और चपल व्यक्ति ही उन लम्बी धज्जियों में छाया देख कर अपनी सूरत का सही अन्दाज लगा सकता था। दैला भी दुबली होने के कारण इस कला में निपुण थी।

एकाएक खिड़की से घूम कर वह दर्पण के सामने जा खड़ी हुई। उसकी आँखें चमक रहीं थीं लेकिन उसके चेहरे से बीस सेकिण्ड में ही रंग उड़ चला। उसने शीघ्रता से अपने केशों को खोल लिया और अपनी पूरी लम्बाई से उन्हें नीचे लटकने दिया।

तो, जेम्स दिलिंघम यंग के स्वत्वाधिकार में दो वस्तुएँ थीं, जिन पर दोनों को अत्यंत गर्व था। एक थी जिम की सोने की घड़ी, जो कभी उसके पिता और दादा के पास भी रह चुकी थी। दूसरे थे दैला के केश। अगर सड़क के उस पार वाले फ़्लैट में स्वयं शैबा की रानी रहती तो उसके हीरे, जवाहरातों और उपहारों को नीचा दिखाने के लिए दैला अपने केशों को सुखाने के बहाने किसी दिन खिड़की से बाहर जरूर लटकाये रखती। और, अगर बादशाह सालोमन भी वहाँ अपने खज़ाने का ढेर लगा कर द्वारपाल की तरह खड़े होते तो सिर्फ ईर्ष्यावश उनका दाढ़ी नोचना देखने के लिए, जितनी बार जिम उधर से निकलता, अपनी घड़ी निकाल कर समय ज़रूर देखता।

अब दैला के खूबसूरत केश भूरे पानी के झरने की तरह चमकते हुए लहरा कर लटक रहे थे। वे उसके घुटनों से भी नीचे पहुँचते थे और किसी हद तक उसके लिए पोशाक का काम दे रहे थे। और, तब उसने निराशा से उन्हें शीघ्र ही वापिस बाँध लिया। एक क्षण के लिए वह सिहर उठी, फिर चुपचाप खड़ी रही और उसकी आँख से एक या दो बूँद आँसू फटी-पुरानी लाल दरी पर बिखर गये।

उसने अपना पुराना लाल जैकेट पहिना और वैसा ही हैट लगाया। स्कर्ट (घाघरे) को एक घुमाव दे कर, आँखों में अभी तक वही तेज़ चमक लिये, वह दरवाज़े से बाहर शीघ्रता से निकल गयी और सीढ़ियाँ उतर कर सड़क पर आ गयी।

जहाँ वह रुकी, वहाँ लिखा था : "मेडम सोफ्रोनी : सब प्रकार के केश-प्रसाधनों की विक्रेता"। दैला लपक कर एक मंज़िल ज़ीना चढ़ गयी और हाँफती हुई अपने को सम्हालने लगी। दुकान की मालकिन अत्यन्त गोरी और मोटी महिला थी।

दैला ने पूछा, "क्या आप मेरे बाल खरीदेंगी?"

महिला ने कहा, "क्यों नहीं, हम तो बाल खरीदते ही हैं। जरा हैट उतार कर अपने बालों पर एक नजर डालने दीजिये।"

भूरे केशों का झरना उमड़ पड़ा।

अपने कुशल हाथों में केशसमूह को उठाते हुए, महिला ने कहा, "बीस डालर।"

दैला बोली, "जल्दी कीजिये।"

ओह, अगले दो घण्टे तो सुनहरे पंखों पर उड़ गये। इस रूपक की चिन्ता मत कीजिये। इस समय वह जिम का उपहार खोजने के लिए दुकानें छान रही थी।

आखिर उसे एक चीज़ मिल ही गयी—ऐसी चीज़ जो केवल जिम के लिए ही बनी थी, और किसी के लिए नहीं। उसके समान और कोई चीज़ कहीं किसी दुकान में नहीं थी। उसने सारी दुकानें छान डालीं। वह चीज़ थी—साफ और सादी, प्लैटिनम की बनी हुई जेबी चेन, जिसका वास्तविक मूल्य ऊपर की टीमटाम में न हो कर उसकी धातु में था – जैसा हर अच्छी चीज़ का होना चाहिये। वह उस घड़ी के योग्य थी। ज्यों ही उसने उसे देखा, उसे लगा कि वह जिम की ही थी। वह

जिम के जैसी ही थी। मूल्यवान और नीरव–ये दोनों गुण दोनों ही में निहित थे। उसके इक्कीस डालर चुका कर बाकी बचे सतासी सैंट लिए वह घर लौट आयी। घड़ी के साथ वह चेन होने पर जिम अपने साथियों के बीच जरूर ही समय देखने की उत्कण्ठा रख सकता था। इतनी शानदार घड़ी के साथ चेन की जगह चमड़े का पट्टा होने के कारण वह कभी कभी छिपा कर ही उसमें समय देखता था।

घर पहुँचने पर तर्क और विवेक के सामने डैला का नशा जरा उतरा। उसने अपने केशों में लगे छल्ले निकाल लिये और गैस का स्टोव जला कर काम करने बैठी, जिससे उदार प्रेम के आवेश से हुई इस तबाही की पीड़ा कुछ कम हो सके। यह एक भयंकर काम है, और विशाल भी।

कोई चालीस मिनट में ही उसका सिर, छोटे छोटे, पास पास जुड़े हुए घुँघराले बालों से ढँक गया, जिससे वह स्कूल से मुँह चुराने वाले किसी लड़के सी दिखने लगी। उसने दर्पण में अपनी प्रतिच्छाया को बहुत देर तक सावधानी और आलोचनात्मक दृष्टि से देखा।

उसने अपने आप से कहा, "अगर मुझे दुबारा देखे बिना ही कहीं जिम ने मार नहीं डाला तो वह जरूर कहेगा कि मैं कोनी द्वीप की नटनी सी लगती हूँ। ओफ, पर मैं क्या करती। एक डालर और सतासी सैंट से मैं कर भी क्या सकती थी!"

सात बजे तक कॉफी बन चुकी थी और माँस के टुकड़े तलने के लिए स्टोव पर कड़ाही गरम पड़ी थी।

जिम को कभी देरी नहीं होती। डैला अपने हाथ में उस चेन को समेट कर मेज़ के एक कोने पर, दरवाजे के पास बैठ गयी, जिसमें हो कर जिम रोज अन्दर आता था। तभी उसने नीचे सीढ़ियों की पहिली मंज़िल पर उसकी पगध्वनि सुनी और एक क्षण के लिए उसके चेहरे का रंग उड़ गया। रोज़मर्रा की साधारण बातों के लिए भगवान से चुपचाप प्रार्थना करने की उसकी आदत थी; और तभी उसके होठों से निकला, "भगवान, उसे ऐसी मति देना कि वह अब भी मुझे सुन्दर समझे!"

दरवाजा खुला और जिम ने अन्दर आ कर उसे बन्द कर दिया। वह दुबला और गम्भीर दिखता था। बिचारा अभी सिर्फ बाईस बरस का ही हुआ था और ऊपर से गृहस्थी का बोझा! उसे नये ओवरकोट की आवश्यकता थी और उसके पास दस्ताने भी नहीं थे।

दरवाज़े के भीतर आ कर जिम थम गया—बटेर की खुशबू पाकर शिकारी कुत्ते की तरह निश्चल। उसकी दृष्टि दैला पर टिकी थी और उसमें एक ऐसी व्यंजना थी जिसे वह नहीं पढ़ सकी और इस कारण वह एकदम डर गयी। यह अभिव्यंजना न क्रोध की थी, न आश्चर्य की ; न अस्वीकृति की, न आतंक की। न वह ऐसी कोई अनुभूति थी जिसे सहन करने के लिए दैला तैयार हो चुकी थी। अपने चेहरे पर यह विशेष भाव लिये वह दैला की तरफ सहज घूरता रहा।

दैला छटपटाकर मेज़ से उतर पड़ी और उसके पास गयी।

वह रुँआसी होकर कहने लगी, "जिम प्यारे, मेरी तरफ इस तरह मत देखो। मुझे अपने बाल कटा कर बेच देने पड़े क्योंकि तुम्हें उपहार दिये बिना मैं यह क्रिसमस काट नहीं सकती थी। बालों का क्या, यह तो घर की खेती है—फिर उग आयेंगे। तुम चिन्ता मत करो। मुझे यह काम करना ही पड़ा। मेरे बाल बहुत तेजी से बढ़ते हैं। क्रिसमस मुबारक, जिम! हमें खुश होना चाहिये। तुम्हें खबर नहीं, मैं तुम्हारे लिए कितनी अच्छी, कितनी सुन्दर, अच्छी भेंट लायी हूँ!

"क्या तुमने अपने बाल कटवा लिये?" जिम ने बड़े प्रयत्न से पूछा ; जैसे अत्यन्त मानसिक श्रम के बाद भी वह उस प्रत्यक्ष सत्य तक नहीं पहुँच पाया हो।

"हाँ, कटवाये भी और बेच भी दिये।" दैला ने कहा—"क्या तुम मुझे पहिले की तरह नहीं चाहते? केशों के बिना भी मैं तो वही हूँ—क्यों?"

जिम ने जिज्ञासाभरी दृष्टि से कमरे के चारों ओर देखा।

मूर्खों की तरह वह कह उठा, "तुम कहती हो कि तुम्हारे बाल चले गये?"

दैला बोली, "उन्हें ढूँढ़ने की तुम्हें आवश्यकता नहीं। वे बेच दिये, मैं कहती हूँ बेच दिये और चले भी गये। क्रिसमय की साँझ है प्यारे, मुझे माफ करना; क्योंकि वे तुम्हारे लिए ही जा चुके हैं।" एकाएक गम्भीर स्वर में मिठास भर कर वह कहने लगी, "शायद मेरे सिर के बाल गिनती के थे, पर तुम्हारे प्रति मेरे प्यार का कोई अन्दाज नहीं लगा सकता। क्या मैं पकौड़ियाँ बनाऊँ, जिम?"

अपनी बेहोशी में से जिम जागता सा लगा। उसने दैला को छाती से लगा लिया। अब दस सैकण्ड के लिए हम दूसरी दिशा में किसी अतर्क-

संगत तथ्य पर सावधानी से छानबीन कर लें। सप्ताह के आठ डालर हों या साल के दस लाख, क्या फर्क है? किसी गणितज्ञ या ज्ञानी से पूछिये तो वह ग़लत उत्तर देगा। मैगियों में अमूल्य उपहार देने की प्रथा थी, पर यह उपहार उनमें से नहीं था। इस कठिन विचार पर बाद में प्रकाश डाला जायगा।

अपने ओवरकोट की जेब में से जिम ने एक पैकेट निकाला और उसे मेज़ पर फेंक दिया।

उसने कहा, "मुझे ग़लत मत समझना, दैला! मेरे खयाल से दुनिया की कोई चीज़ – चाहे वह बाल कटाना हो या और कुछ, मेरी प्रियतमा के प्रति मेरे प्यार को कम नहीं कर सकती। पर अगर तुम इस पैकेट को खोलोगी तो तुम्हें मालूम होगा कि पहिले तुमने मुझे क्यों स्तब्ध कर दिया था।"

सफेद अँगुलियों ने चपलता से उस कागज और डोरी को तोड़ा और तभी खुशी की एक उल्लास भरी चीख, और बाद में, यह लो! सहसा सब कुछ नारीसुलभ आँसुओं और सिसकियों में परिवर्तित हो गया, जिसे रोकने में गृहस्वामी को अपनी सारी तरकीबें काम में लानी पड़ीं।

क्योंकि वहाँ बिखरे थे कंघे–कंघों का एक संग्रह, माँग में लगाने के और पीछे लगाने के, जिन्हें बाजार की बड़ी दुकान की खिड़कियों में देख कर, पाने के लिए कई दिनों तक दैला ने उपासना की थी। सुन्दर कंघे, निखालिस कछुवे की हड्डी के, जिनके गोल किनारों पर जड़े हुए नग उन विलीन हुए केशों के रंग पर फबते थे। वह जानती थी कि वे बहुत कीमती थे और निराश हृदय उनकी चाहना-भर कर सकता था। और अब, अब वे उसके थे; पर वे घुँघराले बाल, जो उनसे सजने की आकांक्षा रखते थे – अब जा चुके थे।

दैला ने उन कंघों को छाती से चिपका लिया और आखिर अपनी डबडबायी आँखों को ऊपर उठा कर, मुस्कराते हुए बोली, "जिम, मेरे बाल बहुत जल्दी उगते हैं।"

और तब दैला किसी झुलसी हुई बिल्ली की तरह उछली और विलाप करने लगी – "ओह! ओह!"

जिम ने अभी तक उसके उपहार को देखा नहीं था। उसने उत्सुकता से अपनी खुली हथेली पर रख कर उसे सामने

बढ़ा दिया। उस अमूल्य, जड़ धातु में जैसे उसकी उज्ज्वलता और उत्कट चेतना चमक रही थी।

"बढ़िया है कि नहीं, जिम! मैंने इसके लिए सारा शहर छान मारा। अब तुम्हें दिन में सौ बार घड़ी देखने की जरूरत पड़ेगी। जरा तुम्हारी घड़ी तो देना—देखूँ, यह उस पर कैसी लगती है?"

उसका कहा मानने के बजाय जिम कोच पर लुढ़क पड़ा और दोनों हाथों का सिरहाना दे कर मुस्कराने लगा।

उसने कहा, "डेला, इन क्रिसमस उपहारों को अलग रख दो और अभी के लिए अलग ही रहने दो। वे इस वक्त काम में आने के लिए बहुत ज्यादा अच्छे हैं। तुम्हारे कंघे खरीदने के पैसों के लिए मैंने घड़ी तो बेच दी। अब अगर पकौड़ियाँ बनाओ तो कैसा रहे!"

शायद आप जानते होंगे, मैगी लोग बुद्धिमान थे—विलक्षण बुद्धिवाले लोग; जो नांद में सोये हुए ईसा के लिए उपहार लाते थे। उन्होंने ही क्रिसमस पर उपहार देने की कला को खोज निकाला था। बुद्धिमान होने के कारण उनके उपहार भी विवेकपूर्ण होते थे। शायद किसी वस्तु के दो बार आने पर उसे बदलने की भी व्यवस्था थी। और, यहाँ मैंने एक फ़्लैट में रहने वाले दो भोले भाले बच्चों का घटनाहीन वृत्तान्त टूटीफूटी शैली में बयान कर दिया है, जिन्होंने एक दूसरे के लिए अपने सबसे प्रिय धन को बिना सोचे समझे बलिदान कर दिया। लेकिन इस जमाने के बुद्धिमानों के लिए अन्तिम बार कहने दीजिये, कि संसार के सभी उपहार देने वालों में ये दोनों सबसे अधिक बुद्धिमान थे। उन सभी लोगों में से, जो उपहार देते हैं अथवा लेते हैं, ये दोनों सबसे ज्यादा बुद्धिमान हैं। वे सबसे अधिक विवेकशील हैं; वे सच्चे मैगी हैं।

# छत पर का कमरा

सबसे पहिले श्रीमती पार्कर आपको बड़ा कमरा दिखायेंगी। उस कमरे के लाभ और उसमें आठ वर्षों तक रहने वाले सज्जन के गुणों का वर्णन करने से उन्हें रोकने की आप हिम्मत नहीं कर सकते। तब आप किसी तरह हकलाते हुए यह स्वीकार करेंगे कि आप न तो डाक्टर हैं, और न दंत-चिकित्सक। आपकी इस स्वीकारोक्ति को श्रीमती पार्कर इस प्रकार सुनेंगी कि आपका अपने माता-पिता के प्रति पहिले का सा पूज्य भाव नहीं रहेगा, क्योंकि उन्होंने आपको श्रीमती पार्कर के कमरे के अनुरूप पेशे की शिक्षा नहीं दी।

इसके बाद आप एक मंज़िल ऊपर चढ़ेंगे और आठ डालर प्रति सप्ताह वाले पिछवाड़े के कमरे को देखेंगे। इस दूसरी मंज़िल पर श्रीमती पार्कर आपको इस बात का विश्वास दिला देंगी कि उसमें रहने वाले श्री टूज़नबेरी उसका जो बारह डालर किराया देते थे, वह ठीक ही था। यह तो यों कहिये कि वे फ्लोरिडा में पाम बीच के नजदीक अपने भाई के सन्तरों के बाग में रहने को चले गये, जहाँ श्रीमती मैकन्टायर सर्दियाँ बिताया करती थी और जहाँ अलग अलग स्नानघरों वाले बड़े बड़े कमरे थे। इतना सुनने के बाद कहीं आप यह कह पायेंगे कि आप उससे भी कोई सस्ती जगह चाहते हैं।

श्रीमती पार्कर का तिरस्कार यदि आपने सहन कर लिया तो फिर आपको श्रीमान स्किडर का बड़ा कमरा दिखाने के लिए तीसरी मंज़िल पर ले जाया जायगा। दरअसल यह कमरा खाली नहीं है। वे सज्जन दिन भर उसमें बैठे नाटक लिखा करते हैं और सिगारेटों का धुँवा उड़ाया करते हैं। पर हर मकान खोजने वाले को यह कमरा जरूर दिखाया जाता है ताकि उसमें लगे कीमती पर्दों की प्रशंसा सुनी जा सके। इससे एक लाभ और होता है। श्रीमान स्किडर, मकान से निकाले जाने के डर से, चढ़े हुए किराये में से कुछ न कुछ अदा कर ही देते हैं।

तब भी अगर आप मैदान में डटे रहे और जेब में पड़े हुए तीन डालरों को पसीने से तर मुट्ठी में भींचे हुए अपने घोर दूषित दारिद्र की घोषणा

करते रहे, तो श्रीमती पार्कर फिर आपका मार्गदर्शन नहीं करेंगी। वे जोर से 'क्लारा' को पुकार कर आपकी ओर से पीठ फेर, नीचे चली जायेंगी। तब उनकी हब्शी नौकरानी आपको चौथी मंज़िल का छत का कमरा दिखाने के लिए टूटे फूटे ज़ीनों से ऊपर ले जायगी। उसका क्षेत्रफल ७ × ८ वर्ग-फीट है और उसके दोनों तरफ कबाड़ भरने की कोठरियाँ हैं।

इस कमरे में एक लोहे का पलंग, एक कुर्सी और एक मुँह धोने का पात्र है। एक ताक, सिंगारदान का काम दे रहा है। कमरे की चारों नंगी दीवारें ताबूत की तरह आपको घेर कर दम घोंट देंगीं। बरबस आपका हाथ गले की ओर चला जायगा। आप हाँफने लगेंगे और इस तरह ऊपर देखेंगे मानो कूए की गहराई से ऊपर देख रहे हों और एक बार फिर साँस लेंगे। रोशनदान के काँच में से आपको नीले आकाश का एक भाग दिखाई दे जायगा।

अपनी तिरस्कार-मिश्रित असभ्य बोली में क्लारा कहेगी, "दो डालर, महाशय!"

एक दिन कुमारी लीसन कमरे की तलाश में वहाँ आयी। उसके हाथ में एक टाइपरायटर था, जो उससे कहीं अधिक सुदृढ़ हाथों द्वारा उठाने योग्य था। वह बहुत नाटी लड़की थी। उसके शरीर का विकास रुक जाने के बाद भी उसके बालों और आँखों ने बढ़ना बन्द नहीं किया था और वे मिलकर ऐसा कहते प्रतीत होते थे—"हाय राम! तूने हमारा साथ क्यों छोड़ दिया!"

नियमानुसार श्रीमती पार्कर ने उसे पहिली मंज़िल का बड़ा कमरा दिखाया। उन्होंने कहा, "इस आलमारी में तुम अस्थिपंजर या दवाइयाँ या कोयले..."

कुमारी लीसन ने बीच ही में काँपते हुए कहा, "परन्तु मैं न तो डाक्टर हूँ, न दंत-चिकित्सक।"

श्रीमती पार्कर ने नाक चढ़ा कर उसकी ओर उसी अविश्वासपूर्ण, करुणा-मयी भावनाहीन दृष्टि से देखा, जो वे डाक्टर या दंत-चिकित्सक न होने वाले व्यक्तियों के लिए प्रयोग में लाती थीं और दूसरी मंज़िल का कमरा दिखाने के लिए आगे बढ़ीं।

कुमारी लीसन चीख उठी, "आठ डालर! नहीं बाबा, मैं उतनी धनवान नहीं हूँ; मैं तो मामूली नौकरी करने वाली एक गरीब लड़की हूँ। मुझे ऊपर की मंज़िल में कोई सस्ता-सा कमरा दिखाइये।"

दरवाज़ा खटखटाते ही मिस्टर स्किडर चौंक कर सिगरेट के टुकड़े को पैर से दबाते हुए उठ खड़े हुए।

उनके मुर्झाये चेहरे की ओर एक पिशाची मुस्कराहट बिखेरती हुई श्रीमती पार्कर बोली, "माफ़ कीजिये, मुझे मालूम नहीं था कि आप अन्दर ही हैं। मैं तो इन देवीजी को ये पर्दे दिखाने के लिए ले आयी।"

परियों की सी निर्दोष मुस्कराहट चेहरे पर ला कर कुमारी लीसन ने कहा, "ये तो दरअसल बहुत सुन्दर हैं।"

उनके जाते ही मि. स्किडर ने अपने अधूरे नाटक में लम्बी और काले बालों वाली नायिका के स्थान पर एक नाटी, शरारती, चमकीले बालों वाली अल्हड़ लड़की की स्थापना कर ली।

मि. स्किडर अपने आप बड़बड़ाये, "अन्ना हैल्ड को यह बहुत पसंद आयेगी" और फिर पर्दों के सामने पाँव फैला कर धूँए के बादल उड़ाने लगे।

इतने में ही 'क्लारा' नाम की कर्कश पुकार ने कुमारी लीसन के जेब की स्थिति को दुनियाँ वालों की नज़रों में स्पष्ट कर दिया। वह काली भूतनी उसे पकड़कर अँधेरी सीढ़ियों से ऊपर ले गयी और प्रकाश की क्षीण रेखा वाले उस तहखाने जैसे कमरे में धकेलती हुई, अपनी डरावनी और भेदभरी आवाज में बोली, "दो डालर।"

चरमराती हुई खटिया पर अपने शरीर को निढालती हुई कुमारी लीसन ने एक आह भर कहा, "मुझे मंज़ूर है।"

रोज़ सुबह कुमारी लीसन काम पर जाती। रात में लौटते हुए वह कुछ हस्तलिखित कागज लाती और उन्हें टाइप करती। कभी कभी जब उसे यह काम भी नहीं मिलता तब वह घर के बाहर के चबूतरे पर दूसरे किरायेदारों के साथ आ बैठती। छत की इन छोटी कोठरियों में रहने के लिए कुमारी लीसन का सृजन नहीं हुआ था। वह तो कोमल कल्पना के पंखों पर उड़ने वाली खुशमिजाज लड़की थी। एक बार उसे मि. स्किडर ने अपने एक अप्रकाशित प्रहसन के पहिले तीन अंक भी पढ़कर सुनाये थे।

जब कभी कुमारी लीसन को एक दो घण्टे चबूतरे की सीढ़ियों पर बैठने का समय मिलता तब सब किरायेदारों को बड़ी खुशी होती। परन्तु मिस लॉगनैकर नाम की लम्बी और गोरी लड़की, जो किसी सार्वजनिक स्कूल में पढ़ाती थी और जो अपनी आदत से लाचार, आपकी हर बात

का उत्तर 'वाकई ?' कह कर देती, सीढ़ियों के ऊपर बैठकर उसाँसें भरा करती थी। मिस डोर्न नामक एक दूसरी लड़की, जो किसी दुकान में नौकरी करती थी और हर रविवार को कोनी द्वीप जा कर चलती हुई बत्तखों पर निशाना साधती, नीचे की सीढ़ियों पर बैठ कर आहें भरती थी। कुमारी लीसन, बीचवाली सीढ़ियों पर बैठती थी और सारा पुरुष समाज उसी को घेरे रहता।

मिस्टर स्किडर ने तो उसे अपने मूक, रोमांटिक और वैयक्तिक जीवन-नाटक की प्रमुख नायिका का स्थान दे दिया था। यही हालत इन दोनों की भी थी—एक मिस्टर हूवर जिनकी उम्र ४५ साल थी, जो काफी मोटे, मूर्ख और शर्मीले थे; दूसरे मिस्टर ईवान्स, जो उसके सामने सिर्फ इसलिए खाँसते थे कि वह उन्हें सिगरेट पीने से रोकने को प्रेरित हो। पुरुषों की राय में तो वह सब से अधिक हँसमुख और जिन्दादिल थी परन्तु ऊपर और नीचे की सीढ़ियों पर बैठने वाली देवियाँ उससे समझौता करने को तैयार नहीं थीं।

मेरी प्रार्थना है कि चबूतरे पर बैठे हुए इस समूह के नाटक को थोड़ी देर भुला कर हम श्री हूवर के मुटापे पर एक मर्सिया पढ़ लें; चर्बी की परेशानी, माँसलता के पाप और मुटापे की विपत्ति का कुछ राग अलाप लें। यदि परीक्षा की जाय तो संभवतः फालस्टाफ के प्रत्येक टन में रोमियो की दुर्बल पँसलियों के प्रत्येक औंस से अधिक राग भरा हुआ है। प्रेमी आहें तो भर सकता है पर उसे हाँफना नहीं चाहिये। मोटे प्रेमियों के नसीब में तो दोष ढूँढ़ने वाले ही बदे होते हैं। बावन इंच का कमरबंद लगा लेने पर आपके एकनिष्ठ हृदय की धड़कन भी व्यर्थ हो जाती है। मगर हूवर साहब, ४५ वर्ष के मोटे, मूर्ख और शर्मीले, वैसे तो देवी हैलन के भी स्वप्न देख सकते हैं; लेकिन श्रीमान, ४५ वर्ष के, मोटे, मूर्ख और शर्मीले आदमियों के भाग्य में तो सत्यानाश ही बदा है। हूवर साहब! आपको कभी मौका नहीं मिल सकता।

गर्मियों में, एक दिन शाम को, श्रीमती पार्कर के किरायेदार बैठे हुये गप-शप कर रहे थे कि कुमारी लीसन ने सहसा आकाश की ओर देखा और आनन्द से हल्की हँसी हँसती हुई बोली, "अरे, यह तो बिल जैकसन है। मैं उसे यहाँ नीचे से भी देख सकती हूँ।"

सब लोग गगनचुम्बी भवनों की ओर देखने लगे मानो किसी हवाई जहाज़ को चलाते हुये श्रीमान जैकसन आ रहे हैं।

अपनी छोटी-सी उँगली से संकेत करते हुए कुमारी लीसन ने कहा, "वह तारा आप देख रहे हैं न—वह चमकता हुआ बड़ा तारा नहीं, पर उसके पास वाला नीला और स्थिर ! मैं अपने कमरे के रोशनदान से उसे रोज़ रात को देख सकती हूँ। मैंने उसका नाम बिल जैकसन रखा है।"

मिस लाँगनैकर बोली, "वाकई ? मुझे मालूम नहीं था कि आप ज्योतिषी भी हैं।"

तारों को ताकने वाली उस गुडिया ने कहा, "जी हाँ, मैं यह भी जानती हूँ कि अगले जाड़ों में मंगल के निवासी किस फैशन की आस्तीन बनवायेंगे।"

मिस लाँगनैकर बोली, "वाकई ? जिस तारे का आप जिक्र कर रही हैं, वह किसोयोपिया समूह का गाम्मा है। आकर्षण के हिसाब से वह दूसरी श्रेणी का है और उसके संक्रमण का मार्ग—"

नवयुवक मिस्टर ईवान्स ने कहा, "भई, मेरी राय में तो बिल जैकसन नाम बहुत अच्छा है।"

मिस लाँगनैकर की ओर अवज्ञापूर्वक हाँफते हुये मिस्टर हूवर ने कहा, "मेरी भी यही राय है; और मिस लीसन को भी तो अन्य ज्योतिषियों की तरह कुछ भी नामकरण करने का पूरा अधिकार है !"

मिस लाँगनैकर ने दुहराया, "वाकई ?"

मिस डार्न बोली, "कहीं यह उल्का तो नहीं है ! पिछले रविवार को मैंने कोनी द्वीप में, दस में से नौ बत्तकें और एक खरगोश मार गिराया।"

कुमारी लीसन बोली, "यहाँ नीचे से वह इतना सुन्दर नहीं लगता। उसे आप मेरे कमरे में से देखें। आप जानते हैं कि कूए के तल में खड़े होकर देखने से दिन में भी तारे दिखाई देते हैं। रात में मेरा कमरा भी किसी कोयले की खान के गड्ढे के समान दिखाई देता है। और, वहाँ से देखने पर बिल जैकसन ऐसा दिखाई देता है मानो निशा सुन्दरी ने अपनी साड़ी में हीरे की पिन लगा ली हो।"

उसके बाद एक ऐसा समय आया जब कुमारी लीसन को टाइप का काम मिलना बन्द हो गया। सुबह जब वह बाहर जाती तो काम पर जाने के बजाय उसे दफ्तरों के चक्कर काटने पड़ते और बदतमीज़ चपरासियों द्वारा पहुँचायी गयी निर्दय अस्वीकृतियों के प्रवाह में उसका हृदय गल कर बह जाता। यह क्रम चलता रहा।

एक दिन ऐसा भी आया जब शाम को वह थकी-माँदी अपने निश्चित समय पर श्रीमती पार्कर के चबूतरे पर लौटी। रोज़ इस समय वह होटल में खाना खा कर आती थी परन्तु आज उसे खाना नहीं नसीब हुआ था।

नीचे के दीवानखाने में कदम रखते ही उसे मिस्टर हूवर मिले जो ऐसे अवसर की खोज में थे। उन्होंने विवाह का प्रस्ताव रखा और उनके मुटापे ने हिमपात की तरह उसे चारों ओर से घेर लिया। वह कतरा कर निकल गयी और उसने सीढ़ियों के खम्भे को पकड़ लिया। उन्होंने उसका हाथ पकड़ने का प्रयत्न किया पर उसने हाथ छुड़ा कर उनके गाल पर एक हल्की सी चपत लगा दी। कटहरे के सहारे अपने शरीर के बोझ को घसीटती हुई, वह एक एक सीढ़ी चढ़ कर ऊपर पहुँची और इसके बाद मिस्टर स्किडर के दरवाज़े के सामने से गुज़री जो उस समय लाल स्याही से, अपने अस्वीकृत प्रहसन के दिग्दर्शन में, नायिका मिस डिलोर्न ( जो वास्तव में कुमारी लीसन ही थी) के लिए सूचनाएँ लिख रहे थे। आखरी मंज़िल की सीढ़ियाँ तो वह रेंगते हुए चढ़ी और बड़ी मुश्किल से उसने अपने कमरे का दरवाज़ा खोला।

कपड़े बदलने या दीया जलाने की उसमें शक्ति नहीं रह गयी थी। वह उसी तरह पलंग पर जा गिरी। उसके दुर्बल शरीर से पलंग की पुरानी कमानियाँ भी शायद ही दबी हों। पातालगुहा जैसे उस कमरे में भी अपनी भारी पलकों को उठा कर वह मुस्कराने लगी।

रोशनदान में से बिल जैकसन उसके सामने देख कर शान्ति, तेजी और स्थिरता से मुस्करा रहा था। उसकी अपनी कोई दुनियाँ नहीं थी। वह अन्धकार के गर्त में डूबी हुई थी और क्षीण प्रकाश के उस छोटे से चौखटे में मँढ़े हुए उस तारे के सिवाय उसका कोई सहारा नहीं था, जिसका बड़े उन्माद और प्रभावहीन ढंग से उसने नामकरण किया था। मिस लॉगनैकर ठीक ही कह रही होगी कि उस तारे का नाम बिल जैकसन नहीं हो सकता। वह अवश्य ही किसीयोपियो समूह का गाम्मा ही होगा। परन्तु वह उसे गाम्मा नहीं कह सकती।

पड़े पड़े, दो बार उसने अपना हाथ उठाने की कोशिश की। तीसरी बार वह सफल हुई और अपनी दो पतली उँगलियों को होठों से लगा कर बिल जैकसन के लिए अपने चुम्बन का संकेत किया। शिथिल हो कर उसका हाथ नीचे गिर पड़ा।

वह धीमे से बुदबुदायी, "अलविदा, प्यारे विल! तुम लाखों मील दूर हो और एक बार भी टिमटिमाते नहीं। यही खैर है कि जीवन में जब अन्धकार के सिवाय और कुछ भी नहीं बचा है तब भी तुम उसी स्थान पर बने हो, जहाँ मैं तुम्हें अधिकांश समय तक देख सकूँ। लाखों मील ........ अलविदा प्यारे विल!"

दूसरे दिन सवेरे दस बजे तक क्लारा ने उसका दरवाज़ा बन्द पा कर उसे तुड़वाया। सिरका, तुलसी का काढ़ा और झकझोरने से कुछ भी असर होता न देख कर, किसी ने भाग कर अस्पताल की गाड़ी के लिए टेलीफोन कर दिया। कुछ समय बाद, घण्टी बजाती हुई गाड़ी दरवाज़े पर आ खड़ी हुई और सफेद कोट पहिने, एक चुस्त, चपल, आत्मविश्वासी सौम्य दिखाई देने वाले नौजवान डाक्टर साहब कुछ चिंतित मुद्रा में सीढ़ियों पर चढ़े।

उन्होंने संक्षेप में पूछा, "४८ नं. में अस्पताल की गाड़ी मँगायी गयी है। कौन बीमार है?"

श्रीमती पार्कर, जिन्हें उनके मकान में ऐसी घटना हो जाने की तकलीफ, बीमार की तकलीफ से भी ज्यादा थी, नाक चढ़ाती हुई बोली, "मैं समझ नहीं पाती कि उसे क्या हो गया है? हमारे किसी भी उपचार से वह होश में आती ही नहीं। वह कोई लड़की है। उसका नाम मिस ऐलसी—मिस ऐलसी लीसन है। मेरे मकान में ऐसी घटना पहिले कभी—"

श्रीमती पार्कर के लिए अपरिचित, एक डरावनी आवाज़ में डाक्टर ने चिल्ला कर पूछा—"किस कमरे में?"

"छत पर का रोशनदान वाला कमरा।"

स्पष्ट है कि मकानों में छत के कमरों की स्थिति से डाक्टर साहब परिचित थे। चार चार सीढ़ियाँ लाँघते हुए वे ऊपर पहुँच गये। श्रीमती पार्कर अपनी मर्यादा के लिहाज़ से धीरे धीरे ऊपर पहुँची। पहिली ही मंज़िल पर ज्योतिषी लड़की को बाहों में उठाये हुए डाक्टर से उसकी भेंट हो गयी। डाक्टर साहब एक क्षण के लिए रुके और जाते जाते धीरे से अपनी ज़बान की कैंची चला गये। श्रीमती पार्कर की वही दशा हुई जो कलप किये हुए कपड़े की, खूँटी से गिरने पर होती है। डाक्टर की उस बात से उसके मन पर स्थायी झुर्रियाँ पड़ गयीं। कभी कभी जब उत्सुक किरायेदार उससे पूछते कि डाक्टर साहब ने क्या कहा था, तब वह जवाब देती, "छोड़िये उस बात को। उसको सुनने के पाप से मुक्त हो सकूँ तो भी मुझे सन्तोष हो।"

शिकारी कुत्तों की तरह उत्सुक तमाशबीनों की भीड़ में से रास्ता बनाते हुए, अपने प्यारे बोझ को उठाये डाक्टर आगे बढ़े। उनके चेहरे पर ऐसा भाव था जैसे उनका ही कोई आत्मीय मर गया हो और इस भाव से सहम कर भीड़ छँट गयी।

लोगों ने देखा कि एम्बुलेंस में मरीज़ को सुलाने के बिछौने पर डाक्टर ने उसे नहीं लिटाया और ड्राइवर से सिर्फ इतना ही कहा, "विल्सन, जितन तेज चला सको, चलाओ।"

बस इतनी सी बात है। यह भी कोई कहानी हुई? दूसरे दिन सवेरे अखबारों में समाचार छपा जिसका अन्तिम वाक्य इन तमाम घटनाओं को जोड़ने में आपकी सहायता कर सकता है। (जैसे उसने मेरी सहायता की है।)

नं. ४८, ईस्ट स्ट्रीट से बैलेव्यू अस्पताल में लायी गयी, उपवासजनित दुर्बलता से बेहोश, एक लड़की का उस समाचार में हाल छपा था। और उसके अन्तिम शब्द थे:

"उपचार करने वाले ऐम्बुलैंस डाक्टर, बिल जैकसन का कहना है कि लड़की बच जायेगी।"

# पुलिस और प्रार्थना

मैडिसन चौक की एक बैंच पर सोपी बेचैनी से करवटें बदल रहा था। जब जंगली बत्तखें, रात में भी जोर से चीखने लगें, जब सील के चमड़े के ओवरकोट के अभाव में स्त्रियाँ अपने पतियों से अधिक सट कर बैठने लगें और जब बाग में पड़ी हुई बैंच पर सोपी बेचैनी से करवटें बदलने लगे, तब आप कह सकते हैं कि सर्दी का आगमन होने ही वाला है।

सोपी की गोद में एक सूखा हुआ पत्ता आ गिरा। यह पाला पड़ने की पूर्वसूचना थी। मैडिसन चौक के निवासियों के प्रति पाला महाशय बहुत

ही उदार हैं और अपने वार्षिक आगमन की पूर्वसूचना उन्हें भेज देते हैं। हर चौराहे पर पाला महाशय, उत्तरी पवन को, जो फुटपाथ के निवासियों के लिए चपरासी का काम करता है, अपना विज़िटिंग कार्ड सूखे पत्तों के रूप में दे देते हैं, ताकि वे उनके स्वागत को तैयार रहें।

सोपी के मस्तिष्क ने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया कि अब उसे आनेवाली कठिनाइयों का सामना करने के लिए कमर कसनी पड़ेगी और इसी कारण आज वह बेंच पर बेचैनी से करवटें बदल रहा था।

शीत से बचने के लिए सोपी के दिमाग में कोई ऊँची कल्पनाएँ नही थीं। भूमध्यसागर के किनारे या विसूवियस की खाड़ी के मादक आसमान के नीचे उद्देश्यहीन घूमने की उसकी महत्वाकांक्षा नहीं थी। उसकी आत्मा तो सिर्फ यह चाहती थी कि तीन महीने जेल में कट जाँय। तीन महीने तक रहने, खाने की निश्चित व्यवस्था, हमजोलियों का सहवास और कड़ाके की सर्दी एवं पुलिस के सिपाहियों से रक्षण—यही उसकी वांछनाओं का सार था।

बरसों तक ब्लैकवैल का महमाननवाज़ जेलखाना ही उसका सर्दियों का निवास-स्थान रहा है। जिस प्रकार न्यूयार्क के अन्य भाग्यवान लोग हर वर्ष सर्दियाँ बिताने के लिए रिवीरा या पामबीच के टिकट कटाते थे उसी प्रकार सोपी ने भी जाड़ों में जेल में हिजरत करने की मामूली व्यवस्था कर ली थी। और अब वह समय आ गया था। पिछली रात उसी चौक में फव्वारे के पास एक बेंच पर उसने रात काटी; परन्तु कोट के नीचे, घुटनों पर और कमर पर लपेटे हुए तीन मोटे मोटे अखबार भी सर्दी से उसकी रक्षा नहीं कर सके थे। इसलिए उसे जेल की याद सताने लगी। शहर के गरीबों के लिए सोने की जो धर्मार्थ व्यवस्था की जाती थी, वह उसे पसन्द नहीं थी। सोपी की राय में परोपकार से कानून कहीं अधिक दयालु था। शहर में नगरपालिका की ओर से कई सदाव्रत और संस्थाएँ चलती थीं, जहाँ उसके खाने और सोने की सामान्य व्यवस्था हो सकती थी। परन्तु सोपी जैसी स्वाभिमानी आत्माओं को, दान की यह भिक्षा असहनीय बोझ लगती थी। दान के हाथों प्राप्त की गयी किसी भी सहायता का मूल्य, आपको रुपयों से नहीं तो मानभंग से चुकाना ही पड़ता है। जिस प्रकार सीज़र के साथ ब्रूटस था, उसी प्रकार धर्मशाला की हर चारपाई के साथ स्नान करने की सजा और सदाव्रत की रोटी के हर टुकड़े के साथ अपने व्यक्तिगत जीवन की छानबीन का दण्ड, आवश्यक रूप से जुड़ा रहता है। इसलिए कानून के

महमान बनना ही बेहतर है क्योंकि कानून, नियमों से संचालित होने पर भी, किसी शरीफ आदमी के व्यक्तिगत जीवन में दखल नहीं देता।

जेल जाने का निश्चय करते ही सोपी ने तुरन्त तैयारियाँ आरम्भ कर दीं। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के अनेक आसान तरीके हैं। सब से सुखद उपाय यह था कि किसी बढ़िया होटल में शानदार भोजन किया जाय और उसके बाद स्वयं को दिवालिया घोषित कर बिना शोरगुल हुए, चुपचाप पुलिस के हाथों में पहुँचा जाय। इसके बाद की व्यवस्था कोई समझदार मैजिस्ट्रेट अपने आप कर देगा।

सोपी बैंच से उठ कर चौक के बाहर निकला और पक्की सड़कों के जाल को लाँघता हुआ वहाँ पहुँचा, जहाँ पाँचवी सड़क ब्राडवे से मिलती है। वह ब्राडवे की तरफ मुड़ा और एक चमचमाते हुए होटल के सामने रुका, जहाँ हर रात रेशमी कपड़ों की तड़क-भड़क दिखाई देती है, अंगूर की बढ़िया शराब की नदियाँ बहती है और स्वादिष्ट व्यंजनों के ढेर लगे मिलते हैं।

सोपी को कमर से ऊपर पहिने हुए कपड़ों पर तो पूर्ण विश्वास था। उसकी दाढ़ी बनी हुई थी, कोट अच्छा था और बड़े दिन पर किसी मिशनरी महिला द्वारा भेंट मिली हुई टाई, उसके संभ्रान्त होने की घोषणा कर रही थी। यदि वह किसी प्रकार बिना शंका उत्पन्न किये टेबल तक पहुँच जाता, तब तो सफलता उसके हाथ में थी। शरीर का वह भाग, जो टेबल के ऊपर दिखाई देता है, वेटर के मन में किसी प्रकार का सन्देह नहीं जगा सकता। सोपी ने सोचा कि फ्राँसिसी शराब की एक बोतल, मुर्ग मुसल्लम, पुडिंग, आधा पैग शैम्पेन और एक सिगार–इतना काफी होगा। सिगार की कीमत तो एक डालर से ज्यादा नहीं होगी। सब मिला कर कीमत इतनी ज्यादा नहीं होनी चाहिये कि होटल मालिक के मन में बदला लेने की भावना उत्पन्न हो जाय; फिर भी तृप्ति इतनी होनी चाहिये कि जाड़ों के निवासस्थान तक की यात्रा आनन्द से कटे।

परन्तु जैसे ही सोपी ने होटल के दरवाज़े में पैर रखा, मुख्य वेटर की नजर उसकी फटी पतलून और पुराने जूतों पर पड़ी। तुरन्त ही सुदृढ़ और सधे हुए हाथों ने उसे पकड़कर चुपचाप सड़क पर ला पटका और इस प्रकार मुर्ग मुसल्लम के बरबाद होने की नौबत टल गयी।

सोपी ब्राडवे से वापस लौटा। उसे ऐसा महसूस हुआ कि वांछित ध्येय तक पहुँचने में, यह स्वादिष्ट भोजन वाला मार्ग तो काम नहीं देगा। जेल तक पहुँचने का और कोई उपाय ढूँढ़ना चाहिये।

छठी सड़क के मोड़ पर उसे तरह तरह की चीजों से, करीने से सजायी हुई, एक काँच की खिड़की बिजली की रोशनी में जगमगाती हुई दिखाई दी। सोपी ने पत्थर उठाया और उसे शीशे पर दे मारा। चारों तरफ से लोग दौड़े और एक पुलिस का सिपाही भी आ खड़ा हुआ। सिपाही को देख कर सोपी मुस्कराया और अपनी जेबों में हाथ डाले हुए चुपचाप खड़ा रहा।

सिपाही ने तमतमा कर पूछा, "शीशा फोड़नेवाला कहाँ गया?"

सौभाग्य का स्वागत करते हुए सोपी ने व्यंग के स्वर में सहृदयता से पूछा, "क्या आप इतना भी नहीं समझते कि इसमें मेरा भी कुछ हाथ हो सकता है!"

सिपाही के दिमाग ने सोपी को दोषी मानने से इन्कार कर दिया। खिड़कियों को पत्थर मार कर तोड़ने वाले, कानून के रक्षकों से गपशप करने के लिए कहीं रुकते हैं? वे तो फौरन नौ दो ग्यारह हो जाते हैं। पुलिसमैन ने कुछ दूर सड़क पर एक आदमी को बस पकड़ने के लिए भागते देखा और अपना डंडा घुमाता हुआ वह उसके पीछे भागा। दो बार असफल होकर सोपी निराश हो गया और मटरगश्ती करने लगा।

सड़क के उस पार, एक साधारण शानशौकत का होटल था। वहाँ छोटी जेब और बड़े पेटवाले ग्राहक जाया करते थे। घटिया बर्तन और धूमिल वातावरण; पतली दाल और गन्दे मेजपोश। इस स्थान पर सोपी बिना रोक-टोक अपनी फटी पतलून और पुराने जूतों समेत जा पहुँचा। वह टेबल पर जा बैठा और पेट भर कर कबाब, कोफ्ते, केक और कचौड़ियाँ खा गया। और तब उसने वेटर के सामने यह रहस्य खोला कि ताँबे की एक पाई का भी उसने मुँह नहीं देखा है।

बड़े रौब से उसने वेटर से कहा, "अब जल्दी ही पुलिस को बुलाइये; व्यर्थ में एक शरीफ आदमी का वक्त क्यों खराब करते हैं?"

अंगारे सी लाल आँखें दिखाते हुए, कठोर शब्दों में वेटर ने कहा, "तेरे लिए और पुलिस का सिपाही?" उसने अपने साथी को आवाज दी और सोपी महाशय फिर एक बार निर्दयता से सड़क पर ला पटके गये।

सुथार के गज की तरह धीरे धीरे एक एक जोड़ को खोलता हुआ सोपी उठा और कपड़ों की धूल झाड़ने लगा। आज उसके लिए गिरफ्तारी मृग-मरीचिका हो चली थी और उसे वह सुखदायी जेल कोसों दूर दिखाई दे रही थी। कुछ दूरी पर एक दुकान के सामने खड़े हुए सिपाही ने उसे देखा और हँसता हुआ अपने रास्ते चला गया।

काफी देर इधर उधर भटकने के बाद सोपी में गिरफ्तारी की आराधना करने की हिम्मत फिर जागृत हुई। इस बार जो अवसर आया, वह नासमझ सोपी को अचूक लगा।

मनोहर और सुशील मुखमुद्रा वाली एक नवयुवती, एक दुकान की खिड़की के सामने खड़ी, अन्दर सजी हुई प्यालियों और दावातों को कुछ दिलचस्पी से देख रही थी और दो गज की दूरी पर ही कठोर मुखाकृति-वाला एक सिपाही नल का सहारा लिये खड़ा था।

सोपी ने इस बार, औरतों की छेड़-छाड़ करने वाले, घृणित और तुच्छ गुण्डे का पार्ट अदा करने की योजना बनायी। अपने शिकार की सौम्य और भोली सूरत देखकर तथा कानून के सतर्क पहरेदार को पास में खड़ा जान कर सोपी को यह सोचने का प्रोत्साहन मिला कि शीघ्र ही उसकी बाँह पर सिपाही के पंजे की उस सुखदायी पकड़ का अनुभव होगा जो उसे सर्दियों भर आरामदायक जेल में पहुँचा देगी।

सोपी ने मिशनरी महिला द्वारा भेंट दी गयी टाई को ठीक किया, सिकुड़ती हुई आस्तीनों को कोट से बाहर निकाला, टोप को तिरछी अदा से पहिना और उस युवती की तरफ बढ़ा। उसने उसकी तरफ आँख से इशारा किया, उसे देख कर खाँसा--खँखारा, और चेहरे पर बनावटी हँसी ला कर बदतमीज़ी से घृणित गुण्डों की तरह झूमने लगा। अपने आँख की कोर से तिरछी नज़र डाल कर उसने यह देख लिया कि पुलिस का सिपाही उसे घूर रहा है। युवती दो चार कदम आगे पीछे हुई और फिर अधिक एकाग्रता से खिड़की में सजी हुई चीज़ों को देखने लगी। सोपी निर्भयता से आगे बढ़ कर उसके पास जा खड़ा हुआ और अपना टोप सिर से उठा कर बोला, "क्यों पंछी! कहीं कुछ तफरी का इरादा है?"

सिपाही अब भी देख रहा था। सतायी हुई युवती की उँगली के एक इशारे मात्र से सोपी अपनी मंज़िल तक पहुँच सकता था। अपनी कल्पना में

वह थाने की सुखद गरमी में पहुँच भी चुका था। परन्तु युवती उसकी ओर मुँह कर के खड़ी हो गयी और अपना हाथ आगे बढ़ा कर उसके कोट की बाँह को पकड़ कर खुशी से बोली—

"जरूर दोस्त, मैं तो बिल्कुल तैयार हूँ। मैं तो खुद ही तुमसे कहने वाली थी, मगर वह सिपाही जो देख रहा था!"

वृक्ष से लता के समान अपनी देह से लिपटी हुई उस लड़की को लिये, जब सोपी पुलीसमैन के सामने से गुज़रा, तो उदासी ने उसे घेर लिया। उसके भाग्य में शायद आज़ादी ही बदी थी।

अगले मोड़ पर ही वह उस लड़की से पिंड छुड़ाकर भागा। वहाँ से वह ऐसे मुहल्ले में पहुँच कर रुका, जहाँ रात में झूठे वादे करने वाले बेफिक्र प्रेमी और शराब-संगीत के दौर चलते हैं। फर के कोट पहिने महिलाएँ और बढ़िया ओवरकोट पहिने पुरुष, उस सुहानी हवा में टहल रहे थे। एकाएक सोपी के मन में शंका उठी कि किसी भयानक टोटके ने तो उसे गिरफ्तारी से परिमुक्त नहीं कर रखा है! इस विचार से वह कुछ घबराया, परन्तु एक भव्य नाटकघर के सामने शान से टहलते हुए एक पुलिस के सिपाही को देखते ही उसके मन में शराबी का पार्ट अदा करने की योजना, फिर बिजली की तरह कौंध गयी।

फुटपाथ पर खड़े होकर सोपी ने अपनी कर्कश आवाज़ में शराबियों की तरह बकना और चिल्लाना आरम्भ किया। नाच कर, चीख कर, चिल्ला कर और अनेक तरीकों से उसने आसमान सिर पर उठा लिया।

पुलिसमैन ने डंडा घुमाते हुए सोपी की तरफ पीठ करली और एक राहगीर से कहने लगा, "येल कालेज का कोई लड़का है। उन्होंने हार्टफोर्ट कालेज को आज बुरी तरह हराया है, इसीलिए खुशियाँ मना रहा है। सिर्फ हल्ला मचाता है—डर की कोई बात नहीं। इन लोगों से कुछ न कहने की हमें हिदायत है।"

दुखी हो कर सोपी ने इस असफल तिकड़म को त्याग दिया। क्या पुलिस के सिपाही उसे कभी गिरफ्तार नहीं करेंगे? उसकी कल्पना में जेल एक अप्राप्य स्वर्ग के समान लगने लगी। उसने ठंडी हवा से बचने के लिए अपने जीर्ण कोट के बटन बन्द कर लिये।

सिगार की एक दुकान में उसने एक सम्भ्रान्त मनुष्य को सिगार सुलगाते हुये देखा। अन्दर जाते समय उसने अपना रेशमी छाता दरवाज़े के पास रख

दिया था। सोपी अन्दर घुसा, छाता उठाया और धीरे धीरे चहलकदमी करता हुआ आगे बढ़ गया। सिगार वाला मनुष्य जल्दी से उसके पीछे चला।

वह कुछ सख्ती से बोला, "मेरा छाता!"

चोरी पर सीनाजोरी करते हुए, सोपी उपहास करने लगा, "क्या वाकई? आपका छाता? तो फिर आप पुलिस को क्यों नहीं बुलाते? यह खूब रही—आप का छाता! जल्दी करिये साहब, पुलिस को बुलाइये, मोड़ पर ही खड़ा है!"

छाते के मालिक ने अपनी चाल धीमी कर दी। सोपी ने भी वैसा ही किया। लेकिन उसके मन में यह आशंका उठ चुकी थी कि इस बार भी भाग्य उसे धोखा दे जायेगा। सिपाही सहमा हुआ उन दोनों की ओर देखता रहा।

छातेवाले ने कहा, "जी हाँ, जी—आप जानते हैं, ऐसी गलती हो ही जाती है। अगर यह छतरी आपकी है तो मुझे माफ करें। दरअसल बात यह है कि आज सुबह ही मैंने इसे एक होटल से उठायी थी। अगर आप इसे पहचा-नते हैं—अगर आपकी है तो, तो मैं आशा करता हूँ कि आप मुझे..."

सोपी दुष्टता से बोला, "जी हाँ, निश्चित रूप से यह मेरी ही है।"

छतरी का तथाकथित स्वामी मैदान छोड़ कर भाग गया। पुलिसमैन भी काफी दूर पर दिखाई देनेवाली एक मोटर से, सड़क लाँघनेवाली एक सुन्दरी को बचाने के लिए चल पड़ा।

सोपी, पूर्व की तरफ मरम्मत के लिए खोदी गयी एक सड़क पर आगे बढ़ा। गुस्से से उसने छाते को एक गढ़े में फेंक दिया। सिर पर लोहे की टोपी और हाथ में डंडा लिये घूमने वाले, पुलिस समुदाय के प्रति उसका मन विरक्ति से भर गया। वह तो उनके पंजों में फँसना चाहता था और सिपाही शायद उसे, बुराई से ऊपर उठे हुए किसी राजा के समान समझ रहे थे।

अन्त में सोपी एक ऐसे मुहल्ले में पहुँचा, जहाँ कोलाहल और प्रकाश बहुत कम था। इस मार्ग से होकर वह मैडिसन चौक की दिशा में चला। घर का मोह मनुष्य को अपनी ओर खींचता ही है, चाहे उसका घर किसी पार्क की बैंच ही क्यों न हो।

लेकिन एक अत्यन्त नीरव स्थान पर सोपी के पाँव रुक गये। यहाँ एक पुराना गिरजा था—टूटा-फूटा, विलक्षण और महराबदार। बैंगनी रंग के

काँचवाली खिड़की में से मन्द प्रकाश छन रहा था और निश्चय ही अगले इतवार की प्रार्थना की तैयारी में लीन पियानो बजाने वाला परदों पर उँगलियाँ नचा रहा था।

स्वर्गीय संगीत की मधुर स्वर-लहरी बहती हुई सोपी के कानों तक आयी जिसने उसे अभिभूत कर गिरजे की चहारदीवारी से मानो जकड़ दिया।

आकाश में निर्मल स्निग्ध चाँद चमक रहा था। सड़क राहगीरों से सूनी थी। पंछी तन्द्रिल स्वरों में चहचहा रहे थे। वातावरण किसी गाँव के गिरजे के समान प्रशान्त था। प्रार्थना के स्वरों ने सोपी को सीखचों से जकड़ दिया था, क्योंकि वह उस प्रार्थना से परिचित था—उसने इसे उस युग में सुना था जब कभी उसके जीवन में पवित्र विचारों, साफ कपड़ों, आकांक्षाओं, फूलों, माताओं, बहनों और मित्रों का भी स्थान रहा था।

सोपी के मन की ग्रहणशीलता और पुराने गिरजे के पवित्र प्रभाव के सम्मिलन ने सोपी की अन्तरआत्मा में एक अद्भुत परिवर्तन ला दिया। आतंकित हो कर उसने उस गर्त की गहराई का अनुभव किया, जिसमें वह गिर चुका था। अधःपतन के दिन, घृणित आकांक्षाएँ, कुचली हुई आशाएँ, ध्वस्त मानस—जिन्होंने अब तक उसके अस्तित्व को बनाया था, उसके स्मृतिपट पर उभर आये।

और दूसरे ही क्षण, उसके हृदय ने इस नये विचार से उत्साहपूर्वक समझौता कर लिया। सहसा, उसके हृदय में अपने दुर्भाग्य से लड़ने की एक बलवती प्रेरणा उत्पन्न हुई। इस दलदल से अपने आप को बाहर निकालने का उसने निश्चय किया। वह फिर से अपने आप को मनुष्य बनायेगा। जिस बुराई ने उसे दबोच रखा है, उसे वह जीतेगा। अब भी समय है, उसकी उम्र कुछ ज्यादा नहीं। वह अपनी पुरानी आकांक्षाओं को पुनर्जीवन दे कर, बिना लड़खड़ाये पूरी करेगा। पियानो के उन मधुर स्वरों ने, उसकी आत्मा में एक हलचल मचा दी थी। कल सुबह ही वह शहर के दक्षिणी भाग में जा कर काम ढूँढ़ेगा। फर के एक व्यापारी ने उसे एक बार ड्राइवर की नौकरी देनी चाही थी। कल ही वह उसे ढूँढ़ कर नौकरी ले लेगा। वह दुनियाँ में कुछ बनेगा। वह —

सोपी ने अपनी बाँह पर किसी पकड़ का अनुभव किया। तेजी से घूमते ही उसे एक सिपाही का कठोर चेहरा दिखाई दिया।

सिपाही ने पूछा, "यहाँ क्या कर रहे हो?"

सोपी ने कहा, " जी, कुछ नहीं । "

सिपाही बोला, " कुछ नहीं ? तो मेरे साथ चलो । "

दूसरे दिन सवेरे पुलिस कोर्ट के मैजिस्ट्रेट साहब ने फरमाया, " तीन महीने की सख्त कैद । "

# एक पीले कुत्ते के संस्मरण

मुझे आशा है कि एक जानवर के द्वारा लिखा गया यह लेख पढ़ कर आप चौकेंगे नहीं । किपलिंग महोदय ने और दूसरे कई लेखकों ने इस बात को भली भाँति सिद्ध कर के दिखा दिया है कि जानवर भी लाभदायक भाषा में अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं और आजकल तो, उन पुराने मासिक पत्रों के सिवाय जो अभी तक ब्रियान और मोण्ट पेली की जासूसी तस्वीरें छापते हैं, शायद ही कोई अखबार जानवरों की कहानी बिना प्रेस में जाता हो ।

जंगलों से सम्बन्धित पुस्तकों में मिलने वाला परम्परागत साहित्य आपको इस लेख में नहीं मिलेगा — जैसे भलुवा भालू, संपिया साँप या शेरिया शेर की कहानी ।

एक पीले कुत्ते से, जिसने अपना अधिकांश जीवन, न्यूयार्क के एक सस्ते फ्लैट के कोने में सैटिन के किसी पुराने पेटीकोट पर पड़े पड़े बिताया हो ( जिसे मालकिन ने श्रीमती लाँगशोरमेन की दावत में शराब गिर जाने के कारण कोने में फेंक दिया था ), वाक्चातुर्य दिखाने की आशा नहीं की जा सकती ।

मेरा जन्म एक पीले पिल्ले के रूप में हुआ । तारीख, स्थान, वजन और नस्ल — अज्ञात । मेरे जीवन की सबसे पहली याद यह है कि ब्राडवे और २३ वीं सड़क के नुक्कड़ पर एक औरत मुझे टोकरी में रखे हुए, किसी मोटी महिला के हाथों बेचने की कोशिश कर रही थी । मेरी मालकिन मुझे एक

असली पोमेरेनियन–हैम्बलटोनियन–आयरिश–कोचीन–चायना–स्टाक पोजर–फाक्स टैरियर नस्ल का कुत्ता प्रमाणित करने का झूठा दिखावा कर रही थी। वह मोटी महिला अपने थैले में पड़े हुए, खुरदरे फ़्लैनल के टुकड़े की बुनावट के साथ कुछ देर तक अन्यमनस्क सी खेलती रही और फिर एकाएक उसे समेट कर अन्दर रख लिया। दूसरे ही क्षण से मैं उनका पालतू बन गया–अम्मा की आँखों का तारा। प्यारे पाठक, क्या कभी आपका पाला किसी दो सौ पौंड वजन वाली भारी भरकम महिला से पड़ा है, जो अनेक प्रकार की दुर्गन्धियों से युक्त अपनी नाक को आपके पूरे शरीर पर रगड़ती हुई, एमा ईम्स जैसी आवाज में आपको अपना प्यारा, दुलारा, आँखों का तारा कहती रहे।

नस्लजात पीले पिल्ले से बढ़ कर मैं एक अज्ञात कुलशील पीला कुत्ता बना जो किसी अँगोरा बिल्ली और नींबू के टोकरे की वर्णसंकर सन्तान जैसा दिखाई पड़ता था। परन्तु मेरी मालकिन अपनी बात पर अड़ी रही। उनकी राय में तो महाप्रलय के समय नोहा ने अपनी नाव में जिन दो आदिम कुत्तों को धकेला था, वे मेरे ही गोत्र के पूर्वज थे। मैडिसन चौक के बाग में होने वाली साइबेरियन शिकारी कुत्तों की प्रदर्शनी में मुझे दाखिल कराने से उन्हें रोकने के लिए दो पुलिस के सिपाहियों की जरूरत पड़ी।

अब मैं उस फ़्लैट का जरा वर्णन कर दूँ। न्यूयार्क का एक साधारण-सा मकान, जिसके दीवानखाने में संगमरमर और ऊपर की मंजिलों के कमरों में साधारण पत्थर बिछे हुए। हमारा फ़्लैट तीन मंज़िल नहीं, तीन जीने चढ़ कर था। मेरी मालकिन ने उसे बिना फर्नीचर ही किराये पर लिया था और उसे औपचारिक चीज़ों से सजाया–जैसे सन् १६०३ का बना, पुराना, चमड़े से मँढ़ा फर्नीचर, हार्लेम के चायघर में बैठी हुई जापानी वेश्याओं का तैल चित्र, कुछ पौधे और एक पतिदेव।

भगवान की क़सम, दो पैरों वाले इस निरीह प्राणी से मुझे बहुत हमदर्दी थी। वह भूरे बालों वाला एक छोटा-सा आदमी था और उसकी मूँछें कुछ मेरे ही समान थीं। जोरू का गुलाम? अजी, उसकी हालत तो इससे भी बदतर थी। वह बर्तन मलता और दूसरी मंजिल पर रहने वाली, गिलहरी के फर का कोट पहिनने वाली पड़ौसिन के तार पर सूखने को डाले हुए कपड़ों की जर्जरता और सस्तेपन के सम्बन्ध में मालकिन की

बकवास सुनता। प्रतिदिन शाम को जब मालकिन खाना बनाती, तब वह मुझे एक डोरी से बाँध कर घुमाने ले जाने को उसे बाध्य करती।

यदि मनुष्य को यह मालूम हो जाय कि अकेली रहने पर औरतें अपना समय कैसे व्यतीत करती हैं, तो वह कभी विवाह न करे। सस्ते उपन्यास पढ़ना, मूँगफली की गुड़धानी खाना, गर्दन पर बदामरोगन की मालिश करना, बर्तनों को बिना माँजे छोड़ देना, आध घण्टे तक बर्फ बेचने वाले से तेरी-मेरी करना, पुरानी चिट्ठियों को पढ़ना, थोड़े से सिरके के साथ जौ की शराब पीना, घण्टों तक खिड़की की दरार में से पड़ौस के मकान में झाँकना—यही मालकिन की दिनचर्या होती थी। पति के आने से बीस मिनट पहले, वह घर को ठीकठाक करती और दस मिनट तक सिलाई करने का स्वांग भरती।

मैं उस फ़्लैट में एक कुत्ते का जीवन व्यतीत करता था। लगभग पूरा दिन मैं अपने कोने में पड़ा हुआ उस औरत को समय बरबाद करते देखा करता। कभी कभी मुझे झपकी लग जाती और मैं तहखानों में बिल्लियों का पीछा करने के या दस्ताने पहिने बुढ़ियाओं के सामने गुर्राने के सुनहरे सपने देखा करता, जैसा एक कुत्ते को करना भी चाहिये। तब वह मुझ पर खुशामद के शब्दों की बौछार करती हुई, मुझे चूमने लगती; परन्तु मैं कर ही क्या सकता था? कुत्ता अपने मुँह में लौंग इलायची तो रख नहीं सकता।

ईमान से कहता हूँ मालिक के साथ मुझे दिली हमदर्दी थी। हम दोनों की शकलों में इतनी समानता थी कि बाहर निकलने पर लोग इस पर ग़ौर करते, इसलिए राजमार्ग को छोड़ कर हम गरीबों की बस्तियों से गुजरने वाली सड़क पर पिछले दिसम्बर में पड़ी बर्फ खूँदा करते।

एक दिन शाम को जब हम इसी प्रकार घूम रहे थे और जब मैं ऊँची नस्ल के बढ़िया कुत्ते की तरह दिखने का प्रयत्न कर रहा था और बुढ़ऊ भी कुछ रंग में थे (क्योंकि अक्सर उनकी मनस्थिति विवाह मंत्र बोलने वाले पण्डित मात्र की हत्या करने जैसी रहती थी) तब मैंने उनकी ओर देखते हुए कहा :

"अरे पालतू केंकड़े, मुँह क्यों लटका रखा है? मालकिन तुझे चूमती तो नहीं। कम से कम तुझे उसकी गोद में बैठ कर ऐसी बकवास तो नहीं सुननी पड़ती जिसके सुनने के बाद संगीत भी गणित के सिद्धान्त सा,

नीरस लगे। खैर मना, कि तू कुत्ता नहीं है। कमर कस और उदासी को दूर भगा।"

विवाह रूपी दुर्घटना में घायल, उस वीर ने मेरी ओर लगभग कुत्ते के ही समान चतुराई भरी नज़रों से देखा।

वह बोला, "भई कुतुवा! प्यारे कुत्तू! तू तो लगभग मनुष्य के समान ही बोल लेता है! क्या कहना चाहता है? क्या बिल्लियों — "

"बिल्लियों? लगभग बोल लेता है—हुँ!"

लेकिन मेरी बात वह समझा नहीं। पशुओं की भाषा से बिचारा मनुष्य एकदम वंचित है। मनुष्य और कुत्तों के बीच बातचीत का समान स्तर केवल किस्से-कहानियों में ही हो सकता है।

सामने के कमरे में एक औरत रहती थी, जिसके पास एक चितकबरा टैरियर जाति का कुत्ता था। हर शाम को उसका पति कुत्ते को घुमाने ले जाता परन्तु वह तो हमेशा सीटी बजाता हुआ खुश-खुश वापिस लौटता। एक दिन नीचे की मंजिल पर मैंने उस कुत्ते से दुआसलाम की और उससे इस बात का रहस्य पूछा।

मैंने कहा, "ओ छैला, यह तो तुम्हें भी मालूम होगा कि चार आदमियों के बीच में कुत्ते की धाय का पार्ट अदा करना कोई भी आदमी पसन्द नहीं करेगा। यदि उसे ऐसा करना पड़े तो उसकी तरफ देखने वाले हर आदमी को वह कच्चा ही चबा जाने की कोशिश करेगा। परन्तु तेरा मालिक तो रोज शाम को, अण्डों का तमाशा दिखाने वाले किसी ढीठ बाजीगर की तरह झूमता चलता है। इसका राज़ क्या है? मुझे मत बता कि उसे यह पसंद है।"

चितकबरा बोला, "आसान-सी बात है। वह तो अंगूर की बेटी का सेवन करता है और वह भी बेरहम हो कर। जब हम शाम को घूमने निकलते हैं, तब शुरू में तो वह इतना संकोची होता है, जैसे स्टीमर में जुआ खेलने वालों के झुण्ड में कोई रोगी आदमी। लेकिन कोई आठ मयखानों के चक्कर लगाने के बाद वह इस बात की भी परवाह नहीं करता कि हाथ में की डोरी के दूसरे सिरे पर कुत्ता बँधा है या मछली! मयखानों के चक्करदार दरवाज़ों से बचते बचते मेरी पूँछ भी दो इंच कट चुकी है।" उस कुत्ते से यह संकेत पा कर मैं सोच में पड़ गया (नौटंकी वाले इसे नोट कर लें)।

एक दिन शाम को करीब छः बजे मेरी मालकिन ने मालिक को तैयार हो कर 'लवी' को हवाखोरी के लिए ले जाने का आदेश दिया। मैंने अब तक आपसे छिपाये रखा, लेकिन मालकिन मुझे इसी नाम से पुकारती थी। चितकबरे का नाम 'मिट्ठू' था। यों तो मैं उससे कई गुना श्रेष्ठ था, परन्तु इस नाम के बोझ ने मेरे आत्मसम्मान पर एक कलंक-सा लगा दिया था।

एक सुरक्षित और शान्त गली में, एक आकर्षक और साफसुथरे मयखाने के सामने मैं अड़ गया और आँखें मींचे, बदहवास, दरवाज़े में घुस कर इस तरह कराहने लगा जैसे अखबारों के समाचारों में पहाड़ी कुत्ते अक्सर फूल तोड़ते तोड़ते बर्फ के गढ़े में फँसी हुई किसी लड़की की सूचना उसके परिवार को देते समय चीखते हैं।

खीसे निपोरता हुआ बूढ़ा बोला, "सत्यानाश हो इसका! यह कुत्ते का बच्चा कहीं शराब पीने को तो नहीं ले जा रहा है? वाकई, ज़रा देखूँ तो! आराम से बैठ कर शराब पिये भी कितने दिन बीत गये! चलूँ तो सही..."

स्पष्ट था कि मछली काँटा निगल गयी। टेबल पर बैठ कर उसने व्हिस्की के कई जाम चढ़ाये। घण्टे भर तक दौर चलते रहे। मैं उसके पास बैठा, वेटर के लिए पूँछ हिलाता रहा और मुफ्त का खाना खाता रहा। यह खाना उससे कहीं अच्छा था जो मालकिन, मालिक के आने से आठ मिनट पहले, पड़ौस के भटियारखाने से मँगवाती थी; पर रौब ऐसा दिखाती थीं जैसे उसने घर पर ही बनाया हो।

जब स्काटलैण्ड की बनी वह सारी शराब समाप्त हो गयी और टेबल पर सिर्फ जौ की रोटी बची, तब उसने मुझे टेबल के पाये से खोल दिया और मुझे इस तरह नचाने लगा जैसे कुशल मछुआ फँसी हुई मछली को डोरी से नचाता है। बाहर आते ही उसने मेरे गले का पट्टा खोल कर फेंक दिया। फिर वह बोला, "प्यारे कुतुवा, मेरे प्यारे अच्छे कुत्तू! तुझे अब वह कभी नहीं चूम सकेगी! बड़ी शर्म की बात है। इससे तो अच्छा है कि जा और किसी बड़ी मोटर के नीचे दब मर।"

परन्तु मैंने जाने से इन्कार कर दिया। मैं उस बूढ़े के पाँवों के चारों ओर उछलने-कूदने लगा।

मैंने उससे कहा, "अरे अहसान-फरामोश, बेवकूफ, नासमझ, मुर्गीचोर, हरामज़ादे! क्या तू यह भी नहीं समझता कि तुझे छोड़ कर मैं

जाना नहीं चाहता ! क्या तू नहीं जानता कि हम दोनों, जंगल में भटके हुए दो पिल्लों के समान हैं और मालकिन हमारे पीछे निर्दय भेड़िये की तरह पड़ी हुई है—तेरे पीछे बर्तन पोंछने का तौलिया ले कर और मेरे पीछे पिस्सू मारने की दवा और पूँछ में बाँधने का गुलाबी रिबन ले कर। इन सारी झंझटों को काट कर सदा के लिए क्यों न दोस्त बन जावें !"

आप कहेंगे कि उसकी समझ में मेरी बात नहीं आयी। शायद नहीं भी आयी हो। परन्तु उसकी नसों में व्हिस्की अपना असर दिखा चुकी थी। एक क्षण तक वह विचार करता हुआ चुपचाप खड़ा रहा और अन्त में बोला :

"प्यारे कुत्तू ! संसार में आकर एक दर्जन से ज्यादा ज़िन्दगियाँ तो हमें मिलती नहीं और तीन सौ वर्ष से अधिक जीवित भी कम लोग ही रहते हैं । अगर दुबारा उस फ्लैट का मुँह देखूँ तो मुझ पर लानत और अगर तू देखे तो तुझ पर सात बार लानत है। मैं शर्त लगाता हूँ कि 'वेस्टवर्ड हो' नाम का घोड़ा जरूर रेस जीतेगा।"

आज डोरी का बन्धन तो था नहीं। आनन्द से उछलता—कूदता मैं और मेरा मालिक २३ वीं सड़क के उस पार खड़ी नाव पर जा पहुँचे और मार्ग में मिलनेवाली बिल्लियों ने भगवान का शुक्र माना कि उसने उनको नाखून वाले पंजे दे दिये।

जरसी के निकट पहुँच कर मेरे मालिक ने एक अजनबी से कहा, "मैं और मेरा कुत्ता, राकी पहाड़ पर सैर करने जा रहे हैं।"—

परन्तु मुझे सबसे अधिक आनन्द तब हुआ, जब मेरे मालिक ने मेरे कान इतनी जोर से खींचे कि मैं दर्द से कराहने लगा और तभी वह बोल उठा ;

"अबे, बन्दर की शकल, चूहे-सी पूँछ वाले, बछिया के ताऊ ! तुझे मालूम है मैं तुझे आज क्या कह कर पुकारने वाला हूँ ?"

मैंने सोचा कि यह भी मुझे 'लवी' कहेगा और इस विचार से मैं निराश हो कर बिलबिलाने लगा।

मेरा मालिक बोला, "मैं तुझे 'रफीक' कह कर पुकारूँगा।" और यह सुन कर मुझे इतना आनन्द हुआ कि यदि मेरे पाँच पूँछें होतीं और मैं उन सब को हिलाता तो भी उस अवसर के आनन्द को व्यक्त नहीं कर सकता था।

# वासन्ती मेनू

मार्च का एक दिन।

जब आप कहानी लिखें तो इस तरह उसका आरम्भ कभी मत कीजिये। इससे बुरी कोई शुरुआत नहीं हो सकती। यह ढंग कल्पनाशून्य, नीरस और शुष्क है, जिससे केवल आडम्बर झलकता है। लेकिन इस मौके पर यह क्षम्य है, क्योंकि इसके बाद के परिच्छेद की घटना, जिससे हमारी कथा का आरम्भ होता है, इतनी काल्पनिक और अतर्कसंगत है कि पाठक के समक्ष उचित भूमिका के बिना नहीं रखी जा सकती।

साराह मेनू* को देखकर रो रही थी।

कल्पना कीजिये कि न्यूयार्क में रहनेवाली एक लड़की और मेनू कार्ड को देख कर रोये।

इसका स्पष्टीकरण करने के लिए आप कहेंगे कि शायद आज होटल में खाना समाप्त हो गया होगा या उसने ईस्टर के बड़े दिन पर आइसक्रीम न खाने की कसम ली होगी या उसने प्याज खाया होगा और या वह कोई शोकान्त नाटक देख कर आ रही होगी। ये तमाम कारण गलत हैं, इसलिए अब आप कहानी को आगे बढ़ने दें।

जिस व्यक्ति ने यह घोषणा की, कि संसार एक सीप के समान है जिसे तलवार से खोला जा सकता है, उसने निश्चय ही अपनी योग्यता से कहीं ऊँचे सत्य का अन्वेषण किया था। तलवार से सीप खोलना कोई मुश्किल काम नहीं, लेकिन इस संसाररूपी दुहरी सीपी को किसी ने टाइपरायटर से खोला हो ऐसा भी कभी सुना है? क्या इस प्रकार का उद्घाटन आप देखना चाहेंगे? तो सुनिये।

साराह इस अनुपयुक्त औजार से इस सीपी को उतना ही खोल सकी थी कि जिससे अन्दर दिखाई देने वाली उस ठंडी और नरम दुनियाँ को चख

---

* होटलों में मिलने वाले खाद्य-पदार्थों की तालिका

भर सके। उसका शार्टहैंड का ज्ञान किसी कमार्शियल कालेज द्वारा दुनियाँ पर थोपे गये स्टेनोग्राफर से अधिक नहीं था। इसलिए वह स्टेनो बन कर किसी दफ्तर के चमचाते सितारों में स्थान न पा सकी। वह फुटकर नकल-नवीस का अनियमित काम करती थी।

संसार से संघर्ष के दौरान में साराह की सब से शानदार विजय थी—शूलनबर्ग के होटल का काम प्राप्त करना। लाल पत्थर वाले जिस मकान के कमरे के एक हिस्से में वह रहती थी, उसके बिलकुल पास ही यह प्रसिद्ध होटल था। एक शाम को साराह इसी होटल में चालीस सैंट का पाँच व्यंजनों वाला गरमागरम खाना खा कर निकली तो मेनू कार्ड अपने साथ लेती आयी। (यह खाना इतनी जल्दी परोसा जाता था जैसे बेसबाल के खिलाड़ी अपने प्रतिस्पर्धी की ओर गेंद फेंक रहे हों।) मेनू की लिखावट इतनी अस्पष्ट थी कि पढ़ने में कठिनाई होती थी और यह बताना कठिन था कि भाषा अंग्रेजी है या जर्मन। खाद्य पदार्थों की योजना भी इतनी अस्तव्यस्त थी कि यदि आप सतर्क न हों तो आप भोजन का आरम्भ* करेंगे चावल के पुडिंग से और अन्त सूप और सप्ताह के दिन से।

दूसरे दिन सुबह ही साराह ने शूलनबर्ग को एक सुंदर कार्ड पर टाइप किया हुआ मेनू दिखाया जिसमें भोजन के हर पदार्थ को उचित शीर्षक दे कर आकर्षक ढंग से लिखा गया था। "आज के ताजे पदार्थ" से लगा कर "ओवरकोट और छत्रियों के लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं" तक की हर बात उचित स्थान पर रखी हुई थी।

यह योजना तुरन्त शूलनबर्ग महोदय के गले उतर गयी। जाने से पहिले साराह ने उससे राज़मन्दी ले ली कि वह हर रोज़ होटल की इक्कीस टेबलों के लिए टाइप किये हुए मेनू कार्ड लाकर देगी; सुबह का नाश्ता, लंच और डिनर के लिए अलग अलग कार्ड; और जब कभी खाद्य पदार्थों में कोई परिवर्तन किया जायगा या पुराने कार्ड मैले हो जायेंगे तब वह नये कार्ड टाइप भी कर देगी। इसके बदले में शूलनबर्ग प्रतिदिन तीन बार उसके कमरे में वेटर द्वारा भोजन भेजेंगे—वेटर यथासम्भव आज्ञाकारी होना चाहिये। दूसरे दिन शूलनबर्ग के ग्राहकों के भाग्य में जो खाना बदा हो उसका पेंसिल से लिखा मसविदा भी होटल के मालिक देंगे।

---

* पाश्चत्य ढंग के खाने में भोजन का आरम्भ सूप से और अन्त पुडिंग या अन्य किसी भी मीठे व्यंजन से होता है।

इस समझौते से दोनो पार्टियाँ सन्तुष्ट थीं। शूलनबर्ग के ग्राहकों को अब यह मालूम पड़ने लगा कि वे क्या खा रहे हैं—यद्यपि उसके स्वाद को लेकर वे कभी कभी पशोपेश में पड़ जाते थे। और साराह को उस सुस्त और कड़कड़ाती सर्दी में पेट भर भोजन मिल जाने लगा, जो उसकी मुख्य समस्या थी। और, तभी कलैण्डरने झूठी घोषणा कर दी कि बसन्त आ गया है। वसन्त तो अपने समय पर ही आता है। शहर की गलियों में अभी तक जनवरी की बर्फ वज्र की तरह जमी हुई थी। बाजों पर लोग शिशिर के उत्साह और साहस से ग्रीष्म के गुणगान गा रहे थे। ईस्टर के कपड़े बनवाने के लिए लोग अभी से तैयारियाँ कर रहे थे। चौकीदारों ने भी मकान को गर्म रखने की स्टीम बन्द कर दी थी, परन्तु हम जानते हैं कि ये सब लक्षण तो यह सूचित करते हैं कि नगर अभी तक सर्दी के पंजों से छूटा नहीं है।

एक दिन तीसरे पहर, साराह अपने लम्बे-चौड़े, आरामहीन सोने के कमरे में सर्दी से काँप रही थी। विज्ञापन के शब्द तो इस प्रकार थे: "मकान को गर्म रखने की व्यवस्था, साफसफाई, हर प्रकार की सुविधा, जिनको देखकर ही अन्दाज लगाया जा सकता है।" लेकिन असलियत में राम का नाम! आजकल शूलनबर्ग के काम के अतिरिक्त साराह के पास और कोई काम नहीं था। बेंत की चरमराती आरामकुर्सी में बैठी हुई साराह पिछवाड़े की खिड़की में से बाहर देखा करती। दीवार पर लगा कलैण्डर चिल्ला चिल्ला कर उससे कहता, "वसन्त आ गया है साराह! वसन्त आ गया है। मैं कहता हूँ, मेरी ओर देख, मेरी तिथियाँ बताती हैं कि बसन्त आ चुका है। तेरा शरीर भी तो सुंदर है—वसन्त के लायक! इतनी उदासी से खिड़की के बाहर क्यों झाँका करती है?"

साराह का कमरा मकान के पिछवाड़े में था। खिड़की में से उसे दूसरी गली के बक्से बनाने वाले कारखाने की बिना खिड़कियों वाली चट्टान-सी दीवार दिखाई देती थी। दीवार काँच के समान साफ थी किन्तु साराह के मन की आँखों के सामने इस समय एक हरीभरी पगडंडी, नाच रही थी जिस पर दोनों ओर से चेरी और एम के वृक्ष और ईरानी गुलाब के पौधे झुके हुए थे।

वसन्त के सच्चे सन्देशवाहक इतने सूक्ष्म हैं कि स्थूल आँखों और कानों से उनके आगमन को नहीं पहचाना जा सकता। लोग अक्सर वसन्त के आगमन के लिए आम में मंजरी आने को, कोयल के कूकने को या पलाश

के फूलने को आवश्यक मानते हैं और कुछ तो इतने नीरस होते हैं कि जब तक सर्दियों में मिलनेवाले खाद्यपदार्थ विरल न हो जायें तब तक वसन्त सुन्दरी का स्वागत ही नहीं कर पाते। परन्तु धरती की सबसे लाड़ली संतानों के लिए यह नयी दुल्हन एक ही मधुर सन्देशा भेजती है "यदि तुम मुझसे मुँह नहीं मोड़ोगे, तो मैं किसी को भी अपनी सौतेली संतान नहीं मानूंगी।"

पिछली गर्मियों में साराह गांवों में गयी थी और वहाँ उसका एक किसान से प्रेम हो गया था।

( कहानी लिखते समय इस प्रकार की गयी बीती बातों को याद न करें। कला की दृष्टि से यह बुरी बात है जो रस भंग करती है। इसे आगे बढ़ने देना चाहिये — आगे ! )

साराह दो हफ्तों तक सनीब्रूक फार्म में रही और वहाँ, वहाँ एक बूढ़े किसान फ्रेंकलिन के लड़के वाल्टर के प्रेम में पड़ गयी। वैसे तो इससे भी कम समय में किसानों के साथ प्रेम और विवाह करके, उन्हें घास चरने छोड़ा जा चुका है परन्तु वाल्टर फ्रेंकलिन एक आधुनिक किसान था। उसकी गोशाला में टेलीफोन लगा हुआ था और वह यह भी बता सकता था कि कृष्णपक्ष में बोये गये आलुओं की खेती पर अगले वर्ष कनाडा में उत्पन्न होने वाली गेहूँ की फसल का क्या प्रभाव पड़ेगा।

इसी हरीभरी आच्छादित पगडंडी पर वाल्टर ने प्रियाराधन करके साराह के हृदय को जीता था। और यहीं दोनों ने साथ बैठकर उसके बालों के लिए सरसों के फूलों की वेणी गूँथी थी। साराह के भूरे बालों पर उन पीले फूलों की वेणी कितनी फबी, इसकी प्रशंसा करते वह अघाता नहीं था। उस वेणी को वहीं छोड़कर अपने हैट को घुमाती हुई वह घर लौट आयी।

वसन्त की पहली बयार बहते ही विवाह करने का वाल्टर का विचार था, इसलिए साराह अपने टाइपरायटर को खटखटाने के लिए शहर में चली आयी।

दरवाजे पर हुई एक दस्तक ने साराह के उस सुखस्वप्न को तोड़ दिया। शूलनबर्ग की अस्पष्ट लिखावट में लिखा हुआ अगले दिन के मेनू का मसविदा लेकर होटल का वेटर आया था।

साराह टाइपरायटर लेकर बैठी और उसमें कागज़ चढ़ाया। वैसे तो साराह बहुत फुर्तीली थी। अक्सर २१ कार्ड टाइप करने में उसे डेढ़ घण्टे से ज्यादा समय नहीं लगता था।

परन्तु आज मेनू में हमेशा से ज्यादा रद्दोबदल थे। सूप पतले थे, सूअर का माँस गायब था, और उसका स्थान उबली हुई शलजम ने ले लिया था। पूरे मेनू पर वसन्त की उन्मत्त बहार छायी हुई थी। छोटी-छोटी पहाड़ियों पर आजकल अधिक दिखाई देने वाले मेंमने अब स्वादिष्ट चटनियों के साथ उपयोग में आ रहे थे। ओयस्टर की तादाद भी कम हो गयी थी। तली हुई चीजों का स्थान भुनी हुई वस्तुओं ने ले लिया था। कचौड़ी समोसों की बहुतायत थी, परन्तु मिठाइयाँ कम हो रही थीं। रंगबिरंगी तहों में लपेटे हुए सौसेज, चने की दाल और मीठा मेपल बिल्कुल गायब तो नहीं हुए थे पर उनका अस्तित्व मिटता जा रहा था।

किसी झरने पर नाचती हुई परियों की तरह साराह की उँगलियाँ टाइपरायटर पर थिरकने लगीं। सधी हुई नजरों से उसने हर वस्तु के नाम को उसके आकार के अनुसार यथास्थान टाइप कर दिया। अन्त में आने वाली मिठाइयों से पहले कुछ सब्जियों के नाम थे—मटर और गाजर और मक्का, सेम की फलियाँ और बन्दगोभी, एसपरेजस के टोस्ट इत्यादि।

साराह इस मेनू को पढ़कर रो रही थी। उसके हृदय की कोई गहरी निराशा घुमड़ कर आँसुओं के रूप में आँखों से बरस पड़ी। उसका सिर टाइपरायटर पर झुक गया और टाइपरायटर की खटखटाहट उसकी भीगी सिसकियों का साथ देती हुई प्रतीत हुई।

क्योंकि दो सप्ताह से उसे वाल्टर की चिट्ठी नहीं मिली थी। और मेनू में इसके बाद की मद थी—सरसों की तरकारी—अण्डे डाल कर बनाई हुई सरसों की तरकारी। अण्डों को तो छोड़िये, लेकिन सरसों? सरसों जिसके पीले फूलों का ताज पहनाकर वाल्टर ने उसे अपने हृदय सिंहासन पर बिठाकर अपने मनोराज्य की रानी घोषित किया था। वसन्त के अग्रदूत सरसों के पीले फूल—उसके जीवन के सबसे सुखद दिनों की याद और आज उसके विषाद के कारण।

श्रीमतीजी, आप मेरी बात पढ़कर हँसेंगी। परन्तु मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरी एक बात का उत्तर देकर फिर हँसें। अपने हृदय समर्पण के दिन आपके प्रियतम ने जो गुलाब आपको भेंट किये थे उन्हीं को उबालकर शूलनबर्ग के होटल की टेबल पर आपके सामने परोसे जाँय तब भी क्या आप हँस सकेंगीं? यदि जूलियट ने अपने प्रणय प्रतीकों को इस प्रकार अप-

मानित होते देखा होता तो उसने हकीम से विषैली जड़ियाँ बहुत पहले माँग ली होतीं।

वसन्त भी कैसा जादूगर है! लौह-पत्थर से बने इस हृदयहीन नगर में उसे एक सन्देशा भेजना है। हरे पत्तों से लिपटे सरसों के इन पीले फूलों के सिवाय उसके पास और कोई सन्देशवाहक नहीं। परन्तु यह छोटा-सा फूल जिसे फ्रांस के रसोइये 'शेर का दांत' कहते हैं, सौभाग्य का सच्चा सिपाही है। पुष्पित होकर वह प्रिय आराधन में आपकी सहायता करता है, उसकी वेणी बनाकर अपनी प्रिया के भूरे बालों को सजा सकते हैं, कच्चा और हरा होने पर इसे उबाल कर तरकारी बनायी जा सकती हैं, लेकिन उस हालत में भी वह अपने स्वामी ऋतुराज का काम करने से नहीं चूकता।

धीरे धीरे साराह ने अपने आँसुओं को रोका। काम पूरा करना ही पड़ेगा। उन पीले फूलों की सुनहरी आभा से छाए हुए स्वप्न में खोई हुई वह अन्यमनस्क होकर टाइपरायटर पर उंगलियाँ घिस रही थी परन्तु उसका दिल और दिमाग, खेत की उसी पगडंडी पर अपने प्रियतम के साथ था। पर तुरन्त ही वह मेनहैटन की कठोर दुनिया में वापिस लौट आयी और शीघ्रता से टाइपरायटर खटखटाने लगी।

छः बजे वेटर उसका खाना लेकर आया और छापे हुए कार्ड ले गया। खाते समय एक निःश्वास छोड़कर साराह ने सरसों की तश्तरी को अलग निकाल कर रख दिया। जिस प्रकार उसके प्रेम के प्रतीक उन सुनहरे फूलों का इस काली तरकारी में परिवर्तन हो गया था उसी प्रकार उसकी सारी उमंगें कुम्हला कर नष्ट हो चुकी थीं। शेक्सपियर ने भले ही कहा हो, कि प्रेम अपने आप को खाकर जीवित रहता है, परन्तु साराह अपने हृदय के सच्चे प्रेम की शान में दी हुई, प्रथम आध्यात्मिक दावत के अवसर पर उसकी लटों में आभूषण की तरह सजने वाले उन पीले फूलों को नहीं खा सकी।

साढ़े सात बजे पड़ौस के कमरे में रहने वाले मियाँ बीवी लड़ने लगे। ऊपर के कमरे में रहने वाले सज्जन बांसुरी से बेसुरी राग अलापने लगे, गैस की रोशनी कुछ कम हो गयी, नीचे गली में कोयले की तीन गाड़ियाँ खाली होने लगीं जिसकी आवाज से ग्रामोफोन की घिसी रिकार्ड को ईर्ष्या हो सकती है, और इधर उधर घूमती बिल्लियाँ दिखाई देनी बन्द हो गयीं। इन सारे लक्षणों से साराह ने जान लिया कि पढ़ने का समय हो गया। उसने एक उपन्यास निकाला जो उस महीने की सबसे

कम बिकनेवाली किताब थी, और अपने बक्स पर पाँव फैलाकर उपन्यास के नायक जिरार्ड के साथ घूमने लगी।

बाहर के दरवाज़े की घंटी बजी। मकान मालकिन ने जवाब दिया। साराह, उपन्यास के नायक और नायिका को एक रींछ के डर से पेड़ पर चढ़ी हुई हालत में छोड़कर, कान लगाकर सुनने लगी। ( सच मानिये, आप भी उस हालत में ऐसा ही करते। )

और उसी समय नीचे के कमरे में किसी की बुलन्द आवाज़ सुनाई दी, जिसे सुनते ही साराह किताब को जमीन पर फेंक कर और कहानी के पात्रों को रींछ के भरोसे छोड़कर दरवाजे की तरफ भागी।

आपने कल्पना करली होगी। जैसे ही वह सीढ़ियों के सिरे पर पहुँची उसका किसान प्रेमी, तीन तीन सीढ़ियाँ फाँदता हुआ, ऊपर आया और उसे अपनी बाहों में समेटते हुए आलिंगन में कस लिया।

साराह चीखी, "तुमने मुझे चिट्ठी क्यों नहीं लिखी, बोलो क्यों नहीं?"

उसके प्रेमी ने जवाब दिया, "न्यूयार्क बहुत बड़ी जगह है, साराह! एक सप्ताह पहिले मैं गांव से आया और तेरे पुराने पते पर गया। मुझे मालूम हुआ कि गुरुवार को तू वहाँ से चली गयी। इससे कुछ सन्तोष हुआ क्योंकि इससे शुक्रवार के बुरे शकुन की संभावना तो निकल गयी। पर उसी क्षण से मैंने तुझे कहाँ कहाँ नहीं ढूँढ़ा।"

साराह ने दृढ़ता से कहा, "मैंने तो चिट्ठी लिखी थी।"

"मुझे नहीं मिली।"

"तो फिर तुमने मुझे ढूँढ़ा कैसे?"

युवक किसान के मुख पर वसन्त की आभा-सी मुस्कराहट छा गयी और वह बोला, "आज शाम को पासवाले शूलनबर्ग के होटल में मैं खाना खाने गया। कोई पसन्द करे या न करे पर मुझे इन दिनों में हरी सब्जियाँ अच्छी लगती हैं। करीने से टाइप किये हुये मेनू कार्ड में मैं अपनी मनपसन्द चीज़ें ढूँढ़ रहा था। बन्द गोभी के बाद की चीज़ का नाम पढ़ते ही मैं उछल पड़ा और होटल के मालिक के पास भागा। उसने मुझे तेरा पता बताया।"

साराह आनन्दपूर्वक बोली, "हाँ, हाँ, मुझे अच्छी तरह याद है कि बन्द गोभी के बाद की चीज़ थी – सरसों का साग।"

फ्रेंकलिन ने कहा, "तेरे टाइपरायटर से 'व' अक्षर कुछ टेढा और पक्ति के ऊपर उठा हुआ लिखा जाता है उसे मै खूब जानता हूँ और दुनियाँ मे कही भी पहचान सकता हूँ।

साराह ने आश्चर्यचकित होकर कहा, "लेकिन 'सरसो के साग' मे 'व' अक्षर तो कही नही आता।"

उस नौजवान ने अपनी जेब से मेनू कार्ड निकाला और उसकी एक पक्ति की तरफ इशारा किया।

साराह ने उसी दोपहर को टाइप किये हुए पहले मेनू कार्ड को पहचान लिया। उसके दाहिनी ओर के ऊपरी सिरे पर वह धब्बा अब तक दिखाई दे रहा था जहाँ उसकी आँख से एक आँसू टपक पडा था। परन्तु मेनू के उस स्थान पर जहाँ उसे 'सरसो के साग' की मद टाइप करनी थी वहाँ उन सुनहरे फूलो की सुखभरी याद मे खोई हुई उसकी ऊँगलियो नें कुछ विचित्र बात ही टाइप कर दी थी।

बन्द गोभी और भरवाँ मिर्च के बीच मे टाइप किया हुआ था,

"उबाले हुए अडों के साथ, प्रिय वाल्टर"।

# हरा दरवाजा

कल्पना कीजिये कि खाने के बाद, ब्राडवे पर चहलकदमी करने और सिगार पीने के लिए आपको दस मिनिट का समय मिला है और आप कोई मनोरजक दुखान्त नाटक या कोई गम्भीर नौटकी मे से किसी एक को देखने का विचार कर रहे है। एकाएक आपकी बाँह पर किसी का हाथ आ पडे। जैसे ही आप घूमे, रूसी सेबल का बढिया कोट पहिने, हीरे के अलंकारों से जगमगाती एक सुन्दरी की मदभरी आँखों से आपकी आँखें चार हो जायँ। जल्दी से वह आपके हाथ में एक गरमागरम मक्खन लगी रोटी थमा दे, जेब से एक छोटी-सी कैंची निकाल कर आपके ओवरकोट

का दूसरा बटन काट ले, अर्थपूर्ण स्वर में एक ही शब्द 'चोकोन' बोले, और मुड़मुड़ कर भयभीत नज़र से पीछे देखती हुई पास की गली में गायब हो जाय, तो यह एक अद्भुत घटना हुई।

पर, क्या आप इसे इसी ढंग से स्वीकार करेंगे ? शायद नहीं। आप व्याकुलता से झेंप जायेंगे और रोटी को वहीं फेंक कर, कटे हुए बटन के रिक्तस्थान को उंगली से टटोलते, ब्राडवे पर आगे बढ़ जायेंगे। यदि आप उन सुखी जीवों में से नहीं हैं जिनकी रोमानी वृत्ति अभी तक मरी नहीं है, तो आप यही करेंगे।

सच्चे साहसिकों की दुनियाँ में हमेशा कमी रही है। किताबों में जिनका साहसिकों के रूप में वर्णन किया जाता है, वे दरअसल व्यापारी हैं, जिन्होंने कुछ नये तरीके खोज निकाले हैं। क्योंकि वे सुनहरी ऊन, पवित्र मूर्तियाँ, खजाने, ताज, कीर्ति या सुन्दरियों के हृदय जैसी आवश्यक चीजें ढूँढ़ने जाते हैं। सच्चा साहसी तो निस्वार्थ और निरुद्देश्य रहकर अनजाने भविष्य का आगे बढ़कर मुकाबला करता है। वर्षों बाद घर लौटने वाला, बाइबिल की कहानी का उड़ाऊ-खाऊ लड़का इसका सुन्दर उदाहरण है।

वीर और शानदार, लेकिन नकली साहसिकों की तो दुनियाँ में कमी नहीं। ज़ेहाद से लगाकर पेलीसेद की लड़ाइयों तक ऐसे वीरों के वृत्तान्त से इतिहास और कथाओं के पन्ने भरे पड़े हैं। इनके सहारे ऐतिहासिक कथाकारों का व्यापार भी खूब चला है। पर इनमें से प्रत्येक वीर के सामने कोई न कोई प्रलोभन अवश्य था। किसी को ध्येय प्राप्त करना था, किसी को स्वार्थ-सिद्धि करनी थी, किसी को जीत कर दिखाना था, किसी को आकांक्षाएँ पूरी करनी थीं, किसी को नाम अमर करना था और किसी को इनाम जीतना था। सारांश यह है कि इनमें से कोई भी साहस का सच्चा पुजारी नहीं था।

बड़े शहरों में रोमांस और साहस की जोड़ी अपने पुजारियों की खोज में घूमती ही रहती है। बाजारों में घूमते हुए हमारी उससे कई बार मुठभेड़ हो जाती है और वह हमारी तरफ देखकर अनेक रूपों में चुनौती देती है। एकाएक न जाने क्यों हम ऊपर देखते हैं और खिड़की से झांकती हुई हमें कोई ऐसी सूरत दिखाई दे जाती है जो हमारी अंतरंग तस्वीरों के प्रदर्शन-गृह से आयी लगती है; किसी सुनसान सड़क पर भय और पीड़ा से भरी एक चीख किसी बन्द

और डरावने मकान से सुनाई पड़ती है। हमारा कोचवान हमें चिरपरिचित स्थान पर न ले जाकर किसी अपरिचित द्वार के सामने ला खड़ा करता है जहाँ हमारा मुस्करा कर स्वागत किया जाता है; भाग्य की किसी ऊँची खिड़की से उड़ा हुआ एक कागज़ का लिखावट भरा टुकड़ा हमारे पैरों के पास आ गिरता है; भीड़ में जाते हुए अजनबियों की तरफ हम द्वेष, प्यार या भयपूर्ण दृष्टि से देखते हैं; वर्षा की एक झड़ी में छाता खोलते ही हम किसी चन्द्रमुखी या मृगनयनी को अपने पास खड़ी पाते हैं; हर मोड़ पर रूमाल गिरते हैं; उँगलियाँ संकेत करती हैं; आँखों से इशारे होते हैं; और रोमानी साहस की खोई हुई, एकाकी, मस्त, रहस्यमय, खतरनाक और बदलती हुई कुञ्जी हमारी उँगलियों में आ अटकती है।

लेकिन हममें से बहुत कम लोग इस चुनौती को स्वीकर करते हैं। हम रूढ़ियों के बन्धन में बुरी तरह जकड़े हुए हैं। हम आगे निकल जाते हैं और एक दिन जब इस नीरस जीवन का अन्त समीप आ जाता है, तब सोचते हैं कि हमारा धुँधला रोमांस एक या दो विवाह, तिजोरी में सम्हाल कर रखी हुई सैटिन की कोई यादगार, और झगड़ालू श्रीमतीजी से जीवन भर की तकरार तक ही सीमित रहा है।

रूडोल्फ स्टीनर एक सच्चा साहसी था। शायद ही कोई ऐसी साँझ बीती हो जब वह अपने मकान से किसी अप्रत्याशित और असाधारण घटना की खोज में न निकला हो। उसकी राय में जीवन की सबसे रोचक वस्तु वह थी जो किसी भी चौराहे पर पड़ी मिल सकती थी। कभी-कभी भाग्य को ललचाने की उसकी उत्सुकता, उसे विचित्र परिस्थिति में पटक देती थी। दो बार उसने थाने में रातें काटीं। बार-बार वह अपने को चालाक धूर्तों से ठगा हुआ पाता। एक आकर्षक प्रलोभन की कीमत उसने अपनी घड़ी और बटुआ देकर चुकायी। परन्तु साहस के अजय तूणीर से फेंकी गयी हर चुनौती को वह उतने ही दुर्जय उत्साह से स्वीकार करता रहा।

एक शाम को रूडोल्फ शहर के मध्यभाग की गलियों में घूम रहा था। सड़क दो प्रकार के मनुष्यों के प्रवाह से भरी हुई थी; एक वे जो घर जाने को आतुर थे और दूसरे वे, जो होटलों के तड़क-भड़क वाले जीवन से आकर्षित होकर घर छोड़ निकल पड़े थे। हमारा यह नौजवान साहसिक जो सुन्दर दिखाई देता था, इस समय आराम से घूम रहा था। दिन भर वह एक दुकान में काम करता था। अपनी नेकटाई में वह साधारण पिन के

बजाय पुखराज से जड़ी, एक चेन लगाता था। एकबार उसने किसी पत्रिका के सम्पादक को अपनी राय लिखते हुए बताया था कि मिस लिबी की लिखी हुई " जूनी की प्रेमपरीक्षा " नामक पुस्तक ने उसके जीवन को सबसे अधिक प्रभावित किया था।

चलते-चलते फुटपाथ पर काँच की अलमारी में सजे हुए नकली दाँतों की भयानक कड़कड़ाहट ने उसका ध्यान किसी होटल की ओर आकर्षित किया। परंतु गौर से देखने पर उसे मालूम हुआ कि पास ही के दरवाज़े पर किसी दंत-चिकित्सक का जगमगाता हुआ बोर्ड लगा है। लाल कसीदे का भड़कीला कोट, पीली पतलून और फौजी टोपी पहिने एक महाकाय नीग्रो पास ही खड़ा हुआ आते-जाते लोगों को सावधानी से कुछ परचे बाँट रहा था है।

दंत-चिकित्सक के विज्ञापन का यह ढंग बहुत प्रचलित था। प्रायः वह इस प्रकार के परचों को लिए बिना ही आगे बढ़ जाया करता था, परंतु आज रात को उस नीग्रो ने उसके हाथ में एक परचा इतनी चालाकी से थमा दिया कि उसके इस सफल प्रयास पर मुस्कराते हुए, उसे वह स्वीकार करना ही पड़ा। कुछ कदम आगे बढ़कर उसने परचे को लापरवाही से पढ़ा। आश्चर्य से उसे उलटा-पलटा और दिलचस्पी से फिर पढ़ा। परचा एक तरफ से कोरा था। दूसरी ओर स्याही से केवल दो शब्द लिखे थे–" हरा दरवाज़ा "। इतने में दो-चार कदम आगे चलते हुए एक व्यक्ति ने नीग्रो द्वारा दिया गया परचा रास्ते पर फेंका। रूडोल्फ ने उसे उठा लिया। उस पर दंत-चिकित्सक का नाम, पता और उसके व्यवसाय की अन्य सामान्य जानकारी छपी थी–बिना दर्द दाँत उखड़वाने, नकली दाँत लगवाने या दाँतों में सोना भरने की व्यवहारिक बातें।

पियानों का वह साहसी सेल्समैन अगले मोड़ पर रुककर विचार में पड़ गया। वह सड़क लाँघकर दूसरी ओर चला गया। कुछ कदम पीछे लौटा, और फिर से सड़क पार करके उसी फुटपाथ पर आकर भीड़ में शामिल हो गया। दूसरी बार उस नीग्रो के सामने से जाते हुए, रूडोल्फ ने उसके हाथ से परचा इतनी लापरवाही से लिया जैसे उसकी ओर उसका ध्यान ही न हो। दस कदम आगे बढ़कर उसने परचे को जाँचा। पहिले परचे के जैसी ही लिखावट में उस पर भी " हरा दरवाजा " लिखा हुआ था। राहगीरों द्वारा सड़क पर फेंके गये दो-चार दूसरे परचे भी सड़क पर पड़े हुए थे।

रूडोल्फ ने उन्हे उठाकर पढा। हर एक पर दत-चिकित्सक का विज्ञापन ही छपा हुआ था।

साहस के वैताल ने अपने पक्के अनुयायी रूडोल्फ को शायद ही कभी दुबारा उत्साहित किया हो। परन्तु आज वह दो बार इशारा कर चुका था और इससे रूडोल्फ की तृष्णा जागती ही।

कडकडाते दाँतो की अलमारी के पास, जहाँ वह नीग्रो खडा था, रूडोल्फ वापिस आया। इसबार सामने से गुजरते समय उसे परचा नही दिया गया। अपने भडकीले और हास्यास्पद कपडो के बावजूद भी, उस नीग्रो की एक स्वाभाविक जगली शान थी। खडा हुआ वह किसी को तो नम्रता से परचा थमा देता था और किसी को बिना परेशान किये आगे बढ जाने देता था। हर आधे मिनट के बाद वह कर्कश और अस्पष्ट स्वर मे कुछ गुनगुनाता था जो किसी मोटरगाडी और पक्के गाने के सम्मिलित स्वर-सा प्रतीत होता था। इस बार उसने रूडोल्फ को परचा नही दिया। इतना ही नही, बल्कि अपने चमकते और भारी भरकम, काले चेहरे से उसकी ओर घृणा सूचक तिरस्कार से देखा।

इस दृष्टि ने जैसे रूडोल्फ के साहस पर डक मार दिया हो। उस नजर मे उसने एक मूक अभियोग पाया जो उसे अयोग्य प्रमाणित कर रहा था। परचे पर लिखे हुए उन शब्दो का अर्थ, चाहे कुछ भी हो, परन्तु उस काले हब्शी ने तो इतनी भीड मे से उसे ही दो बार इस योग्य माना था। और अब उसीने उसे इस पहेली को सुलझाने के लिए साहस और कल्पना-शक्ति मे कमजोर करार दे दिया।

भीड से दूर खडे होकर रूडोल्फ ने उस भवन का सरसरी निगाह से निरीक्षण किया जिसमे उसकी पहेली का हल मिलने की सभावना थी। मकान पाँच मजिल ऊँचा था, जिसके नीचे की मञ्जिल मे एक होटल था।

पहिली मञ्जिल पर, जिसकी खिडकियाँ बन्द थी, कपडे और फरकोट की दुकाने मालूम देती थी। दूसरी पर, जहाँ बिजली का साइन-बोर्ड लगा था, दत-चिकित्सक का दवाखाना था। इससे ऊपर, साइन बोर्डों की भीड थी जिसमे ज्योतिषी, दर्जी, सगीतज्ञ और डाक्टर सभी कुछ थे। इससे भी ऊपर खिडकियों पर पडे हुए कसीदे के पर्दे और खिडकियों मे दिखाई देने वाली दूध की बोतलें, वहाँ पर गृहस्थियो का निवास सूचित कर रही थी।

मकान का निरीक्षण समाप्त करके रूडोल्फ अन्दर घुसा और जल्दी से दो मंज़िल ऊपर चढ़ गया। तीसरी मंज़िल पर वह रुका, जहाँ बरामदे में गैस की दो गंदी लालटेनें जल रहीं थीं—एक दाहिनी ओर पास में ही और दूसरी बाँयी ओर कुछ दूर। पास वाली लालटेन के धुँधले प्रकाश में उसे एक हरा दरवाज़ा दिखाई दिया। एक क्षण के लिए वह दुविधा में पड़ गया। परन्तु तभी उसे परचे बाँटने वाले हब्शी का घृणा-सूचक ताना याद हो आया और आगे बढ़कर उसने उस हरे दरवाज़े पर दस्तक दी।

दरवाज़ा खटखटाने और खुलने के बीच जो कुछ क्षण बीते, उन्हींमें रोमांस की सच्ची आत्मा समायी हुई थी। उस हरे दरवाज़े के पीछे न जाने क्या होगा। जुआरियों का अड्डा, या सूक्ष्म कौशल से शिकार फाँसने को उत्सुक ठगों की टोली, या साहस की पुजारिन सुन्दरता, जो न्यौछावर होने की बाट जोह रही है, या खतरा, या मौत, या प्रेम, या निराशा, या मज़ाक—इनमें से कुछ भी उस डरी हुई खटखटाहट का स्वागत कर सकती थी।

कमरे में एक हल्की सरसराहट हुई और धीरे से दरवाज़ा खुला। म्लान मुख वाली एक लड़की जो बीस साल की भी नहीं लगती थी, सामने डगमगाती हुई खड़ी हो गयी। उसने चटखनी खोली और दुर्बलता से झुकी हुई, वह एक हाथ से सहारा टटोलने लगी। रूडोल्फ ने उसे थाम लिया और उसे दीवार के पास पड़े हुए पुराने पलंग पर लिटा दिया। दरवाज़ा बन्द कर के, लालटेन की टिमटिमाती हुई रोशनी में उसने कमरे का निरीक्षण किया। कमरा साफ तो था पर जैसे चरम दारिद्र की कहानी कह रहा था।

लड़की चुपचाप पड़ी थी, जैसे बेहोश हो। उत्तेजित होकर वह कमरे में चारों ओर कोई लकड़ी का पीपा ढूँढने लगा। क्योंकि उसने कहीं सुना था कि बेहोश व्यक्ति को लकड़ी के पीपे पर लिटाकर घुमाने से—पर, नहीं, नहीं,—यह उपाय तो डूबने वालों के लिए होता है। वह अपने हैट से पंखा झलने लगा। यह उपाय सफल हुआ क्योंकि उसकी टोपी का सिरा लड़की की नाक पर लगा और उसने आँखें खोलीं। उसे प्रतीत हुआ कि उसके हृदय की अंतरंग तस्वीरों की प्रदर्शनी में इसी एक चेहरे की कमी थी। निश्चल नीली आँखें, छोटी और नुकीली नाक, मटर की बेल के समान घुँघराले भूरे बाल,—उसकी रोमानी वृत्ति का इससे सुन्दर क्या पुरस्कार

मिल सकता था! लेकिन लड़की का चेहरा दयनीय, दुबला और फीका था।

लड़की बिना हिले-डुले उसकी ओर देखकर मुस्करा दी।

उसने धीमे से पूछा, "क्या मैं बेहोश हो गयी थी? और ऐसी हालत में कौन नहीं होगा? तीन दिन तक बिना खाये रहकर तो देखो, आपको मालूम पड़ेगा।"

उछलकर रूडोल्फ बोला, "अरे राम! मैं वापिस आऊँ तब तक ठहरना।"

हरे दरवाजे से बाहर भागता हुआ वह सीढियाँ उतरा। बीस मिनट में ही वह वापिस आ गया और दरवाजे को उसने पाँव से खटखटाया, क्योंकि उसके दोनों हाथ होटल और मोदी के यहाँ मिलने वाली अनेक चीजों से भरे हुए थे। उसने सब चीजें टेबल पर रखीं—रोटी और मक्खन, माँस, केक, समोसे, अचार, ओयस्टर, भुनी हुई मुर्गी, दूध की बोतल और कुछ गरमागरम चाय।

बौखलाता हुआ रूडोल्फ बोला, "यह बात तो कुछ समझ में नहीं आयी। बिना खाये रह जाना! यह तमाशा बन्द करो। खाना तैयार है।" हाथ का सहारा देकर उसने उसे एक कुर्सी पर बिठाया और पूछा, "चाय डालने के लिए कप है?"

लड़की ने जवाब दिया, "उस खिड़की के पास तावदान पर रखे हैं।"

कप लेकर वह लौटा, तब उसने देखा कि लड़की की आँखें आनन्द के अतिरेक से चमक रही हैं और स्त्री-सुलभ सहजज्ञान से वह दोना खोलकर सौंफ के अचार के टुकड़े को मुँह में डालने ही वाली है। उसने हँसते हुए उसके हाथ से अचार का टुकड़ा छीन लिया और कप में दूध भरते हुए आदेश दिया, "पहिले इसे पियो, फिर कुछ चाय मिलेगी, और फिर मुर्गी और अगर कल तक तबियत ठीक हो गयी तो अचार मिलेगा। और, अब अगर मुझे अपना महमान मान लो तो हम दोनों ही खाना शुरू करें।"

दूसरी कुर्सी खींचकर वह बैठ गया। चाय पीने से लड़की की आँखों में रौनक और चेहरे पर कुछ लाली आ गयी थी। कई दिनों के भूखे किसी जंगली जानवर की आतुरता से वह खाने पर झपटी। उस नौजवान की उपस्थिति और सहायता को उसने एक सहज-सी चीज़ माना। यह बात नहीं कि वह औपचारिकता की कीमत नहीं जानती थी परन्तु

उसकी घनीभूत पीड़ा ने इस समय उसके मन में कृत्रिम आडम्बर के स्थान पर मनुष्यता को अपनाने का अधिकार दे दिया था। परन्तु, शक्ति और आराम पाकर उसे औपचारिकता का भी ध्यान आया और उसने अपनी कहानी सुनाना आरम्भ किया। शहर के जीवन की लाखों कहानियों में से यह भी एक थी जिसे सुनते-सुनते जम्हाई आने लग जाती है। कम तनखाह पर दुकानों में काम करने वाली लड़की की यह गाथा थी। कमाई में से भी जुर्माने की रकम कटकर दुकानदारों का नफा बढ़ाती थी। बीमारी के कारण हुई गैरहाजिरी; नौकरी का छूट जाना, गहरी निराशा, और हरे दरवाज़े पर इस साहसी नौजवान की दस्तक, यही उसकी रामकहानी थी।

परन्तु रूडोल्फ को यह कहानी इलियड की कथा या "जूनी की प्रेम-परीक्षा" के संकट-सी अनन्त लगी।

वह बोला, "तुम और यह पीड़ा!"

लड़की सहमकर बोली, "हाँ, था तो कुछ मुश्किल ही।"

"और शहर में तुम्हारा कोई सम्बन्धी या मित्र भी नही?"

"नहीं, कोई नहीं।"

कुछ देर रुककर रूडोल्फ ने कहा, "मैं भी इस संसार में बिल्कुल अकेला हूँ।"

लड़की ने तुरन्त जवाब दिया, "यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई।" अपने एकाकीपन से इस लड़की को प्रभावित जानकर उसे आनन्द हुआ। एकाएक उसकी पलकें झँप गयीं और एक निश्वास छोड़कर वह बोली, "मुझे जोर से नींद आ रही है।"

रूडोल्फ ने अपना टोप उठा लिया। "तो मैं इजाजत लूँ, एक रात की भरपूर नींद तुम्हारे लिए अच्छी रहेगी।"

उसने हाथ आगे बढ़ाया जिसे अपने हाथ में लेती हुई लड़की बोली, "नमस्ते"; परन्तु उसकी आँखों में एक प्रश्न इतनी स्पष्टता, निश्चलता और करुणा से प्रकट हो रहा था कि रूडोल्फ को उसका उत्तर शब्दों से देना पड़ा।

"हाँ, हाँ, तुम्हारी तबियत सम्हालने के लिए मैं कल ज़रूर आऊँगा। इतनी आसानी से पिंड नहीं छुड़ा सकोगी।"

तभी, जैसे रूडोल्फ के आने के मार्ग से उसका आना ही अधिक महत्त्व की बात हो, लडकी ने पूछा "मेरा दरवाजा खटखटाने की आपको प्रेरणा कैसे हुई ?"

एक क्षण तक उसने लडकी को देखा। उसे परचो की बात याद आ गयी और एकाएक उसके हृदय मे ईर्ष्या से जलन पैदा हुई । उसने सोचा कि यदि वे परचे किसी अन्य साहसी के हाथ मे पडते तो क्या होता ?

तुरन्त उसने निश्चय कर लिया कि उसके सामने यह रहस्य कभी नहीं खुलना चाहिये। दु ख के अतिरेक से वह जिस विचित्र युक्ति को अपनाने को मजबूर हुई थी उसे वह जानता है, यह बात वह उसे कभी नही बतायगा।

उसने कहा, "हमारा एक कारीगर इसी मकान मे रहता है। मैने तुम्हारा दरवाजा गलती से खटखटा दिया।"

द्वार बन्द होने से पहिले उसे जो अन्तिम वस्तु दिखाई दी, वह उस लडकी की मुस्कराहट थी।

जीने के सिरे पर रुककर उसने चारो ओर जिज्ञासापूर्वक देखा । वह बरामदे के दूसरे सिरे तक गया और लौटकर ऊपर की मजिल पर पहुँचा। वहाँ भी उसने अपनी उलझन भरी जाच-पडताल जारी रखी। उस मकान के हर दरवाजे का रग हरा था।

आश्चर्य से वह नीचे उतरा और बाहर आया। वह विचित्र हब्शी अब भी वही खडा था। दोनो परचे हाथ मे लिए रूडोल्फ उसके सामने जा खडा हुआ और पूछा, "आखिर ये परचे तुमने मुझे क्यो दिये थे, और इनका मतलब क्या है।"

अपने मालिक, दत-चिकित्सक की कला का सर्वश्रेष्ठ विज्ञापन करते हुए, अपने सफेद दाँतो को चमकाता हुआ वह हब्शी गली की तरफ इशारा करता हुआ बोला, "वहाँ, साब! पर पहिले शो के लिए आप कुछ लेट हो गये है।"

उसके सकेत की दिशा मे देखते हुए रूडोल्फ को एक थियेटर के दरवाजे पर लगा हुआ रोशनी से जगमगाता एक बोर्ड दिखाई दिया जिस पर नये नाटक का नाम लिखा हुआ था, "हरा दरवाजा"।

हब्शी बोला, "लोग कहते है कि नाटक एकदम अच्छा है। थियेटर के मैनेजर ने मुझे एक डालर इनाम भी दिया है और कहा है कि

डाक्टर साहब के परचों के साथ मैं नाटक के विज्ञापन भी बाँट दूँ। क्या मैं आपको डाक्टर साब वाला परचा भी दूँ ? "

रूडोल्फ अपने मकान के पास वाले होटल में बीयर का एक गिलास और सिगार पीने के लिए रुक गया। सिगार सुलगाकर बाहर निकलते हुए उसने कोट के बटन बन्द किये, टोप को कुछ पीछे खिसकाया और नुक्कड़ के बिजली के खम्भे को सम्बोधन कर कहने लगा, "यह तो मानना ही पड़ेगा कि मुझे फाँसकर उस लड़की से मिला देने में भाग्य का ही हाथ था।"

इस सारांश के सहारे यह कहा जा सकता है कि इस परिस्थिति में रूडोल्फ स्टीनर का स्थान रोमांस और साहस के सच्चे पुजारियों में बहुत ऊँचा है।

# बीस बरस बाद

गश्त लगाता हुआ पुलिसमैन प्रभावपूर्ण ढंग से राजमार्ग की तरफ बढ़ा। यह प्रभाव, प्रदर्शन के लिए न हो कर, स्वाभाविक था, क्योंकि उस समय वहाँ दर्शक बहुत ही कम थे। उस समय रात के सिर्फ दस बजे थे, लेकिन बरसात से भीगी, ठंडी हवा के झोंकों ने सड़कों को निर्जन बना दिया था।

घरों के दरवाजों को जाँचता हुआ, अपने डराडे को विभिन्न कलात्मक तरीकों से घुमाता हुआ और शान्त, निर्जन सड़क पर कभी कभी अपनी सतर्क दृष्टि फेंकता हुआ, वह अफसर अपने हट्टेकट्टे शरीर और रौब के कारण 'शान्ति के रक्षक' की जीती जागती प्रतिमा-सा दिखाई देता था। इस बस्ती में जल्दी ही सन्नाटा छा जाता। कहीं कहीं किसी सिगार-स्टोर या होटल की खिड़कियों में से प्रकाश दिखाई दे जाता था, वर्ना अधिकतर व्यापारियों की दुकानें थीं, जो कभी की बन्द हो चुकी थीं।

सड़क के अधबीच आ कर पुलिसमैन ने सहसा अपनी चाल धीमी कर दी। एक लोहे के सामान की दुकान के अँधेरे दरवाज़े में एक आदमी कुछ झुका हुआ दिखाई दिया, जिसके मुँह में बिन जली सिगार थी। पुलिसमैन के पास आते ही वह आदमी जल्दी से बोल उठा।

उसने विश्वास दिलाते हुए कहा, "कोई बात नहीं—अफसर! मैं एक दोस्त की राह देख रहा हूँ। बीस साल पहिले हमने एक दूसरे से मिलने का वादा किया था। आपको अजीब लगता होगा, है न? खैर, मैं अभी समझा कर आपको विश्वास दिला दूँगा कि मामला बहुत सीधा-सा है। बीस वर्ष पहिले, जहाँ यह स्टोर है, वहाँ एक रेस्तरां था—बिग जो ब्रेडी का रेस्तरां।"

पुलिसमैन ने कहा "हाँ, वह पाँच साल पहिले तक भी था। उसके बाद वह मकान गिरा दिया गया।"

दरवाज़े में खड़े आदमी ने दियासलाई सुलगा कर, अपनी सिगरेट जलायी। उसके प्रकाश में एक तीखी आँखों वाला, पीला, चौड़ा चेहरा दिखाई दिया जिसकी दाहिनी भौंह के नीचे घाव का एक सफेद निशान था। उसकी टाई की पिन में बड़ा सा हीरा जड़ा हुआ था।

उस आदमी ने कहा, "ठीक बीस बरस पहिले, ऐसी ही रात में बिग जो ब्रेडी के रेस्तरां में मैंने जिम्मी वेल्स के साथ खाना खाया था, जो मेरा पक्का दोस्त और दुनियाँ का सबसे अच्छा आदमी था। हम दोनों ही न्यूयार्क में दो भाइयों की तरह साथ साथ छोटे से बड़े हुए थे। मैं अठारह बरस का था और जिम्मी बीस का। दूसरे दिन सवेरे ही मैं धन कमाने के लिए पश्चिम की तरफ रवाना होने वाला था। लेकिन जिम्मी को न्यूयार्क कौन छुड़वाता? वह मानता था कि न्यूयार्क ही दुनियाँ में एक मात्र रहने योग्य जगह है। खैर, तो उस रात हमने निश्चय किया कि उस तारीख और उस समय से ठीक बीस बरस बाद, चाहे हम किसी भी परिस्थिति में हों और चाहे हमें कितनी ही दूर से चलकर आना पड़े, हम इसी स्थान पर मिलेंगे। हमारा विश्वास था कि बीस बरस में चाहे जो हो, हम अपना अपना भाग्य बना सकेंगे और धन भी कमा लेंगे।"

पुलिसमैन बीच ही में बोल उठा, "बात बड़ी दिलचस्प लगती है। दो मुलाकातों के बीच में समय तो आप लोगों ने काफी रखा। क्या, जाने के बाद तुम्हें अपने दोस्त का कोई समाचार भी मिला?"

"हाँ, कुछ समय तक तो हम दोनों में पत्रव्यवहार चलता रहा, फिर एकाध साल बाद हम दोनों ने एक दूसरे की टोह लेना छोड़ दिया। आप जानते हैं, पश्चिम की दुनियाँ बहुत बड़ी है और मैं बहुत उत्साह से दौड़धूप करता रहा। लेकिन मुझे विश्वास है कि अगर जिम्मी जिन्दा है, तो वह मुझे आज जरूर मिलेगा, क्योंकि जिम्मी से ज्यादा सच्चा और निष्ठावान आदमी और कोई हो नहीं सकता। वह कभी नहीं भूलेगा। मैं एक हज़ार मील से इस दरवाज़े पर बाट जोहने के लिए आया हूँ और अगर मेरा साथी आ गया, तो मेरा आना सार्थक हो जायगा।"

उस आदमी ने जेब से एक सुन्दर घड़ी निकाली, जिसके ढकन पर छोटे-छोटे हीरे जड़े हुए थे।

उसने बताया, "दस बजने में तीन मिनट बाकी है। जब हम उस रेस्तरां के दरवाज़े से बिछुड़े थे तब ठीक दस बजे थे।"

पुलिसमैन ने पूछा, "पश्चिम में तुम्हें काफी सफलता मिली लगती है। है न?"

"जरूर, जरूर! मुझे आशा है कि जिम्मी को मुझसे आधी सफलता भी मिली होगी तो वह सुखी होगा। आदमी अच्छा तो बहुत था, पर था कोल्हू का बैल। इस दौलत को कमाने में मुझे दुनियाँ के बड़े से बड़े मक्कारों और ठगों का मुकाबला करना पड़ा। न्यूयार्क में आदमी ढर्रे में पड़ जाता है। अपने उत्साह पर शान चढ़ाने के लिए तो पश्चिम में जाइये।"

पुलिसमैन ने अपना डंडा घुमाया और वह एक दो कदम आगे बढ़ गया।

"मैं तो गश्त पर जा रहा हूँ। उम्मीद है, तुम्हारा दोस्त समय पर आ जायगा। क्या तुम ठीक दस बजे तक उसकी राह देखोगे?"

दूसरे ने कहा, "नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं। कम से कम आधे घण्टे तक तो उसकी बाट देखूँगा ही। अगर जिम्मी दुनियाँ में कहीं भी जिन्दा है तो वह उस समय तक जरूर आ पहुँचेगा।"

पुलिसमैन ने विदा ली और दूसरे दरवाज़ों को टटोलता हुआ अपनी गश्त पर चला गया।

भीनी भीनी फुहार पड़ रही थी और मन्द बयार के बदले हवा अब कुछ तेज़ी से बह रही थी। उस मुहल्ले से इनेगिने, उदास

राहगीर चुपचाप, अपने ओवरकोट के कालर से कान ढँके और जेबो मे हाथ डाले, तेज कदमो से आगे बढे जा रहे थे। और उस दुकान के दरवाजे मे, बचपन के दोस्त से मिलने का हास्यास्पद और अनिश्चित-सा वादा पूरा करने के लिए, हजार मील दूर से आया, वह व्यक्ति सिगार पीता हुआ बाट जोह रहा था।

लगभग बीस मिनट तक वह राह देखता रहा। इतने मे ही सडक की दूसरी ओर से ओवरकोट के कालर को कानो तक उठाये, एक लम्बा सा आदमी आया। वह, राह देखने वाले उस आदमी के सीधा पास आ खडा हुआ।

आशका से उसकी ओर देखता हुआ आगन्तुक बोला "कौन बॉब ?"

दरवाजे मे खडे आदमी ने कहा, "तुम, कौन ? जिम्मी वेल्स ?"

अपने दोनो हाथो से उसके दोनो हाथो को जोर से हिलाता हुआ, आगन्तुक हर्ष से कह उठा, "खूब मिले यार! सचमुच ही बॉब है! मुझे विश्वास था कि यदि तू जिन्दा होगा तो मुझे यहाँ जरूर मिलेगा। बताओ तो बीस बरस बीत गये। कितना लम्बा अरसा होता है! अब तो वह रेस्तरा भी नही रहा। काश वह यही होता तो हम उसी मे साथ बैठ कर खाना खाते। कहो, दोस्त! पश्चिम ने तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव किया ?"

"क्या कहने है! मैने जो माँगा सो पाया। लेकिन जिम्मी, तू तो बहुत बदल गया! तू तो मुझे दो या तीन इंच ज्यादा लम्बा लग रहा है!"

"हाँ, बीस साल का होने पर मेरी लम्बाई कुछ बढ गयी।"

"खैर, न्यूयार्क मे गाडी कैसी चल रही है तुम्हारी ?"

"साधारण। बस, एक दुकान में नौकरी करता हूँ। चल बॉब, हम किसी अच्छी जगह चल कर बैठें और बीते हुए दिनों की कुछ बाते करे।"

हाथ में हाथ डाले, दोनो आगे बढे। पश्चिम से आया हुआ वह आदमी जिसका अहम सफलता के कारण वाचाल हो उठा था, अपने सौभाग्य की कहानी सुनाने लगा। ओवरकोट मे सिकुडा हुआ उसका मित्र दिलचस्पी से सुन रहा था।

नुक्कड पर बिजली की रोशनी से जगमगाता हुआ एक होटल था। उसके प्रकाश मे आते ही दोनों ने एक साथ घूमकर एक दूसरे का चेहरा देखा।

पश्चिम से आनेवाला मनुष्य एकाएक सहम गया और उसने अपने साथी का हाथ झटक दिया।

वह घुड़क कर बोला, "तुम जिम्मी वेल्स नहीं हो सकते। माना, बीस वर्ष बहुत लम्बा समय होता है, लेकिन इतना लम्बा नहीं कि किसी की नुकीली नाक को चपटी बना दे।"

लम्बे आदमी ने कहा, "सच है; परन्तु इतना समय, कभी कभी एक सज्जन को दुर्जन तो बना सकता है! श्रीमान, आप पिछले दस मिनट से मेरी हिरासत में हैं। शिकागो की पुलिस को शंका है कि आपका पता इस शहर में लग सकता है, और वे आपसे मिलना चाहते हैं। अब आप चुपचाप मेरे साथ चलने की कृपा करेंगे? अच्छा तो चलिये। लेकिन हम थाने में पहुँचे उससे पहिले इस चिट्ठी को पढ़ लीजिये। जमादार जिम्मी वेल्स ने आपके लिए भेजी है।"

बॉब ने वह चिट्ठी खोल कर पढ़ी। आरम्भ में उसका हाथ स्थिर रहा, परन्तु चिट्ठी पूरी करते करते वह काँपने लगा। चिट्ठी बहुत संक्षिप्त थी :

प्रिय बॉब,

वादे के अनुसार मैं यथासमय नियत स्थान पर उपस्थित था। सिगार सुलगाने के लिए जब तूने दियासलाई जलायी तब मैंने देखा कि यह चेहरा तो वही है, जिसकी तलाश में शिकागो की पुलिस कई दिनों से परेशान है। न जाने क्यों, मैं खुद इस काम को न कर सका। इसलिए मैंने थाने में जा कर एक खुफिया को यह काम करने भेजा है।

तुम्हारा,

जिम्मी

# सजा हुआ कमरा

शहर के पश्चिमी भाग में, लाल ईंटों वाले मकानों के मुहल्ले में, ऐसे लोग बसते हैं, जो स्वभाव से बेचैन, अस्थिर और समय के समान पलायनशील होते हैं। बेघर—पर जिनके सैकड़ों घर ! चिरगतिमान वे एक कमरे से दूसरा कमरा बदलते रहते हैं। निवास की तरह उनके दिल और दिमाग भी हमेशा चलायमान ! 'प्यारे घर' का राग अलापना, डिब्बे में कुलदेवता की मूर्ति लिये घूमना, हाजिर को हुजूर मानना और जहाँ रैन वहीं बसेरा : यही उन लोगों का जीवन होता है।

इसलिए इस मुहल्ले के मकान, जिनमें हजारों लोग रह चुके हैं, अगर हजारों नीरस कहानियाँ सुनायें तो क्या आश्चर्य ! इन घुम्मकड़ों के समूह में यदि कोई रहस्यभरी बात मिल जाये, तो भी क्या आश्चर्य !

एक शाम को अन्धेरा होने के बाद एक नौजवान, इन टूटे-फूटे लाल मकानों की घंटियाँ बजाता हुआ घूम रहा था। बारहवीं बार उसने एक मकान के दरवाजे पर अपना पतला-सा थैला रख कर ललाट और हैट की धूल पोंछी। घंटी की आवाज दूर किसी गहराई में गूँजती हुई सुनाई दी।

यह बारहवाँ मकान था जिसकी घण्टी उसने बजायी थी। किसी अस्वस्थ और पेटू कीड़े-सी दिखाई देने वाली एक बुढ़िया ने दरवाज़ा खोला, जिसे देखकर ऐसा लगता था कि सुपारी को कुतर कुतर कर खोखला करने के बाद अब वह खाये जाने योग्य किरायेदार जीवों की तलाश में है !

नवयुवक ने किराये पर कमरा पाने के सम्बन्ध में पूछताछ की।

मकान मालकिन अपनी खरखरी आवाज़ में बोली, "अन्दर आ जाओ। एक हफ्ते से तीसरी मंजिल पर पिछवाड़े का एक कमरा खाली है। देखना चाहते हो ?"

नौजवान उसके साथ ऊपर गया। बरामदे में छाये हुए अन्धकार को न जाने कहाँ से प्रकाश की धुँधली रेखाएँ आ कर कुछ हल्का कर रही थीं।

धीरे धीरे वे ऊपर चढ़े। जीने पर बिछी हुई दरी इतनी पुरानी थी कि उसे बुनने वाला करघा भी उसे पहिचानने से मना कर देता। उस अन्धेरे, दुर्गन्धयुक्त वातावरण में दरी की हालत, जीने पर चिपकी हुई काई या लील से भी बदतर हो चुकी थी और पाँवों के नीचे कोई प्राणवान वस्तु-सी सरकती मालूम होती थी। जीने के हर मोड़ पर दीवार में छोटे छोटे आले थे। कभी शायद इनमें गमले रखे जाते होंगे, जो उस विषाक्त और गन्दे वातावरण में घुट कर मर गये होंगे। शायद वहाँ सन्तों की मूर्तियाँ रखी गयी होंगी, जिन्हें शैतान और पिशाचों के झुण्ड घसीट कर और भी अधिक गहरे और अंधेरे नरक में ले गये हों, तो कोई आश्चर्य नहीं।

अपनी खरखरी आवाज़ में मकान मालकिन बोली, "यह कमरा है। और यह इतना अच्छा है कि कभी खाली नहीं रहता। पिछली गर्मियों में बड़े रईस लोग इसमें रह चुके हैं जो मुझे किसी तरह की तकलीफ नहीं देते थे और किराया हमेशा पेशगी देते थे। पानी का नल बरामदे के उस सिरे पर है। स्प्राउल्स और मूनी तीन महीने तक इसी कमरे में रहे। वे नाटक में काम करते थे। मिस बेटी स्प्राउल्स—तुमने शायद उसका नाम सुना होगा; लेकिन यह नाम तो उसने स्टेज के लिए रख लिया था। वहाँ सामने सिंगार-दान के ऊपर उनका विवाह सर्टीफिकेट फ्रेम में टँगा रहता था। रोशनी के लिए गैस भी है और कई अल्मारियाँ भी। इस कमरे को हर कोई पसन्द करता है और इसीलिए यह कभी खाली नहीं रहता।"

नौजवान ने पूछा, "क्या तुम्हारे मकान में नाटक में काम करने वाले बहुत लोग रहते हैं?"

"हाँ, आते जाते रहते हैं। मेरे किरायेदारों में से ज्यादातर का सम्बन्ध नाटक से ही है। यह मुहल्ला ही नाटक वालों का है। एक्टर लोग ज्यादा दिनों तक एक जगह नहीं टिकते। वे आते जाते रहते हैं। मुझे तो अपने किराये से मतलब है।"

उसने कमरा किराये पर ले लिया और एक सप्ताह का किराया पेशगी दे दिया। वह बहुत ही थका हुआ था, इसलिए तुरन्त ही कब्जा चाहता था। उसने दाम गिन कर चुका दिये। बुढ़िया ने बताया कि कमरा, मय पानी और तौलियों के एकदम तैयार है।

जैसे ही बुढ़िया वहाँ से जाने को तैयार हुई, उसने शायद हज़ारवीं बार वह प्रश्न पूछ लिया जो हमेशा उसकी जबान पर रहता था, "आपके किरायो-

दारों में मिस एलोइ वाशनर नाम की कोई युवती रही हो—ऐसा याद पड़ता है? जहाँ तक मैं जानता हूँ, वह नाटक में गाने का काम करती है। वह गोरी, दुबली-पतली, सुनहरे बालों वाली, मँझले कद की लड़की है और उसकी बाँई भौंह के नीचे काला मस्सा है!"

"नहीं, मुझे ऐसा कोई नाम याद नहीं। और ये नाटक वाले लोग कमरों की तरह नाम भी तो बार बार बदलते हैं। मैं उनके आने जाने की परवाह नहीं करती और उनके नाम भी नहीं जानती।"

निराशा, हर बार निराशा! इस सवाल को लगातार पूछते हुए पाँच महीने बीत गये, परन्तु हर बार निराशा ही पल्ले पड़ी। दिन भर नाटक के मैनेजरों, ठेकेदारों, संगीत-पाठशालाओं और गायन-मण्डलियों से पूछताछ करना और रात को बेहतरीन नाटकों से लगा कर ऐसी नौटंकियों का प्रेक्षक बन कर घूमना, जहाँ उसे खोज पाने की आशंका मात्र से वह सिहर उठता। जीवन में जिसे सबसे अधिक चाहा था उसी को अब वह खोज रहा था। उसे विश्वास था कि घर से लापता हो जाने के बाद, वह इसी शहर में कहीं रह रही है। यह शहर, एक ऐसे बेबुनियाद, विशाल, कीचड़ के गर्त के समान था जिसके कण हमेशा अदल बदल होते रहते थे; आज जो कण ऊपर दिखाई देते हैं, मुमकिन है वे ही कल गारे में लथपथ किसी गहराई में खो जाँय।

कमरे ने अपने महमान का बनावटी सौजन्य से स्वागत किया—किसी वेश्या की मुँहफट हँसी के समान क्षीण, सूखा और उत्साहहीन। आराम का कृत्रिम आभास देने वाली उसमें कई चीजें थीं—जैसे टूटा-फूटा फर्नीचर, गद्दीदार सोफा—जिसकी किनखाब की खोल तारतार हो गयी थी, दो कुर्सियाँ, दो खिड़कियों के बीच एक दर्पण, पीतल का एक पलँग और फ्रेमों में मँढ़े हुए कुछ सस्ते चित्र।

महमान, संज्ञाहीन-सा कुर्सी पर लुढ़क गया। बेबल के कोलाहलमय टावर की तरह कमरे की गहराई से तरह तरह की आवाजें उठती-सी सुनाई दे रहीं थीं मानो कमरा अपने विभिन्न किरायेदारों की कहानी सुना रहा हो। फटी-पुरानी दरी के बीच में एक रंगबिरंगा कालीन ऐसा दिखाई दे रहा था मानो तरंगित समुद्र के बीच में कोई हराभरा चौकोन टापू हो। भड़कीले रंगों के कागजों से मँढ़ी हुई दीवारों पर उन चित्रों की सस्ती

नकलें लगी हुई थीं, जो इन अभागे आश्रयहीनों का कहीं पीछा नहीं छोड़तीं, जैसे 'यूगेनाट प्रेमी युगल,' 'पहली तकरार,' 'विवाह भोज,' फव्वारे के पास खड़ी रति' आदि। 'एमेज़ोनियन बैले' की किसी अर्धनग्न नर्तकी के दुपट्टे के समान, भड़कीले पर्दे से अँगीठी की शुष्क और नीरस महराब, भद्दे तरीके से ढँकी हुई थी। महराब के ऊपर कुछ टूटा फूटा कबाड़ा पड़ा था, जिसे कमरे के अभागे निवासियों ने किसी बेहतर जगह जाते समय वहीं फेंक दिया था—जैसे टूटे फूटे फूलदान, एक्ट्रैसों की तस्वीरें, दवाई की शीशियाँ या ताश के कुछ पत्ते!

कमरे के पूर्व निवासियों की बारात द्वारा छोड़ी गयी इन निकम्मी चीज़ों ने किसी कूट भाषा के संकेतों की तरह, एक एक कर के अपना महत्व प्रकट करना आरम्भ किया। सिंगारदान के सामने वाला, कालीन का जर्जर हिस्सा यह सुना रहा था कि सुन्दरियों के झुण्ड के झुण्ड यहाँ आ चुके हैं। दीवार पर पड़े उँगलियों के निशान, यह घोषणा कर रहे कि यहाँ बन्द किये हुये कैदी, रोशनी और हवा के लिए लड़खड़ा चुके हैं। किसी फटे हुये बम की छाया के समान, दीवार पर फैला हुआ एक धब्बा, गुस्से में आ कर दीवार पर दे मारे गये, किसी गिलास या बोतल की कहानी कह रहा था। दर्पण पर किसी ने हीरे से बड़े बड़े अक्षरों में 'मेरी' खोद दिया था। ऐसा लगता था कि कमरे की भयानक ठंड सहन न कर सकने से चिढ़कर, उसके अनेक निवासियों ने अपना सारा गुस्सा कमरे पर ही उतार दिया था। फर्नीचर खरोंचा हुआ था। कई कमानियों के टूट जाने से पलंग ऐसा दिखाई देता था मानो कोई भयंकर दैत्य छटपटा कर मर गया हो। किसी मारपीट के हुड़दंग में संगमरमरी महराब का एक कोना टूट चुका था। फर्श का हर तख्ता, अलग अलग भाषा में, अपने व्यक्तिगत दुख की रामकहानी सुना रहा था। इस बात पर विश्वास करना कठिन था कि कमरे को इतना नुकसान उन्हीं लोगों ने पहुँचाया, जिन्होंने कुछ समय तक इसे अपना घर समझे रखा। पर, हो सकता है कि घरेलू सुख पाने की वंचित इच्छा ने, घर का नाम धारण करने वाले इस कमरे के प्रति उनकी क्रोधाग्नि को भड़का दिया हो। अपनी तो झोपड़ी भी हो तो हम उसे झाड़-बुहार कर साफ रखें, सजायें और उसे याद भी करें।

नये किरायेदार के दिमाग में इन विचारों ने खलबली मचा दी और कमरे में तरह तरह की नकली ध्वनियाँ और नकली गन्ध फैलने लगी। एक कमरे से उसे कामुक और बेहूदी हँसी सुनाई दी। दूसरे कमरे से डाँटने की आवाज़ आ रही थी तो किसी से बच्चे की रुलाई, और किसी से बैंजो की कर्कश ध्वनि! एक तरफ कहीं दरवाज़े बन्द होने के धमाके हो रहे थे तो दूसरी ओर से थोड़े थोड़े समय बाद धड़धड़ाती रेलगाड़ी निकल जाती या पिछवाड़े की चहारदीवारी पर बिल्लियाँ बुरी तरह गुर्रातीं। उसने कुछ साँसें खींचीं और सड़ी हुई लकड़ी से मिश्रित अलसी के तेल की दुर्गन्ध से व्याप्त, भूमिगत तहखानों से निकली हुई किसी घुटी हुई, ठंडी, सड़ाँध से उसका दम घुटने लगा।

ज्यों ही वह आराम करने के लिए लेटा कि एकाएक सारा कमरा चम्पे की मधुर और उत्कट सुगन्ध से भर गया। यह खुशबू बयार के झोंके पर सवार हो कर इतनी मुस्तैदी और तेज़ी से आयी थी कि वह किसी साकार प्रतिमा-सी प्रतीत होती थी। जैसे किसी ने पुकारा हो, चौकन्ना हो कर चारों ओर देखते हुए नौजवान ने जवाब दिया, "क्या प्रिये?" भीनी खुशबू ने जैसे उसे चारों ओर से लपेट लिया। कुछ समय के लिए उसकी चेतना अभिभूत हो गयी और वह हक्का-बक्का होकर सामने हाथ बढ़ाये हुए जैसे उसके स्वागत के लिए तैयार हो गया। लेकिन, सुगन्ध किसी को बुला कैसे सकती है! निश्चय ही वह आवाज़ थी। लेकिन यदि वह आवाज़ थी तो उसने उसे छुआ कैसे--सहलाया कैसे?

वह चिल्लाया, "जरूर वह इस कमरे में रह चुकी है।" कमरे में उस लड़की की कोई निशानी या कोई ऐसी चीज़ ढूँढ़ने के लिए जिसे उसने छुआ हो, वह व्याकुल हो उठा, क्योंकि उसे विश्वास था कि अपनी प्रेयसी की छोटी-से-छोटी निशानी को भी वह पहचान लेगा। मन को अभिभूत करने वाली चम्पे की यह सुगन्ध, जो उसे बहुत पसन्द थी और जो उसकी प्रेयसी की अपनी निजी थी, कहाँ से आ रही थी?

कमरा कुछ लापरवाही से सजाया हुआ था। बारीक मेज़पोश पर, बालों में लगाने की पिनें बिखरी हुई थीं जो स्त्री जाति की सबसे समझदार और अनन्य संगिनियाँ हैं – उन्हीं के समान स्त्रीत्व, अनिश्चित काल और निस्सीम भाव रखने वालीं! इन्हें किसी प्रकार के व्यक्तित्व से शून्य पाकर उसने इनकी उपेक्षा कर दी। मेज़ की दराज़ों को टटोलते हुए उसे एक तिरस्कृत,

छोटा-सा, फटा हुआ रूमाल मिला उसने उसे होठों से लगा लिया, परन्तु उसमें तो कमल की खुशबू आ रही थी; उसने उसे दूर फेंक दिया। दूसरी दराज में उसे कुछ बटन, एक नाटक का कार्यक्रम, किसी सूदखोर बनिये की एक रसीद, दो चार वनफूल और स्वप्नों का अर्थ बताने वाली एक किताब मिली। अन्तिम दराज में उसे स्त्रियों के बालों में लगाने की काली साटिन की जाली दिखाई दी; परन्तु पिनों के समान यह जाली भी स्त्रियों के रोजमर्रा काम में आने वाली एक मामूली व्यक्तित्वहीन चीज है, जो किसी रहस्य का पर्दा नहीं उठाती।

और तब उसने किसी टोहलने वाले कुत्ते की तरह, कमरे का कोना-कोना छान मारा। दीवारों का चप्पा-चप्पा टटोल लिया; घुटनों के बल चल कर दरी की हर सलवट को सम्हाल लिया; अंगीठी की महराब, टेबल का हर दराज, पर्दे, तस्वीरें, कोने मे शराबी की तरह लड़खड़ाती हुई आलमारी — कोई चीज उसने बिना तलाशे नहीं छोड़ी, पर उसकी कोई निशानी उसे नहीं मिली। फिर भी वह महसूस कर रहा था कि वह उसके पास चारों तरफ, सामने-पीछे, ऊपर-नीचे, बाहर, भीतर, सब तरफ छायी हुई है, उससे चिपटी हुई है, उसकी आराधना कर रही है और अन्तरआत्मा में उसकी आवाज इतने विषाद से पुकार रही है कि इन्द्रियों को भी मजबूर हो कर उस गूँज का अस्तित्व स्वीकार करना पड़ता है। एक बार फिर वह जोर से चिल्लाया, "हाँ प्रिये," और घूम कर फटी आँखों से न्य में ताकने लगा। चम्पे की उस खुशबू से वह रंग, रूप और स्पर्श को अलग नहीं कर सका। "हे भगवान! यह खुशबू कहाँ से आ रही है और खुशबू में आवाज कब से आने लगी?" वह दुविधा में पड़ गया।

कमरे के कोनों और दरारों को कुरेदने से उसे कुछ सिगरेटें और बोतलों के कार्क मिले, जिन्हें उसने उपेक्षा से फेंक दिया। दरी की तह के नीचे एक आधी जली हुई सिगार मिली जिसे गुस्से में आ कर गालियाँ देते हुए उसने पैरों तले कुचल दिया। उसने कमरे का कोना-कोना छान मारा। कमरे के भ्रमणशील किरायेदारों की छोटी मोटी कई तुच्छ निशानियाँ तो उसे मिलीं परन्तु जिसे पाने के लिए वह व्याकुल था, जो शायद वहाँ रह चुकी थी और जिसकी आत्मा इस कमरे में मँडरा रही थी, उसका कोई चिन्ह तक उसे नहीं मिला।

तब उसे मकान मालकिन का ध्यान आया। उस प्रेतग्रस्त कमरे से भाग कर वह नीचे आया। एक दरवाज़े की दरार से कुछ रोशनी दिखाई दे रही थी, जिसे खटखटाते ही बुढ़िया बाहर आयी। अपनी उत्तेजना पर यथासंभव नियंत्रण रखते हुए उसने पूछा, "क्या आप बता सकती हैं कि मेरे आने से पहिले उस कमरे में कौन रहता था?"

"जी हाँ, मैं बता सकती हूँ। उसमें स्प्राउल्स और मूनी रहते थे। बेटी स्प्राउल्स तो उसका नाटक का नाम था। वैसे वे दोनों पति-पत्नी थे। मेरा मकान शराफत के लिए प्रसिद्ध है। उनके विवाह का सर्टिफिकट भी फ्रेम में जड़ा हुआ, वहाँ कील पर ........"

"ये ... ये ... बेटी स्प्राउल्स कैसी लड़की थी–मेरा मतलब, दिखने में कैसी थी?"

"काले बाल, नाटा कद, मोटा बदन, और हँसमुख चेहरा! मंगलवार को उन्हें गये एक सप्ताह हो गया।"

"और उससे पहिले कौन रहता था?"

"एक कुँवारा, ठेलेवाला, जो एक सप्ताह का किराया हज़म करके भाग गया। और उससे पहिले अपने दो बच्चों के साथ श्रीमती क्रोडर–वह चार महीने तक रही। और उससे भी पहिले मि. डोयल रहते थे जिनका किराया उनके लड़के चुकाते थे। उनके पास यह कमरा छः महीनों तक रहा। एक साल का लेखा-जोखा तो मैंने बता दिया और उससे आगे मुझे याद नहीं।"

उसे धन्यवाद दे कर वह अपने कमरे में वापिस लौट आया, जहाँ सन्नाटा छाया हुआ था। कमरे को सजीव करने वाली चम्पे की खुशबू उड़ चुकी थी। उसके स्थान पर कमरे में पुराने फर्नीचर की दुर्गन्ध छायी हुई थी, जैसे किसी ने वातावरण को बन्दी बना लिया हो।

इस आशा के टूटने पर जैसे उसका विश्वास ही बह गया। गैस की झुलती हुई पीली रोशनी की ओर वह कुछ देर तक घूरता रहा। पलंग के पास जाकर उसने चद्दर के टुकड़े टुकड़े कर दिये। अपने चाकू की सहायता से उसने इन टुकड़ों को खिड़की और दरवाज़े की हर दरार में ठूँस दिया। इस प्रकार कमरे को चारों ओर से अच्छी तरह बन्द करके उसने रोशनी बुझा दी, गैस की नली पूरी खोल दी और अपने भाग्य की सराहना करता हुआ पलंग पर जा पड़ा।

आज की रात बीयर पिलाने की बारी श्रीमती मैककूल की थी। बीयर का गिलास सामने रखे हुए उनके साथ श्रीमती परडी (मकान मालकिन) तहखानों में बने हुए एक ऐसे बीयर हाउस में बैठी हुई थी, जहाँ बूढ़ी मकान मालकिनें बिला नागा इकट्ठी हुआ करती हैं। श्रीमती परडी, बीयर के झागों का स्वाद लेती हुई बोली, "तीसरी मंज़िल के पिछवाड़े का कमरा आज किराये पर चढ़ गया। किरायेदार नौजवान ही है, जो दो घंटे पहिले ही आ कर सोया है।"

गहरी प्रशंसा भरे शब्दों में श्रीमती मैककूल बोली, "क्या सचमुच?" फिर एक रहस्यभरी फुसफुसाहट में उसने कहा, "उस प्रकार के कमरों को किराये पर उठाने में तुम्हारा कोई सानी नहीं। क्या तुमने वह बात उसे बतायी?"

श्रीमती परडी अत्यन्त खरखरे स्वर में बोली, "कमरे, किराया वसूल करने के लिए होते हैं। वह बात भला मैं क्यों उसे बताने लगी?"

"हाँ, ठीक तो है। किराये से ही तो हम ज़िन्दा है। तुम वाकई बड़ी व्यापारकुशल हो। यदि यह मालूम पड़ जाय कि कुछ ही दिन पहिले उस कमरे में आत्महत्या हो चुकी है, तो अधिकतर लोग उसे लेने से ही इन्कार कर दें।"

"हाँ, तुमने ठीक कहा, हमें तो अपनी रोज़ी कमानी है।"

"बिल्कुल! अभी एक हफ्ते तो मैंने तुम्हारे तीसरी मंज़िल के पिछवाड़े के उस कमरे को सजाने में मदद की थी। और वह लड़की, जिसने गैस से आत्महत्या की—अहा, कितनी सुन्दर और नाज़ुक थी। और कितना ..धुर उसका चेहरा था।"

श्रीमती परडी ने उसकी बात को मानते हुए भी टीका की, "अगर उसकी बाँई भौंह के नीचे वह मस्सा न होता तो उसे सुन्दर कहा जा सकता था। एक गिलास बीयर और......!"

# पिमीन्टा के पेनकेक

फ्रायो घाटी में जब हम अपने मवेशियों को घेरने में लगे हुए थे, एक दिन मेरे घोड़े की रिकाब में एक सूखे ठूँठ की डाली में उलझ गयी जिससे मेरी एडी को इतने जोर का झटका लगा कि मुझे एक हफ्ते तक बिस्तर में पड़ा रहना पड़ा।

इस जबरदस्ती के आराम के तीसरे दिन, मैं लँगड़ाता हुआ बाहर आया और रसोईघर में जाकर हमारे रसोइये जडसन ओडोम की निकम्मी बकवास सुनता हुआ पड़ा रहा। और कोई चारा नहीं था। जड को स्वगत भाषण करनेकी आदत थी, परन्तु भाग्य ने अपनी स्वाभाविक भूल से उसे एक ऐसे पेशे में डाल दिया था जहाँ अधिकतर श्रोताओं का अभाव होता है।

मेरी उपस्थिति जड के लिए गूँगे का गुड़ हो गयी। कुछ देर बाद मेरे मन में कुछ ऐसी चीज़ खाने की इच्छा हुई जो 'पथ्य' में शुमार न होती थी। बीमारों का मन हमेशा परहेज की वस्तु खाने पर ही ललचाता है। मुझे बचपन की याद आने लगी जब हम माँ के भण्डारघर में घुस जाते थे, जो प्रथम प्रेम के समान गहरा था और जिसमें न घुस पाने का विक्षोभ हमें पागल कर देता था।

मैंने पूछा, "जड क्या तुम पेनकेक ( लिट्टी ) बनाना जानते हो?" जड उस समय अपनी बन्दूक से हिरन के माँस को कूट कर कीमा बनाने की कोशिश कर रहा था। बन्दूक एक तरफ रख कर उसने मेरी ओर ऐसी दृष्टि से देखा मानो मुझे धमका रहा हो। अपनी नीली आँखों से मेरी ओर शंकाभरी दृष्टि डालकर उसने मेरी इस मान्यता का मानो समर्थन किया।

बहुत अधिक तो नहीं, पर स्पष्ट रूप से अपनी नाराजी प्रकट करता हुआ वह बोला, "यह बात तुमने साधारण ढंग से पूछी है या मुझे चिढ़ाने के लिए? शायद किसीने तुमसे मेरी पेनकेक वाली कहानी कही है।"

मैंने सरलता से कहा "नहीं जड, मैं तो सहज पूछ रहा था। मुझे ऐसा लग रहा है कि अगर कुछ गरमागरम, मक्खन लगे हुए, पेनकेक और पहली फ़सल के गुड़ का शर्बत मिल जाये तो मैं अपने घोड़े और जीन तक का सौदा कर दूँ। परन्तु वह केक वाली कहानी क्या है?"

मै उसकी किसी कमज़ोरी पर चोट नहीं कर रहा हूँ, यह जानकर जड शान्त हो गया। चौके में से थैलियों और कुछ अजीब से टिन के डब्बों को लाकर उसने जामुन के उस पेड़ के नीचे इकट्ठा किया, जहाँ मैं बैठा हुआ था। मेरे देखते हुए उसने उनकी डोरियाँ खोलीं और आराम से उन्हें जमाने में लग गया।

काम करते-करते वह बोला, "कहानी तो नहीं है, परंतु मेरे, उस मायर्ड-म्यूल-कनाडा के निवासी, गुलाबी आँखों वाले, आलसी, कायर और कुमारी विलीला ली राईट के सम्बन्धों का तर्कसंगत उद्घाटन मात्र है। तुम्हें सुनाने में कोई हर्ज नहीं।"

"उन दिनों मैं बिल टूमी के साथ मिगल गोचर में मवेशियों को सम्हाला करता था। एक दिन मुझे कोई ऐसी चीज खाने की उत्कट इच्छा हुई जो रोजमर्रा खाने को मिलने वाले गाय बकरी या भेड़ के मांस से अन्यथा हो। मैं अपने घोड़े पर बैठ कर हवा से बातें करता हुआ पिमीन्टा क्रासिंग में एम्सली टैलफेयर चाचा के स्टोर पर पहुँचा।

"तीसरे पहर करीब तीन बजे मैंने घोड़े की लगाम एक पेड़ से बाँध दी और कोई बीस कदम पैदल चल कर स्टोर में पहुँचा। गल्ले पर चचा एम्सली बैठे थे। मैंने उनसे कहा, 'आज तो दुनियाँ भर के फलों के नष्ट हो जाने के असार नज़र आते हैं।' दूसरे ही क्षण चचा ने मेरे सामने एक तश्तरी में बिस्कुट, एक लम्बा-सा चम्मच और एक एक डब्बा खुबानी, अनन्नास, चेरी और हरे आड़ू लाकर रख दिये। और खुद कुल्हाड़ी से रतालू खोदने में लग गये। मेरी दशा उस समय सेब खाने की भगदड़ से पहिले आदम के समान हो रही थी। मैं गल्ले पर झुका हुवा चौबीस इंची चम्मच की सहायता से अपने काम में लगा हुआ था कि एकाएक मेरी नज़र चचा एम्सली के मकान के अहाते में पड़ी, जो उनकी दुकान से सटा हुआ था।

"वहाँ एक लड़की खड़ी थी। उसके कपड़ों से लगता था कि वह परदेशी है। वह क्राकेट के बल्ले को घूमाती हुई, मेरे द्वारा फलों के व्यवसाय को

उत्तेजित करने के प्रयत्न को देख कर, मुदित हो रही थी। मैं गल्ले के पास से हट गया और चम्मच चचा एम्सली को थमा दिया।

"वे बोले, 'वह मेरी भानजी है—कुमारी विलीला लीराइट। फिलिस्तीन से घूमने आयी है। क्या मैं उससे तुम्हारी जान पहचान करवा दूँ?'

"मैंने अपनी छलाँगें भरती हुई भावनाओं की लगाम खींचते हुए सोचा, 'वाह, नेकी और पूछ पूछ! फिलिस्तीन तो शायद परियों का देश है। और प्रकट रूप से बोला, 'जरूर—चचा, जरूर! मिस लीराइट से मिलकर मुझे बहुत खुशी होगी।'

"उन्होंने मुझे साथ ले जाकर हमारी जान पहिचान करवादी।"

स्त्रियों से मैं झिझकता नहीं हूँ। मेरी समझ में नहीं आता कि सुबह नाश्ते से पहिले किसी जंगली घोड़े को वश में कर सकने वाले, घोर अँधेरे में दाढ़ी बना सकने वाले बड़े बड़े वीरों का भी, घाघरा पहिनी हुई किसी गुड़िया को देखते ही क्यों पसीना छूट जाता है और वे हक्केबक्के होकर क्यों हकलाने लगते हैं। सात आठ मिनट में ही मैं और कुमारी विलीला, क्रोकेट की गेंदों को इतनी घनिष्ठता से फेंक रहे थे मानों हम निकट के सम्बन्धी हों। उसने मेरे फलों की खुराक पर ताना कसा तो मैंने इसका सनसनाता हुआ उत्तर दिया कि फिलिस्तान में रहने वाली उसी की जाति की एक श्रीमती "हौव्वा" ने फल को लेकर खुल्द के उस बगीचे में कितनी गड़बड़ी पैदा कर दी थी। मैंने यह बात इतनी आसानी से कह दी मानों साल भर की बछिया को घेर रहा हूँ।

"इस प्रकार मैंने कुमारी विलीला लीराइट से घनिष्ठता और निकटता स्थापित कर ली जो समय के साथ बढ़ती ही रही। पिमीन्टा क्रासिंग की आबहवा में, जो फिलीस्तीन से चालीस प्रतिशत ज्यादा गरम थी वह अपना स्वास्थ्य सुधारने आयी थी (जो बिल्कुल अच्छा दिखाई देता था)। कुछ दिनों तक तो मैं सप्ताह में एक बार उससे मिलने जाता परन्तु फिर मैंने सोचा कि अगर मैं अपनी मुलाकातों की संख्या दुगनी कर दूँ तो मैं उसे दुगने समय तक देख पाऊँगा।

"एक बार मैं सप्ताह में तीसरी बार उसके यहाँ पहुँचा और इसी बार कहानी से उस कायर आलसी का और पेनकेक का सम्बन्ध जुड़ा।

'शाम को गल्ले के सामने बैठ कर मुँह में एक साबुत आड़ू और दो तीन बेर ठूँसते हुए मैंने चचा एम्सली से पूछा, 'कहिये, मिस विलीला के क्या हाल हैं?'

'उन्होंने जवाब दिया, 'वह अभी अभी मायर्ड म्यूल कनाडा के गडरिये बर्ड के साथ घुड़सवारी करने गयी है।'

"मैं, आड़ू और बैरों को गुठलियों समेत निगल गया और बाहर भागा। मुझे ऐसा लगा मानों मुझे गल्ले के साथ लगाम लगा कर जकड़ दिया गया था। बड़ी मुश्किल से भागता हुआ मै उस पेड़ के नीचे पहुँचा जहाँ मेरा घोड़ा बँधा हुआ था।

"मैंने घोड़े के कान में फुसफुसाया, 'प्यारे दोस्त, पता है वह, उस भाड़े के टट्टू गडरिये—क्या नाम है उसका, बर्डस्टोन जैक के साथ घुड़सवारी करने गयी है!'

"मेरा वह दिलदार घोड़ा अपने ढंग से रो उठा। जीवन भर उसने गायें घेरने का काम किया था इसलिए उसे आलसी गडरियों की विशेष परवाह नहीं थी।

"मैंने वापस जाकर चचा एम्सली से पूछा,'आपने क्या कहा था—गडरिया?'

"हाँ, हाँ गडरिया! तुमने उसका नाम भी सुना होगा—जैकसन बर्ड! उसके पास आठ कोस का गोचर है और चार हज़ार बढ़िया नस्ल की भेड़ें हैं, जो संसार में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती हैं।'

"दुकान से बाहर निकल कर मैं नागफनी की मेंढ़ के सहारे छाया में बैठ गया। अन्यमनस्क होकर मैं अपने जूतों में रेत भरने लगा और जैक्सन नाम धारी इस पंछी के सम्बन्ध में अपने आपसे बड़बड़ाने लगा।

"अब तक मैंने कभी किसी निरीह गडरिये को परेशान करने की बात भी नहीं सोची थी। एक दिन मैंने एक गडरिये को घोड़े पर बैठकर लैटिन भाषा का व्याकरण पढ़ते हुए देखा। उसी दिन से गडरियों के प्रति मैं उदासीन हो गया। ग्वालों को देखकर तो मुझे गुस्सा आता है, पर गडरियों को देखकर कभी नहीं। सोचिये इस उम्र में टेबल पर बैठ कर खाने वाले, सोफियाना जूते पहनने वाले और कर्ता, कर्म, क्रियापद की बकवास करने वाले उन आलसी जीवों से क्या उलझना! मैंने खरगोश जैसे उन प्राणियों की सदा ही उपेक्षा की। चलते चलते दुआ सलाम या मौसम सम्बन्धी बात भले ही पूछ लूँ, पर इससे ज्यादा नहीं। गडरियों से दुश्मनी! वे बिचारे इस

काबिल ही कहाँ होते हैं। और चूँकि मैं उदार हूँ और उन्हें अब तक जीवित रहने दिया, उसका आज यह बदला मिला कि मिस विलीला ली राइट के साथ उन्हीं में से एक घुड़सवारी करने चला गया !

"कोई एक घंटे बाद वे वापिस लौटे और चचा के मकान के दरवाजे पर खड़े रहे। गडरिये ने उसकी घोड़े से उतरने में मदद की और कुछ देर तक हँसी खुशी गपशप करते रहे। फिर वह पंछी, घोड़े की जीन पर उछला, अपना हंडानुमा टोप उठाया और अपने गोचर की दिशा में उड़ गया। तब तक मैं अपने जूतों से रेत निकाल कर नागफनी के काँटों से अपने कपड़ों को छुड़ा चुका था। वह पिमीन्टा से आधी मील दूर पहुँचा होगा कि मैंने उसे जा घेरा।

"पहले मैं कह चुका हूँ कि उसकी आँखें गुलाबी थीं पर बात ऐसी नहीं थी। उसकी दृष्टि का फाटक तो भूरा ही था परन्तु पलकें गुलाबी थीं और बाल मटमैले; इसलिए ऐसा आभास होता था। गड़रिया ? अजी वह तो उससे भी गया बीता था। गले में पीला रूमाल लपेटे और जूते की डोरी करीने से बांधे—एक तुच्छ-सा आदमी।

"मैंने कहा, 'नमस्कार ! आपके साथी घुड़सवार का नाम जडसन है। बन्दे को "तीरन्दाज" भी कहते हैं क्योंकि मेरा निशाना कभी खाली नहीं जाता। जहाँ मैं किसी अजनबी से मिलता हूँ तो मुठभेड़ से पहले ही अपना परिचय देता हूँ क्योंकि मैं उसके मरने के बाद उसके भूत से हाथ मिलाना पसन्द नहीं करता।'

"वह बोला, 'मिस्टर जडसन, आपसे मिल कर बड़ी खुशी हुई। मेरा नाम जैकसन बर्ड है और मैं मायर्ड म्यूल के गोचर में रहता हूँ।'

"उसी समय मैंने एक आँख से एक बाज को अपनी चोंच में बड़ी मकड़ी दबाये हुए, उड़ता देखा और दूसरी आँख से देखा एक गिद्ध को देवदार के पेड़ पर माँस का टुकड़ा चचोड़ते। मैंने सिर्फ उसे दिखाने के लिए अपनी बन्दूक से एक के बाद एक को मार गिराया और बोला, 'तीन में से दो तो खतम हुए। मैं जहाँ भी जाता हूँ पंछियों को देखकर मेरी बन्दूक काबू में नहीं रहती।'

"बिना परेशानी दिखाये गडरिया बोला, 'वाह, निशाना तो बढ़िया है। पर कभी कभी तीसरा निशाना आप चूक जाते होंगे। पिछले हफ्ते जो बारिश पड़ी थी, वह घास के लिए बहुत अच्छी है। क्यों ?'

चला आता है परन्तु बाहर वालो को वे कुछ भी बताते नहीं। अगर मुझे यह तरीका मालूम हो जाय तो गोचर के निर्जन मे अपने हाथो वैसे केक बना लूँ। बस, जीवन सुखी हो जाय!'

मैने उससे पूछा, 'क्या मै विश्वास करूँ कि केक बनाने वाले हाथो पर तुम्हारी नजर नही है।'

"जैक्सन ने कहा, 'बेशक! वैसे तो मिस ली राइट बहुत ही अच्छी लडकी है, पर मेरा इरादा पटरस '

मेरा हाथ बन्दूक की तरफ जाता हुआ देख कर उसने इन शब्दो को चबा लिया और बोला, 'मे तो सिर्फ केक बनाने की पाकविधि जानना चाहता हूँ।'

"ईमानदारी के नाते मैंने उससे कहा 'तुम उतने बुरे तो नही लगते। मैं तो सोच रहा था कि तुम्हारी भेडे लावारिस हो जायेगी। परन्तु जाओ इस बार तुम्हे माफ किया। लेकिन ध्यान रहे, केक के सिवाय और कुछ मत कर बैठना। अपनी नजर आटे चीनी तक ही रखना। वर्ना तुम्हारे घर पर मर्सिये पढे जायेंगे और तुम सुन भी नही सकोगे।'

"गडरिया बोला, 'मेरी सचाई का तुम्हे विश्वास दिलाने के लिए मै चाहूँगा कि तुम मेरी मदद करो। देखो, तुम मिस ली राइट के घनिष्ठ मित्र हो। हो सकता है कि जो काम वह मेरे लिए न करे वह तुम्हारे लिए कर दे। केक की पाकविधि उनसे लिखवा कर तुम यदि मुझे दे दो तो मै वादा करता हूँ कि दुबारा उससे फिर कभी नही मिलूँगा।'

"मैने जैक्सन बर्ड से हाथ मिलाते हुए कहा, 'यह बात ठीक है। मै तुम्हारा काम करने की पूरी कोशिश करूँगा और उससे मुझे खुशी ही होगी।' इसके बाद वह मायर्ड म्यूल की दिशा मे चला गया और मै उत्तर पश्चिम की ओर बिल टूमी के गोचर मे लौट आया।

"पाँच दिन बाद पिमीन्टा जाने का फिर मौका पड़ा। चचा एम्सली के घर हमने वह साँझ बडे आनन्द से गुजारी। विलीला ने गाना गाया और कुछ देर तक नाटकीय गाने पियानो पर बजाने की कोशिश की। मैने साँप की नकल करके दिखाई और स्नेकी मैकफी द्वारा अविष्कृत मवेशियो की खाल उघाडने के नये तरीको को समझाया और एक बार मैने जो सेट लुई की यात्रा की थी उसका वर्णन किया। एक दूसरे की नजरो में हम काफी ऊँचे उठ चुके थे और मै सोचने लगा कि अगर जैकसन

इस नाटक से बाहर निकल जाता है तो निश्चित जीत मेरी है। पेनकेक की पाकविधि के सम्बन्ध में जैकसन ने जो वादा किया था वह मुझे याद आया। मैंने सोचा कि मिस विलीला को समझा बुझा कर मैं उसे प्राप्त कर लूँ और उसके बाद फिर कभी जैकसन बर्ड वहाँ दिखाई दे, तो उसकी हड्डियाँ तोड़ दूँ।

"इसलिए करीब दस बजे मैंने अपने चेहरे पर चापलूसी की मुस्कराहट लाते हुए मिस विलीला से कहा, 'सुनो, हरे भरे मैदान में चरते हुए किसी लाल घोड़े से भी अधिक अगर मुझे कोई चीज़ प्रिय है तो वह है गरमागरम रस टपकते पेनकेक!"

मिस विलीला चौंक कर पियानो से उठ खड़ी हुई और विचित्र प्रकार से मेरी ओर देखती हुई बोली, 'हाँ, हाँ पेनकेक बहुत अच्छे होते हैं, लेकिन उस रोज सैंट लुई के जिस बाज़ार में आपका टोप खो गया था, उसका नाम क्या था?'

"मैंने आँख मारते हुए कहा, 'केक बाज़ार।' मैं यह दिखाना चाहता था कि चाहे जैसे भी हो, मैं केक की पाकविधि जानकर ही रहूँगा और वह इतनी आसानी से मुझे टाल नहीं सकेगी। मैंने बात को चालू रखा, 'अब बहाने मत बताओ विलीला, बताओ केक कैसे बनाती हो! जल्दी करो। इस समय मेरे दिमाग में केक, गाड़ी के पहिये की तरह घूम रहे हैं। शुरू करो–देखें। एक सेर आटा, आठ दर्जन अण्डे; वस्तुओं की सूची में और क्या क्या लिखूँ?'

"माफ करना मैं एक मिनिट में आयी!' कहती हुई विलीला अपनी आँखों की कोर से मुझे तिरछी नज़र से देखती हुई स्टूल से उठ खड़ी हुई और दूसरे कमरे में चली गयी। एक क्षण बाद ही कमीज की बाँहों को चढ़ाते हुए चचा एम्सली हाथ में एक सुराही लिये कमरे में आये। गिलास लेने को वे मुड़े तो मैंने देखा कि उनकी कमर पर एक भारी बन्दूक लटक रही थी। मैंने सोचा, ताज्जुब है। इस खानदान में तो खाना बनाने की विधियों को भी बहुत सम्हाल कर रखा जाता है– इतनी भारी बन्दूक से उनकी रक्षा की जाती है। खानदानी दुश्मनी का फैसला करने के लिए भी लोग इतना भारी हथियार नहीं रखते।

"पानी का एक गिलास मुझे देते हुए चाचा एम्सली बोले, 'इसे पीओ, जड़! आज बहुत दूर तक तुमने घुड़सवारी की है और तुम कुछ ज्यादा

उत्तेजित हो गये हो। ठंडा पानी पीओ और किसी दूसरी चीज़ के सम्बन्ध में सोचने की कोशिश करो।'

"मैं उनसे भी पूछ बैठा, 'चचा एम्सली क्या आप पेनकेक की पाक-विधि जानते हैं?'

"चचा एम्सली ने कहा, 'मैं ज्यादा तो नहीं जानता पर मेरा अन्दाज है कि केक बनाने में थोड़ा-सा आटा, कुछ खड़िया मिट्टी, खाने का सोडा कुछ मक्का, दो चार अण्डे और थोड़ी सी छाछ — इन सब चीजों को मिलाया जाता है। क्यों जड, क्या तुम्हारे मालिक इस साल भी केंसस सिटी को मवेशी भेजेंगे?'

"केक के सम्बन्ध में उस दिन इससे ज्यादा बात नहीं हो सकी और जैकसन को यह बात जानने में इतनी कठिनाई क्यों हुई, इसका मुझे अन्दाज हो गया। इसलिये मैं विषय बदल कर चचा एम्सली से मवेशियों के नस्ल की और आँधी-तूफान की बातें करने लगा। मिस विलीला ने आकर विदा ली और मैं घर की ओर चला।

"इसके एक सप्ताह बाद मुझे जैकसन वर्ड के दर्शन हुए। मैं पिमीन्टा जा रहा था और वह वहाँ से लौट रहा था। सड़क के बीच में खड़े होकर हम गपशप करने लगे।

"मैंने पूछा, 'केक बनाने का तरीका कुछ मालूम पड़ा?'

"उसने कहा, 'नहीं, मुझे तो कुछ हाथ नहीं आया, तुमने कोशिश की?'

"मैंने कहा, 'मैंने बहुत कोशिश की। लेकिन वह तो तेल में से कौड़ी निकालने जैसी सिद्ध हुई। उस पाकविधि को वे लोग इतना सम्हालकर रखते हैं जैसे वह कोई भारी खजाना हो।'

"यह सुनकर जैकसन इतना निराश हो गया कि मुझे उस पर दया आ गयी। वह बोला, 'मुझे ऐसा लगता है कि अब यह बात छोड़ ही देनी पड़ेगी। पर गोचर के सन्नाटे में मुझे केक खाने की बहुत इच्छा होती है। मैं रात रात भर जागता रहता हूँ और सोचता रहता हूँ कि केक भी क्या मज़ेदार चीज़ है!'

"मैंने कहा, 'तुम भी कोशिश करते रहो और मैं भी करता हूँ। किसी न किसी के जाल में तो वह जरूर फँस जायेगी। अच्छा! नमस्ते!'

"इस समय तक हमारे सम्बन्ध एकदम मैत्री के हो चुके थे। जब से मुझे यह विश्वास हो गया कि उसकी नजर मिस विलीला

पर नही है, मै उस आलसी गडरिये के प्रति काफी सहिष्णु हो गया था। उसके पेट की मॉग पूरी करने के लिए मैने मिस विलीला से केक की पाकविधि जानने की कोशिश जारी रखी। पर न जाने क्यो मेरे मुँह से 'केक' शब्द निकलते ही उसकी ऑखो मे एक सूनापन और अस्वस्थता छा जाती और वह तुरन्त ही बातचीत का विषय बदलने की कोशिश करती। अगर मै अपनी बात पर अडा रहता तो वह उठकर बाहर चली जाती और मुझे एक हाथ मे सुराही लिये, कन्धे पर बन्दूक लटकाये हुए चचा एम्सली का मुकाबला करना पडता।'

"एक दिन आते हुए मैने एक मैदान मे नये खिले, नीले बनफूलो को तोड कर गुच्छा बना लिया और चचा की दुकान पर पहुँचा।

"चचा ने एक ऑख बन्द करके पूछा–'क्या तुमने सुना ?'

"क्या ? क्या मवेशियो के दाम बढ गये ?'

"पैलस्टाइन मे कल जैकसन बर्ड और विलीला का विवाह हो गया। मेरे पास सुबह ही चिट्ठी आयी है।'

"मैने उन फूलो को बिस्किट के डब्बे मे फेंक दिया। यह समाचार मेरे कानो से प्रविष्ट होकर, हृदय को बेधता हुआ मेरी सारी चेतना पर छा गया।

"मैने चचा से पूछा, 'आपने क्या कहा ? जरा फिर से तो कहिए। मैं आजकल शायद कुछ ऊँचा सुनने लगा हूँ। आप शायद यह कह रहे थे कि बढिया किस्म के मवेशियो का भाव बढकर ४८० डालर हो गया है।'

"चचा बोले, 'नही, नही, मै तो कह रहा था कि कल उनकी शादी हो गयी और वे सुहागरात मनाने के लिए नियाग्रा गये है। क्या इतने दिनो मे तुम्हे कुछ भी मालूम नहीं पडा ? जैकसन बर्ड तो जिस दिन से उसके साथ घुडसवारी करने गया था, उसी दिन से उसकी प्रेमाराधना कर कर रहा था।'

"मैने चिल्ला कर पूछा, 'तो फिर यह केक की बकवास क्या थी?' मेरे मुँह से 'केक' शब्द सुनते ही चचा एम्सली कतरा कर दो कदम पीछे हट गये।

"मैने फिर पूछा, 'इस केक की बकवास को लेकर मुद्दत हुई कोई मुझे बेवकूफ बना रहा है। लेकिन मै जानकर रहूँगा। तुम शायद जानते हो। जल्दी बताओ वर्ना मै अभी तुम्हारा कचूमर निकाल दूँगा।'

"मैं चचा एम्सली के पीछे गल्ले के दूसरी ओर गया। उन्होंने बन्दूक निकालने की कोशिश की परन्तु वह आलमारी में रखी थी। मैंने उन्हें पहले ही पकड़ लिया और कमीज के कालर से झकझोरते हुए कोने में धकेल दिया।

"मैंने कहा, 'केक के सम्बन्ध में सब बातें बताओ, वर्ना मैं तुम्हारा ही केक बना दूँगा। क्या मिस विलीला केक बनाना जानती है?'

"चचा एम्सली ने शाँति से कहा, 'न तो उसने जीवन में कभी केक बनाया और न मैंने उसे बनाते देखा। शान्त हो जाओ जड, शान्त हो जाओ। तुम खामखाँ उत्तेजित हो रहे हो और सिर के उस घाव ने तुम्हारा दिमाग खराब कर दिया है। केक का विचार छोड़ देने की कोशिश करो।'

"मैंने कहा, 'चचा एम्सली, मेरे सिर में कोई घाव-आव नहीं है। मैं फक्कड़ जरूर हूँ। जैकसन बर्ड ने मुझसे कहा था कि वह मिस विलीला के पास सिर्फ केक की पाकविधि जानने के लिए ही आता है। इसमें उसने मेरी मदद चाही। मैंने वही किया। और नतीजा आप देख ही रहे हैं। क्या वह बेवकूफ़, आलसी गडरिया मुझे बिल्कुल उल्लू बना गया?'

"चाचा एम्सली ने कहा, 'भई मेरा कालर तो छोड़ो—मैं सब बताता हूँ। मालूम तो यही पड़ता है कि जैकसन बर्ड ने तुम्हें खूब बनाया है। जिस दिन वह विलीला के साथ घूमने गया, उसके दूसरे ही दिन आकर हमसे कहा, कि जब जब तुम केक की बात करो तब तब हम सतर्क हो जायें। उसने कहा कि एक बार पिकनिक में केक बनाये जा रहे थे और तुम्हारे एक साथी ने तुम्हारे सिर पर तवा दे मारा था। नतीजा यह हुआ कि उसी दिन से, जब कभी तुम ज्यादा परेशान या उत्तेजित होते हो, तब तुम्हारे सिर का वह घाव तुम्हें पागल-सा बना देता है और तुम 'केक' 'केक' रटने लगते हो। उसने यह भी कहा कि इस हालत में तुम्हें शान्त करने का यही तरीका है कि बातचीत का विषय बदल दिया जाये। तब तुम कोई नुकसान नहीं करोगे। इस हालत में, मैंने और विलीला ने तुम्हारे हक में ठीक ही किया है। हाँ, इतना मानना पड़ेगा कि यह जैकसन बर्ड नाम का गडरिया निकला बड़ा चालाक।"

जड की कहानी समाप्त हो गयी। कहानी कहते कहते जड धीरे धीरे चतुराई से डिब्बों और थैलियों की चीज़ों को मिलाता जा रहा था। कहानी

समाप्त होते ही उसने मेरे सामने तैयार चीज़ें रख दीं। टिन की एक तश्तरी में दो बढ़िया गरमागरम सुनहरी पेनकेक। किसी ज्ञात स्थान से वह एक बोतल शरबत और कुछ ताजा बढ़िया मक्खन भी ले आया था।

मैंने उससे पूछा, " यह घटना कब हुई थी ? "

जड बोला, " कोई तीन साल हो गये। वे दोनों आजकल मायर्ड म्यूल के गोचर में रहते हैं, पर मैंने तबसे उनमें से किसी को नहीं देखा। लोग कहते हैं कि जैकसन बर्ड एक तरफ तो केक का चकमा देकर मुझे बना रहा था और दूसरी तरफ अपने बंगले को बढ़िया आराम कुर्सियों और सुन्दर पर्दों से सजा रहा था। कुछ दिन बाद मैं तो इस बात को भूल सा गया परन्तु यारों को मुझे चिढ़ाने का साधन मिल गया। "

मैंने पूछा, " क्या ये पेनकेक तुमने उसी तरीके से बनाये हैं ? "

जड बोला, " मैंने कहा ना, पेनकेक की पाकविधि नाम की कोई चीज़ थी ही नहीं। लोगों ने तो तमाशा बना दिया। मुझे देखते ही ' केक ' ' केक ' चिल्लाने लगते, यहाँ तक कि उन्हें केक खाने की ख्वाहिश भी होने लगी। मैंने एक अखबार में से ये केक बनाने की विधि सीख ली। पर यह तो बताओ, केक बने कैसे हैं ? "

मैंने जवाब दिया, " बहुत बढ़िया, लेकिन जड तुम थोड़ा-सा क्यों नहीं चखते ? " उस समय निश्चय ही मैंने एक आह सुनी।

जड बोला, " मैं ? मैं पेनकेक कभी नहीं खाता। "

# केलियोप का हृदय-परिवर्तन

केलियोप कैट्सबी आज अपने आपे मे नही था। उस पर गहरी उदासी छायी हुई थी। यह अन्तरीप जिसे दुनियॉ कह कर भी पुकारा जाता है, विशेष तौर से उसका 'क्विकसैड' कहलानेवाला भाग, उसकी दृष्टि में किसी हानिकारक गैस के समूह से अधिक कुछ भी नही था। आधा सीसी का दर्द हो जाय तो तत्वज्ञानी स्वसभाषण करके आराम पा लेगा, स्त्रियाँ रोकर अपना दर्द हल्का कर लेगी, पूर्व के कमजोर निवासी अपनी स्त्रियो को कपडो की कीमत के विषय मे डॉट-फटकार कर मन का बोझ उतार लेगे, लेकिन क्विकसैड के निवासियो के लिए ये सारे उपाय अपूर्ण थे। विशेष तौर से केलियोप ने तो अपने मन की गहरी निराशा दूर करने का उपाय अपनी बुद्धि के अनुसार ढूढ ही लिया था।

रात को ही केलियोप ने आनेवाली उदासी की पूर्व सूचना दे दी। उसने अपने ही कुत्ते को आक्सिडैटल होटल के बरामदे मे लात मार दी और माफी मॉगने से इन्कार कर दिया। बातचीत में भी वह छिद्रान्वेषी और अहंमन्य हो गया था। इधर उधर भटकते हुए, पेडो की टहनियॉ तोड कर, उनके पत्तो को दॉतो से चबाने लगा। यह सब अपशकुन थे। उसकी उदास वृत्ति के विविध स्तरों से परिचित लोगों को एक और लक्षण देखकर भी डर लग रहा था। वह था — उसका अतिशय शिष्टाचार और औपचारिक शब्दो का प्रयोग। उसके सदा के मर्मभेदी, कठोर लहजे का स्थान एक धीमी फुसफुसाहट ने ले लिया था। उसके व्यवहार मे एक खतरनाक तकल्लुफ आ गया और उसकी मुस्कराहट विकृत हो गयी, जिससे उसके चेहरे का बायॉ भाग कुछ तिरछा उठा हुआ दिखाई देने लगा। इन सब लक्षणो से क्विकसैड के निवासियों को आने वाले दुर्भाग्य की पूर्वसूचना मिल गयी।

ऐसे समय, केलियोप अक्सर शराब पीना शुरू कर देता था। उसी दिन आधी रात के करीब वह घर जाता हुआ दिखाई दिया। रास्ते मे मिलने

वाले हर व्यक्ति को वह झुकझुक कर, आपत्तिहीन सभ्यता से नमस्कार करता जा रहा था। अभी तक उसकी उदासी खतरे के स्तर तक नहीं पहुँची थी। खतरे की घण्टी तो तब बजती है जब वह सिल्वेस्टर हजाम की दुकान के ऊपरवाले अपने कमरे की खिड़की में बैठ कर सुबह तक बेसुरे दर्द भरे ग्राम-गीत गाता रहता है और साथ में गिटार की टाँग तोड़ता हुआ शोर मचाता रहता है। उसका हृदय सम्राट नीरो से भी अधिक उदार था इसलिए क्विकसैंड पर आने वाली आपत्ति की संगीतमय सूचना वह पहिले ही दे दिया करता था।

वैसे तो, कैलियोप कैट्सबी एक शान्त और मिलनसार आदमी था— आलस की सीमा तक शान्त और निकम्मेपन की हद तक मिलनसार। ज्यादा वह आवारा और उत्पाती था, पर बिगड़ने पर क्विकसैंड के लिए साक्षात यमदूत। उसका प्रत्यक्ष पेशा था किसी मकानों के दलाल के यहाँ नौकरी करना। सीधेसादे पूरब के निवासियों को वह मकान, जमीन या गोचर दिखाने ले जाया करता था। दरअसल वह दक्षिण का निवासी था। उसका दुबला पतला छः फुट लम्बा ढाँचा, बोलने का अस्पष्ट ढंग और गँवारू मुहावरे इस बात का प्रमाण थे।

परन्तु फिर भी इस पश्चिमी प्रदेश में आ कर बसने के बाद, दक्षिण के रूई के खेत और नील की झाड़ियों में भटकने वाले इस आलसी, निकम्मे और गँवार आदमी ने, उन लोगों की नज़रों में एक गुण्डे की सी शोहरत पा ली थी, जो जीवन भर गुण्डागिरी की कला का अध्ययन करते रहते हैं।

दूसरे दिन सुबह नौ बजे वह बिल्कुल तैयार हो गया। अपने जंगली गीतों से और बोतल भर शराब से प्रेरित होकर क्विकसैंड के निरुत्साही लोगों से नवीन विजयश्री छीन लेने को वह तैयार था। कमर में कारतूसों के आडे–टेढ़े, गोल, पट्टे बाँधे हुए, कई बन्दूकों से लैस, गले तक नशे में डूबा, वह क्विकसैंड के बाजार में निकला। वह इतना उदार था कि शहर को चकित करके चुपचाप घेरना नहीं चाहता था, इसलिए उसने नुक्कड़ पर आकर रणभेरी बजायी। स्टीम पियानो के समान कर्कश चीत्कार ही उसका नारा था जिसने उसके लिए जन्म के नाम को मिटा कर 'कैलियोप' जैसा श्रेष्ठ नाम कमाया था। चीत्कार के साथ ही उसने अपनी बन्दूक से तीन गोलियाँ छोड़ी — कुछ तो निशाना आजमाने के लिए और कुछ बन्दूक को गरमाने के लिए। आक्सिडैंटल होटल के मालिक कर्नल स्वाज़ी का पीला

कुत्ता, आखिरी बार भौंक कर, धूल चाटता हुआ जमीन पर आ गिरा। ब्ल्यूफ्रन्ट के स्टोर में से हाथ में कैरोसीन की बोतल ले कर सड़क पार करता हुआ एक मैक्सिकन यकायक जोर से भागा। अभी तक उसके हाथ में टूटी हुई बोतल का सिरा पकड़ा हुआ था। जज राइली के पीले और नीले रंग के दुमंज़िले मकान पर लगा हुआ, चमकीला, वायुदर्शक पंखा काँपा, लड़खड़ाया और टूट कर नीचे की ओर लटक गया। तूफान आने पर भी यही हालत होती है।

केलियोप की बन्दूक तैयार थी और हाथ सधा हुआ। युद्ध का स्वाभाविक उल्लास उस पर छाया हुआ था। यदि कड़वाहट या उदासी थी तो सिर्फ इतनी कि सिकन्दर के समान उसकी विजय का प्रदेश भी क्विकसैंड की छोटी-सी दुनियाँ से मर्यादित था।

चारों तरफ गोलियाँ चलाता केलियोप आगे बढ़ा। काँच के टुकड़े ओलों के समान बरसने लगे, कुत्ते इधर उधर भागने लगे, मुर्गे कुकड़ूं-कूं करते हुए पंख फड़फड़ाने लगे, और गली में खेलते हुए बच्चों को पुकारने के लिए चिन्ता-युक्त ज़नानी आवाज़ें चीखने लगीं। इस सब शोरोगुल के बीच बीच में केलियोप की बन्दूक गूँज उठती और यह गूँज भी कभी कभी उस चीत्कार में डूब जाती जिससे क्विकसैंड के निवासी भलीभाँति परिचित थे। जिन दिनों केलियोप पर इस तरह की उदासी छा जाती, उन दिनों क्विकसैंड में कानूनन छुट्टी घोषित कर दी जाती थी। जिस गली में उसका आगमन हो जाता, दुकानों के नौकर खिड़कियाँ और दरवाज़े बन्द कर देते। कुछ समय के लिए कारोबार बिल्कुल बन्द हो जाता। मार्ग में सबसे पहिले चलने का अधिकार उसी का था। विरोध के अभाव में और ध्यान बँटने का कोई ज़रिया न होने से, उसकी उदासी और भी गहरी हो जाती।

परन्तु आज चार चौक आगे श्रीमान कैट्समी को, बन्दूक से बन्दूक का जवाब देने और उनके मारपीट के शौक का स्वागत करने के लिए जोर शोर से तैयारियाँ हो रही थीं। पिछली रात ही शहर कोतवाल बक पैटरसन के पास, केलियोप के आसन्न विस्फोट का समाचार ले कर, कई अर्दली आ चुके थे। कोतवाल साहब अब तक इस गुण्डे के करनामें सहन करते रहे परन्तु अब उनकी सहिष्णुता की सीमा आ चुकी थी। मनुष्य के स्वाभाविक उबाल को क्विकसैंड के निवासी सदा से कुछ नज़रअन्दाज़ कर देते थे। बशर्ते कि शहर के शान्तिप्रिय निवासियों के जीवन से व्यर्थ खिल-

वाड़ न किया जाय और उनकी सम्पत्ति को बेकार नष्ट न किया जाय, शहर के निवासियों की भावना, कानून के सख्त प्रवर्तन के खिलाफ ही रहती थी। परन्तु कैलियोप यह सीमा लाँघ चुका था। उसके आवेग आजकल इतने अधिक और हिंसक होने लगे थे कि वे मनुष्य के स्वाभाविक और स्वस्थ आवेश के दायेर में नहीं आ सकते थे।

अपने छोटे से कमरे में बैठा हुआ बक पैटरसन कैलियोप की नाराजी की घोषणा करने वाली, उस चीत्कार की प्रतीक्षा कर रहा था। यह संकेत मिलते ही वह उठ खड़ा हुआ और उसने अपनी बन्दूकें सम्हाल लीं। दो दरोगा और तीन अनुभवी बन्दूकबाज नागरिक, कैलियोप की गोलियों का मुकाबला करने उसकी मदद के लिये आ गये थे। व्यूह रचना करते हुए बक पैटरसन ने आदेश दिया, "उसे घेरे में ले लो। बोलना बिल्कुल नहीं और दिखाई देते ही गोली चला देना। अपने आप को बचाकर उस पर वार करना। वह नम्बरी बदमाश है, परन्तु मुझे विश्वास है कि अबकी बार उसे धूल चाटनी पड़ेगी। चारों ओर बिखर कर उसे घेर लो और देखो, लापरवाही बिल्कुल नहीं बरतना क्योंकि कैलियोप का निशाना कभी खाली नहीं जाता।"

लम्बा, गठीला शरीर, गम्भीर मुँह, और आसमानी कमीज पर कोतवाल का पदसूचक, चमकता बिल्ला लगाये हुए बक पैटरसन ने अपने साथियों को कैलियोप पर धावा बोलने की सूचनाएँ दे दीं। योजना यह थी कि आक्रमनकारियों को यथासम्भव नुकसान न पहुँच कर भी उस यमदूत का पतन हो जाय।

बदले की तैयारियों से बेखबर, उन्मत्त कैलियोप, धुवाँधार गोलियों की बौछार करता, आगे बढ़ रहा था कि एकाएक उसे सड़क के बीच में आड़ लगायी हुई दिखाई दी। कुछ खाली बक्सों के पीछे छिप कर कोतवाल और उसके एक साथी ने गोली चलायी। उसी समय दल के अन्य लोग बिखर गये और सावधानी से कदम बढ़ाते हुए, इधर उधर की गलियों के मार्ग से कैलियोप को चारों ओर से घेर कर खड़े हो गये।

गोलियों की पहिली बौछार से कैलियोप की बन्दूक का घोड़ा टूट गया, उसका दाहिना कान नीचे की ओर से थोड़ा चिर गया और कमर में लगे कारतूसों में से एक के फूटने से उसकी पसलियों में खरौंच आ गयी। कैलियोप के लिए इन बातों ने मानसिक सन्ताप से राहत देनेवाली ताकत

की दवा का काम किया और कमर कस कर अपने स्वाभाविक ढंग से चीत्कार करते हुए उसने प्रतिध्वनि के समान, गोली का जवाब गोली से दिया। कानून के रक्षकों ने बचने की कोशिश की, परन्तु एक दरोगा की कुहनी के नीचे एक गोली लग गयी और गोली खाकर उड़े हुए लकड़ी के एक टुकड़े के लगने से पैटरसन साहब के गात में से रक्त की धारा बह निकली।

केलियोप ने अब दुश्मन के हथकंडों का मुकाबला किया। एक क्षण में उसने यह निश्चय कर लिया कि किस मोर्चे से आने वाली गोलियों की बौछार सबसे कमजोर और लक्ष्यहीन है और बीच सड़क से भागकर, उसने दुगने आवेग से, उस ओर धावा बोल दिया। असाधारण धूर्तता से उस दिशा के विरोधी पक्ष ने—जिसमें एक दरोगा और दो बहादुर स्वयंसेवक थे—लकड़ी के डिब्बों के पीछे कुछ देर छिपे रह कर कैलियोप को आगे बढ़ जाने दिया और पीछे से उस पर हमला बोल दिया। दूसरे ही क्षण कोतवाल साहब और उनके साथियों ने कुमुक पहुँचायी और कैलियोप को यह सोचने पर विवश कर दिया कि यदि युद्ध का आनन्द लम्बे समय तक जारी रखना हो तो उसे अपने विरोधियों का बल कम करने का कोई न कोई उपाय जरूर ढूँढ़ना पड़ेगा। उसकी नजर एक ऐसे स्थान पर पड़ी जो उसकी आवश्यकता को पूरा कर सकता था, बशर्ते कि वहाँ पहुँच जाय।

पास ही छोटा-सा रेल का स्टेशन था। प्लैटफार्म पर जमीन से कोई चार फुट ऊँचा बना हुआ छोटा-सा लकड़ी का मकान था जिसकी हर दीवार में एक खिड़की थी। भारी संख्या में विरोधियों से घिरे हुए किसी व्यक्ति के लिए तो वह एक किले का काम दे सकता था।

कैलियोप ने बहादुरी के साथ तेजी से उसी ओर दौड़ लगायी। कोतवाल की सेना ने गोलियों के धुएं से उसे घेर लिया। अपने आश्रय स्थान तक वह निरापद पहुँच गया। ज्यों ही सूरमाओं का दल वहाँ पहुँचा, स्टेशन मास्टर साहब गिलहरी की तरह खिड़की से कूद कर भाग गये। पैटरसन और उसके साथियों ने भी मलबे के एक ढेर के पीछे अपना मोर्चा लगाया और विचार विनिमय करने लगे। स्टेशन के मकान में एक निर्भीक गुण्डा छिपा है, जिसका निशाना अचूक है, और जिसके पास काफी बारूद है। घिरे हुए किले के चारों ओर कोई तीस तीस गज तक बिल्कुल खुला मैदान है।

स्पष्ट है कि जो व्यक्ति उस अरक्षित क्षेत्र में पाँव रखेगा वह कैलियोप की गोली का निशाना बन जायगा।

कोतवाल दृढ़ था। उसने निश्चय कर लिया था कि दुबारा क्विकसैंड की गलियों में कैट्सवी की चीत्कार कभी नहीं गूँजने दूँगा। वह इस बात की घोषणा भी कर चुका था। सरकारी और व्यक्तिगत, दोनों तौर से, वह इस बात को अपना कर्तव्य मान चुका था कि गड़बड़ी के स्रोत इस गुण्डे पर वह रोक लगा कर रहेगा। उसने सब को अब तक बहुत परेशान कर दिया था।

पास ही में छोटा-मोटा सामान ढोने का एक ठेला पड़ा था। वहीं पर, चरागाह से शहर में भेजने के लिए, कई बोरे ऊन के रखे हुए थे। ठेले पर कोतवाल और उनके साथियों ने ऊन के तीन बड़े बड़े बोरे लादे। आत्मरक्षा के लिए इन बोरों के पीछे झुका हुआ, बक पैटरसन ठेले को धीरे धीरे आगे खिसकाता कैलियोप के किले की तरफ बढ़ा। उसके साथी चारों ओर बिखर कर इस तैयारी में खड़े हो गये कि घिरा हुआ शिकार, यदि अपनी ओर सरकने वाले कानून के उस पहरेदार को चकमा देने की कोशिश करे तो वे उसे रोक लें। कैलियोप ने सिर्फ एक बार अपनी झलक दिखाई। एक खिड़की से उसने गोली चलायी, परन्तु कोतवाल के विश्वसनीय कवच से ऊन के कुछ रेशे उड़ने के सिवाय और कुछ नहीं हुआ। दल द्वारा छोड़ी गयी गोलियाँ किले की खिड़कियों से टकराकर शान्त हो गयीं। दोनों ओर कोई नुकसान नहीं हुआ।

कोतवाल, अपने सुरक्षित रथ को आगे बढ़ाने में इतना उलझा हुआ था कि कुछ ही मिनिट बाद, प्लैटफार्म पर आनेवाली सुबह की गाड़ी की बात ही भूल गया। वह प्लैटफार्म से कुछ ही दूरी पर था कि दूसरी तरफ से गाड़ी आती दिखाई दी। गाड़ी यहाँ एक ही मिनिट रुकती थी! ओफ। कैलियोप के लिए यह कितना सुन्दर अवसर था? पिछले दरवाज़े से एक कदम बाहर निकलो, गाड़ी में चढ़ो और चल दो।

उस कवच को एक ओर फेंक कर बक पैटरसन, बन्दूक सम्हाले आगे बढ़ा और कमरे के ज़ीने पर आ खड़ा हुआ। अपने दृढ़ कन्धे के एक ही धक्के से उसने दरवाज़ा खोल दिया। उसके साथियों को कमरे में गोली की एक आवाज़ सुनाई दी और उसके बाद सब कुछ शान्त हो गया।

कुछ समय बाद घायल व्यक्ति ने अपनी आँखें खोलीं। थोड़ी देर तक सुन्न रहने के बाद, उसमें देखने, सुनने, सोचने और समझने की चेतना लौटी। चारों ओर आँखें दौड़ाते हुए उसने देखा कि वह लकड़ी के तख्ते पर पड़ा हुआ था। उद्विग्न मुखवाला एक लम्बा आदमी जिसके सीने पर "शहर कोतवाल" का पद सूचक बिल्ला लग रहा था, उसके ऊपर झुका हुआ था। काले कपड़े पहिने, झुर्रीदार चेहरेवाली और काली, चमकती आँखों वाली एक बुढ़िया उसकी एक कनपटी पर गीला रूमाल फेर रही थी। घायल, परिस्थिति को समझने और बीती घटनाओं के साथ उसका सामंजस्य बिठाने की कोशिश कर ही रहा था कि बुढ़िया बोली,

"वाह रे मेरे बहादुर, शेर, पहलवान! गोली ने तो तुझे छुआ भी नहीं। वह तो तेरे सिर को खरौंचती हुई निकल गयी थी जिससे तू बेहोश हो गया। इस तरह की बातें मैंने पहले भी सुनी है। इसे 'झटका लगना' कहते हैं। एबल वाइकिन गिलहारियों को इसी तरह मारता था। थोड़ी सी खाल छिल गयी है, और कुछ नहीं। तू तो जल्दी ही अच्छा हो जायगा। काफ़ी ठीक हो भी गया है—क्यों? थोड़ी देर चुपचाप पड़ा रह, जब तक मैं तेरा सिर धो दूँ। तू शायद मुझे नहीं जानता पर इसमें अचरज की क्या बात। मैं अभी अभी अपने लड़के से मिलने अल्बामा से आयी हूँ – इसी गाड़ी से। मेरा बेटा भी काफी लम्बा चौड़ा है। लगता है जैसे छोटा बच्चा तो वह कभी था ही नहीं। यह है मेरा लड़का।"

कुछ घूम कर बुढ़िया ने उस खड़े हुए आदमी की तरफ देखा और उसके जीर्ण चेहरे पर गर्व की एक मधुर मुस्कान बिजली की तरह चमक गयी। नीली शिराओं से भरे हुए अपने रूखे हाथ में उसने अपने बेटे का हाथ भींच लिया। फिर नीचे पड़े हुए मनुष्य की तरफ़ उत्साह से मुस्कराते हुए, वेटिंग रूम की टीन की बेसिन में रूमाल डुबो डुबोकर वह उसकी कनपटी पर रखने लगी। बुढ़िया स्वभाव से ही वाचाल थी।

"आठ साल से मैंने अपने लड़के को देखा तक नहीं है। मेरा एक भानजा है, एलकानाह प्राइस — जो इसी रेलवे में बाबू है। उसने मुझे यहाँ आने का पास ला दिया। मैं यहाँ एक हफ्ते तक ठहर कर उसी पास से वापिस जा सकती हूँ। सोचिये तो, मेरा वह छोटा-सा बेटा, आज कितना बड़ा अफ़सर हो गया है! पूरे शहर का कोतवाल! यह

कोतवाल तो सिपाही जैसी ही कोई चीज होती है न ? मुझे तो मालूम भी नहीं था कि वह एक अफसर बन गया है । अपनी चिट्ठियों में भी उसने इस बात का जिक्र तक नहीं किया । वह शायद यह सोचता होगा कि मेरे इस खतरनाक काम की वजह से माँ को डर लगेगा । पर नहीं, मैं डरने वाली कहाँ ? और उससे फायदा भी क्या ? गाड़ी से उतरते ही मैंने बन्दूकों की धड़ाधड़ सुनी और इस कमरे में से धुँआ निकलता हुआ दिखाई दिया ; पर मैं बिना किसी डर के सीधी यहाँ चली आयी । खिड़की में से मैंने मेरे बेटे को झांकते हुए देखा और उसे तुरन्त पहिचान लिया । दरवाजे पर ही वह मुझे मिल गया । उसने मुझे अपनी बाहों में इतनी जोर से कस लिया कि मेरा तो दम ही निकल गया । तुम यहाँ बेहोश पड़े थे, मरे समान—और मैंने सोचा कि देखूँ मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकती हूँ ।"

घायल बोला, "मैं अब बैठना चाहता हूँ । अब मैं ठीक हूँ ।" कुछ कमजोरी के कारण दीवार का सहारा लेकर वह बैठ गया । वह एक लम्बा, चौड़ा, कठोर और मजबूत आदमी दिखाई देता था । उसकी स्थिर और तीखी आँखें रह रह कर सामने खड़े हुए मनुष्य की ओर उठ जाती थीं । उसके चेहरे का अध्ययन करते हुए, उसकी दृष्टि कभी कभी उसके सीने पर लगे हुए कोतवाल के बिल्ले पर भी जा पड़ती थी ।

उसकी बाँह को थपकते हुये बुढ़िया बोली, "हाँ हाँ तुम जल्दी ही अच्छे हो जाओगे, बशर्ते कि बदमाशी करना छोड़ दो और लोगों को गोली चलाने के लिए मजबूर न करो । जब तुम जमीन पर बेहोश पड़े थे तब मेरे बेटे ने मुझे सब कुछ बता दिया था । तुम्हारे ही जैसा तगड़ा बेटा मेरा भी है इसलिए मेरी बातों से यह मत समझना कि मैं तुम्हारे काम में खामखाँ टाँग अड़ा रही हूँ । मेरे बेटे को तुम्हें गोली मारनी पड़ी, इसलिए भी मन में डाह मत रखना । कानून की रक्षा और अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए अफसरों को ऐसा करना ही पड़ता है और बुरा काम करने वालों को भी यह सहन करना ही पड़ता है । इसलिए भाई, मेरे बेटे को दोष मत देना । उसका कोई कसूर नहीं है । वह तो हमेशा से बड़ा अच्छा लड़का रहा है—आज्ञाकारी, दयालु और सदाचारी, अब तुम कहो तो मैं तुम्हें कुछ राय दूँ । ऐसा काम फिर कभी मत करना । अच्छे आदमी बनो, शराब छोड़ दो, शान्ति से रहो, भग-

वान से डरो। बुरी सोहबत से दूर रहो, ईमानदारी से काम करो और चैन की बांसुरी बजाओ।"

उपदेश देते समय बुढ़िया ने काले दस्ताने पहिने हाथों से घायल आदमी के कन्धों को सहलाया। उसका चेहरा बहुत ही निष्कपट और सच्चा दिखाई देता था। फटे-पुराने काले कपड़े और जर्जर टोप लगाये वह अपने लम्बे जीवन के अन्तिम दौर से गुज़र रही थी और संसार के अनुभवों की मूर्तिमान प्रतिमा सी दिखाई देती थी। परन्तु घायल आदमी तो बुढ़िया के पीछे चुपचाप खड़े हुए उसके बेटे को ही घूर रहा था। एकाएक वह बोला, "कोतवाल साहब की क्या राय है? क्या वे भी इस उपदेश को अच्छा मानते हैं? ऐसा है तो अपने मुँह से कह दें।" वह लम्बा मनुष्य व्यग्रता से कुछ हिला! सीने पर लगे बिल्ले को उँगलियों से टटोलते हुए, उसने बुढ़िया को अपनी ओर खींच लिया। वह मुस्कराने लगी—साठ साल की किसी माँ की शाश्वत मुस्कराहट! अपनी टेढ़ी मेढ़ी उँगलियों से वह बेटे का मजबूत हाथ थपथपाने लगी।

नीचे पड़े हुए आदमी की आँखों में आँखें डालकर वह आदमी बोला, "बेशक, तुम्हारी जगह अगर मैं होता, तो मैं इस बात को मान लेता। यदि मैं एक निर्लज्ज और निराश पियक्कड़ या गुण्डा होता तो मैं जरूर इस बात को मानता। अगर तुम्हारे स्थान पर मैं और मेरे स्थान पर तुम होते तो मैं कहता, कोतवाल साहब, मुझे एक बार मौका दीजिये। मैं कसम खा कर कहता हूँ कि मैं इस जंजाल को छोड़ दूँगा। मारपीट और लड़ाई और बन्दूकबाजी – सब कुछ त्याग दूँगा। बेवकूफी छोड़कर मैं एक अच्छा नागरिक बनूँगा और मेहनत करूँगा। ईश्वर मेरी सहायता करे। यदि तुम कोतवाल होते और तुम्हारी जगह मैं होता तो मैं यही कहता!"

खुशी में आकर बुढ़िया बोली, "सुना तुमने? इसकी बात मान लो। वादा करो कि तुम अच्छे आदमी बनोगे और फिर यह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेगा। एकतालिस साल हो गये इसका जन्म हुए और तब से आज तक इसने सचाई से कभी मुँह नहीं मोड़ा।"

लेटा हुआ आदमी खड़ा हो गया और अपने हाथ पाँव झटक कर जाँचते हुए बोला, "यदि मैं कोतवाल होता और तुम ऐसा वादा करते तो मैं कहता, जाओ, तुम स्वतंत्र हो। अपना वचन निभाने की पूरी कोशिश करना।"

एकाएक घबरा कर बुढ़िया बोली, "अरे राम, मैं अपनी पेटी तो भूल ही गयी। मजूर ने पेटी उतार कर प्लैटफार्म पर तो रखी, परन्तु खिड़की से झाँकते हुए अपने बेटे का मुँह देखकर मैं तो ऐसी भागी कि पेटी की सुध ही नहीं रही। उसमें खुद के हाथों से बनाये हुए बेल के मुरब्बे की आठ बरनियाँ है। मैं तो उन्हें जान से ज्यादा जतन करके यहाँ तक बाँधे लायी हूँ।"

चिन्तित सी, वह फुर्ती से बाहर चली गयी। केलियोप कैट्सबी ने बक पैटरसन से कहा, "माफ करना बक, और कोई चारा ही नहीं था। खिड़की से मैंने उसे आते हुए देखा। मेरी आवारागर्दी के सम्बन्ध में उसने एक शब्द भी नहीं सुना है। मेरी उसे यह बताने की कभी हिम्मत ही नहीं हुई कि मैं समाज द्वारा तिरस्कृत एक निकम्मा आदमी हूँ। गोली लगने से तुम वहाँ बेहोश, मरे हुए से पड़े थे। एकाएक एक विचार आया और मैंने तुम्हारा बिल्ला तुम्हारे कमीज से खोलकर अपने सीने पर लगा लिया। मेरी शोहरत तुम्हारे सिर थोप दी। माँ से मैंने यही कहा, मैं तो शहर कोतवाल हूँ और तुम एक भयानक गुण्डे। तुम अपना बिल्ला वापिस ले सकते हो, बक।"

काँपती हुई उँगलियों से केलियोप कमीज पर लगा बिल्ला खोलने लगा। बक पैटरसन बोला, "जरा ठहरो। केलियोप कैट्सबी, उस बिल्ले को वहीं रहने दो। और जब तक तुम्हारी माँ शहर छोड़कर चली नहीं जाती तब तक उसे खोलने की हिमाकत करना भी नहीं। जब तक वह यहाँ रहती है क्विकसैंड शहर के कोतवाल तुम हो। मैं शहर में घूमकर इस बात का बन्दोबस्त कर दूँगा कि यह रहस्य तुम्हारी माँ के सामने कोई न खोल सके। और अब, ए पाजी, नीच, गधे, माँ के उपदेश का पालन कर। मैं भी उस पर अमल करूँगा।"

केलियोप का गला भर आया। हकलाते हुए वह बोला, "बक, अगर मैं ऐसा न करूँ तो मुझसे ज्यादा..."

बक चिल्लाया, "चुप कर, वह वापिस आ रही है।"

# काला बाज़ का उद्धार

एक साल, टैक्सास की सीमा पर रायोग्रान्डे के आसपास, एक निर्दय डाकू ने कुछ महीनों तक लोगों को बहुत परेशान किया। यह बदनाम डाकू देखने में विचित्र लगता था। उसके व्यक्तित्व ने उसके लिए, "सीमा का आतंक–काला बाज़" उपाधि अर्जित की थी। उसके और उसके दल के कारनामों की अनेक डरावनी कहानियाँ प्रचलित थीं। सहसा, एक पल में ही यह 'काला बाज़' पृथ्वी पर से गायब हो गया। दुबारा किसी ने चर्चा भी नहीं की। उसके अन्तर्धान होने के इस रहस्य का अनुमान उसके दल के सदस्य भी न लगा सके। सीमान्त प्रदेशों की बस्तियों और चरागाहों में यह आतंक फैला हुआ था कि वह फिर से आकर उन्हें लूटेगा और उनके लकड़ी के घरों को तहस–नहस कर देगा। पर ऐसा कभी नहीं होगा। यह कहानी उसके भाग्य का रहस्योद्घाटन करने के लिए ही लिखी गयी है।

कहानी का प्रारम्भिक मसाला सेंट लुई के एक कलाल ने दिया। एक बार उसकी पारखी दृष्टि, चिकन रगल्स पर पड़ी, जो मुफ्तखाने के दानों को लोभपूर्वक चुग रहा था। चिकन एक खानाबदोश था। उसकी नाक मुर्गे की चोंच सी थी, मुर्गे खाने की उसकी भूख असीम थी, और बिना दाम चुकाये, अपनी भूख मिटाने की उसकी आदत थी। साथी आवारों ने इन्हीं कारणों से उसे यह नाम दिया था।

डाक्टरों का कहना है कि खाने के समय शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। लेकिन मयखानों का स्वास्थ्य विज्ञान इससे बिल्कुल उल्टा ही है। चिकन आज खाने के साथ शराब का पैग खरीदना भूल गया था। कलाल अपने गल्ले से उठकर आया, नींबू निचोड़ने के औजार से इस मूर्ख भोजनभट्ट का कान पकड़ा और उसे दरवाज़े से बाहर सड़क पर धकेल दिया।

इस प्रकार, चिकन के दिमाग में आनेवाली सर्दियों की विभीषिका का अहसास हो गया। रात ठंडी थी, तारे करुणाहीन चमक से जगमगा रहे थे,

सड़कों पर आदमियों की, दो अहंकारपूर्ण, धक्कामुक्की करती हुई धाराएँ शीघ्रता से चली जा रही थीं। लोगों ने अपने ओवरकोट धारण कर लिये थे और उनके नीचे के कपड़ों की अन्दरवाली जेवों से पैसे निकलवाने में कितनी कठिनाई होती है, इसे चिकन बहुत अच्छी तरह जानता था। हर वर्ष की तरह दक्षिण की ओर प्रयाण करने का समय आ चुका था।

पाँच या छः साल का एक नन्हा सा लड़का, एक हलवाई की दुकान की खिड़की की ओर ललचाई नज़रों से देख रहा था। उसके एक हाथ में दो औंस की खाली शीशी थी और दूसरे में उसने कुछ चीज़ ज़ोर से भींच रखी थी, जो चपटी और गोल होती है, तथा जिसके किनारे पर चूड़ी बनी हुई होती है। चिकन को यह दृश्य अपनी योग्यता और साहस प्रदर्शन का उपयुक्त क्षेत्र दिखाई दिया। क्षितिज तक नज़र दौड़ा कर, उसने ठीक तरह इस बात की जाँच कर ली कि कोई सरकारी आदमी तो आस-पास नहीं है, और फिर उसने अपने शिकार से छलपूर्वक, दुआ सलाम शुरू की। लड़के ने इस वार्तालाप की कोई परवाह नहीं की क्योंकि उसे बचपन से ही ऐसी परोपकारी मनुहारों पर सन्देह करने की शिक्षा घरवालों द्वारा मिल चुकी थी।

चिकन समझ गया कि अब उसे साहस के साथ ऐसा प्रचण्ड दाँव खेलना पड़ेगा जिसकी भाग्य भी अपने अभिभावकों से आकांक्षा रखता है। उसकी कुल पूंजी पांच सैंट थी। और यदि वह उस चीज़ को जीतना चाहता है जो उस लड़के की मुट्ठी में भिंची हुई है तो उसे अपनी कुल पूंजी की जोखम उठानी पड़ेगी। चिकन जानता था कि यह एक अनिश्चित लाटरी है। उसे कोई तरकीब लगाकर अपने ध्येय की सिद्धि करना चाहिये, क्योंकि बच्चों को जबरदस्ती लूटने से उसे एकदम डर लगता था। एक बार एक बगीचे में भूखे मरते हुए उसने एक बच्चे के हाथ में की, दूध की बोतल पर हमला कर दिया था। क्रुद्ध बालक ने इतनी जल्दी मुँह फाड़कर अपनी नाराजी प्रकट की, कि न जाने कहाँ से सहायता आ पहुँची और उसे तीस दिन आराम से जेल काटनी पड़ी। उसी दिन से, उसी की जबानी वह "बच्चों से डरता था"।

बच्चे को उसकी मिठाइयों की पसन्द के बारे में कलात्मक ढंग से पूछना शुरू करके, धीरे धीरे उसने उससे सारी आवश्यक जानकरी हासिल कर ली। उसकी माँ ने उसे समझाकर भेजा था कि वह पहले दवाई के दुकानदार से

दस सेंट की दर्द की दवा बोतल मे डलवाये , अपने डालर को बन्द मुट्ठी मे भीच कर रखे, रास्ते मे किसी से बात करने के लिए न रुके, और दुकानदार से कहे कि वह बाकी की रेजगारी लपेट कर उसके पैट की जेब मे डाल दे । वास्तव मे उसके दो जेबे थी और उसे चाकलेट क्रीम सबसे ज्यादा पसन्द थी।

चिकन स्टोर मे गया और सटोरिया बन गया। आनेवाली बडी जोखिम की तैयारी मे अपनी सारी पूजी उसने मिठाई के शेयरो पर लगा दी।

उसने बच्चे को कुछ मिठाइयाँ दी और उसमे विश्वास का सचार होते देखकर उसे सन्तोष हुआ। इसके बाद अभियान का नेतृत्व सम्हालना आसान था , सिर्फ अपने विनियोग का हाथ पकड कर कुछ दूरी पर अपनी जानपहिचान वाली दवाइयो की दुकान तक ले जाना था । वहाँ चिकन ने एक अभिभावक की हैसियत से डालर तो अपने हाथ मे सम्हाला और दवाई माँगी। खरीददारी के उत्तरदायित्व से मुक्त होकर, लडका खुशी खुशी अपनी कैडी चूसने लगा। और तब उस सफल सौदागर ने अपनी जेबो को टटोला, जिसमे उसे सर्दी के कपडो की यादगार के रूप ओवरकोट का एक बडा बटन मिल गया। उसे उसी प्रकार सावधानी से लपेट कर उसने यह जाली रेजगारी उस विश्वास करने वाले लडके की जेब मे डाल दी। लडके का मुँह घर की ओर कर के, कृपापूर्वक उसकी पीठ थपथपाकर (क्योंकि चिकन का हृदय मुर्गे की तरह ही डरपोक था) और अपनी लागत पर १,७०० प्रतिशत लाभ उठाकर, वह सटोरिया बाजार से निकल गया।

दो घण्टे बाद, आयरन माउन्टेन की मालगाडी का इजन, खाली डिब्बे लिये हुए अपने कारखाने से टैक्सास की तरफ रवाना हुआ। एक मवेशी डिब्बे मे, घास के ढेर पर चिकन आराम से लेट गया। इस घोसले मे उसके पास कुछ घटिया शराब और एक थैली मे रोटी और पनीर पडा था। अपनी व्यक्तिगत गाडी में श्रीमान चिकन रगल्स, सर्दियाँ बिताने के लिए दक्षिण की यात्रा कर रहे थे।

एक सप्ताह तक वह गाड़ी रुकती हुई, बदलती हुई, और मालगाडियो की तरह बढ़ती, घटती हुई, दक्षिण की तरफ लुढकती रही। लेकिन चिकन, भूख-प्यास लगने के अवसरो के सिवाय, उसीसे चिपका रहा। वह जानता था कि गाडी निश्चित रूप से उसकी मजिल – सान अण्टोनियो – तक जायगी। वहाँ पर हवा मंद और स्वास्थ्यकर होगी, वहाँ के लोग दयालु और मुक्तभोगी। वहाँ के

कलाल उसे ठोकर नहीं मारेंगे। यदि वह एक ही जगह पर बारबार बिना पैसे दिये खा भी लेगा, तो उसे रटे हुए शब्दो में, बिना क्रोध दिखाये, गालियाँ ही देंगे। और उनका गालियाँ देने का ढँग भी बड़ा दिलचस्प होता है, जिसमें वे लम्बा-चौड़ा शब्दकोष खाली कर देते हैं। और जब तक वे उसकी भर्त्सना करेंगे, चिकन अपना खाना समाप्त कर लेगा। वहाँ का मौसम सदाबहार, वहाँ की रातें सदासुहागिन! और यदि घरों में आवभगत न होती हो, तो सर्दी के कुछ इनेगिने दिनों को छोड़कर, खुले में आदमी बड़े आराम से सो सकता है।

टैक्सरखाना पहुँचकर उसका डिब्बा एक और गाड़ी से जोड़ दिया गया। गाड़ी बराबर दक्षिण की ओर बढ़ती रही और कोलोरेडो का पुल पार करके आस्टिन पहुँची, जहाँ से एक शाखा तीर की तरह सीधी सान अएटोनियो जाती थी।

लेकिन मालगाड़ी जब सान अएटोनियो पहुँची, तब चिकन सो रहा था। दस मिनट बाद गाड़ी लारेडो के लिए रवाना हो गयी जो उस लाइन का अन्तिम स्टेशन था। मवेशियों के ये खाली डिब्बे इसी दरम्यान अलग अलग गोचरों में मवेशी लादने के लिए बँटने वाले थे।

चिकन की आँख खुली तब गाड़ी खड़ी थी। दरारों से देखने पर उसे बाहर चाँदनी दिखाई दी। रेंगते हुए बाहर आकर उसने देखा कि उसका डिब्बा तीन अन्य डिब्बों के साथ निर्जन जंगल के एक ओर खड़ा है। रेल के एक किनारे, मवेशियों का एक बाड़ा है और उन्हे गाड़ी में लादने का यंत्र भी वहीं पड़ा है। रेल की पटरी के चारों ओर, सूखा, सुनसान मैदान समुद्र की तरह फैला हुआ है। चिकन को महसूस हुआ कि इस वीराने में वह अकेला, राबिनसन क्रूसो की तरह भटक गया है।

पटरी के पास ही एक सफेद खम्भा था। पास जाकर चिकन ने पढ़ा, "सान अएटेनियो ९० मील" लारेडो भी दक्षिण की ओर उतनी ही दूरी पर था। किसी भी शहर से वह इस समय लगभग सौ मील दूर था। उस रहस्यपूर्ण निर्जन से जानवारों की चीखें सुनाई दे रही थीं। चिकन को अकेलापन महसूस हुआ। वैसे तो वह बोस्टन में रहा और पढ़ा नहीं, शिकागो में रहा और डरा नहीं, फिलाडेलफिया में रहा और सोने की जगह नहीं खोजी, न्यूयार्क में रहा और आसरा नहीं पाया, और पिट्सबर्ग में रहकर शराब में अपनी हस्ती को नहीं डुबाया, परन्तु आज के जैसा अकेलापन उसने कभी महसूस नहीं किया।

एकाएक उस गहन नीरवता में उसे घोड़े की हिनहिनाहट सुनाई दी। आवाज़ पूरब की ओर से आ रही थी। चिकन ने सावधानी से उसी दिशा में खोज आरम्भ की। ऊँची ऊँची घास से वह बचकर चला क्योंकि इस बीहड़ में ऐसी कई चीजें हो सकती हैं जिनसे वह डरता था – जैसे साँप, चूहे, डाकू, कनखजूरे, मरीचिका, गडरिये, जंगली भील, केंकड़े या और कोई बला। उसने कहानियों में इन चीजों के सम्बन्ध में बहुत पढ़ रखा था। अपने गोल गोल शिरों को उठाये, डरावने ढंग से फैली हुई, नागफनी के झुण्ड, के उस तरफ जाते ही वह डर से काँप उठा। एक घोड़ा उसके आने से चौकन्ना होकर उछलता और नथनें फुलाता हुआ कोई पचास गज भागकर फिर चरने लगा। इस वीराने में यही एक ऐसी चीज़ थी जिससे चिकन डरता नहीं था। वह खेतों में ही छोटे से बड़ा हुआ था और बचपन से ही घोड़ों को सम्हालना, दौड़ाना और समझना सीख गया था।

धीरे धीरे घोड़े को पुचकारता हुआ वह आगे बढ़ा। एक बार डर कर घोड़ा शान्त हो गया था और चिकन ने धीरे धीरे आगे बढ़कर डोरी का फन्दा डाल कर उसे पकड़ लिया। कुछ ही देर में उसने मैक्सिकन बनजारों की तरह उसी डोरी की कामचलाऊ लगाम बना ली। दूसरे ही क्षण वह घोड़े के ऊपर बैठा सरपट आगे बढ़ा जा रहा था। 'यह मुझे कहीं न कहीं तो पहुँचा ही देगा'– यह सोचकर उसने मंज़िल और दिशा घोड़े की इच्छा पर छोड़ दी।

इस चाँदनी रात में खुले मैदान पर घोड़े को स्वच्छन्द दौड़ाना, चिकन जैसे कामचोर और आलसी मनुष्य के लिए भी आनन्द की बात हो सकती थी। परन्तु इस समय उसकी इच्छा नहीं थी। उसका सिर चकरा रहा था, प्यास से गला सूख रहा था और जिस किसी अनिश्चित स्थान में उसका घोड़ा उसे ले जा रहा था, उसकी एक धुँधली सी आशंका उसे परेशान कर रही थी।

उसने देखा कि घोड़ा एक निश्चित मंजिल की तरफ बढ़ रहा था। जहाँ समतल मैदान होता वहाँ वह तीर की तरह पूरब की ओर भागता और जहाँ रास्ता पहाड़ियों, सूखे नालों या दुर्गम घाटियों से असम हो जाता, वहाँ भी वह अपने किसी सहज ज्ञान से प्रेरित उसी दिशा में अग्रसर हो रहा था। अन्त में एक छोटी सी पहाड़ी के किनारे घोड़े ने अपनी चाल धीमी कर दी। कुछ ही दूर, पेड़ों का एक झुरमुट आया जिसके नीचे मैक्सिको निवासियों के रहने जैसी

एक घुमटी थी—एक कमरे का छोटा-सा घर, बांस पर मिट्टी थोप कर बनायी हुई कच्ची दीवारें और फूस का छप्पर। अनुभवी आँखों ने इसे फौरन किसी छोटी-सी चरागाह के मालिक के निवासस्थान के रूप में पहचान लिया होता। चाँदनी में नजदीक के बाड़े की जमीन भेड़ों के खुरों द्वारा कूट-पीस कर समतल बना दी गयी थी। सभी ओर चरागाहों का तामझाम बिखरा पड़ा था, जैसे रस्सियाँ, लगामें, जीन, भेड़ों की खालें, ऊन के बोरे, नाँद और तम्बू ठोकने का कबाड़ा। दरवाजे के पास दो घोड़ों की बग्घी खड़ी थी। वहीं पीने के पानी का पीपा रखा था। बग्घी की धुरा पर घोड़ों के कई साज अस्तव्यस्त पड़े ओस में भींग रहे थे।

नीचे उतर कर चिकन ने घोड़े को एक पेड़ से बाँध दिया। बार बार पुकारने पर भी उसे कोई उत्तर नहीं मिला। दरवाज़ा खुला ही था, वह सावधानी से अन्दर घुसा। धुँधली रोशनी में भी उसने देख लिया कि घर में कोई नहीं है। उसने दियासलाई से टेबल पर पड़ी लालटेन को जलाया। कमरा किसी अविवाहित चरवाहे का मालूम देता था जिसे सिर्फ आवश्यक वस्तुओं के संग्रह से ही सन्तोष था। चिकन ने सतर्कता से कमरे को छानना शुरू किया और उसकी कल्पना से भी परे एक चीज़, एक छोटी सी भूरी सुराही उसके हाथ लगी, जिसमें अब भी उसकी तमन्ना से भरा, एक जाम बचा था।

करीब आधे घण्टे बाद लड़ाकू मुर्गे की तरह खूँखार होकर चिकन लड़खड़ाता हुआ बाहर निकला। इस दरम्यान उसने अपने फटे-पुराने चिथड़ों के स्थान पर मकान-मालिक के कपड़ों पर अधिकार जमा लिया था। वह भूरी जीन का मोटा सूट पहिने हुए था जिसका कोट छैलबटाऊ-सा भड़कीला था। वह भारी जूते पहने था, जिसकी एड़ उसके हर कदम के साथ चरमराती थी। उसकी कमर में कारतूसों से भरा चमड़े का एक पट्टा कसा हुआ था, जिसके दोनों ओर दो तमंचे लटक रहे थे।

इधर उधर टटोल कर उसने कुछ कम्बल, एक जीन और एक लगाम भी ढूँढ़ ली और इनसे अपने घोड़े को कसा। जोर से एक बेसुरा गीत आलापता हुआ, वह घोड़े पर बैठकर जल्दी से आगे बढ़ गया।

'बड किंग' की डाकुओं, लुटेरों और उठाईगीरों की टोली नज़दीक में ही फ्रायो नदी के किनारे एकान्त में डेरा डाले हुए थी। रायो ग्राण्डे के इस इलाके में उनकी करतूतों से आतंक छाया हुआ था, जिससे कैप्टन किन्नी

को अपने साथियो की मदद से उनकी खबर लेने का हुक्म मिल चुका था। इसीलिये बड किग ने, जो एक अनुभवी और समझदार नायक था, अपने साथियो की राय को ठुकरा कर भी कानून के इन हिमायतियो के पजे मे फँसने के बजाय, कुछ समय के लिए फ्रायो घाटी के इस बीहड मे अवकाश ले लेना ही उचित समझा था।

हालाँकि यह कदम समझदारी का था और बड किग की प्रसिद्धि या बहादुरी पर इससे कोई धब्बा नही लगता था, फिर भी उसके साथियो मे असतोष की एक लहर फैल गयी। दरअसल इस निर्जन मे अपयश के साथ चुपचाप पडे हुए वे लोग गुपचुप बड किग के नेतृत्व की योग्यता पर वादविवाद करने लगे थे। इससे पहले कभी बड की बुद्धिमत्ता और कार्यक्षमता की आलोचना किसी ने नही की थी। परन्तु अब एक नवोदित तारे के प्रकाश मे उसके यश का सूर्य फीका पड रहा था। (यश का यही दुर्भाग्य होता है।) दल की भावना एक ही विचार में केन्द्रित हो रही थी कि काला बाज उनका नेतृत्व अधिक जीवट, लाभ और योग्यता से कर सकता है।

यह 'काला बाज'—उपनाम 'सीमा का आतक'—कोई तीन महीने हुए, दल का सदस्य बना था।

एक रात जब वे लोग सान मीगल तालाब के किनारे डेरा डाले हुए पडे थे, एक आबदार, फौजी, घोडे पर बैठा हुआ कोई एकाकी घुडसवार उनसे आ मिला। नवागन्तुक का डीलडौल लम्बा, चौडा और अपशकुन-सूचक था। चोच की सी नाक, जिसका नुकीला भाग घनी काली मूछो के ऊपर उठा हुआ, डरावनी गहरी आँखे, हैट बूट से लैस, तमचो से जडा हुआ, नशे मे चूर, निर्भयता की साक्षात मूर्ति! बड किग के डेरे मे इस तरह बेधडक घुस आने की हिम्मत रायो की घाटी मे रहने वाले कम ही लोगो ने की होगी। परन्तु यह तो शिकारी बाज की तरह घुस आया और भोजन कराने की माँग करने लगा!

मैदानो के उस उपजाऊ प्रदेश मे आतिथ्य की कमी नही। यदि आपका दुश्मन भी आपके दरवाज़े से होकर गुजरे तो आपका फर्ज है कि गोली से उड़ाने से पहले उसकी पेट पूजा करे। उसके शरीर को बन्दूक की गोलियों से भरने से पहले उसके पेट को भण्डार की उत्तम चीजों से भरना जरूरी है। इसलिए अज्ञात कारण से आये हुए इस अजनबी के सम्मान मे

एक शानदार दावत की गयी। वह बड़ा बातूनी था। अपने कारनामों की उसने शानदार गप्पें हाँकीं। कभी कभी उसकी भाषा समझ में नहीं भी आती, पर बात का रंग जमा रहता। इस कैंडे के आदमियों से अनजान, वड किंग के साथियों में उसने सनसनी फैला दी। उसकी दूर की सूझ, लच्छेदार भाषा, जीवन का लापरवाह दृष्टिकोण, इस दुनिया और आनेवाली दुनियाँ के प्रति उदासीनता और मन की बात को निशंक होकर कहने का ढंग—इन सब बातों ने दल के सदस्यों को उसका विना मोल का गुलाम बना दिया।

आगन्तुक के लिए, लुटेरों का वह दल, मूर्ख किसानों के समूह से अधिक कुछ नहीं था। जिस तरह किसी खेत में बैठे बैटे उन्हें गप्पें सुनाकर वह अपना पेट भर लेता था उसी तरह आज डाकुओं के दल को फँसा बैठा। और सचमुच उसके अज्ञान का एक और कारण भी था। प्रदेश के लुटेरे एकदम बुरे नहीं होते। डाकुओं का वह दल किसी अजनवी को निरीह, गँवार किसानों का समूह लग सकता था, जो बैठे बैठे भुट्टे भून रहे हों। नम्र व्यवहार, धीमी चाल, मन्द स्वर, सादे कपड़े—उनके काले कारनामों का एक भी चिन्ह सामान्य दर्शक को दिखाई नहीं देता था।

इस दिलचस्प मेहमान का दो रोज तक शानदार स्वागत हुआ। फिर एक मत से उसे दल का सदस्य बनने का निमंत्रण दिया गया। उसने अपनी सहमति व्यक्त की और 'कप्तान मॉंट्रेसर' के शानदार नाम से दर्ज होने की इच्छा भी; परन्तु इस सुझाव का तुरन्त विरोध हुआ और उसकी कभी न बुझने वाली भूख को नजर में रखते हुए 'बकासुर' की उपाधि प्रदान की गयी।

इस तरह टैक्सास के सीमान्त प्रदेश में वहाँ के सबसे दर्शनीय डाकू का जन्म हुआ।

इसके बाद तीन महीने तक वड किंग अपना काम करता रहा—सिपाहियों से मुठभेड़ यथासम्भव टालना और मौका लगते ही जो कुछ मिले उसमें सन्तोष मानकर रफू हो जाना। दल ने समीप की चरागाहों के कई सुन्दर घोड़े और मवेशियों के कई रेवड़ उड़ाये, जिन्हें रायो घाटी के उस पार अच्छे दामों में बेच दिया गया। कभी कभी दल छोटे छोटे गाँवों या मैक्सिकन लोगों की बस्तियों पर धावा बोल देता और उन गरीब बनजारों को डरा धमका कर खाने पीने की चीजें और बारूद, कारतूस जैसी आवश्यक चीज़ें लूट कर ले जाता। इस प्रकार के रक्तहीन धावों

के दौरान में ही 'बकासुर' के भयानक डीलडौल और डरावनी आवाज़ ने उसके लिए एक ऐसी शानदार और व्यापक प्रसिद्धि अर्जित कर ली जो दल के मधुभाषी, रोनी सूरत वाले लुटेरों के लिए जीवन भर में भी कमानी संभव नहीं थी।

नामकरण करने में प्रवीण मैक्सिकन लोगों ने ही पहले पहल उसका नाम 'काला बाज़' रखा था। उस नाम से वे बच्चों को डराया करते थे कि यह भयानक लुटेरा अपनी चोंच में छोटे बच्चों को उठाकर ले जाता है। कुछ ही दिनों में यह 'काला बाज़' सीमा का आतंक नाम से प्रसिद्ध हो गया और अखबारों की अतिशयोक्तिपूर्ण खबरें और गडरियों की गपशप में प्रचलित हो गया।

न्यूसीस से लगा कर रायो ग्राण्ड तक का प्रदेश बीहड़, पर उपजाऊ था; भेड़–बकरी चराने के बड़े बड़े चरागाहों की जमीन की कोई कीमत नहीं थी, आबादी बहुत कम थी, कानून विशेषकर किताबों तक ही सीमित था और डाकुओं को बहुत कम विरोध का मुकाबला करना पड़ता था; पर इस भड़कीले और आकर्षक 'बकासुर' के आगमन के बाद दल काफी कुप्रसिद्ध हो गया था। तब किन्नी और उनके साथियों ने इसी प्रदेश में डेरा जमाया। बड किंग ने निश्चय किया कि अब दो ही विकल्प हैं— या तो खूँखार लड़ाई या कुछ समय के लिए सन्यास। लड़ाई की जोखम उठाना इस समय अनावश्यक समझ कर वह अपने दल को फ्रायो के एक दुर्गम दर्रे में ले गया। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इसी बात को लेकर दल के सदस्यों में असन्तोष की आग भड़क उठी और बड के खिलाफ कार्यवाही करने का निश्चय किया गया। उत्तराधिकारी के रूप में काला बाज़ ही लोकप्रिय था। बड किंग अपने साथियों की भावना से अनभिज्ञ नहीं था, इसलिए उसने अपने विश्वस्त सेनानी, कैक्टस टेलर को सलाह मशविरे के लिए बुलाया।

बड बोला, "अगर वे लोग मुझसे सन्तुष्ट नहीं हैं तो मैं पदत्याग करने को तैयार हूँ। मेरे काम करने के ढंग से वे सन्तुष्ट नहीं हैं। विशेष कारण यह हुआ कि जब तक सेम किन्नी इस इलाके में मौजूद है, मैंने चुप रहना ही उचित समझा है। मैंने तो उन्हें गोली का शिकार बनने या सरकारी महमान बनने से बचाया और वे कहते हैं कि मैं निकम्मा हूँ।"

कैक्टस ने उत्तर दिया, "असली कारण यह नहीं है। असल में वे लोग 'बकासुर' से बहुत प्रभावित हुए हैं और चाहते हैं कि अपनी शानदार मूँछों और चोंचनुमा नाक लिये वही उनके कारवाँ का रहबर हो।"

बड ने विचार करते हुए कहा, "'बकासुर' के बारे में कुछ विचित्र बात तो जरूर है। उसके मुकाबले का कोई आदमी ही अब तक मैंने नहीं देखा। बेशक, वह चिल्लाता बहुत जोर से है और उसकी जोड़ का घुड़सवार भी मिलना मुश्किल है, पर उसे अभी आज़माया नहीं जा सका। तुम जानते हो कैक्टस, कि उसके आने के बाद अपने दल का अभी तक किसी से संघर्ष ही नहीं हुआ। मैक्सिकन गँवारों को डराने में या छोटी मोटी दुकानों को लूटने में 'बकासुर' सिद्धहस्त है। यह भी माना कि मक्खन के डिब्बे लूटने में और आयस्टर के टीन उड़ाने में भी वह पारंगत है। पर इससे उसकी लड़ाई की उमंग का पता नहीं चलता। मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ जो गप्पें तो बहुत लम्बी चौड़ी हाँकते हैं पर गोली की पहली बौछार बरसते ही उनके पेट में दर्द होने लगता है।"

कैक्टस बोला, "बातें तो वह बड़ी बड़ी करता है और कई लड़ाइयों का वर्णन भी सुनाता है। कहता है कि उसने हाथी की नानी को देखा है और उल्लू की मौसी को सुना है।"

बड किंग ने डाकुओं की सँकेतिक भाषा में शंका व्यक्त की, "मुझे तो ढोल में पोल दिखाई देती है।"

यह बातचीत एक रात को खेमे में बैठकर हुई थी जब कि दल के अन्य आठों सदस्य धूनी के चारों ओर पड़े आराम से खाना खा रहे थे। बड और कैक्टस का वार्तालाप समाप्त होते ही 'बकासुर' की डरावनी आवाज़ सुनाई दी जो सदा की तरह अपनी भेड़िये सी भूख का थोड़ा बहुत निवारण करने में लगा हुआ था क्योंकि उसकी सम्पूर्ण तुष्टि तो संभव ही नहीं थी।

वह कह रहा था, "इन गाय के बछड़ों और घोड़ों का हजारों मील पीछा करने से क्या फायदा। इसमें क्या रखा है? झाड़-झंखाड़ों में दिन भर भटक भटक कर ऐसी प्यास लगती है जिसे पूरा मयखाना भी नहीं बुझा सकता। और, खाना छूट जाता है सो अलग। अगर मैं इस दल का मुखिया होऊँ तो क्या करूँ — मालूम है? मैं तो किसी रेलगाड़ी को लूटूँ — किसी डाकगाड़ी पर ही हाथ साफ करूँ ताकि नगद नारायण तो हाथ लगे। इस तरह धूल फाँकने से क्या फायदा? मैं तो

अब थक गया हूँ। गाय घोडे चराने के इस घटिया खेल से मुझे नफरत हो गयी है।"

बाद मे दल के प्रतिनिधि बड से मिले। एक पॉव पर खडे खडे दॉतो से घास चबाते हुए वे इधर उधर की उद्देश्यहीन बाते करने लगे क्योंकि अपने नेता की भावना को ठेस लगाने मे उन्हे दुख हो रहा था। बड उनके आने का कारण जानता था। वे अधिक खतरा और अधिक लाभ चाहते थे। बड ने उनका काम आसान कर दिया।

रेलगाडी लूटने की 'बकासुर' की योजना ने उनके मन मे नयी शक्ति का सचार करके उसके सयोजक के साहस और हिम्मत के प्रति और भी अधिक श्रद्धा उत्पन्न कर दी थी। स्वभाव से वे लोग इतने सीधे-सादे, निच्छल और रूढिग्रस्त थे कि इससे पहिले कभी, मवेशी चुराने और उनके काम मे टॉग अडाने वालो को मौत क घाट उतारने के सिवाय उन्होने अपने व्यापार का क्षेत्र बढाया ही नही था।

बड ने उदारतापूर्वक इस अभियान मे सहायक का स्थान स्वीकार कर लिया ताकि काला बाज अपने नेतृत्व की योग्यता प्रमाणित कर सके।

रेल के टाइमटेबलो का अध्ययन, उस प्रदेश की भौगोलिक स्थिति और अन्य कई बातों के सोच-विचार के बाद नयी योजना कार्यान्वित करने का दिन, समय और स्थान तय किया गया। उन दिनो मैक्सिको में चारे का अकाल पड़ रहा था और अमरीका मे मवेशियो की कमी। इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार जोरो पर था। और दोनो देशो के बीच काफी धन रेल द्वारा ले जाया जाता था। यह निश्चित हुआ कि इस डाके के लिए लारेडो से चालीस मील उत्तर की ओर स्थित आई जी एन रेल्वे का एस्पीना नामक छोटा-सा स्टेशन सब से उपयुक्त रहेगा। गाडी वहॉ सिर्फ एक मिनट रुकती थी। चारो तरफ का प्रदेश उजाड और निर्जन था और स्टेशन पर सिर्फ एक ही मकान था जिसमे स्टेशन मास्टर रहता था।

घोडो पर बैठ कर काले बाज का दल, रात में ही निकल पडा। पूरा दिन उन्होंने एस्पीना के समीप की झाड़ियो मे घोडों को सुस्ताया।

एस्पीना में गाडी रात को साडे दस बजे आती थी। गाडी लूट कर दूसरे दिन भोर होते होते वे लोग राजी खुशी मैक्सिको की सीमा पार कर सकते थे।

ईनामदारी से कहें तो काला बाज़ ने अपनी माननीय जिम्मेदारी से झिझकने का कोई लक्षण प्रकट नहीं किया।

बहुत समझदारी के साथ उसने अपने दल के लोगों में काम का विभाजन किया और अपना अपना कर्तव्य निभाने की उन्हें तालीम दी। पटरी के दोनों तरफ दल के चार चार लोग झाड़ी में छुपे रहेंगे। कनकटा रोजर स्टेशन मास्टर को सम्हालेगा। ब्रोंको चार्ली घोड़ों को तैयार रखेगा। इंजिन के खड़े रहने के सम्भावित स्थान पर एक ओर बड किंग और दूसरी ओर स्वयं काला बाज़ छुप कर बैठेंगे। गाड़ी रुकते ही ड्राइवर और खलासी पर हमला करके वे दोनों उन्हें नीचे उतारकर पीछे की ओर जाने को मजबूर करेंगे। इसके बाद डाकगाड़ी को लूटकर पलायन किया जायगा। जब तक कालाबाज़ अपना तमंचा चला कर इशारा न दे, तब तक कोई भी अपनी जगह से हिलेगा नहीं। योजना परिपूर्ण थी।

गाड़ी आने से दस मिनट पहिले हर आदमी अपनी अपनी जगह पर मुस्तैद हो गया। पटरियों तक वनी उगी हुई घास ने उन्हें पूरी तरह ढक लिया था। रात काली थी और बदली रिमझिम बरस रही थी। काला बाज़ पटरी से कोई पाँच गज दूर एक झाड़ी के पीछे छिपा बैठा था। उसके दोनों ओर छः छः कारतूसों वाली दो पिस्तौलें बँधी हुई थी। कभी कभी वह अपनी जेब से एक छोटी-सी काली बोतल निकाल कर मुँह से लगा लेता था।

पटरी पर काफी दूर एक मद्धम तारा दिखाई दिया जो थोड़ी ही देर में आनेवाली गाड़ी की हैड लाइट में परिवर्तित हो गया। गाड़ी घड़घड़ाती हुई आयी। छिपे हुए लुटेरों को प्रकाश में डुबोता हुआ इंजिन आगे बढ़ गया, मानों उन्हें सज़ा देने के लिए कोई यमदूत आया हो। काला बाज़ जमीन से चिपक गया। उनके अन्दाज के खिलाफ, इंजन काला बाज़ और बड किंग के छिपने की जगह के पास रुकने की बजाय कोई चालीस गज़ आगे जाकर रुका।

डाकुओं का सरदार उठ खड़ा हुआ और झाड़ी से इधर उधर झाँकने लगा। उसके साथी, इशारे की राह देखते हुए चुपचाप पड़े थे। काला बाज़ के ठीक सामने जो चीज़ आ खड़ी हुई उसने तुरन्त उसका ध्यान आकर्षित किया। यह डाक गाड़ी न होकर मिलीजुली गाड़ी थी। उसके सामने एक मवेशियों का डिब्बा आ खड़ा हुआ जिसका दरवाज़ा गलती से कुछ खुला रह

गया था। अन्दर से आनेवाली भीनी, परिचित, घुटी हुई, नशीली और प्रिय सड़े हुए तेल की सी दुर्गन्ध ने उसके मन में बीते हुये सुखी दिनों और यात्राओं की याद ताजा कर दी।

इस मोहक सुगन्ध को काला बाज़ वैसी तल्लीनता से सूँघता रहा जैसे कोई घुमक्कड़ स्वदेश लौट कर गुलाब के फूलों से छायी अपनी झोंपड़ी को सूँघता है। घर की याद ने उसे पागल कर दिया। उसने रेल के डिब्बे में हाथ डाला। फर्श पर सूखी, गुदगुदी, घुंघराली, नरम, आकर्षक, घास बिछी हुई थी। बाहर, रिमझिम का स्थान हड्डियाँ कँपा देनेवाली वर्षा ने ले लिया था।

गाड़ी की घण्टी बजी। डाकुओं के सरदार ने कमर से पट्टा खोला और तमंचों के समेत उसे जमीन पर फेंक दिया। भारी जूतों और चौड़े टोप की भी वही दशा हुई। काला बाज़ का रूपान्तर हो गया। गाड़ी रवाना होते ही एक झटके के साथ भूतपूर्व 'सीमा के आतंक' ने कूद कर डिब्बे में चढ़ते हुए दरवाजा बन्द कर लिया। घास पर आराम से लेटे हुए काली बोतल सीने से लगाये, आँखें बन्द किये और अपने डरावने चेहरे पर मूर्खतापूर्ण, पर सुखद मुस्कराहट लिये चिकन रगल्स ने अपनी वापसी यात्रा आरम्भ की।

डाकुओं का दल अपने नेता के इशारे की प्रतीक्षा में निस्पन्द पड़ा रहा और रेलगाड़ी बेखटक एस्पीना से चल दी। जैसे जैसे गाड़ी की रफ्तार बढ़ती गयी और ऊंची घास के काले झुरमुट पीछे सरकते गये, गाड़ी के हरकारे ने अपना पाइप सुलगा कर खिड़की से बाहर देखते हुए टिप्पणी की—

"वाह, डाका डालने के लिए क्या ही बढ़िया स्थान है!"

# पुनरुत्थान

जेल के भीतर जूते बनाने के कारखाने में, जहाँ जिम्मी वेलरणटाइन बड़ी तत्परता से जूतों के ऊपरी भागों की सिलाई कर रहा था, एक सन्तरी आया और उसे अपने साथ सामने वाले दफ्तर में ले गया। वहाँ जेल के वार्डन ने जिम्मी के हाथ में क्षमा-पत्र थमा दिया, जिस पर उसी दिन गवर्नर ने अपने हस्ताक्षर किये थे। जिम्मी ने बिना उत्साह, क्षमा-पत्र अपने हाथ में ले लिया। चार साल की सज़ा में से उसने लगभग दस महीने काट दिये थे। उसे आशा थी कि वह अधिक से अधिक तीन महीने जेल में रहेगा। जिम्मी वैलण्टाइन जैसा व्यक्ति, जिसे जेल में से छुड़ाने के लिए अनेक मित्र प्रयत्न-शील हों, जब जेल में लाया जाता है तब उसके कैदियों जैसे बाल कटवाना भी व्यर्थ होता है।

वार्डन ने कहा, "वैलरणटाइन! तुम सुबह जेल से छूट जाओगे। अभी भी सम्हल जाओ और अपने आपको अच्छा आदमी बनाने का प्रयत्न करो। तुम्हारा मन बुरा नहीं है। तिजोरियाँ तोड़ना छोड़ दो और सज्जन बन कर रहो।"

जिम्मी ने आश्चर्य के साथ कहा, "मैं? मैंने तो जीवन में कभी तिजोरियाँ नहीं तोड़ीं!"

वार्डन हँसा, "ओह, बिल्कुल नहीं, बिल्कुल नहीं।" तो फिर स्प्रिंगफील्ड की चोरी के मामले में तुम्हें सज़ा क्यों हुई? क्या इसलिए कि उच्च समाज के किसी व्यक्ति को बदनामी से बचाने के लिए तुम अपने दूसरे स्थान पर होने की दलील को सिद्ध नहीं कर सके! या किसी नालायक बूढ़े मजिस्ट्रेट का तुम्हें सजा देने में कोई स्वार्थ था? तुम्हारे जैसे निर्दोष, पीड़ित व्यक्तियों के पास इन दो में से कोई एक कारण ही तो होता है!"

जिम्मी ने उसी उदासी और सच्चरित्रता के साथ कहा—"पर श्रीमान, मैं अपने जीवन में कभी स्प्रिंगफील्ड गया ही नहीं।"

वार्डेन ने मुसकराकर कहा, "क्रोनिन ! इसे वापिस ले जाओ और बाहर निकलने के कपड़े पहिना दो । सवेरे सात बजे इसे जेल से मुक्त कर देना। वैलण्टाइन, मेरी सलाह पर फिर गौर करना।"

दूसरे दिन सवेरे सवा सात बजे जिम्मी वार्डेन के बाहर वाले दफ्तर में आ खड़ा हुआ। उसने छैले के समान सूट पहिन रखा था और उसके पास तैयार कपड़े तथा एक जोड़ी चरमराहट करने वाले, कड़क जूते थे, जो राज्य की ओर से इन आवश्यक महमानों को मुक्त करते समय दिये जाते थे।

क्लर्क ने एक रेल का टिकिट तथा पाँच डालर उसके हवाले कर दिये जिसके द्वारा न्याय, यह आशा करता था कि व्यक्ति, अपने आप को फिर से बसा कर, एक सुशील और समृद्ध नागरिक बन सकेगा। जेल के वार्डेन ने उसे एक सिगार दी और उससे हाथ मिलाथा। रजिस्टर में वैलण्टाइन ९८६२ के सामने लिख दिया गया—"गवर्नर द्वारा क्षमा-दान" और श्रीमान जेम्स वैलण्टाइन सूरज की सुनहली धूप में जेल से बाहर निकल आये।

पंछियों के गीतों, झूलते हुए पेड़ों और फूलों की महक की अवज्ञा करते हुए जिम्मी सीधा एक रेस्तराँ में गया। वहाँ उसने गरम चिकन, सफेद शराब की बोतल और जेल अधिकारी द्वारा दी गयी सिगार से भी ऊँचे दर्जे की सिगार के रूप में, स्वतंत्रता के मधुर आनन्द का आस्वादन किया। वहाँ से वह धीरे धीरे स्टेशन की ओर चला। उसने फाटक पर बैठे हुए अन्धे भिखारी की टोपी में कुछ सिक्के डाले और गाड़ी में चढ़ गया। तीन घण्टे बाद वह राज्य की सीमा के पास वाले एक छोटे शहर में पहुँच गया। वह माइक डोलन के जलपानगृह में गया और वहाँ गल्ले के पीछे अकेले बैठे हुए माइक से उसने हाथ मिलाया।

माइक ने कहा– "मुझे अफसोस है जिम्मी, हम यह काम इससे पहिले नहीं कर सके। हमें स्प्रिंगफील्ड में होने वाले प्रतिवाद का दृढ़ता से मुकाबला करना पड़ा और गवर्नर ने भी हमें पूरा निराश कर दिया। तुम्हारी तबीयत कैसी है ?"

"बिल्कुल ठीक" जिम्मी ने कहा, "मेरी चाबियाँ हैं ?"

उसने अपनी चाबियाँ लीं और सीढ़ियाँ चढ़कर पिछवाड़े के कमरे का ताला खोला। सभी चीजें वैसी ही पड़ी थीं। बैन प्राइस नामक जासूस के कालर का बटन, जो उसने पिछली गिरफ़्तारी के समय काबू में आने से

पहिले उसके कमीज़ की पट्टी से तोड़ लिया था, अभी तक फर्श पर पड़ा था।

दीवार में से समेटा हुआ बिस्तर खींच कर, जिम्मी ने एक चौखटा वापिस दीवार में धकेल दिया और धूल से भरा हुआ एक सूटकेस बाहर खींच लिया। उसने इसे खोला। पूर्वी तट पर सर्वश्रेष्ट माने जाने वाले, सेंध लगाने के औजारों के इस संग्रह को वह मुग्ध दृष्टि से, एकटक देखता रहा। यह एक पूरा सैट था, जिसमें विशेष तापक्रम पर ढले इस्पात से बने नवीनतम प्रकार के बर्मे, कीलें, पंचू, बेधे, गिरमिट आदि के साथ साथ दो तीन स्वयं जिम्मी के द्वारा अविष्कार की गयी अद्‌भुत वस्तुएँ भी थीं, जिन पर उसे बहुत गर्व था। इन्हें बनवाने में नौ सौ डालर से भी अधिक खर्च हुए थे। इन्हें उस गांव में बनवाया गया था जहाँ इस व्यवसाय के अनेक औजार निर्मित होते हैं।

आधे घण्टे के भीतर ही जिम्मी सीढ़ियाँ उतर कर जलपानगृह से गुजरा। अब वह सुरुचिपूर्ण उपयुक्त कपड़े पहिने था और उसके हाथ में झाड़-पोंछ कर साफ किया हुआ सूटकेस था।

माइक डोलन ने आनन्द के साथ पूछा— "कहीं धावा करने का इरादा है!"

जिम्मी ने भ्रामक स्वर में कहा, "कौन मैं? मैं समझा नहीं। मैं तो न्यूयार्क एमालगेमेटेड शार्ट स्नेप बिस्किट क्रेकर एण्ड फ्रेजल्ड व्हीट कम्पनी का प्रतिनिधि हूँ।"

इस कथन से माइक को इतनी प्रसन्नता हुई कि जिम्मी को वहाँ बैठकर सोडा और दूध पीना पड़ा। शराब वह छूता भी नहीं था।

वैलन्टाइन ९७६२, की रिहाई के एक सप्ताह बाद रिकमाण्ड, इण्डियाना में बहुत सफाई के साथ तिजोरी टूटने की घटना हुई जिसके कर्त्ता का कोई पता नहीं चला। वहाँ से केवल आठ सौ डालर गायब हुए। दो हफ्ते बाद लोगन्सपोर्ट में एक पेटेन्ट की हुई, दुर्भेद्य तिजोरी इस प्रकार खोल ली गयी जैसे किसी केक की तह उघाड़ी गयी हो और उसमें से पन्द्रह सौ डालर के नोट निकाल लिये गये; पर चांदी और हुंडियों के हाथ भी न लगाया गया। अब चोर पकड़ने वालों की दिलचस्पी बढ़ी। इसके बाद जैफरसन सिटी के एक बैंक की पुरानी तिजोरी की दरारों से पाँच हजार डालर के नोट चम्पत हो गये। नुकसान इस सीमा तक पहुँच चुका था कि बेन

प्राइस जैसे जासूस अब इस मामले को अपने हाथ में ले सकें। अपनी पिछली तहकीकातों का मिलान करने से उन्हें चोरी के तरीकों में एक विलक्षण साम्य दिखाई दिया। बेन प्राइस ने चोरी के स्थानों की जाँच की और उसके द्वारा ये विचार प्रगट किये गये।

"इन चोरियों पर जिम वैलण्टाइन की मुहर है। उसने अपना व्यवसाय फिर प्रारम्भ कर दिया है। अक्षरों की जोड़ करने से खुलने वाले उस ताले को देखो—इस तरह निकाल लिया गया है जैसे वर्षा के दिनों में मूली। इस काम के लायक औजार केवल उसी के पास हैं, और देखो, कितनी सफाई से ताले की सलाख को निकाल बाहर किया है! जिम्मी को कभी एक से अधिक सूराख नहीं करने पड़ते। मेरे विचार से जरूर वैलण्टाइन को ही पकड़ना पड़ेगा। अबकी बार उसे पूरी सजा काटनी पड़ेगी। क्षमा या रिहाई की बेवकूफी नहीं चलने दूँगा।"

बेन प्राइस, जिम्मी की आदतों से परिचित था। स्प्रिंगफील्ड की चोरी के मामले की जाँच करते समय वह उसके हथकण्डों को पहचान गया था। दूर दूर तक धावा मारना, जल्दी निकल भागना, संगठन नहीं बनाना और संभ्रान्त समाज में घूमना—इन तरीकों से किसी भी प्रतिकार को चकमा देने में वैलण्टाइन प्रसिद्ध हो चुका था। विज्ञापित कर दिया गया कि इस छली चोर के पीछे जासूस बेन प्राइस लग गया है और इससे उन लोगों को कुछ चैन मिला जिनके पास अभेद्य कही जानेवाली तिजोरियाँ थीं।

एक दिन दोपहर में जिम्मी वैलण्टाइन अपने सूटकेस के साथ डाक-गाड़ी द्वारा काले गुलामों के प्रदेश अरकान्सा में रेल की पटरियों से पाँच मील दूर इलमोर नगर पहुँच गया। कालेज से घर लौटे हुए किसी युवक खिलाड़ी सा दिखाई देता जिम्मी, एक होटल की ओर जाने वाली चौड़ी सड़क पर निकला।

एक युवती सड़क पार करती हुई नुक्कड़ पर उसके पास से गुजरी और एक दरवाजे में घुसी जिस पर "इलमोर बैंक" का साइनबोर्ड लगा था। जिम्मी वैलण्टाइन ने उसकी आँखों में देखा। क्षणभर के लिए वह भूल गया कि वह कौन है और वह कोई दूसरा ही आदमी बन गया। युवती की निगाहें कुछ झुकीं और वह लजा गयी। जिम्मी जैसी अदाओं और नजरोंवाले युवक इलमोर में कहाँ थे!

जिम्मी ने बैंक के मालिक की अदा से एक लड़के को पकड़ा जो बैंक की सीढ़ियों पर आवारागर्दी कर रहा था और उसे थोड़ी थोड़ी देर में कुछ छोटे सिक्के दे दे कर उससे नगर के बारे में प्रश्न पूछने लगा। कुछ देर के बाद वह युवती बाहर निकली और इस सूटकेस वाले युवक से महारानी की तरह जान बूझ कर बेखबर बनती हुई अपने रास्ते चली गयी।

"कहीं यह महिला कुमारी पोली सिम्पसन तो नहीं है?" जिम्मी ने छलपूर्वक पूछा।

लड़के ने कहा, "नहीं, वह तो अन्नाबेल आदम्स है। उसका बाप इस बैंक का मालिक है। तुम इलमोर किसलिए आये? क्या यह घड़ी का पट्टा सोने का है? मैं एक बुलडाग लाने वाला हूँ। तुम्हारे पास कुछ और सिक्के हैं?"

जिम्मी ने प्लान्टर्स होटल जा कर राल्फ डी स्पेंसर के नाम से एक कमरा किराये पर लिया। क्लर्क की मेज़ पर झुक कर उसने अपनी योजना बतायी। वह इलमोर में व्यापार करने के लिए जगह ढूंढ़ने आया है। इस शहर में जूतों का व्यापार कैसा रहेगा? उसने जूतों का व्यापार करना सोचा है। क्या उसमें कुछ गुँजाइश है?

जिम्मी की पोशाक और व्यवहार से क्लर्क बहुत प्रभावित हुआ। वह स्वयं इलमोर के मामूली ठाट-बाट वाले धनी युवकों के लिए फैशन में आदर्श रूप था, पर अब उसे अपनी कमियाँ दिखाई दीं।

जिम्मी का नैकटाई बांधने का ढँग समझने की कोशिश करते हुए उसने मित्रतापूर्वक सारी जानकारी दे दी।

"जूतों के व्यवसाय में वास्तव में अच्छी गुंजाइश होनी चाहिये। नगर भर में ऐसी कोई दुकान नहीं जहाँ सिर्फ जूते मिलते हों। बजाज या जनरल स्टोर वाले जूतों का कारोबार भी करते हैं। सभी वस्तुओं का व्यापार काफी अच्छा है।" उसने आशा व्यक्त की कि मिस्टर स्पेंसर भी इलमोर में ही रहना तय करेंगे। उन्हें यह शहर बड़ा नफीस और यहाँ के लोग बड़े मिलनसार लगेंगे।

स्पेंसर ने कुछ दिन नगर में रह कर कोई स्थान तलाश करने का निश्चय किया। क्लर्क द्वारा बोझा उठाने वाले लड़के को बुलाने की उन्हें आवश्यकता नहीं पड़ी। वे खुद ही अपना सूटकेस उठा लेंगे, क्योंकि वह कम भारी है।

सामाजिक क्षेत्र में भी वह बहुत सफल हुआ और उसके अनेक मित्र बन गये। उसके मन की साध भी पूरी हुई। वह कुमारी अन्नाबेल आदम्स से मिला और उसके सौंदर्य का अधिकाधिक पुजारी बनता गया।

वर्ष के अन्त में मि. राल्फ स्पेंसर की स्थिति इस प्रकार थी। समाज में उसकी काफी प्रतिष्ठा थी, जूतों का स्टोर चल रहा था, अन्नाबेल से उसकी सगाई हो चुकी थी और दो सप्ताह के भीतर ही विवाह होनेवाला था। मि. आदम्स जो अपने ढंग के एक ही परिश्रमी, देशी बेंकर थे, स्पेंसर को पसंद कर चुके थे। अन्नाबेल को उस पर जितना प्रेम था उतना ही गर्व भी था। वह स्वयं भी आदम्स और अन्नाबेल की विवाहिता बहिन के घरों में इतना घुलमिल गया था जैसे वह उनके परिवार ही का सदस्य हो।

एक दिन जिम्मी ने अपने कमरे में बैठे बैठे एक पत्र लिखा और उसे सेंट लुई में रहने वाले अपने एक मित्र के सुरक्षित पते पर भेज दिया।

प्रिय मित्र,

अगले बुधवार को रात के नौ बजे मैं तुमसे लिटिल राक में सुलीवन के घर पर मिलना चाहता हूँ। मैं अपने कारोबार को तुम्हारे हाथों में सौंप देना चाहता हूँ। साथ ही अपने औजारों का संग्रह भी तुम्हें भेंट करना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम उन्हें पाकर खुश होओगे। उस प्रकार के औजार की जोड़, हजार डालर में भी नहीं बन सकती। क्या बताऊं बिली, एक वर्ष हुआ मैंने पुराना व्यवसाय छोड़ दिया है। मेरी अब एक अच्छी-खासी दुकान है। मैं ईमानदारी से जीविकोपार्जन कर रहा हूँ और आज से दो हफ्ते बाद संसार की सर्वश्रेष्ठ लड़की से शादी कर रहा हूँ। बिली, यह जीवन ही वास्तविक जीवन है। अब तो मैं दस लाख डालर के लिए भी किसी दूसरे का धन नहीं छू सकता। शादी के बाद मैं अपना सब-कुछ बेच-बाच कर पश्चिम की ओर जाना चाहता हूँ, जहाँ मेरे विरुद्ध पुराने अभियोगों को जिन्दा कर मुझे तंग करने का वैसा भय नहीं रहेगा। बिली, मैं कहता हूँ वह कोई अप्सरा है। वह मुझ पर विश्वास करती है और मैं अब संसार की किसी भी वस्तु के लिए ऐसा घिनौना काम नहीं करूंगा। सुल्ली के घर आना याद रखना, क्योंकि मुझे तुमसे मिलना जरूरी है। मैं अपने औजार साथ लाऊंगा।

तुम्हारा पुराना दोस्त
जिम्मी

सोमवार की रात जब जिम्मी ने यह पत्र लिखा, बेन प्राइस बिना अवरोध एक घोड़े की बग्घी में इलमोर आया। जब तक उसने सब बातों का पता न लगा लिया वह चुपचाप नगर में सटरगश्ती करता रहा। स्पेंसर के जूतों के स्टोर के सामने सड़क के उस पार वाले होटल से उसने राल्फ डी. स्पेंसर को ठीक से देख भी लिया।

बैन ने मन ही मन कहा,—"बैंक मालिक की बेटी से ब्याह करने जा रहे हो, क्यों जिम्मी? अच्छा देखेंगे।"

दूसरे दिन सवेरे जिम्मी ने आदम्स के यहाँ नाश्ता किया। उसी दिन अपने लिए शादी के कपड़े बनवाने और अन्नाबेल के लिये कोई अच्छी चीज़ खरीदने के लिए वह लिटिल राक जा रहा था। इलमोर आने के बाद नगर से बाहर जाने का, उसका यह पहला मौका था। अपने चोरी के पुराने व्यवसाय को छोड़े एक वर्ष से भी अधिक समय बीत चुका था और उसके विचार से अब वह बेखटके बाहर निकल सकता था।

नाश्ता करने के बाद परिवार का सारा दल नगर की ओर चला—मि. आदम्स, अन्नाबेल, जिम्मी, अन्नाबेल की विवाहिता बहिन और उसकी दोनों लड़कियाँ, जो पांच और नौ साल की थीं। वे उस होटल पर आये जहाँ जिम्मी अभी तक रहता था और वह लपक कर कमरे से अपना सूटकेस ले आया। तब वे बैंक गये। वहाँ जिम्मी की बग्घी, घोड़ा और डाल्फ गिब्सन खड़ा था जो उसकी गाड़ी को हाँक कर ले जाने वाला था।

सभी लोग उस ऊँची गोलाकार लकड़ी की चहारदीवारी के भीतर बैंक रूम में गये—जिम्मी भी उनके साथ था। मि. आदम्स के होने वाले दामाद का सभी जगह स्वागत था। बैंक के क्लर्क भी उस सुन्दर, मिलनसार युवक का अभिवादन पाकर प्रसन्न होते थे, जो कुमारी अन्नाबेल का पति होने वाला था। जिम्मी ने अपना सूटकेस नीचे रख दिया। अन्नाबेल ने, जिसका हृदय युवावस्था और प्रेम के आनन्द से उफन रहा था, जिम्मी का टोप अपने सिर पर रख लिया और उसके सूटकेस को गोद में उठा लिया। वह बोली, "क्या मैं एक अच्छी बैंड बजाने वाली नहीं बन सकती प्यारे राल्फ!" देखो तो, यह कितना भारी है! लगता है जैसे सोने की ईंटों से भरा है।"

जिम्मी ने शान्ति से कहा, " इसमें जूते पहिनने के कई निकल के चम्मच हैं। इन्हें मैं लौटा रहा हूँ। मैंने सोचा, साथ ले जाकर पार्सल खर्च बचा लूँगा। आज कल बहुत कम खर्च करने लगा हूँ। "

इलमोर बैंक में अभी अभी एक नयी तिजोरी और तहखाना बनवाया गया था। मि. आदम्स को उस पर बहुत गर्व था और वे सभी से उसे देखने का अनुरोध करते थे। तहखाना छोटा सा था पर उसका दरवाजा नया पेटेंट किया हुआ था। वह तीन ठोस फौलाद के पेचों से कसा हुआ था जो एक साथ बंद होते थे। उसके एक ही हत्था था और उसके टाइम लाक लगा था। मि. आदम्स ने उत्साहपूर्वक इस दरवाजे का कौशल मि. स्पेंसर को दिखाया। वह, बुद्धिपूर्वक तो नहीं, पर शिष्टता के नाते दिलचस्पी दिखा रहा था। मे और अगाथा, ये दोनों बच्चियाँ भी धातु की चमक और उस अज़ीब घड़ी और कुण्डे को देखकर प्रफुल्लित हो रही थीं।

जब वे सब इस काम में मशगूल थे, तभी बैन प्राइस मटरगश्ती करता हुआ, वहाँ आ पहुँचा और चहारदीवारी पर अपनी कुहनियाँ टिकाये भीतर की ओर कभी कभी अपनी नजर दौड़ाने लगा। क्लर्क द्वारा पूछे जाने पर उसने कह दिया कि उसे कुछ नहीं चाहिये; वह तो किसी परिचित व्यक्ति की राह देख रहा है।

एकाएक औरतों के समूह में से एक दो चीखें सुनाई पड़ीं और कुछ खलबली मच गयी। बड़े लोगों की नजरें बचाकर नौ वर्षीया मे ने, अगाथा को तहखाने में बन्द कर दिया था। फिर उसने कुंडा लगाकर अक्षरों वाले खटके को वैसे ही घुमा दिया था, जैसा मिस्टर आदम्स दिखा चुके थे।

बूढ़े बैंक मालिक ने झपट कर दरवाज़े की मूठ को क्षणभर झकझोरा। फिर वह कराहने लगा, " अब यह नहीं खुल सकता। न तो घड़ी ही मिलायी गयी थी और न ताले के अक्षरों को जमाया गया था। "

हिस्टीरिया के रोगी की तरह अगाथा की माँ एक बार फिर चीखी।

मिस्टर आदम्स ने अपना काँपता हुआ हाथ ऊँचा उठा कर कहा, " हुश! जरा देर सब लोग चुप करो। " फिर उन्होंने पूरे जोर से पुकारा, " अगाथा! सुन बेटी! " इसके बाद जो निस्तब्धता हुई उसमें सब लोगों ने बच्ची की धीमी आवाज़ें सुनीं, जो उस अन्धेरे तहखाने में डर से घबरा कर पागल की तरह चीख रही थी।

एक क्षण में ही जिम्मी का प्रिय बरमा, इस्पात के दरवाज़े को निर्विरोध काटने लगा। दस मिनट में ही अपने खुद के, चोरी करने के रिकार्ड को, तोड़ते हुए, उसने चटखनी खिसका कर, दरवाजा खोल दिया।

लगभग मृत, किन्तु सुरक्षित अगाथा अपनी माँ की बाँहों में आ गयी।

जिम्मी वैलण्टाइन ने अपना कोट पहिना और वह बाड़ के उस तरफ मुख्य द्वार की ओर बाहर रवाना हुआ। जाते हुए उसे ख्याल आया, जैसे कोई परिचित स्वर, पीछे से पुकार उठा है, "राल्फ!" पर वह झिझका नहीं।

दरवाज़े पर एक मोटा-सा आदमी उसकी राह में खड़ा था।

विचित्र मुस्कराहट के साथ जिम्मी ने कहा, "कहो बैन! आखिर तुम्हें पता चल ही गया! खैर, चलो! मैं समझता हूँ – अब कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता।"

पर उस समय बेन प्राइस भी कुछ विचित्र व्यवहार कर गया।

उसने कहा, "मेरे ख्याल से आप भूल करते हैं मिस्टर स्पेंसर! मैं आपको पहचान गया हूँ इसका विश्वास मत कीजिये। आपकी बग्घी प्रतीक्षा कर रही है।"

और बेन प्राइस मुड़कर सड़क पर घूमने चल दिया।

# क्रिसमस का मोजा

व्हिसलिंग डिक ने बड़ी सावधानी से मवेशियों के डिब्बे का दरवाजा खोला; क्योंकि वह शहर के कानून की धारा नं. ५७१६ से अच्छी तरह परिचित था। इस दफा के अनुसार किसी भी व्यक्ति को सन्देह पर गिरफ्तार किया जा सकता था (जो शायद अवैधानिक था) इसलिए नीचे उतरने से पहले उसने एक सेनापति जैसी सावधानी से सारे क्षेत्र का निरीक्षण किया।

दक्षिण के इस दानवीर, भुक्तभोगी, बड़े शहर में, जो आवारों के लिए सर्दियों का स्वर्ग था, उसे कोई परिवर्तन नहीं दिखाई दिया। धक्के के पास जहाँ मालगाड़ी खड़ी हुई थी, सामान के ढेर के ढेर लगे थे। वातावरण, सामान ढँकने की पुरानी कनात की चिरपरिचित सड़ी हुई दुर्गन्ध से भरा हुआ था। मटमैली नदी जहाजों के बीच से, तेल की चिकनाहट लिये बह रही थी। चालमेट की दिशा में नदी का विशाल मोड़ वहाँ की दीपमालिका के प्रकाश में स्पष्ट दिखाई दे रहा था। नदी के उस पार अलजीयर नामक उपनगर अस्तव्यस्त बिखरा हुआ था, जो आकाश के उस पार से ऊषा के आगमन के कारण और भी काला लग रहा था। किसी आने वाले जहाज को खींचने के लिए आये हुए मजबूत 'टग' की डरावनी सीटियाँ मानों ऊषा का स्वागत कर रही थीं। सब्जी और मछलियों से भरे कुछ इटालियन माल ढोने के जहाज किनारे के नजदीक सरक रहे थे। ठेलों और मालगाड़ियों के पहियों का अस्पष्ट कोलाहल जैसे पाताल से उठकर फैलता हुआ मालूम दे रहा था। परियों के समान नाचती छोटी छोटी किश्तियाँ अलसाई हुई सी, सुबह की मजदूरी में लग चुकी थीं।

'व्हिसलिंग' (सीटी बजानेवाला) डिक का सिर एकाएक डिब्बे के अन्दर हो लिया। रंगभूमि पर एक इतना प्रभावशाली और भव्य पात्र आ गया था, जिसे उसकी दृष्टि देखना नहीं चाहती थी। एक अतुलनीय विशालकाय पुलिस का सिपाही, चावल के बोरों का चक्कर लगाता हुआ, मालगाड़ी से कोई बीस गज की दूरी पर खड़ा था। अल्जीयर से दूर भोर के आकाश में ऊषा के आगमन का परिचित चमत्कार दिखाई दे रहा था, जिसे कानून का यह भव्य रक्षक तल्लीनता से देखने लगा। कुछ देर तक इस रंगबिरंगे धुँधले प्रकाश का, निष्पक्ष, शानशौकत से निरीक्षण करने के बाद, उसने इस विश्वास से पीठ फेरली कि वहाँ कानूनी हस्तक्षेप की गुँजाइश नहीं है, और सूर्योदय का काम बिना जाँच पड़ताल के भी आगे बढ़ सकता है। इसलिए उसने अपनी नज़र चावल के बोरों की तरफ से हटा कर अन्दर की जेब से एक चपटी सी बोतल निकाली और उसे मुँह से लगाते हुए आकाश पर नज़रें गड़ा दीं।

'व्हिसलिंग' डिक की, जो पेशेवर आवारा था, इस अफसर से कुछ दोस्ताना ढंग की जान पहचान थी। पहले कई बार इसी धक्के के आसपास वे लोग रात में मिल चुके थे, क्योंकि यह सिपाही

भी संगीत प्रेमी था, और इस बेघरबार आवारा के सीटी बजाने के बढ़िया ढंग से प्रभावित था। फिर भी 'व्हिसलिंग' डिक ने मौजूदा परिस्थिति में जान पहचान को ताजा करना उचित नहीं समझा। किसी निर्जन धक्के के किनारे, पुलिस के सिपाही से मिलकर, उसे कुछ सुरीली तानें, सीटी बजाकर सुनाना, अलग बात है, और किसी मालगाड़ी के डब्बे में से पार होते हुए, उसी के द्वारा पकड़ा जाना, बिल्कुल अलग बात। इसलिए डिक रुक गया; क्योंकि वह जानता था कि चाहे न्यू आर्लियन्स का सिपाही ही क्यों न हो, कभी न कभी तो वह आगे पीछे होगा ही—भाग्य की यही विडम्बना है! महाकाय सिपाही 'क्रिज' भी कुछ देर बाद, शाही ठाट से डिब्बों के बीच ओझल हो गया।

उचित समय तक रुक कर, 'व्हिसलिंग डिक' फुर्ती से जमीन पर कूद पड़ा। यथासम्भव, दैनिक मजदूरी पर जाने वाले किसी ईमानदार मजदूर का सा भाव चेहरे पर धारण करके, उसने रेल की पटरियाँ पार की। जिरोड़ स्ट्रीट के निर्जन मुहल्ले से होकर, लाफायत चौक की एक विशेष बेंच तक पहुँचने का उसका इरादा था। यहाँ पूर्व-योजनानुसार अपने एक साहसी साथी 'स्लिक' से वह मिलना चाहता था, जो एक दिन पहले ही मवेशियों के डब्बे में सफर करके, यहाँ पहुँच चुका था।

उन गन्दे और दुर्गन्धयुक्त गोदामों में अब तक अन्धेरे का साम्राज्य था। उनके बीच में से रास्ता ढूँढ़ कर आगे बढ़ते हुए 'व्हिसलिंग' डिक को अपनी पुरानी आदत याद आ गयी जिसकी वजह से उसका यह नाम पड़ा था। धीमी पर स्पष्ट, बुलबुल के से सुरीले स्वरों में वह सीटी बजाने लगा, जिसकी मधुर धुन तालाब में गिरती हुई वर्षा की बड़ी बड़ी बूँदों की रिमझिम पर गूँज उठी। उसने एक पुरानी तान छेड़ने की कोशिश की पर रियाज के अभाव में उसके स्वर सधे नहीं। सीटी पर आप पहाड़ी झरनों की कलकल, सरोवर के किनारे उगे हुए बेंत के झुरमुटों की मरमर या अलसाये पंछियों की चहचहाट—कुछ भी बजा सकते हैं!

नुक्कड़ पर मुड़ते ही वह नीली वर्दी और पीतल के बटन वाले एक पहाड़ से टकरा गया।

वह पहाड़ शान्ति से बोला, "अच्छा तो तुम वापिस आ गये। अभी तो बर्फ पड़ने में दो हफ्ते की देर है और तुम सीटी बजाना भी भूल गये हो। तुम्हारी आखिरी तान का एक स्वर बिल्कुल गलत था।"

आत्मीयता का ढोंग करते हुए डिक बोला, "तुम संगीत के बारे में क्या जानो? जर्मनी के बेवूफ गँवार! तुम्हारा और संगीत का क्या रिश्ता? ध्यान से सुनो—मैं इस तरह बजा रहा था।"

उसने ओठों को गोल किया, लेकिन सिपाही हाथ के इशारे से उसे रोकता हुआ बोला, "ठहरो, पहले बजाने का ढंग सीखो और यह भी याद रक्खो, तुम्हारे जैसे आवारा कुछ भी नहीं सीख सकते।"

फ्रिज की घनी मूछें गोल हो गयीं और उनकी गहराई से वंशी की सी मधुर और मन्द्र सीटी की आवाज सुनाई दी। जिन तानों को डिक बजा रहा था उन्हीं को उसने दुहराया। उसकी स्वर-साधना मामूली पर सही थी और उसने जिसकी आलोचना की थी, उसी तान पर विशेष जोर दिया।

"इसमें धैवत शुद्ध लगता है कोमल नहीं। खैर तुम्हें खुशी होनी चाहिये कि तुम्हारी मुलाकात पहले मुझ से ही हुई। एक घण्टे बाद मेरा फर्ज होगा कि मैं तुम्हें पकड़ कर जेल के दूसरे पंछियों के साथ सीटी बजाने लिए थाने में बन्द कर दूँ। अभी अभी हुक्म आया है कि सूर्योदय के बाद तुरन्त सब आवारों को पकड़ लिया जाये।"

"क्या कहा?"

"हाँ जिनकी आजीविका का कोई साधन दिखाई नहीं दे ऐसे सब आवारों को गिरफ्तार किया जायेगा। सजा मामूली है—पन्द्रह डालर जुर्माना या तीस दिन की जेल।"

"क्या सच? या मुझे बना रहे हो?"

"नहीं नहीं, इससे बढ़िया 'टिप' तुम्हें मिल ही नहीं सकती। मैंने तुमसे इसलिए कहा कि मुझे विश्वास है कि तुम दूसरे आवारों जितने बुरे नहीं हो और इसलिए भी कि कुछ तानें तुम मुझसे भी बेहतर बजा लेते हो। अब मेरी बात मानो और कुछ दिनों के लिए शहर छोड़ कर चले जाओ। और ध्यान रखना, जाते जाते किसी सिपाही से मत टकरा जाना। नमस्ते।"

श्रीमती आर्लीयन्स जिसके ममतामय आँचल की छाया में आश्रय खोजते हुये हर वर्ष आवारों का दल आता था, अब इन अनचाहे महमानों से ऊब गयी थी।

उस भीमकाय पुलिसमैन के जाने के बाद कुछ समय तक तो डिक अन्यमनस्क-सा खड़ा रहा।

समय पर किराया अदा न करने के कारण, मकान से निकाले जाने वाल किरायेदार की तरह उसका मन इस ज्यादती के प्रति रोष से भर गया। उसने मन ही मन मनसूबे बाँधे थे कि सुखस्वप्नों में आराम से दिन बिताकर वह अपने साथी से मिलेगा, जहाजों से उतारते समय नीचे गिरे हुए केले और नारियल चबाता हुआ वह धक्के पर दिन भर घूमेगा। शाम को किसी सदाव्रत में, जहाँ से बाहर निकाले जाने की कोई सम्भावना नहीं, भर पेट भोजन करके मुँह में पाइप दबाये किसी हरे भरे बगीचे में घूमेगा और धक्के के पास ही किसी छायादार जगह पर लेट जायेगा। लेकिन यहाँ तो देश निकाले का हुक्म मिल चुका था—ऐसा हुक्म जिसका पालन करना ही चाहिये। इसलिए सतर्कता से पुलिस के सिपाहियों को टालता हुआ वह आश्रय की खोज में देहात की तरफ बढ़ा। 'गाँव में कुछ दिन गुजारने में भी कोई बुराई नहीं। बर्फ पड़ने की हल्की-सी संभावना के सिवाय कोई विशेष अन्तर नहीं दिखाई देता।'

कुछ भी हो, नदी के पास से गाँव जानेवाली सड़क पर फ्रेंच मार्केट के सामने से डिक गुजरा, तब उसका दिल डूब रहा था। सुरक्षा के ख्याल से वह अब भी दुनिया वालों की नजरों में दैनिक मजदूरी पर जाने वाले ईमानदार मजदूर का ही पार्ट अदा कर रहा था। उसके इस चक्कर में न आकर भी मार्केट के एक दुकानदार ने उसे उसके प्रचलित नाम से पुकारा, जिससे चकित हो वह रुक गया। अपने काइयाँपन से खुश होकर दुकानदार ने उसे एक रोटी और कुछ मांस दिया, जिससे नाश्ते की समस्या तो हल हो गयी।

भौगोलिक कारणों से पक्की सड़क जब नदी के किनारे से दूर हटने लगी, तो किनारे किनारे धक्के के ऊपर की पगडंडियों पर वह निर्वासित, आगे बढ़ने लगा। उपनगरों के निवासी उसे सन्देह भरी आँखों से देखने लगे परन्तु कुछ लोगों ने शहर के इस निर्दय नये कानून के खिलाफ, शिकायत भी व्यक्त की। डिक को शहर की भीड़भाड़ का एकान्त और वहाँ के कोलाहल में मिलनेवाली सुरक्षा, याद आने लगी।

चलते चलते, वह छः मील दूर चालमेट पहुँचा, जहाँ विशाल और भीषण उद्योग को देखते ही वह डर गया। वहाँ एक नया बन्दरगाह बनाने की योजना थी, जिसके धक्के बनाने का काम चल रहा था। कम्प्रेशर मशीनों की घड़ाघड़ हो रही थी और कुदाली, फावड़े और ठेले चारों ओर से मानो साँप की तरह डस लेने को दौड़े आ रहे थे। एक अक्खड़-सा मुकादम उसके बाजुओं

को जाँचता हुआ, रँगरूट भरती करने वाले अफसर की दृष्टि से, घूरने लगा। चारों तरफ काले, और धूल से सने मनुष्य पसीना बहा रहे थे। इस दृश्य से आतंकित हो कर वह भाग खड़ा हुआ।

दोपहर होते होते वह उस महान नदी के विशाल, और शान्त मैदानों में स्थित, बागानों वाले प्रदेश में पहुँच गया। उसकी दृष्टि ऊख के ऐसे विशाल खेतों पर पड़ी जिनका दूसरा सिरा क्षितिज तक भी दिखाई नहीं देता था। चीनी बनाने का मौसम काफी आगे बढ़ चुका था। चारों ओर खेतों की कटाई हो रही थी और ऊख से भरी गाड़ियाँ जाती हुई नज़र आ रही थीं। गाड़ियों के हब्शी चालक अपनी सुरीली और मधुर आवाज़ से खच्चरों को तेज़ चलने के लिए प्रेरित कर रहे थे। नीले आकाश के चौखटे में जड़े हुए से गहरे हरे रंग के वृक्षों के झुण्ड जमींदार के निवास का स्थान घोषित कर रहे थे। समुद्र के बीच के रोशनीघरों की तरह शक्कर के कारखानों की चिमनियाँ मीलों दूर से दिखाई दे रही थीं।

एक स्थान पर पहुँचते ही 'व्हिसलिंग' डिक की अनुभवी नाक में मछली तलने की खुशबू आयी। शिकार पर झपटने वाले किसी शिकारी कुत्ते की स्फूर्ती से वह आगे बढ़ा। धक्के के उस ओर एक बूढ़े निष्ठावान मछुए का खेमा था जिसे उसने अपने गानों और गप्पों से मोहित कर लिया। परिणामस्वरूप किसी सेनापति जैसी शान से उसने वहाँ दावत उड़ायी और फिर पेड़ों के नीचे किसी दार्शनिक की अदा से लेटकर उसने दिन के सबसे बुरे तीन घण्टे बिता दिये।

तीसरे पहर उठ कर जब वह अपनी हिजरत में आगे बढ़ा, तब दिन की मादक और सुहावनी हवा का स्थान बर्फीले पवन ने ले लिया था। शीतल रात के इस अग्रदूत का इशारा दिमाग तक पहुँचते ही, इस फक्कड़ ने अपनी चाल कुछ तेज़ कर दी और वह आश्रय ढूँढने की चिन्ता करने लगा। नदी-तट के उतार चढ़ाव का ईमानदारी से साथ देने वाली, उस सड़क पर वह लक्ष्यहीन आगे बढ़ा जा रहा था। सड़क के बीच में बनी हुई पहियों की लीक तक झाड़ियाँ और घास उग आयी थी। उनमें रहने वाले तरह तरह के जीवजन्तु तीव्र स्वरों में गुँजार करते हुए, उसका पीछा करने लगे। अँधेरा बढ़ने के साथ, ठंड भी बढ़ी और मच्छरों की भन्नाहट तो एक चिड़चिड़ी और लालची गुर्राहट में बदल गयी जिसने और सभी आवाजों को दबा दिया। उसके दाहिनी ओर आकाश

की पृष्ठभूमि मे हरी रोशनी से युक्त एक जहाज की चिमनियाँ और मस्तूल चलते हुये दिखाई दिये, मानो सिनेमा के पर्दे पर कोई दृश्य हो। उसकी बॉयी ओर डरावना दलदल था जिससे चित्रविचित्र आवाजे आ रही थी। इस उदासी के वातावरण को हल्का करने के लिए सीटी बजाने वाले इस आवारा ने एक हल्की-सी तान छेड दी और यह मुमकिन नही कि पीटरपैन की बॉसुरी के बाद इस प्रदेश की घुटी हुई नीरवता ने, इससे सुन्दर और कोई आवाज सुनी हो।

पीछे दूर सुनाई देने वाली खटखटाहट शीघ्र ही घोडे के खुरों की आवाज़ मे बदल गयी और 'व्हिसलिग' डिक जल्दी से पगडडी छोडकर ओस से भीगी घास मे एक ओर खडा हो गया। सिर घुमाते ही उसने देखा कि दो आबदार लाल घोडो से जुती, एक बढिया बग्घी आ रही थी। सफेद मूँछो वाला, एक मोटा सा आदमी, आगे की बैठक पर बैठा था, जिसका पूरा ध्यान तनी हुई लगाम पर केन्द्रित था। उसके पीछे एक शान्त मुद्रावाली प्रौढा और एक आकर्षक लडकी बैठी थी, जिसने अभी यौवन में पदार्पण भी नही किया था। बग्घी हॉकने वाले महाशय के घुटनो पर से लिहाफ कुछ खिसक गयी थी जिससे डिक को, उसके पॉवो के नीचे कनात की दो बडी बडी थैलियॉ दिखाई दी। शहरो मे मटरगश्ती करते हुए अक्सर उसने देखा था कि इसी तरह की थैलियॉ बडी सावधानी से गाडियो मे से उतार कर बैको के दरवाजो मे ले जायी जाती थी। बग्घी की बची हुई जगह अनेक प्रकार के छोटे मोटे बडलो से भरी थी।

बग्घी जैसे ही इस भटके हुए आवारा के सामने से गुजरी उस नशीली ऑखो वाली लडकी ने जैसे किसी पागलपन के आवेग मे आकर गाडी से झुक कर अपनी मधुर, चाकाचौंध कर देने वाली मुस्कराहट से उसकी ओर देखा और पतली, सुरीली आवाज मे पुकारा, "क्रिसमस मुबारक!"

'व्हिसलिग' डिक के जीवन मे ऐसा मौका शायद ही कभी आया था और इसलिए इस बात का सही उत्तर देने मे उसे कठिनाई महसूस हुई। सोचने का तो समय ही नहीं था इसलिए उसने अपने सहज ज्ञान को यह काम सौप कर अपना फटा पुराना टोप सिर से उतार लिया और हाथ को आगे पीछे घुमाने लगा। उसके मुँह से एक औपचारिक 'वाह वाह' के सिवाय और कुछ नही निकला और गाडी आगे बढ गयी।

लड़की के एकाएक हिलने-डुलने से एक बंडल कुछ ढीला हो गया और उसमें से कोई नर्म-सी काली चीज़ सड़क पर जा गिरी। डिक ने उसे उठा लिया। यह काले रेशम का एक नया लम्बा, मुलायम और पतला जनाना मोजा था। वह उसकी उँगलियों में अपनी अतिशय नरमी से कुरमुराने लगा।

झुर्रियोंदार चेहरे को दो हिस्सों में बाँटती हुई, उसके मुख पर एक मुस्कान फैल गयी और वह सोचने लगा, "साली शरारती। क्रिसमस मुबारक! क्या मतलब हुआ? बुलबुल की तरह चहक गयी? मैं शर्तिया कह सकता हूँ कि आदमी काफी मालदार था। रुपये से भरी थैलियों को पाँवों के नीचे इस लापरवाही से पटक रखा था मानो उनमें भूसा भरा हो। शायद क्रिसमस की खरीददारी करने गये थे। लेकिन, सान्ता क्लाज़ के स्वागत के लिए खरीदा हुआ यह मोजा तो वह लड़की यहीं गिरा गयी। साली शरारती—और उसकी क्रिसमस मुबारक। मानो मुझ से कह रही हो—हैलो, डिक! क्या हालचाल है? फिफ्थ अवैन्यू के निवासियों की तरह मालदार और सिनसिनाटी वासियों की तरह खुजमिज़ाज!"

'व्हिसलिंग' डिक ने मोजे को सावधानी से तह करके जेब में डाल लिया।

दो घण्टे बाद वह एक ऐसे स्थान पर पहुँचा, जहाँ आबादी के लक्षण दिखाई दे रहे थे। सड़क से घूमते ही उसे एक विशाल बागान की इमारतें दिखाई दीं। जमींदार के निवास को उसने आसानी से पहचान लिया। यह एक बहुत बड़ा चौकोन मकान था जिसकी बड़ी बड़ी खिड़कियाँ रोशनी से जगमगा रही थीं और जो चारों ओर से चौड़े बरामदों से घिरा हुआ था। सामने ही साफ सुथरी हरियाली थी जो भीतर की तेज रोशनी से प्रकाशित हो रही थी। मकान के चारों ओर वृक्षों के सुन्दर झुरमुट थे और दीवारों तथा बाड़ों पर शहतूत की बेलें चढ़ी हुई थीं। मिल की इमारत और नौकरों के मकान पिछवाड़े में कुछ दूरी पर थे।

सड़क अब दोनों ओर से ऊँची ऊँची बाड़ों से घिर गयी थी। 'व्हिसलिंग' डिक बस्ती के बहुत पास पहुँच चुका था कि यकायक वह रुका और चारों ओर की हवा को सूंघने लगा।

वह अपने आप से बोला, "अगर यहाँ नजदीक में ही कहीं खानाबदोशों का भोजन नहीं पक रहा हो तो मैं यह मानूँगा कि मेरी नाक ने सच बोलना बन्द कर दिया है।"

बिना किसी हिचाकिचाहट के वह उस दिशा की बाड़ पर चढ़ गया जिधर से खुशबू आ रही थी। उसने अपने आप को एक ऐसे ऊसर खेत में पाया जहाँ पुरानी ईंटों के ढेर लगे हुए थे और कबाड़ा पड़ा सड़ रहा था। एक कोने में उसे बुझती हुई आग का धुँधला-सा प्रकाश दिखाई दिया और उसे ऐसा लगा कि कुछ मनुष्याकृतियाँ धूनी के आसपास बैठी हैं, या लेटी हैं। वह पास गया और आग की एक लौ के प्रकाश में उसे फटे पुराने कपड़े, भूरा स्वेटर, और टोप पहिने हुए एक मोटा आदमी स्पष्ट दिखाई दिया।

डिक, अपने आप से गुनगुनाया, "कहीं यह मनुष्य प्रसिद्ध गुण्डा बोस्टन हैरी तो नहीं है। मैं प्रचलित संकेत से उसकी परीक्षा तो कर लूँ।"

उसने एक पुराने अमरीकी नीग्रो मूल के गीत की कुछ पंक्तियाँ सीटी में बजायीं जिनका तुरन्त प्रत्युत्तर मिला। उसके बाद शान्ति छा गयी। डिक विश्वासपूर्वक धूनी के पास पहुँचा। उसे देखते ही वह मोटा आदमी दमे के मरीज़ की सी फुसफुसाहट में अपने साथियों से बोला, "सज्जनों! अपने दल में अनपेक्षित, पर सम्माननीय प्रवेश करने वाले इन महाशय का नाम है—'व्हिसलिंग' डिक। ये मेरे पुराने मित्र हैं जिनकी शराफत की मैं जमानत देता हूँ। वेटर से कहिये कि फौरन एक और मेजपोश बिछाये। श्रीमान 'व्हिसलिंग' डिक खाने में हमारा साथ देंगे और भोजन करते करते यह भी बतायेंगे कि इस प्रदेश में उनके आगमन का सौभाग्य हमें किन परिस्थितियों के द्वारा प्राप्त हुआ।"

'व्हिसलिंग' डिक बोला, "वाह भई बोस्टन, अपनी हमेशा की आदत की तरह तुमने तो पूरा शब्द-कोष ही चबा डाला। फिर भी खाने के निमंत्रण के लिए बहुत बहुत धन्यवाद! मेरा अन्दाज़ है कि हम सबका यहाँ आने का कारण तो समान ही है। मुझे इस बात की सूचना एक सिपाही ने आज सुबह ही दी। क्या आप लोग इस बागान में काम करते हैं?"

बोस्टन सख्ती से बोला, "खाना खाने से पहिले इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण प्रश्नों से किसी महमान को अपने मेजबान का अपमान नहीं करना चाहिये। यह सभ्यता के खिलाफ काम है। खैर जाओ, मैं ही सब कर लेता हूँ। हम पाँचों—मैं, बहरा पीट, ब्लिकी, गागल्स और इण्डियाना टाम, न्यू ओर्लियन की, अपनी गन्दी सड़कों पर आये हुए मेहमानों के खिलाफ, उस योजना से इतने परेशान हुए कि कल शाम को ही जब संध्या सुंदरी गुल-

हज़ारा के फूलों को अपनी रंगीन ओढ़नी ओढ़ा रही थी, वहाँ से भाग निकले। बिलकी तुम्हारी बाँई ओर रखा हुआ आयस्टर का खाली डब्बा दाहिनी ओर बैठे हुये भूखे सज्जन को तो भला दो!"

इसके बाद दस मिनट तक खानाबदोशों के इस दल ने अपना पूरा लक्ष्य खाने पर लगा दिया। घासलेट के एक पुराने, पाँच गैलन वाले डब्बे में उन्होंने आलू, प्याज और माँस डाल कर बिरियानी बनायी थी जिसे खेत में इधर उधर बिखरे पड़े हुए टीन के छोटे डब्बों में परोस कर, वे लोग खा रहे थे।

'व्हिसलिंग' डिक, बोस्टन हैरी को बहुत पहिले से जानता था। उनकी बिरादरी में वह एक चालाक और सफल ठग के रूप में प्रसिद्ध था। वह किसी समृद्ध आढ़तिये या देहात के किसी सफल व्यापारी सा दिखाई देता था। वह मोटा था, तन्दुरुस्त दिखाई देता था और उसके लाल चेहरे पर दाढ़ी हमेशा छँटी हुई रहती थी। उसके कपड़े मोटे और साफ सुथरे थे और अपने बढ़िया दिखाई देने वाले जूतों की ओर वह हमेशा अधिक ध्यान देता था। पिछले दस वर्षों में उसने लोगों को झूठा विश्वास दिलाकर ठगने की कला में अपने साथियों से कहीं ज्यादा प्रसिद्धि हासिल कर ली थी और इस दौरान में उसने एक दिन भी काम नहीं किया। उसके साथियों में यह अफवाह फैली हुई थी कि उसके पास काफी रुपया है। बाकी के चारों मनुष्य फटे पुराने कपड़े पहिने, शोर मचाने वाले, निर्लज्ज, आवारों के नमूने लगते थे, जिन्हें देखते ही किसी को भी उन पर सन्देह हो सकता था।

बड़े डब्बे का पेंदा जब खुरचकर साफ हो गया और सब लोगों ने अपनी अपनी पाइप सुलगा ली तब इनमें से दो आदमी बोस्टन हैरी को एक तरफ ले जाकर धीमे और रहस्यपूर्ण ढंग से आपस में बातें करने लगे। उसने निश्चयपूर्वक सिर हिलाया और फिर 'व्हिसलिंग' डिक से बोला, "बेटे, मैं साफ बात करना पसन्द करता हूँ। हम पाँचों ने एक योजना बनायी है। तुम्हारी ईमानदारी का मैंने विश्वास दिला दिया है। इस काम में तुम्हारा सब के साथ बराबर का साझा रहेगा, पर तुम्हें हमारी मदद करनी पड़ेगी! इस बागान में काम करने वाले दो सौ मज़दूरों को कल सुबह उनकी साप्ताहिक तनखाह बाँटी जायगी। कल क्रिसमस है और वे लोग पूरी छुट्टी चाहते हैं, परन्तु मालिक का कहना है कि सुबह, पाँच से नौ तक काम करके एक गाड़ी चीनी लदवा दो तो सप्ताह की तनखाह के साथ एक दिन का बोनस भी दूँगा।

मजदूरों ने इस बात को मान लिया है, इसलिए जमींदार साहब रुपये लाने के लिए न्यू आरलियन गये थे। २०७४'५० डालर की रकम है। मैंने ये सब बातें एक मजदूर से जानीं, जो बड़बड़ बहुत करता है। उसे यह जानकारी मुनीमजी से प्राप्त हुई थी। जमींदार साहब सोचते होंगे कि यह रुपया वे मजदूरों को बाँटेंगे—और यही उनकी गल्ती है। दरअसल यह रुपया हमें मिलेगा। यह धन निठल्लों का है और निठल्लों में ही रहेगा। देखो भई, इसमें से आधा तो मैं लूँगा और आधे में तुम सब का बराबर का साझा। तुम पूछोगे कि यह फर्क क्यों, तो मैं कहूँगा कि यह योजना मैंने बनायी है और इसके पीछे दिमाग भी मेरा ही खर्च हो रहा है। अब मैं तरीका बताता हूँ। जमींदार साहब के यहाँ आज शाम को कुछ महमान खाना खाने आये हुए हैं। पर वे लोग करीब नौ बजे चले जायेंगे। उन्हें आये हुए घण्टा भर तो हो चुका है और अगर वे जल्द ही वापस नहीं जाते तो भी हमारी योजना में कोई फर्क नहीं पड़ता। माल लेकर चम्पत होने के लिए पूरी रात चाहिये और थैलियाँ बहुत भारी होंगी। करीब नौ बजे, बहरा पीट और व्हिस्की, सड़क के किनारे किनारे मकान से कुछ दूरी पर जाकर ऊख के किसी खड़े खेत में आग लगा देंगे। हवा तेज है, दो ही मिनट में होली सी जल उठेगी। खतरे की घण्टी बजेगी और दस मिनट में चारों तरफ के आदमी आग बुझाने दौड़ेंगे। इससे मकान में रह जायेंगी—सिर्फ औरतें और रुपयों की थैलियाँ! तुमने कभी ऊख के खेत को जलते देखा है? ऐसे चटाखे बजते हैं कि उनको भेद कर किसी औरत की चीख सुनाई नहीं दे सकती। काम में कोई खतरा नहीं। डर सिर्फ एक है कि काफी दूर निकल जाने से पहिले ही कहीं पकड़े न जाँय! तुम्हारा काम..."

'व्हिसलिंग' डिक ने उसे बीच ही में टोक दिया और खड़ा होकर बोला, "बोस्टन, खाना खिलाने के लिए तुम्हें और तुम्हारे साथियों को धन्यवाद। पर मैं अब चला।"

बोस्टन ने भी खड़े हो कर पूछा, "क्या मतलब?"

"मतलब यह कि मैं इस चक्कर में नहीं पड़ना चाहता। तुम्हें यह मालूम भी होना चाहिये। यह तो माना कि मैं आवारा हूँ पर यह एक अलग बात है। डकैती मेरे बस का रोग नहीं। इसलिए फिर एक बार धन्यवाद और नमस्कार।"

यह कहते कहते 'व्हिसलिंग' डिक कुछ कदम आगे बढ़ गया पर एका-एक उसे रुकना पड़ा। बोस्टन ने उसके सामने अपनी छोटी पिस्तौल तान रखी थी।

दल का मुखिया बोला, "अपनी जगह पर बैठ जाओ। मैं इतना बेवकूफ नहीं कि तुम्हें जाने दे कर सब गुड़ गोबर कर दूँ! जब तक हम काम पूरा न कर लें, तुम यहाँ से जा नहीं सकते। वह ईंटों का ढेर देख रहे हो—वह तुम्हारी सीमा है। उससे एक इंच भी बाहर कदम रखा तो मैं तुम्हें गोली से उड़ा दूँगा। समझदारी से काम लो और आराम से बैठ जाओ।"

'व्हिसलिंग' डिक बोला, "मैं तो खुद ही आरामतलब हूँ; यह लो बैठ जाता हूँ। मेहरबानी करके अपनी पिस्तौल का मुँह नीचा करो और अपने काम में लगो। जैसा कि अखबारवाले कहा करते हैं, मैं तुम्हारे ही साथ हूँ।"

बोस्टन ने "बहुत अच्छा" कह कर पिस्तौल हटा ली और डिक वापिस आकर मलबे में पड़े हुए एक तख्ते का सहारा ले कर बैठ गया।

बोस्टन ने कहा, "भागने की कोशिश मत करना! मैं इतना ही चाहता हूँ। मैं किसी भी कीमत पर यह मौका हाथ से जाने देना नहीं चाहता। चाहे मुझे अपने पुराने दोस्त को गोली ही क्यों न मार देनी पड़े! मैं किसी को कोई खास नुकसान पहुँचाना नहीं चाहता पर इन हजार डालर से तो मेरी ज़िन्दगी बन जायगी। मैं अब यह आवारागर्दी का काम छोड़ कर किसी छोटे से शहर में मयखाना चलाना चाहता हूँ। इधर उधर भटक भटक कर अब थक गया हूँ।"

बोस्टन हैरी ने जेब में से एक सस्ती सी चाँदी की घड़ी निकाली और आग की रोशनी में समय देखा।

वह बोला, "इस समय पौने नौ बजे हैं। पीट और ब्लिकी, तुम लोग जाओ। सड़क के किनारे, मकान से कुछ आगे जा कर ऊख में कोई दस बारह जगह आग लगा दो। फिर सीधे नदी की ओर भाग जाना और वहाँ से सड़क के बजाय धक्के के किनारे चले आना। रास्ते में कोई देखे नहीं। जब तक तुम लोग लौटोगे, सब के सब आदमी आग बुझाने के लिए दौड़ पड़े होंगे। और हम मकान पर हमला कर के रुपये अएटी कर लेंगे। जिसके पास जितनी दियासलाइयाँ हों, निकाल दो।"

उन दोनों ठगों ने दियासलाइयाँ बटोर लीं जिसमें 'व्हिसलिंग' डिक ने भी, उसे सन्तुष्ट करने के लिए, फुर्ती से अपना योगदान दे डाला। वे दोनों, तारों के क्षीण प्रकाश में सड़क की ओर चले।

बचे हुये तीन ठगों में से दो, गागल्स और इण्डियाना टाम, 'व्हिसलिंग' डिक की ओर स्पष्ट नफ़रत की दृष्टि से देखते हुए तख्तों के सहारे वहीं आराम से लेट गये। भगोड़ा रंगरूट चुपचाप बैठा है, यह देख कर बोस्टन ने भी अपना पहरा कुछ हल्का कर दिया। कुछ देर बाद 'व्हिसलिंग' डिक उठ खड़ा हुआ और अपने लिए निर्धारित सीमा के भीतर टहलने लगा।

कुछ देर रुक कर उसने बोस्टन हैरी से पूछा, "रुपया, जमींदार के घर में ही है, यह तुम कैसे कह सकते हो?"

बोस्टन बोला, "मुझे इन सब बातों की सूचना मिल चुकी है। वह आज ही न्यू आरलियन जाकर रुपया लाया है। क्या तुम्हारा विचार बदल गया? हमारा साथ देना है?"

"नहीं, नहीं मैं तो यों ही पूछ रहा था। जमीदार के घोड़े कैसे हैं?"

"लाल रंग की जोड़ी है"

"और उनके बग्घी है?"

"हाँ"

"क्या उनके साथ औरतें भी थीं?"

"हाँ–उसकी पत्नि और लड़की। पर यह तो बताओ, तुम किस अख़-बार के सम्वाददाता हो?"

"नहीं भई, मैं तो यों ही समय काटने को पूछ रहा था। पर अन्दाज़ है कि आज शाम को मुझे रास्ते में वही बग्घी मिली थी।"

जेब में हाथ डाल कर धूनी के चारों ओर के उस सीमित क्षेत्र में टहलते टहलते डिक ने सड़क पर पाये हुए उस मोजे को टटोला और हँसते हुए वह गुनगुनाया, "साली शरारती।"

टहलते टहलते, उसे झुरमुट के बीच से कोई पचहत्तर गज की दूरी पर, जमींदार का घर दिखाई दे रहा था। मकान की इस ओर की दीवार में रोशनी से जगमगाती, बड़ी बड़ी खिड़कियाँ थीं, जिनका मन्द प्रकाश बरा-मदे को पार कर के, दूर की हरियाली तक छाया हुआ था।

बोस्टन ने चौंक कर पूछा, "क्या कहा तुमने? कौन शरारती?"

"नहीं, कुछ नहीं।" इतना कह कर 'व्हिसलिंग' डिक लापरवाही से लेट गया और जमीन पर पड़े एक पत्थर की ओर तल्लीनता से देखने लगा।

वह चहचहाया, "क्या शान ?—कितनी मिलनसारी — क्रिसमस मुबारक ! अब क्या विचार हैं ?"

बैलमीड़ बागान के भोजनगृह में आज खाना परोसने में दो घण्टे की देरी हो गयी थी। भोजनगृह और उसका साजोसामान यह सूचित करते थे, कि उसकी पुरानी शान, कोई भूली हुई याद न हो कर, एक हक़ीकत थी। खाने और परोसने के बरतन इतने कीमती थे कि यदि वे काफी पुराने और अजीब न होते तो भड़कीले मालूम देते; दीवारों पर टँगी हुई तस्वीरों के कोनों में दिलचस्प नाम लिखे हुए थे और खाना तो इतना लज़ीज था कि भोजनभट्टों के मुँह से लार टपक पड़े। परोसगारों की सेवा फुर्तीली, शान्त और प्रचुर थी जो उस ज़माने की याद दिलाती थी जब नौकरों का भी कीमती बर्तनों की तरह 'पूजी' में शुमार होता था। ज़मींदार के सगे सम्बन्धी और महमान एक दूसरे को जिन नामों से सम्बोधित कर रहे थे, वे दो देशों के इतिहास में प्रसिद्ध थे। उनकी तहज़ीब और बातचीत के ढंग में एक दुर्लभ सरलता थी जिस पर अभी तक हमारा शिष्टाचार टिका हुआ है। अधिकतर उल्लास और हाज़िरजवाबी का स्रोत जमींदार साहब खुद थे। टेबल पर बैठे हुए अपेक्षाकृत जवान लोगों के लिए उनकी मजाकों और टिप्पणियों से बचना मुश्किल था। यह सच है, कि लड़कियों की नज़रों में ऊँचा उठने की आशा से युवकों ने उनका मुकाबला करने की पूरी कोशिश की परन्तु जब जब उन्होंने अपने तीरों की बौछार की, जमींदार साहब ने अपनी हाज़िर जवाबी और अपने गरजते हुए अट्टहास से उन्हें परास्त कर दिया। टेबल के एक सिरे पर सौम्य, दयालु, ममतामयी गृह-स्वामिनी बैठी थी, जो उचित समय पर मुस्करा कर, या दो चार शब्द बोलकर, अपनी निगाहों से लोगों का उत्साह बढ़ा रही थी।

बातचीत इतनी बेतरतीब और अव्यवस्थित थी, कि विषय का पता ही नहीं चलता था। पर अन्त में आवारों के उत्पात की बात चली, जिन्होंने कई दिनों से आसपास के बागानों को परेशान कर रखा था। ज़मींदार ने इस अवसर से लाभ उठा कर, निश्छल मजाक का फव्वारा अपनी पत्नी पर छोड़ते हुए, इस बीमारी को फैलाने, में उन्हें ही उत्तरदायी ठहराया। वे बोले, "हर

बरस सर्दियों में इन लोगों के झुण्ड आ जाते हैं। पहले तो वे न्यू आरालियन्स पर टूटते हैं और बचे खुचे हमारे सिर आ पड़ते हैं जो सब से बुरी बात है। दो एक दिन पहिले ही श्रीमती न्यू आरलियन्स को एकाएक यह महसूस हुआ कि चबूतरों पर धूप खाते हुए, इन आवारों के झुण्डों से टकराये बिना तो वह खरीददारी के लिए भी नहीं जा सकती। अपने सिपाहियों को बुलाकर उसने हुक्म छोड़ा, "इन सब को गिरफ्तार कर लो।" सिपाहियों ने दस बीस को तो पकड़ा, पर बचे हुए दस बीस हजार, नदी के दोनों ओर बिखर गये और एक हमारी श्रीमतीजी हैं जो उन्हें भरपेट भोजन कराती हैं। अन्तिम बात उन्होंने अपनी पत्नी की ओर उँगली दिखा कर कही। वे कहते रहे, "ये लोग काम तो करना नहीं चाहते; मुकादमों से झगड़ते हैं और कुत्तों से दोस्ती करते हैं। और श्रीमती जी, तुम मेरी नज़रों के सामने उन्हें खाना खिलाती हो और जब मैं रोकता हूँ तो मुझे ही धमकाती हो! सच बताओ, आज इसी तरह तुमने कितने आदमियों को आलसी और आवारा बने रहने की प्रेरणा दी?"

गृहस्वामिनी ने हल्की मुस्कान बिखेरते हुए कहा, "यही कोई छः! क्या तुम जानते हो, उनमें से दो तो काम करने के लिए भी राज़ी थे? तुमने भी तो सुना था!"

जमींदार साहब की निरुत्तर कर देनेवाली हँसी गूँज उठी।

वे बोले, "हाँ, करना तो चाहते थे, पर केवल अपना ही पुराना काम! एक नकली फूल बनाना जानता था, दूसरा काँच मोड़ सकता था। ओह, वे काम ढूँढ़ रहे थे। मज़ूरी करने में तो उनकी हड्डी भी नहीं झुकती थी!"

दयालु गृहस्वामिनी कहने लगी, "और दूसरा आदमी काफी अच्छी भाषा बोल लेता था। आवारों की बारात में वह वाकई अनोखा था! उसके पास एक घड़ी भी थी! वह बोस्टन में रह चुका था। मैं नहीं मानती कि वे सब बिगड़े हुए होते हैं। मुझे तो लगता है कि उनका विकास नहीं हो सका है। मैं उन्हें उन बच्चों के समान मानती हूँ जिनका ज्ञान रुक गया है और मूँछें बढ़ गयी है। आज घर लौटते समय एक ऐसा ही लड़का रास्ते में भी मिला था जिसका चेहरा जितना अच्छा था उतना ही फूहड़! अपने मुँह से सीटी द्वारा वह 'केवेलेरिया' की तानें इस तरह बजा रहा था, मानो अपने स्वरों में स्वयं मैसकेग्नि की आत्मा उँडेल रहा हो!"

गृहस्वामिनी के बाँई ओर बैठी हुई, चमकीली आँखोंवाली लड़की कुछ झुकी और अपने विश्वासपूर्ण, धीमे स्वरों में बोली, "क्या यह संभव है माँ, कि रास्ते में गुजरनेवाले उस आवारा को मेरा मोजा मिला हो? क्या वह उसे टाँगेगा? पर मैं तो आज केवल एक ही टाँग सकूँगी! तुम्हें पता है, मेरे पास इतने मोजे होने पर भी मैंने यह नयी रेशमी मोजों की जोड़ी क्यों ली? बूढ़ी चाची जुड्डी कहती थी कि अगर तुम बिना पहिने हुए, दो मोजे लटकाओ तो उनमें से एक तो सान्ताक्लाज अच्छी अच्छी चीजों से भर देते हैं और क्रिसमस के पहले दिन, तुम्हारे द्वारा बोले गये, भले बुरे सभी शब्दों की कीमत श्रीमान पाम्बे, दूसरे मोजे में रख जाते हैं। इसीलिए तो आज सारा दिन मैं हद से ज्यादा नम्र रही। तुम्हें पता है—महाशय पाम्बे जादूगर हैं और..."

एक चौंका देने वाली वस्तु ने लड़की के शब्दों पर बीच ही में रोक लगा दी।

किसी टूटते हुए तारे की प्रकाशरेखा की तरह एक काली चमकदार चीज खिड़की का काँच तोड़ कर टेबल पर आ गिरी, जहाँ उसने काँच और चीनी के बर्तनों को हजार टुकड़ों में बाँट कर उछाल दिया। महमानों के बीच से गुजरती हुई यह उल्का सामने की दीवार पर टकरायी, जहाँ उसके वेग से एक बड़ा सा गड्ढा बन गया जिसे बैलमौंड के महमान आज भी आश्चर्यचकित दृष्टि से देखते हैं और तब उन्हें इसके बाद की कहानी सुनायी जाती है।

औरतें, अनेक स्वरों में चीख उठीं, आदमी अपने पंजों पर उछल पड़े और अगर उनके वंशों की विविधता ने उन्हें रोक नहीं दिया होता तो वे अपनी तलवारें खींच लेते।

सब से पहले जमींदार साहब उछले और उन्होंने उस फेंकी हुई वस्तु को उठा कर जाँचना शुरू किया।

वे कहने लगे, "भगवान् की कसम, नक्षत्रलोक से आज मोजे बरस रहे हैं। कहीं मंगलग्रह से तो हमारा रिश्ता नहीं जुड़ गया है!"

जवान लड़कियों से 'वाह वाह' पाने की आशा में एक युवक महमान ने संशोधन किया, "मेरे खयाल से शुक्रग्रह से!"

जमींदार साहब ने हाथ लम्बा कर के वह एकाएक आ टपकनेवाली वस्तु सब को दिखायी। वह एक लम्बा, औरतों का काला मोजा था। उन्होंने कहा, "अरे, इसमें तो माल भरा है!"

उन्होंने अपने पैर के पंजों से पकड़ कर उस मोजे को उल्टा लटकाया और उसमें से पीले रंग के कागज़ के टुकड़े से लपेटा हुआ एक गोल पत्थर ज़मीन पर आ गिरा। वे चिल्लाये, "लो, इस शताब्दि का पहला दैवी सन्देश!" और अपने इकट्ठे हुए मेहमानों की भीड़ के सामने सिर हिलाते हुए उन्होंने अपने चश्मे को जबरदस्ती ऊँचा नीचा करके, उसे करीब से देखा। उसे पढ़ कर समाप्त करते ही यह मजाकी मेज़बान, किसी व्यापारी की तरह कठोर व्यवहारिक आदमी में बदल गया। उसने घण्टी बजायी और उसे सुनकर नीरव पदों से सामने हाज़िर होने वाले चौकीदार को आदेश दिया, "मि. वेस्ले से जाकर बोलो कि वह रीव और मारिस और कोई दस दूसरे मजबूत आदमियों को लेकर बाहर के दरवाज़े पर अभी आ जाय। उसे कहना कि आदमियों को हथियार दे दे और बहुत से रस्से और डोरियाँ भी ले आयें। उसे बोलो—जल्दी करे।" और तब उन्होंने उस पन्ने से ये शब्द पढ़ कर सुनाये—

"इस घर के मालिक के नाम,

सड़क के पास खाली मैदान में जहाँ ईंटों का ढेर लगा है, मेरे अलावा पाँच और तगड़े खानाबदोश छिपे हैं। उन्होंने मुझे पिस्तौल दिखा कर रोक रखा है, इसलिए मैं समाचार भेजने का यह तरीका अपना रहा हूँ। उनमें से दो, घर के पास वाले ऊख के खेत में आग लगाने चले गये हैं। जब घर के सारे आदमी आग बुझाने जायेंगे तब बाकी के आदमी आकर घर में से उस सारे धन को लूट लेंगे जो मजूरों को चुकाने के लिए लाया गया है। इसलिये चेत जाना। गाड़ी में जाते हुए रास्ते में जिस लड़की ने यह मोजा गिरा दिया था, उसे वैसा ही "क्रिसमस मुबारक" कहना जैसे उसने मुझे कहा था। सड़क पर बैठे गुण्डों को पहले पकड़ लेना और फिर मेरे लिए राहत भेजकर मुझे बचाना। आपका,

व्हिसलिंग डिक!"

अगले आधे घण्टे तक बैलमीड के बागान में चुपचाप, फुर्ती से भागदौड़ होती रही जिसके फलस्वरूप पाँच निराश और अभागे आवारा पकड़े जा कर, सूरज और पुलिस के प्रकट होने तक बाहर के गोदाम में सुरक्षित बन्द कर लिये गये। दूसरा शुभ परिणाम यह हुआ कि महमान युवकों की विशेष बहादुरी ने महमान युवतियों की प्रशंसा अर्जित कर ली। और इससे भी ज्यादा मजे की बात यह हुई कि इस काण्ड का नायक, 'व्हिसलिंग' डिक,

जमींदार के साथ बैठा हुआ, उन व्यंजनों पर हाथ साफ कर रहा था जिन्हें सूँघने का भी जीवन में उसे अवसर नहीं मिला था। उसकी तीमारदारी करने के लिए कई इतनी सुन्दर, भव्य और प्रशंसनीय ललनाएं उसकी सेवा में तैनात थीं, जिन्हें देख कर अपना मुँह रोटी से पूरा भरा हुआ होने पर भी वह अपने आप को सीटी बजाने से नहीं रोक पाता। बोस्टन हैरी के आवारा दल के साथ हुए सम्पर्क की जीवट कथा ब्यौरेवार सुनाने के लिए उसे विवश किया गया—"कैसे उसने वह चिट्ठी लिखी, कैसे उसे पत्थर के चारों ओर लपेट कर उसने मोजे के पंजे में उसे रखा, और कैसे उसने मौका देख कर आश्चर्यजनक गति के साथ, एक तारे की तरह गुपचुप भोजन करने के कमरे की जगमगाती खिड़की के काँच पर निशाना मारा!"

जमींदार साहब ने निश्चय कर लिया कि यह घुमक्कड़ अब और नहीं घूमेगा। उसकी सच्चाई और ईमानदारी को पुरस्कृत किया जाय और उसकी कृतज्ञता का मोल चुकाया जाय; क्योंकि उनको निश्चित नुकसान से, बल्कि उससे भी बड़ी आफत से बचानेवाला बेशक वही था। उन्होंने 'व्हिसलिंग' डिक को विश्वास दिलाया कि उसकी योग्यता के अनुसार जल्दी से जल्दी ढूँढ़ कर काम देना, उनकी खुद की ज़िम्मेदारी रही। उन्होंने यह भी संकेत किया कि बागान में प्राप्त सर्वोच्च और विश्वासवाले किसी पद तक ऊँचा उठाने में उसकी हमेशा सहायता की जायगी।

उनके ध्यान में यह भी आया कि वह अब काफी थक गया होगा और सबसे पहले जो काम करना चाहिये, वह है—उसके आराम और सोने का इन्तज़ाम। इसलिये गृहस्वामिनी ने एक नौकर को बुलाया। नौकरों के सोने के पास ही बरामदेवाले कमरे में एक टब पानी से भर कर उसके उपयोग के लिए रख दिया गया और वह वहाँ रात बिताने के लिए छोड़ दिया गया।

मोमबत्ती के प्रकाश में उसने कमरे का निरीक्षण किया। चद्दर लगा हुआ एक बिस्तर, जिस पर गिलाफ लगे हुए तकिये। एक पुरानी पर साफ, लाल दरी, फर्श पर बिछी हुई। एक तिरछे कटे हुये दर्पण वाला सिंगारदान। एक हाथमुँह धोने का बेसिन जिसके पास गिलास और तसला। दो तीन कुर्सियाँ यथास्थान जमायी हुई। एक टेबल, जिस पर किताबें और अखबार; एक फूलदान में गुलाब के फूलों का गुच्छा! हाथमुँह धोने की जगह पर तौलिये और साबुन।

'व्हिसलिंग' डिकने सावधानी से मोमबत्ती एक कुर्सी पर लगायी और अपना टोप टेबल के नीचे डाल दिया। सयत होकर छानबीन करके उसने अपनी जिज्ञासाओं को शान्त कर लिया, फिर अपना कोट उतारा और उसे समेट कर दीवार के सहारे, बाल्टी से कुछ दूर रख दिया। अपने कोट का तकिया बना कर वह दरी पर ही आराम से लेट गया।

क्रिसमस की सुबह, झाडियो पर उजाले की पहिली किरण फूटते ही, 'व्हिसलिग' डिक की आँख खुली। अपनी सहज प्रवृत्ति के कारण उसने टोप उठाने के लिए हाथ बढाया। तब उसे याद आया कि पिछली रात, सौभाग्य ने उसे अपनी बाँहो मे समेट लिया था। उसने खिडकी के पास जा कर पर्दा ऊँचा किया जिससे ताजी हवा के ठडे झोके उसे छू सके और अप्रत्याशित सौभाग्य की स्वप्नवत याद उसके दिमाग मे जम सके।

वहाँ खडे होने पर कई डरावनी सर्वव्यापी ध्वनियाँ से उसके कानो के पर्दे फटने लगे।

बागानो मे काम करनेवाले मजदूरो का दल, कम समय में काम पूरा करने के लिए कटिबद्ध था। श्रमरूपी दैत्य के कोलाहल से धरती काँप रही थी। इस जादुई महल की खिडकी को मजबूती से पकड कर स्थिर खडा, यह फटेहाल छद्मवेशी राजकुमार जो खजाने की खोज मे निकला था, काँप उठा।

अभी से ही मिल की छाती से, शक्कर भरे, लकडी के ढोल गुडकने की गर्जन सुनाई दे रही थी। गाडी के जुए के नीचे जोतने के लिये भगाये जाने वाले बैलो की जजीरो से तीव्र खनखनाहट की आवाज उठ रही थी (जैसी जेलो मे होती है)। बागान की छोटी लाइन की रेल की पटरी पर, जजीर की तरह गुँथे हुए खुले डिब्बो को खीचता हुआ एक छोटा, अधम इजन उबल उबल कर धुँआ छोड रहा था। उस आधे अँधेरे मे फुर्ती से परिश्रम करते हुए, शोर करते श्रमिको की धारा, शक्कर की पैदावार को गाडी मे लादती हुई अस्पष्ट दिखाई दे रही थी। यह काव्य है, महाकाव्य है—नही, एक दुखान्त नाटक है जिसकी कथावस्तु, इस ससार का अभिशाप 'परिश्रम' है।

दिसम्बर की बर्फीली हवा चल रही थी, फिर भी डिक के माथे पर पसीना आ गया। उसने खिडकी से बाहर सिर निकाल कर नीचे झाँका। उससे कोई

पन्द्रह फीट नीचे मकान की दीवार के सहारे फूलों की पाँत लगी हुई थी जिससे उसे यह अन्दाज हो गया कि नीचे की मिट्टी काफी मुलायम है।

एक चोर की तरह, धीमे से, खिड़की के चौखटे से बाहर निकल कर वह नीचे की तरफ अपने हाथों के सहारे लटक गया और सुरक्षित कूद गया। घर के इस तरफ, आसपास कोई आदमी नहीं था। वह झुक कर जल्दी से आँगन को पार कर गया और जहाँ चहारदीवारी सब से कम ऊँची थी, वहाँ पहुँचा। उसे फाँद जाना काफी आसान था क्योंकि उसके हृदय में एक ऐसी दहशत पैदा हो चुकी थी जो शेर द्वारा पीछा किये जाने पर एक बारहसींगे को भी कँटीली झाड़ियों पर से कुदा देती है। ओस से भींगी हुई झाड़ियों को पार करता हुआ वह सड़क तक पहुँचा और फिसलन वाली घास के एक छोटे से मैदान को पार करके वह धक्के के ऊपर, पगडंडी पर पहुँच गया। अब वह स्वतंत्र था।

पूरब में ऊषा शरमा रही थी। आवारा और घुम्मकड़-सी हवा ने भी गाल पर हलका-सी चपत लगा कर अपने इस भाई का स्वागत किया। ऊँचाई पर उड़ती हुई जंगली बत्तखें चीख रहीं थी। उसके सामने ही पग-डंडी को पार कर के एक खरगोश भागा जो स्वेच्छा से दाँये—बाँये कहीं भी जाने को स्वतंत्र था। पास ही में नदी बह रही थी और निश्चय ही यह कोई नहीं बता सकता था कि उसके प्रवाह की अन्तिम मंजिल कहाँ है!

एक पेड़ की टहनी पर एक छोटी चंचल भूरे रंग की चिड़िया ने अपनी धीमी, कोमल, चहक से शबनम का स्वागत किया, जिसे सुनकर मूर्ख कीड़े बिल से बाहर निकल आते हैं। लेकिन एकाएक चिड़िया रुक गयी और एक ओर मुँह फेर कर सुनने बैठ गयी।

पगडंडी के उस ओर से, बाँसुरी की सी मीठी, उत्साहपूर्ण, मर्मवेधी, उत्तेजक, सीटी की आवाज़ स्पष्ट सुनाई दे रही थी। इस आवाज़ में एक ऐसा आरोह और माधुर्य था, जो जँगली पंछियों की तान में अकसर नहीं पाया जाता। इस जँगली और मुक्त माधुर्य ने चिड़िया को किसी परिचित तान की याद दिलादी—लेकिन कौन सी तान—वह नहीं जान सकी। इसमें पंछियों की कूक का सुरीलापन तो था पर साथ ही ऐसी बहुत सी, व्यर्थ की रईसी भी थी जिसे कला ने जोड़ा और सँवारा था और जो चिड़िया के लिए एक विचित्र पहेली के समान था। इसलिये चिड़िया भी गर्दन झुका कर, उस आवाज़ को विलीन होने तक सुनती रही।

चिडिया यह नही जान सकी कि उस गुँजन का जो भाग उसकी समझ मे आया उसीके कारण गुँजने वाले का नाश्त से वञ्चित होना प.ा। वह यह अच्छी तरह से जानती थी कि जो उसकी समझ मे नहीं आया उससे उसका कोई वास्ता नहीं। इसलिये वह पख फ-फ-ाकर तीर की तरह उस मोटे कीडे पर झपटी जो पगडडी पर आगे बढा जा रहा था।

# गिरफ्तारी

प्रेसिडेण्ट मिराफ्लोर्स और उनकी साथिन की गिरफ्तारी की जो योजना बन चुकी थी, उसके असफल होने की कोई सम्भावना नहीं थी। अलाजान के बन्दरगाह पर पहरा बैठा देने के लिए डा जावाला खुद पहुँच गये थे। स्वतत्र देशभक्त वरास पर भरोसा किया जाता था कि वह कोरालियो के मोर्चे को सम्हाल लेगा और कोरालियो के चारों ओर के प्रदेश की जिम्मेदारी खुद गुडविन ने अपने ऊपर ले ली थी।

सत्ता हड़प लेने की महत्त्वाकाक्षा रखनेवाले विरोधी राजनैतिक दल के कुछ इने गिने विश्वस्त सदस्यों के सिवाय प्रेसिडेण्ट के भागने की खबर, समुद्र किनारे के शहरों में किसी को भी नहीं थी। जावाला के साथियों ने सानमाटियो से बन्दरगाह तक आने वाली तार की लाइन को पहाडियो के बीच काट दिया था। इसकी मरम्मत हो सकने से पहिले और राजधानी से प्रेसिडेट के भागने के समाचार, किनारे के शहरो तक पहुँचने से बहुत पहिले ही वह पलायनशील जोडी किनारे तक पहुँच जाती और उनकी गिरफ्तारी या बचाव का प्रश्न हल हो जाता।

कोरालियो की दोनो दिशाओ मे समुद्र के किनारे किनारे एक एक मील तक गुडविन ने हथियारबन्द सन्तरियो का पहरा बिठा दिया। उन्हे रात भर सतर्कता से देखभाल करने का आदेश दिया गया जिससे मिराफ्लोर्स छिप कर किसी छोटी मोटी डोगी से भागने की कोशिश न कर सके। कोरालियो की

गलियों में सिपाहियों के अनेक दस्ते घूम रहे थे ताकि भागा हुआ अफसर यदि वहाँ दिखाई दे तो पकड़ा जा सके।

गुडविन को पूरा विश्वास था कि जाब्ते की कोई कार्यवाही अधूरी नहीं छोड़ी गयी है। वाब अंगलहार्ट द्वारा सौंपी गयी जिम्मेदारी, व्यक्तिगत रूप से निभाने के लिए वह खुद भी, उन प्रभावशाली नामधारी सड़कों पर गश्त लगा रहा था, जो असल में घास बढ़ी हुई, तंग गलियों के अलावा और कुछ भी नहीं थी।

शहर में रात की रंगरेलियाँ आरम्भ हो चुकी थीं। सफेद जीन के कपड़े पहिने, भड़कीली नकटाइयाँ बाँधे और हाथ में बेन की छड़ियाँ घुमाते हुए कई आरामपसन्द छैले अपनी अपनी लैलाओं की तलाश में निकल पड़े थे। संगीत की आराधना करने वाल कई कलाप्रेमी वाजों से उलझ रहे थे या दरवाज़ों में खड़े खड़े गिटार की टाँग तोड़ रहे थे। बड़े बड़े, चटाई के हैट पहिने, अपनी लम्बी वन्दूकों को हाथ में भाले की तरह घुमाते, बिना जूते और बिना कोट पहिने, कुछ सिपाही इधर उधर घूम रहे थे। झाड़ियों में बड़े बड़े मेंढक कर्कश स्वर में टर्रा रहे थे। इससे कुछ आगे, जहाँ जंगल की सीमा पर पहुँच कर गलियाँ समाप्त हो जाती थीं, लुटेरे लंगूरों की चीखें और नदी के खड्डों में पड़े हुए मगरों की खखार जंगल की नीरवता भंग कर रही थी।

दस बजे तक सड़कें सुनसान हो गयीं। चौराहों पर जलते हुए तेल के मन्द प्रकाश वाले दीयों को म्युनिसिपालिटी के किसी कंजूस नौकर ने बुझा दिया था। अपना हरण करने वाले डाकुओं की गोद में आराम से सोये हुए किसी बालक की तरह, कोरालियो शहर, एक ओर ऊँचे पहाड़ों और दूसरी ओर लहराते समुद्र के बीच, नींद में बेसुध पड़ा था। उस अन्धकार के गर्त में कहीं वह महान साहसी, अपनी साथिन के साथ मंज़िल तक पहुँचने को आगे बढ़ रहा होगा ; शायद अब तक वह हरे भरे मैदानों की गहराई में पहुँच चुका होगा। आँखमिचौनी का यह खेल अब जल्द ही समाप्त होने वाला था। अपनी सधी हुई चाल से गुडविन उस पड़ाव तक पहुँचा, जहाँ कोरालियो के हिस्से में आया हुआ, अन्चूरिया की सेना का दल, पाँव पसारे बेखबर सो रहा था। नौ बजे बाद किसी भी नागरिक को लड़ाई के उस किले के इतने नजदीक जाने की आज्ञा नहीं थी, परन्तु ऐसे छोटे मोटे कानूनों को गुड़विन अक्सर भूल जाता था।

अपनी भारी बन्दूक से कुश्ती सी लड़ते हुए सन्तरी ने पुकारा, "कौन है ?"

मुँह फेरे बिना ही गुडविन गुर्राया, "अमेरिकन" और बिना रुके आगे बढ़ गया।

वह दाँयी ओर मुड़ा, और फिर बाँये हाथ की गली से चलकर नेशनल प्लाज़ा नामक चौराहे पर पहुँच गया। गिरजेवाली गली से कुछ ही कदम दूर वह यकायक रुक गया।

काले कपड़े पहने और हाथ में एक बड़ा सा सूटकेस उठाये, किसी लम्बे मनुष्य को उसने सड़क पार कर के समुद्र तट की ओर जाते देखा। जरा ध्यान से देखते ही गुडविन को उस मनुष्य की कुहनी से सटी हुई एक स्त्री भी दिखाई दी जो इस मौन पलायन में अपने साथी की मदद नहीं तो कम से कम आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हुई प्रतीत होती थी। ये दोनों कोरालियो के निवासी तो नहीं लगते थे।

कुछ तेज चाल से गुडविन ने उनका पीछा किया जिसमें किसी जासूस के हृदय को प्रिय, कलापूर्ण हथकण्डों का सम्पूर्ण अभाव था। यह अमेरिकन इतना तगड़ा था कि उसके हृदय में जासूस का सहज ज्ञान उठ ही नहीं सकता था। वह तो अन्चूरिया की प्रजा का प्रतिनिधि मात्र था और यदि कुछ राजनैतिक कारण न होते तो वह उसी समय अपना रुपया माँग लेता। उसके दल की योजना थी कि उड़ाये हुए धन को बचा कर उसे देश के खज़ाने में लौटाया जाय और बिना रक्तपात या संघर्ष के अपने को सत्ताधीश घोषित कर लिया जाय।

अक्सटांजरो होटल के सामने वे दोनों रुके और उस आदमी ने दरवाज़ा खटखटाया। उसके रंगढ़ंग से ऐसा प्रतीत होता था कि उसे हुक्मअदूली सहन करने की आदत नहीं है। मकान मालकिन के उत्तर देने में कुछ देर हुई, लेकिन अन्त में रोशनी दिखाई दी, दरवाज़ा खुला और आगन्तुकों ने भीतर प्रवेश किया।

उस नीरव सड़क पर खड़े हुए गुडविन ने एक और सिगार सुलगायी। कुछ ही क्षणों बाद, मकान के दुमंजिले की खिड़कियों से हल्का-सा प्रकाश दिखाई दिया और गुडविन ने सोचा, "इन्होंने कमरा किराये पर लिया है। इसका मतलब यह हुआ कि अभी तक उनके भागने का इन्तजाम नहीं हुआ है।"

इतने में इस्टेवान डेलगाडो नामक एक नाई वहाँ आया जो वर्तमान सरकार का कट्टर दुश्मन था और किसी भी प्रकार के गतिरोध का मुकाबला करने को सदा तत्पर रहता था। इस नाई की गणना कोरालियो के सबसे विचित्र व्यक्तियों में की जाती थी और वह अक्सर रात को ग्यारह बारह बजे तक सड़क पर भटकता रहता था। वह स्वतंत्र पक्ष का सदस्य था और उसने गुडविन का बराबरी के भाईचारे के महत्व से अभिवादन किया। वह कुछ जरूरी बात बताना चाहता था।

षडयंत्रकारियों की प्रचलित आवाज़ में उसने कहा, "फ्रैंक गुडविन, तुम्हारा क्या खयाल है? मैंने आज शाम को इस देश के प्रेसिडेंट की दाढ़ी बनायी है। सोचो तो, उन्होंने मुझे बुलाया। अन्धेरे में एक बुढ़िया के छोटे से मकान में वे मेरी राह देख रहे थे। माँ की कसम, इस देश के प्रेसिडेंट और वे यों चोरी से काम करें? मेरा खयाल है कि वे यह चाहते थे कि उन्हें कोई पहचाने नहीं। पर, किसी आदमी की दाढ़ी बनाते हुए भी उसका चेहरा न दिखाई दे, यह कैसे सम्भव है? उन्होंने मुझे एक अशर्फी इनाम दी और जबान बन्द रखने को कहा। गरज के समय गधे को भी बाप बनाना पड़ता है।"

गुडविन ने पूछा, "तूने इससे पहले प्रेसिडेंट मिराफ्लोर्स को कभी देखा था?"

इस्टेवान बोला, "सिर्फ एक बार। उनके बहुत घनी और काली दाढ़ी मूँछे हैं?"

"जब तुम दाढ़ी बना रहे थे, तब वहाँ और भी कोई मौजूद था?"

"हाँ, एक बुढ़िया नौकरानी थी और एक सुन्दरी। हाय राम! मैं कैसे बताऊँ कि वह कितनी सुन्दर थी!"

गुडविन बोला, "अच्छा ही हुआ, इस्टबेन। जो तुमने यह खबर मुझे सुना दी। तुम्हारी इस सेवा को नये राज्यकर्ता हमेशा याद रखेंगे।"

संक्षेप में उसने नाई को देश की वर्तमान परिस्थिति से परिचित करा दिया और उसे वहीं खड़े होकर होटल के दोनों ओर के दरवाजों पर नज़र रखने का आदेश दिया, ताकि कोई भी व्यक्ति खिड़की से निकल कर भाग न जाय! गुडविन खुद होटल के दरवाज़े पर पहुँचा और उसे धकेल कर अन्दर घुस गया। होटल की मालकिन अपने महमानों के आराम का प्रबन्ध करके अभी नीचे उतरी थी। ताक पर मोमबत्ती जल रही थी। अपने आराम में पड़े

हुए खतत की सान्त्वना के रूप मे वह शराब का एक छोटा सा पैग पीने की तैयारी मे थी। इस तीसरे आगन्तुक की ओर बिना किसी आश्चर्य या डर के देखती हुई वह बोली, ' आहा, महाशय गुडविन आये है ! मेरे गरीबखाने को तो इज्जत कभी कभी ही मिलती है ! "

गुडविन ने अपनी अनन्य मुस्कराहट चेहरे पर ला कर कहा, ' मुझे बहुत अक्सर आना पडेगा क्योकि मैने सुना है कि उत्तर मे बेलीज और दक्षिण मे रायो के दरम्यान तुम्हारी शराब का कही मुकाबला नही है। अम्मा, जल्दी से बोतल निकालो—हाथ कगन को आरसी क्या ! "

बुढिया गर्व से बोली, " वाकई, शराब तो मेरी लाजबाब है। और क्यों न हो, केले के झुरमुटो मे सुनसान अँधेरी जगहो पर खूबसूरत बोतलों में तो वह पैदा होती है। और महाशय, नाविक लोग इसे रात मे ही ला सकते है, और आप पिछवाडे दरवाजे पर उसका स्वागत भी दिन उगने से पहले ही कर सकते है ! महाशय गुडविन, अच्छी शराब, बडे नाज़ और नखरो से मिलती है। "

कोरालियो में व्यापारिक स्पर्धा के बजाय तस्कर व्यापार पर ही लोगो की अधिक श्रद्धा थी। जब इस काम में सफलता प्राप्त हो जाती थी तो लोग इसका जिक्र बडे कॉइयॉपन और अभिमान से करते थे।

चॉदी का एक खनखनाता डालर गल्ले पर रखते हुए गुडविन बोला, " आज रात को तो तुम्हारे यहॉ कई महमान आये है ?

रेजगारी गिनती हुई बुढ़िया बोली, " हॉ हॉ, दो। एक सरदार, जिसकी उम्र कुछ ज्यादा नही और एक सुन्दरी, जिसके रूप का क्या वर्णन करूँ ! उनकी कुछ भी खाने पीने की इच्छा नहीं थी, इसलिए वे अपने कमरो मे चले गये। उन्होंने दो कमरे किराये लिये है—नम्बर नौ और नम्बर दस ! "

गुडविन बोला, " दरअसल, मै इन दोनों की राह देख रहा था। मुझे उनसे बहुत ही जरूरी बाते करनी है। क्या तुम मुझे उनसे मिलने की इजाजत दोगी ? "

सन्तोष की सॉस लेते हुए बुढिया बोली, " क्यों नहीं, इसमे हर्ज ही क्या है ? सीधे ऊपर चले जाइये—कमरा न नौ और दस। "

गुडविन ने अपने कोट की जेब में पडी हुई अमरीकन पिस्तौल को सम्हाला और खडे जीने पर अँधेरे में ऊपर चढ़ा।

ऊपर बरामदे में लालटेन के पीले प्रकाश में उसने दरवाजों पर लिखे नम्बरों को पढ़ा। नौ नम्बर के कमरे का दरवाजा उसने धीरे से खोला और अन्दर घुस कर उसे बन्द कर दिया।

इस दरिद्र कमरे में टेबल के सामने बैठी हुई रूपसी ही यदि इज़ाबेला गिल्बर्ट हो तो यह कहना पड़ेगा कि उसके रूप की अफवाहों ने उसके साथ न्याय नहीं किया। वह एक हाथ पर सिर टिकाये बैठी थी। उसके शरीर की हर रेखा से अत्यन्त थकान की उदासी झलक रही थी और उसके चेहरे पर व्याकुलता छायी हुई थी। उसकी आँखों की पुतलियाँ भूरी थीं और उसकी आँखें दुनियाँ की प्रसिद्ध सौंदर्य सम्राज्ञियों के ढाँचे में ढली हुयी प्रतीत होती थीं। पुतलियों के ऊपर की स्वच्छ और उज्ज्वल चमक स्वप्निल तिरछी पलकों से ढँकी हुई थीं और पुतलियों के नीचे बर्फीली सफेदी की एक रेखा दिखाई दे रही थी। इन आँखों में कुलीनता, ओज और यदि आप कल्पना कर सकें तो एक उदात्त स्वार्थ के दर्शन हो रहे थे। उस अमेरिकन के प्रवेश करते ही उसने विस्मित और प्रश्नसूचक, पर निडर दृष्टि से ऊपर देखा।

गुडविन ने अपना हैट उतारा और अपनी अनन्य, सधी हुई बेतकल्लुफी से टेबल के कोने पर जा बैठा। उसकी उँगलियों में सुलगती हुई सिगार थी। उसने यह अनौपचारिक ढंग इसलिए अपनाया कि वह जानता था कि मिस गिलबर्ट के सामने किसी प्रकार की भूमिका बाँधने की जरूरत नहीं। वह उसके पूर्व इतिहास से परिचित था और उसमें परम्परा का क्या हिस्सा था, यह भी जानता था।

वह बोला, "श्रीमतीजी, नमस्ते! हमें एकदम मुद्दे की बात पर आ जाना चाहिये। आप देखेंगी कि मैं किसी व्यक्ति का नाम लेना नहीं चाहता, पर बगलवाले कमरे में कौन है और उसके सूट केस में क्या भरा है, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। मेरे यहाँ आने का कारण भी यही है। मैं समर्पण की शर्तों का आदेश देने आया हूँ।"

महिला न हिली, न डुली और न उसने उसकी बातों का कोई जबाब ही दिया। वह एकटक गुडविन के हाथ की सिगार को घूरती रही।

टेबल पर बैठा हुआ तानाशाह अपने हिलते पाँव के साँभर के चमड़े के जूतों को ताकता हुआ बोला, "मैं जनता के एक बड़े बहुमत की ओर से बोल रहा हूँ और उन्हीं का जो धन चुराया गया है, उसे वापिस माँगता

हूँ। इससे अधिक हमारी कोई शर्त नहीं और हमारी माँगें बिल्कुल आसान हैं। जनता के प्रतिनिधि के रूप में मैं वादा करता हूँ कि उन माँगों के पूरा होने पर आपके मार्ग में किसी प्रकार की रुकावट नहीं डाली जायगी। रुपया दे दीजिये और आप और आपके साथी जहाँ चाहें जा सकते हैं। बल्कि मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि आप जिस किसी जहाज़ से जाना चाहें, आपकी यात्रा का प्रबन्ध करवा देने में पूरी सहायता दी जायेगी। व्यक्तिगत रूप से, मैं दस नम्बर के कमरे वाले महाशय की, नारी सौन्दर्य की परख के लिए तारीफ करूँगा।"

सिगार को मुँह से लगाते हुए गुडविन ने देखा कि उसकी आँखें भी सिगार के साथ ही ऊपर उठ कर सिगार पर ही केन्द्रित हो गयी हैं। स्पष्ट था कि उसकी कही हुई एक भी बात उसने नहीं सुनी थी। अब वह समझ गया और उसने सिगार खिड़की से बाहर फेंक दी। दिलचस्पी से हँसता हुआ वह टेबल के कोने से उठ खड़ा हुआ।

रमणी बोली, "हाँ, अब बेहतर है। अब आपकी बातें सुनना संभव है। तहज़ीब का दूसरा तकाज़ा यह है कि आप मुझे बतायें कि मैं किसके द्वारा अपमानित हो रही हूँ।"

एक हाथ से टेबल का सहारा लेते हुए, गुडविन बोला, "मुझे दुख है कि मेरे पास समय इतना कम है कि उसे मैं तहज़ीब का सबक सीखने में नष्ट नहीं कर सकता। देखिये! मैं फिर एक बार आपसे समझदारी से काम लेने की प्रार्थना करता हूँ। जीवन में कई बार आपने यह प्रमाणित किया है कि आप अपने भले बुरे को अच्छी तरह समझती हैं। आपकी इस सहज प्रतिभा से लाभ उठाने का यह बहुत अच्छा मौका है। इसमें कोई भेद की बात नहीं है। मेरा नाम फ्रैंक गुडविन है और मैं रुपया लेने आया हूँ। यह तो मैं संयोग से इस कमरे में आ गया। अगर बराबर वाले कमरे में गया होता तो रुपया अब तक मुझे मिल भी जाता। आप और स्पष्ट शब्दों में सुनना चाहती हैं? दस नम्बर वाले महाशय ने बड़ा भारी विश्वास-घात किया है। उन्होंने जनता का बहुत सा रुपया गबन किया है, पर मैं उसे बचाऊँगा। वे महाशय कौन हैं इससे मुझे मतलब नहीं, परन्तु उनसे ज़बरदस्ती मिलने की अगर आवश्यकता पड़ी, जिसमें यह प्रमाणित हुआ कि वे राज्य के एक ऊँचे पदाधिकारी हैं तो उन्हें हिरासत में लेना मेरा कर्तव्य हो जायगा। मकान चारों तरफ से घिरा हुआ है। मैंने आपके सामने

बडी उदार शते रखी है । यह भी जरूरी नही कि मै बराबर के कमरे वाले महाशय से रूबरू बाते करू । रुपयो का सूटकेस आप मुझे ला दीजिये और मामला यही समाप्त हो जायगा ।"

महिला अपनी कुर्सी से उठ खडी हुई और कुछ क्षणो के लिए गहरे चिन्तन मे डूबी रही । तुरन्त ही वह बोली, "आप क्या यही रहते हैं मिस्टर गुडविन ?"

"जी हॉ ।"

"क्या मै जान सकती हूँ कि यह अनधिकार चेष्टा आप किस हैसियत से कर रहे है ?"

"मै जनता की सरकार का प्रतिनिधि हूँ । दस नम्बर वाले महाशय की गतिविधियो की सूचना मुझे तार से मिल चुकी है ।"

"क्या मै आपसे कुछ सवाल पूछ सकती हूँ ? मेरा अन्दाज है कि आप ईमानदार तो है पर डरपोक नही । इसे क्या कहते है आप कोरालियो ? यह किस तरह का शहर है ?"

गुडविन ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "शहर तो कुछ खास नही — छोटा सा कस्बा है । केले की पैदावार होती है । पूरे शहर मे दुमजिले मकान पॉच सात ही होगे । बाकी सब फूस के झोपडे है । जगह की बहुत तगी है । आबादी यही — वर्णसकर स्पैनिश, लाल आदिवासी, और कुछ खानाबदोश गडरिये ! कहने सुनने लायक कोई सडक नही और न कोई मनोरजन का साधन ! नैतिक बन्धन अत्यन्त शिथिल, बस यही शहर का रेखाचित्र है ।"

"तो फिर लोगो को यहॉ रहने का व्यापरिक या सामाजिक आकर्षण क्या है ?"

मुस्कराते हुए गुडविन बोला, ' इनकी कमी नही । चाय पार्टियॉ नही, बडे बडे स्टोर नही और अमरीका के साथ फरार अभियुक्तो को वापस कर देने की सधि नही ।"

जैसे अपने आपसे बात कर रही हो, कुछ चिडचिडाहट से महिला बोली, "उन्होने तो मुझसे कहा था कि समुद्र तट के ये शहर बहुत सुन्दर और महत्वपूर्ण है, जिनमे सम्भ्रान्त समाज की काफी आबादी है — विशेष तौर से सस्कृत अमरीकनो की बस्ती ।"

उसके सामने विस्मित हो कर देखता हुआ गुडविन बोला, "अमरीकनों की बस्ती यहॉ है जरूर — जिनमें कुछ अच्छे भी हैं, पर अधिकाश तो

क़ानून के शिकंजे से बच कर भागे हुये लोग हैं। कुछ को तो मैं जानता भी हूँ—दो देश निर्वासित प्रेसिडेंट हैं बैंकों के, एक शंकास्पद आचरण का फौजी खजाञ्ची है, दो चार खूनी, और एक विधवा है जिसके सम्बन्ध में शंका का कारण संखिया था। इनके अलावा, मैं हूँ – लेकिन मैंने अभी तक, इन सब की बराबरी करने योग्य कोई अपराध नहीं किया है।"

महिला रुखाई से बोली, "उम्मीद रखिये, उम्मीद रखिये। इस समय का आपका बर्ताव ही ऐसा है कि अब अधिक समय तक आप अप्रसिद्ध नहीं रहेंगे। मुझे ठीक तो नहीं मालूम, पर कहीं न कहीं बडी भारी गलतफ़हमी हो गयी है। जहाँ तक उन्हें जगाने का सवाल है, मैं आज रात को तो इसकी इजाजत नहीं दूँगी। सफर से वे बहुत थक गये हैं और अभी अभी सोये हैं। जहाँ तक मेरा खयाल है उन्होंने कपड़े भी नहीं बदले। आप रुपयों के गबन की बात कह रहे थे। मेरी समझ में कुछ नहीं आया। जरूर कोई गलती हो रही है लेकिन मैं अभी आपका भ्रम दूर कर दूँगी। आप एक मिनट यहीं ठहरें, मैं अभी वह सूटकेस आपको दिखा देती हूँ जिसे पाने को आप इतने लालायित हैं।"

दोनों कमरों के बीचवाले बन्द दरवाज़े की ओर बढ़कर वह रुक गयी। गुडविन की ओर एक गम्भीर और भेदक दृष्टि डालते हुए वह बोली, "आप मेरे कमरे में बिना इजाजत घुस आये। इस गुण्डागिरी के बर्ताव के साथ ही, आपने मुझ पर बहुत ही कमीने आक्षेप लगाये, परन्तु फिर भी—"

वह एक मिनट के लिए हिचकिचायी, मानो क्या कहना चाहती है, इसका निर्णय कर रही हो। "परन्तु फिर भी मुझे बडा आश्चर्य हो रहा है। मुझे विश्वास है कि कोई गलती जरूर हो रही है।"

उसने दरवाजे की ओर कदम बढ़ाया पर गुडविन ने उसकी बाँह को छू कर उसे रोक लिया। हम पहले बता चुके हैं कि सडक पर लड़कियाँ उसे मुड कर देखा करती थी। वह पूर्ण पुरुष था लम्बा, चौडा, सुन्दर और सुहावनी सीमा तक जँगली! और वह थी रूप गर्विता मानिनी – भावना के अनुसार तेज या निस्तेज! यह तो मैं नहीं जानता कि हव्वा गोरी थी या श्यामा; परन्तु इतना जरूर कह सकता हूँ कि इसके जैसी औरत यदि बहिश्त के उस बगीचे में खडी होती तो मियाँ आदम ने सेब जरूर खा लिया होता। इस नारी के रूप में गुडविन की तकदीर सामने खड़ी थी पर उसे इस बात का होश नहीं था। परंतु होनी की पूर्व सूचना के समान, उसको सामने देखते

ही, अफवाहों में चित्रित किये गये रमणी के उस पहलू ने उसका मन कड़वाहट से भर दिया।

वह आवेश में आकर बोला, "अगर कोई गल्ती हुई है तो उसके लिए आप जिम्मेदार हैं। मैं उस आदमी को कोई दोष नहीं दे सकता, जिसे अपना देश, अपना स्वाभिमान, यहाँ तक कि गबन किये हुये रुपयों के रूप में मिलने वाला क्षणिक सन्तोष भी त्यागना पड़े। मेरी दृष्टि में तो आप दोषी हैं। भगवान की कसम, मैं अब समझ सकता हूँ कि उस बिचारे की यह दुर्दशा कैसे हुई? मुझे तो उस पर दया आती है। उन देश निष्कासित आवारों के साथ जगह जगह की धूल फाँकती हुई तुम्हारे जैसी अप्सरायें ही मनुष्य को अपना धर्म बेच कर पतन की ओर अग्रसर ..."

जैसे उसकी बातों से ऊब गई हो, उसे बीच ही में रोककर महिला बोली, "अपना भाषण चालू रखने की जरूरत नहीं। तुम क्या कह रहे हो, मैं कुछ नहीं समझती और कहाँ तुम्हारी गल्ती हो रही है, यह भी नहीं जानती। परन्तु यदि उस सूटकेस की चीजों को दिखा देने से ही तुमसे पिण्ड छूट सकता है तो उसमें एक मिनट की भी देर नहीं होगी।"

वह बिना आवाज किये, जल्दी से बराबर के कमरे में चली गयी। कुछ ही क्षणों बाद, उस भारी सूटकेस को उठा कर बाहर लायी और घृणापूर्ण सहनशीलता के भाव से उसे अमरीकन के हाथ में थमा दिया।

गुडविन ने सूटकेस को टेबल पर रखकर उसके पट्टे खोले। पास ही खड़ी वह रमणी अत्यधिक तिरस्कार और थकावट की मुद्रा से उसकी ओर घूरती रही। गुडविन ने सूटकेस को पूरा खोल कर, दो चार पहनने के कपड़े बाहर फेंके। कपड़ों के नीचे बडी कीमत के अमरीकन मुद्रा के नोटों के बण्डल ठसाठस भरे थे। बण्डलों के ऊपर बँधे हुये कागजों पर जो संख्याएँ लिखी हुई थीं उनसे अन्दाज किया जा सकता था कि पूरी रकम लाख डॉलर से कम नहीं होगी।

गुडविन ने महिला के मुँह पर एक उड़ती हुई नजर डाली और उसे यह देख कर विस्मय जनित आनन्द हुआ कि उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थी। उसकी आँखें फटी हुई थी, साँस फूली हुई थी और टेबल के कोने को जोर से थामे वह अपने आप को मुश्किल से सम्हाल पा रही थी। निष्कर्ष यह निकला, कि उसके साथी ने सरकारी खजाने से जो गबन किया है उसकी उसे कोई जानकारी नहीं थी। कुछ चिढ़कर गुडविन ने अपने आप से पूछा कि

उसके ऊपर ऐसा कौन सा जादू चल गया जिससे वह इस लम्पट नाचनेवाली को उतना बुरा नही मान पाया जितना अफवाह उसे चित्रित करती है ?

बराबर के कमरे से आयी एक आवाज ने उन दोनो को चौका दिया। दरवाजा खुला और एक लम्बे, सॉवले, अभी अभी हजामत किये हुये आदमी ने तेजी से प्रवेश किया।

प्रेसिडेन्ट मिराफ्लोर के चित्रो मे उसे एक घनी दाढी मूँछो वाला व्यक्ति दिखाया जाता था। परतु इस्टेबन नाई के समाचार ने गुडविन को इस फर्क के लिए तैयार कर दिया था। आगन्तुक की आँखे नीद से भरी हुई थी और कमरे की तेज रोशनी से चकाचौंध होकर वह कुछ लड़खड़ाया।

उसने गुडविन की ओर व्याकुलता से देखते हुए सुन्दर भाषा मे पूछा, "यह क्या हो रहा है—डकैती ?"

गुडविन बोला, "करीब करीब। पर मेरा अन्दाज है कि मै उसे रोक सकूँगा। यह धन जिन लोगो की सम्पत्ति है मै उनका प्रतिनिधि हूँ और इसे उन्ही को लौटा देने को आया हूँ।"

इतना कहते हुए उसने अपने ढीले ढाले कोट की जेब मे हाथ डाला। आगन्तुक का हाथ भी जल्दी से उसकी कमर की ओर गया परन्तु गुडविन धमकाते हुये बोला, "पिस्तौल निकालने की कोशिश मत करना। मैने जेब की पिस्टॉल से पहिले ही निशाना साध रखा है।"

वह महिला आगे बढी और अपने हिचकिचाते साथी के कन्धे पर हाथ रखती हुई, टेबल की ओर उँगली से सकेत कर के धीमे स्वर मे बोली, "मुझे सच सच बताना, यह रुपया कहाँ से आया ?"

आगन्तुक ने कोई उत्तर नही दिया। एक गहरा निश्वास छोड कर उसने अपनी साथिन के ललाट को चूमा और दो कदम पीछे हट कर दूसरे कमरे मे प्रवेश करके दरवाजा बन्द कर लिया। उसका इरादा भॉप कर गुडविन दरवाजे की ओर झपटा परन्तु दरवाजे के हैण्डल को हाथ लगाते ही पिस्तौल का धमाका सुनाई दिया। अन्दर कोई चीज जमीन पर गिरी और उसे एक ओर धकेलती हुई वह महिला बराबर वाले कमरे मे भागी।

गुडविन ने सोचा कि उस रूपसी का दर्द, धन और साथी के नष्ट हो जाने के विषाद से कही गहरा होगा, जिससे वह इस तरह उसका हाथ झटक कर भागी। बराबर के उस खून भरे, बदनाम कमरे मे वह नारी, दुनियॉ

की सबसे अधिक करुणामयी, विश्वस्त और धीरज बँधाने वाली शक्ति को सुबक सुबक कर पुकार रही थी – " हाय माँ, माँ, माँ ! "

बाहर भगदड मच चुकी थी। पहरे पर खड़े हुये उस नाई ने गोली की आवाज़ सुनते ही शोर मचा दिया और वैसे भी पिस्तौल की आवाज़ से आधा शहर जाग उठा था। सड़क पर भागते हुए लोगों की पदचाप सुनाई दी और निस्तब्ध वातावरण में सरकारी आदेश गूँजने लगे। गुड़विन को अपना कर्तव्य पूरा करना था। संयोग ने उसे अपने माने हुए देश के खजाने का रक्षक बना दिया था। जल्दी से नोटों को सूटकेस में ठूँस कर उसने उसे बन्द किया और खिडकी से बाहर झुक कर आंगन में उगे हुये सन्तरे के एक घने वृक्ष पर फेंक दिया।

अपनी आदत के अनुसार कोरालियो के निवासी, हर महमान को, इस दुखपूर्ण पलायन की कहानी का अन्त सुनाते हैं। वे आप को बतायेंगे कि किस तरह खतरे की सूचना पाते ही कानून के रक्षक वहाँ दौड़े आये, किस तरह लाल जूते और वास्कट पहने, तलवार लटकाये, बन्दूकें सम्हाले सैनिकों के झुण्ड वहाँ जमा हुए, किस तरह उनके अफसर अपनी सुनहरी वर्दियाँ और तगमे सम्हालते वहाँ पहुँचे, किस तरह नंगे पाँव पुलिस के सिपाही ( जो सब से अधिक योग्य थे ) एकत्र हुए और किस तरह हर किस्म के नागरिकों ने वहाँ आ कर हंगामा मचाया।

वे यह भी बतायेंगे कि मृत व्यक्ति का चेहरा गोली की चोट से बुरी तरह से विक्षत हो गया था परन्तु फिर भी गुडविन और ईस्टबेन नाई ने उस पदच्युत प्रेसिडेन्ट की पहचान की। दूसरे दिन सुबह दुरूस्त की हुई तार की लाइनों से समाचार आया और राजधानी से प्रेसिडेन्ट के पलायन की खबर जनता को बतायी गयी। सान माटियो में क्रान्तिकारी दल ने बिना किसी विरोध के राजसत्ता हथिया ली और गिरगिट की तरह रंग बदलने वाली प्रजा ने विजेताओं की जयजयकार करते हुए अभागे मिराफ्लोर्स की यादगार तक का नामो निशान मिटा दिया।

वे आपसे इस बात का भी जिक्र करेंगे कि किस तरह नयी सरकार के अफसरों ने अन्चूरिया का धन भरे हुये उस सूटकेस को ढूँढने के लिए जिसे फरार प्रेसिडेंट अपने साथ लाये थे, शहर का कोना कोना छान मारा, पर कोई नतीजा नहीं निकला। कोरालियो में गुडविन के नेतृत्व में

खोजियो के दल ने शहर के चप्पे चप्पे को उतनी सतर्कता से छाना जैसे कोई स्त्री अपने बालों मे कघी करती है, परन्तु खोया हुआ धन नहीं मिला।

लोगो ने मृत व्यक्ति को, बिना किसी सम्मान के, शहर से दूर दलदल को लॉघनेवाले पुल के पास दफना दिया। आज एक चवन्नी बक्शीश दो तो शहर का कोई भी लड़का उनकी कब्र आपको बता देगा। लोग कहते है कि जिसकी झोपडी मे प्रेसिडेण्ट ने उस नाई से हजामत बनवाई थी, उस बुढिया ने उनकी कब्र के सिरहाने एक लकडी का तख्ता यादगार मे लगवा दिया जिसके ऊपर गरम लाहे से लकडी को दाग कर इबारत खोदी गयी।

आप यह भी सुनेंगे कि श्रीमान गुडविन ने किसी लौह पुरुष की सी शक्ति से श्रीमती इजाबेला गिल्बर्ट का उन शाकपूर्ण दिनो मे रक्षण किया। उसके पूर्व इतिहास के बारे मे उनके मन मे जो शकाएँ थीं, वे नष्ट हो गयीं। उस रूपजीविनी ने भो अपने स्वभाव की चचलता और अस्थिरता त्याग दी। शीघ्र ही उनका विवाह हो गया और वे सुख से रहने लगे।

शहर के बाहर ही छोटी-सी पहाडी पर उस अमरीकन ने एक बॅगला बॅधवाया। उसमे देशी लकडी पर जो कारीगरी की गयी थी, वह यदि विदेशो मे भिजवायी जा सकती, तो वह बेशकीमत मानी जाती। ईंट और शीशे और बॉस और खजूर की लकडी इन से सहायता ली गयी सो अलग। बॅगले के चारो ओर का प्राकृतिक सौन्दर्य नन्दनवन की याद दिलाने वाला था और उसी से मिलती जुलती शोभा अन्दर भी थी। कोरालियो के निवासी जब उस समृद्धि का वर्णन करते तो अश्चर्य से मुह फाडे रह जाते। शीशे के समान चमकते हुए फर्श, जिन पर रेशम जैसे मुलायम, हाथ से बुने हिन्दुस्तानी कालीन बिछे, ऊँचे झाड-फानूस और सुन्दर चित्र, तरह तरह के सगीत वाद्य, पच्चोकारी की हुई दीवारे। वर्णन करने वाले एक आह भर कर सिर्फ इतना कहते, "आप खुद ही सोच लीजिये"।

परन्तु पूरे कोरालियो मे आपको यह कोई नही बता सकता कि फ्रेंक गुडविन द्वारा सन्तरे के वृक्ष पर फेंके गये उस खजाने का क्या हुआ? छोडिये भी इस जिक्र को। मन्द बयार में खजूर के वृक्ष लहराते हुए हमे आमोद प्रमोद के लिए आमत्रित कर रहे है।

# जासूस

बड़े शहरों में मनुष्य कभी कभी बुझती हुई मोमबत्ती के प्रकाश की तरह एकाएक गायब हो जाते हैं। ढूँढ़ने के सारे साधन प्रयोग में लाये जाते हैं; विशेषकर तर्क और अनुमान से काम लेने वाले चतुर जासूस, जो शहर की अँधेरी गलियों की खोज करने में शिकारी कुत्तों के समान होते हैं। अक्सर इन लापता लोगों की सूरत भी दिखाई नहीं देती, परन्तु कभी कभी शबोगान या टैरे हॉट के बीहड़ प्रदेशों में वे 'स्मिथ' या इसी का कोई पर्यायवाची नाम धारण कर के घूमते हुये मिल जाते हैं। अक्सर उन्हें एक विशेष समय तक की कोई घटना याद नहीं आती। उनका मोदी का बिल भी इन भूली हुई मदों में रहता है। कभी कभी नदियों को छान मारने पर या खाने की राह देखते हुये उसे ढूँढ़ने की उम्मीद में होटलों की खाक छानने के बाद, यह पता चलता है कि वह पड़ौस के मकान में रहने चला गया है।

ब्लैकबोर्ड पर से चॉक की लिखावट की तरह मिट जाने वाले मनुष्यों की इन घटनाओं में बड़े प्रभावशाली नाटकीय तत्व निहित रहते हैं।

उदाहरण के तौर पर मेरी स्नाइडर का मामला कुछ कम रोचक नहीं।

मीक्स नामक एक अधेड़ व्यक्ति अपनी बहन को ढूँढ़ने पश्चिम से न्यूयॉर्क आया। उसकी बहन मेरी स्नाइडर विधवा थी, उम्र ५२ वर्ष, और पिछले एक वर्ष से वह शहर की एक घनी बस्ती में किराये के मकान में रहती थी।

परन्तु उस पते पर जा कर पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि एक महीने पहिले ही वह वहाँ से चली गयी थी। उसका नया पता किसी को मालूम नहीं था।

बाहर निकल कर मिस्टर मीक्स ने नुक्कड़ पर खड़े हुये सिपाही को अपनी दुविधा सुनायी, "मेरी बहन बहुत गरीब है। मैं उसे ढूँढ़ने को बहुत

आतुर हूँ । मैन हाल ही मे तांबे की खान मे बहुत सा रुपया कमाया है और मै चाहता हूँ कि वह भी मेरी समृद्धि से लाभ उठाये । अखबारो मे विज्ञापन देने से कोई फायदा नही क्योकि वह पढी लिखी नही है ।"

अपनी मूँछो पर ताव देते हुए सिपाही ऐसे गम्भीर और महत्त्वपूर्ण विचारों मे डूब गया कि मीक्स को लगा, जैसे उसकी बहन अभी अभी छप्पर फाड कर टपक पडेगी ।

अन्त मे सिपाही बोला, "तुम नहर वाली गली के मोहल्ले मे जाओ और वहाँ एक बडा सा ठेला हाँकने की कोशिश करो । उस तरफ बुढियाओ को ठेलो के नीचे दब जाने की बहुत आदत है । शायद उन्ही मे तुम्हारी बहन तुम्हे मिल जाय । अगर तुम यह करना नही चाहते, तो सदर थाने जा कर बुढिया की खोज मे खुफिया लगवा सकते हो ।"

सदर थाने मे मीक्स को जल्द ही सहायता मिल गयी । शहर भर मे ढिंढोरा पिटवा दिया गया और मेरी स्नाइडर की तस्वीर, जो उसके भाई के पास थी, हर थाने मे भिजवा दी गयी । मलबैरी स्ट्रीट मे कोतवाल साहब ने जासूस मलिन्स को यह मामला सौंप दिया ।

जासूस, मीक्स को एक तरफ ले जा कर बोला, "यह कोई बहुत पेचीदा मामला नही है । तुम ऐसा करो कि पहले तो अपनी दाढी मुँडवा लो और फिर अपनी जेबो मे बढिया सिगार भर कर तीसरे पहर तीन बजे मुझे वाल्डोर्फ होटल में मिलो ।"

मीक्स ने इस आज्ञा का पालन किया और मलिन्स से मिला । महँगी शराब की एक बोतल मँगवा कर जासूस, उस लापता औरत के बारे में प्रश्न पूछने लगा ।

"देखो, वैसे तो न्यूयॉर्क बहुत बडा शहर है, परन्तु यहाँ के जासूसो का, खोज का ढँग भी बडा नियमित है । तुम्हारी बहन को ढूढने के दो तरीके है । उनमे से, पहले हम एक को आजमायेगे । तुम कहते हो कि उसकी उम्र बावन वर्ष की है ।"

मीक्स बोला, "कुछ ज्यादा ही होगी ।"

जासूस, उस पश्चिम के निवासी को, शहर के सब से प्रसिद्ध दैनिक के विज्ञापन विभाग मे ले गया और निम्नलिखित विज्ञापन लिख कर मीक्स को दिखाया ।

"हमारे नये संगीत प्रहसन के लिए, एक सौ, सुन्दर नाचने वाली लड़कियों की तुरन्त आवश्यकता है। आवेदन करें — ब्रॉडवे नं ....."

मीक्स को गुस्सा आ गया। वह बोला, "मेरी बहन तो एक गरीब, मेहनती और बुजुर्ग औरत है। मेरी समझ में नहीं आता कि इस तरह के विज्ञापन से उसे खोजने में क्या सहायता मिलेगी?"

जासूस बोला, "जैसी तुम्हारी मर्जी। मेरा तो कहना यही है कि तुम्हें न्यूयॉर्क की बिल्कुल जानकारी नहीं। तुम्हें अगर यह योजना पसन्द नहीं, तो हम दूसरा उपाय करेंगे जो निश्चित कामयाब होगा। पर उसमें खर्च कुछ ज्यादा होगा।"

मीक्स बोला, "खर्च की कोई परवाह नहीं, आप कोशिश कीजिये।"

जासूस उसे वापस वॉल्डोर्फ होटल ले गया और राय दी, "दो सोने के कमरे और एक बैठक, किराये पर ले लो और फिर ऊपर चलो।"

यह किया गया। दोनों को चौथी मंज़िल के बढ़िया कमरों में पहुँचा दिया गया। मीक्स हक्का बक्का सा मुँह ताकने लगा। जासूस साहब ने मखमल की आरामकुर्सी पर आराम से लेटते हुए सिगरेट की डिबिया निकाली और बोले, "देखो भई, मैं तो कहना भूल गया, पर कमरे, मासिक दर से किराये पर लो तो सस्ते पड़ेंगे।"

मीक्स ने आश्चर्य प्रकट किया, "मासिक दर से? तुम्हारा मतलब क्या है?"

"भई, इस उपाय से काम लेने में काफी समय लगेगा। मैंने तो तुमसे पहले ही कह दिया था कि इसमें खर्च ज्यादा होगा। हमें बसन्त ऋतु तक तो राह देखनी पड़ेगी, तब कहीं नयी टेलीफोन डायरेक्टरी छपेगी। पूरी संभावना है कि तुम्हारी बहन का नाम और पता उसमें मिल जाय।"

मीक्स ने तुरन्त ही इस शहरी जासूस से पिण्ड छुडाया। दूसरे दिन किसी ने उसे न्यूयॉर्क के प्रसिद्ध प्राइवेट जासूस शामरॉक जोन्स से मशविरा करने की राय दी। यह जासूस फीस तो तगड़ी लेता था पर रहस्यमय पहेलियों और जुर्मों को सुलझाने में चमत्कार दिखा देता था।

इस महान जासूस के आफिस की बाहरी बैठक में दो घण्टे प्रतीक्षा करने के बाद मीक्स की उससे मुलाकात हुई। जोन्स, जामुनी रंग का चोगा पहिने, हाथी दाँत के शतरंज के मुहरे सामने फैलाये, कोई गूढ़ चाल सोच रहा था। पास ही एक पत्रिका खुली पड़ी थी। उसका पतला, मननशील

चेहरा, भेदक दृष्टि और उसकी सलाह के प्रत्येक शब्द की फीस इतनी प्रसिद्ध थी, कि उसका वर्णन करने की आवश्यकता नहीं।

मीक्स ने अपने आने का कारण बताया। उत्तर में शामरॉक जोन्स ने कहा, "यदि कामयाब हो गया तो पांच सौ डॉलर फीस लूँगा।"

मीक्स ने सहमति प्रकट की।

अन्त में जोन्स बोला, "मिस्टर मीक्स, मैं आपका केस स्वीकार करता हूँ। इस शहर में लोगों के गायब हो जाने की घटनाओं में मुझे बड़ी दिलचस्पी है। मुझे याद है कि साल भर पहले इसी प्रकार का एक मामला मैंने सफलतापूर्वक सुलझाया था। क्लार्क नामक एक परिवार अपने छोटे से फ्लैट में से एकाएक गायब हो गया। इस समस्या का हल ढूँढ़ने के लिए मैंने दो महीने तक उस मकान की देखभाल की। एक रोज मुझे मालूम पड़ा कि दूधवाला ग्वाला और पंसारी का लड़का, सामान देने के लिए ऊपर जाते समय उल्टे पाँवों चलते थे। इस निरीक्षण के सहारे मैंने अनुमान लगाया और तुरन्त ही खोये हुए परिवार का पता लगा लिया। वे लोग उसी मकान में सामने वाले फ्लैट में रह रहे थे और उन्होंने अपना नाम भी बदल कर 'राल्क' रख लिया था।"

शामरॉक जोन्स अपने मुवक्किल के साथ उस मकान में पहुँचे जहाँ मेरी स्नाइडर रहा करती थी। जासूस ने उस कमरे को देखना चाहा जिसमें वह रहती थी। उसके गायब हो जाने के बाद कोई किरायेदार न आने की वजह से कमरा अब तक खाली पड़ा था।

कमरा छोटा सा धुँधला और हल्का सजा हुआ था। मीक्स निराश हो कर एक टूटी हुई कुर्सी पर बैठ गया और उस महान जासूस ने कमरे की दीवारें, फर्श और टूटे फूटे फर्नीचर का चप्पा चप्पा छान मारा।

कोई आधे घण्टे बाद जोन्स ने कुछ बेतरतीब दिखाई देने वाली चीज़ें इकट्ठी की—एक सस्ती-सी काली हैटपिन, किसी नाटक के कार्यक्रम से फटा हुआ कागज़ का टुकड़ा, और एक छोटा-सा फटा पुराना गत्ते का टुकड़ा, जिस पर लिखा हुआ था, "बाँयी ओर सी. १२"

शामरॉक जोन्स महराब के सहारे सिर टिका कर कोई दस मिनट तक बैठा रहा। उसके चिन्तनशील चेहरे पर गहरे विचार की रेखाएँ उभर आयी थीं। कुछ समय बाद वह उत्साह से चिल्लाया, "मिस्टर मीक्स, चलिये। समस्या हल हो गयी। मैं आपको सीधे उस मकान तक ले चलता

"तुम बता चुके हो कि तुम्हारी बहन चाका बर्तन करती थी। वह दफ्तरो और मकानो मे झाड़ू भी लगाती थी। मान लो कि उसे किसी थियेटर मे जमीन पोछने का काम मिल गया। मिस्टर मीक्स, औरतो के गहने अधिकतर कहॉ गुम होते है? बस थियेटर मे ही! इस कार्यक्रम वाले काग़ज को देखो! इस पर लगे अँगूठे के निशान देखो। इसे शायद किसी अँगूठी के चारो ओर लपेटा गया है–किसी कीमती अँगूठी के। थियेटर मे काम करते हुये श्रीमती स्काइडर को एक अँगूठी मिली। उसने जल्दी से एक कार्यक्रम का पन्ना फाडा और सावधानी से उसमे अँगूठी को लपेट कर अपनी चोली मे खोस लिया। दूसरे दिन अँगूठी को बेचने से उसकी हालत भी सुधर गयी और वह अपने रहने के लिए कोई अधिक आरामदायक जगह भी ढूँढने लगी। घटनाओ की श्रृंखला के सहारे जब मै यहॉ तक पहुँच जाता हूँ, तो मुझे न १२, अवेन्यू सी के विषय मे कोई असगति नही दिखती। बस उसी जगह हम आपकी बहन को पायेगे।"

एक सफल कलाकार की तरह मुस्करा कर शामरॉक जोन्स ने अपना शानदार भाषण समाप्त किया। मीक्स का आनन्द, शब्दो मे व्यक्त नही हो सकता। वे दोनो साथ साथ न १२ अवेन्यू सी गये। यह एक पुराने ढंग का लाल पत्थर से बना मकान था, जिसके पडौस मे इज्जतदार और धनवान लोग बसते थे।

उन्होने घण्टी बजायी। पूछने पर मालूम हुआ कि श्रीमती स्काइडर नाम की कोई महिला वहॉ नही रही। पिछले छह हफ्तो मे वहॉ कोई नया किरायेदार भी नहीं आया।

वापिस सडक पर आने के बाद, मीक्स ने अपनी बहन के पुराने घर से बरामद किये गये, उन सूराग चिन्हो की, जॉच की।

थियेटर के कार्यक्रम का वह टुकडा, नाक के पास ले जा कर उसने जोन्स से कहा, "मै कोई जासूस तो नही हूँ, पर मुझे लगता है कि इस कागज मे अँगूठी की बजाय पीपरमेट की गोली लपेटी गयी होगी। और ठिकाना लिखा हुआ वह कागज भी किसी सीट का कूपन लगता है–न १२, पक्ति सी, बॉयी बाजू।"

शामरॉक जोन्स ने उसकी ऑखो की गहराई मे झॉका।

उसने कहा, "मेरे खयाल से तुम्हे जगिन्स की सहायता लेनी चाहिये।"

मीक्स ने पूछा, "जगिन्स कौन?"

जोन्स बोला, "वह जासूसों की नयी धारा के नेता हैं। उनके तरीके, हमारे तरीकों से भिन्न हैं। लेकिन सुना जाता है कि उन्होंने कई पेचीदा मसलों को हल कर दिया है। मैं तुम्हें उनसे मिला दूँगा।"

महान जगिन्स अपने दफ्तर में बैठे मिले। वे सफेद बालों वाले एक नाटे आदमी थे और उस समय नाथानियल हॉथोर्न की कोई पुस्तक पढ़ने में तल्लीन थे।

अलग अलग धाराओं के उन दो जासूसों ने बड़े उत्साह से हाथ मिलाये। मीक्स का परिचय कराया गया।

अपनी पुस्तक पर नज़र टिकाये ही जगिन्स ने कहा, "हालात बयान कीजिये।"

मीक्स द्वारा बोलना समाप्त करने पर उस महान जासूस ने अपनी पुस्तक बन्द की और कहा, "तो क्या मैं यह समझूँ कि आपकी बहन बावन वर्ष की है, उसकी नाक के पास एक बड़ा मस्सा है, शकल सूरत से गृहस्थ लगती है और चौका बर्तन करके वह अपना गरीब गुजरान करती है?"

मीक्स ने स्वीकार किया, "बस यही उसका सही हुलिया है।"

जगिन्स ने उठ कर अपना टोप पहिन लिया। वे बोले, "मैं अभी पन्द्रह मिनट में, उसका पता ठिकाना ले कर आता हूँ।"

शामरॉक जोन्स के चेहरे का रंग उड़ गया और बड़े कष्ट से वह मुस्करा सका।

नियत समय में ही जगिन्स लौट आये और अपने हाथ में थामे पर्चे को देखने लगे।

उन्होंने गम्भीरता से कहा, "आपकी बहन, मेरी स्काइडर, नं. १६२, चिल्टन स्ट्रीट में मिलेगी। वहाँ पाँच सीढ़ियाँ चढ़ कर एक पिछवाड़े के कमरे में वह रहती है। घर, यहाँ से चार मकान दूर ही है। आप चाहें तो वहाँ जा कर इस बात की जाँच कर सकते हैं। तब तक मिस्टर जोन्स आपके लिए रुकेंगे।"

मीक्स उसी समय चल पड़ा। बीस मिनट में वह खुश खुश वापिस लौट आया।

वह बोला, "मिल गयी। राजी खुशी है। आपकी फीस बोलिये।"

जगिन्स ने कहा, "दो डॉलर।"

मीक्स जब दाम चुका कर चला गया तब शामरॉक जोन्स भी अपना टोप हाथ में ले कर उठ खड़ा हुआ। अटकते हुये वह बोला, "अगर आपको एतराज़ न हो तो, महरबानी कर के, अगर आपकी मर्जी ..."

जगिन्स ने खुशी प्रकट करते हुए कहा, "कोई बात नहीं, मैं बता सकता हूँ कि मैंने उसे कैसे खोज निकाला। आपको श्रीमती स्काइडर का हुलिया तो याद होगा! क्या आप इस प्रकार की किसी औरत को जानते हैं, जो अपनी रंगीन खड़िया की एक बड़ी तस्वीर बनवाने के लिए साप्ताहिक किश्तें नहीं चुका पायी है। ऐसी तस्वीरों का सब से बड़ा कारखाना, यहाँ पास ही के नुक्कड़ पर है। मैं वहीं गया और उसका पता उतार लाया। बस!

# घायल की गति

चोर ने खिड़की के भीतर पैर जल्दी से रखा और कुछ देर तक प्रतीक्षा करने लगा। अपने हुनर के प्रति आदरभाव रखने वाला हर चोर कोई चीज़ उठाने से पहले यह कदम उठाता ही है।

यह मकान किसी का निजी निवासगृह था। तख्ते से ढँके हुए सामने के दरवाज़े, और सँवारे बोस्टन के सदाबहार पौधों को देखकर चोर ने जान लिया कि घर की मालकिन समुद्र के किनारे किसी बरामदे में बैठी हुई किसी सहृदय नाविक से कह रही होगी, कि उसके एकाकी और पीड़ित हृदय को किसी ने नहीं पहचाना। तीसरे मंजिल की सामनेवाली खिड़कियों में रोशनी देखकर और मौसम का अंदाज लगाते हुए वह समझ गया कि घर का मालिक लाटकर आ गया है और जल्दी ही रोशनी बुझाकर सो जायेगा, क्योंकि महीना सितम्बर का था माने वर्ष की और मन की अवस्था का भी अंतिम चरण आरम्भ हो गया था, और उस समय मालिक मकान छत पर के बगीचों और टाइपिस्ट लड़कियों का क्षणिक आनन्द छोड़कर

अपनी जीवन-संगिनी की बाट जोहने लगते हैं ताकि नैतिक और सामाजिक स्थिरता फिर प्राप्त हो सके।

चोर ने एक सिगरेट जलायी। उँगलियों की ओट में जलती हुई दियासलाई के प्रकाश में उसका चेहरा चमक उठा। वह तीसरी किस्म का चोर था।

चोरों की यह तीसरी किस्म अभी तक न पहचानी गयी है, न स्वीकार की गयी है। पुलिस के द्वारा अभी दो किस्में ही लोकप्रिय हुई हैं। उनका वर्गीकरण काफी आसान है। कालर उनकी विशेष पहचान है।

जब कोई ऐसा चोर जो कालर नहीं पहनता हो, पकड़ा जाता है, तब उसे सबसे हल्के दर्जे का पतित, एकदम दुराचारी और दुष्ट कहा जाता है। उस पर यह भी सन्देह किया जाता है कि सन १८७८ में हैने-सी नामक थानेदार की जेब से हथकड़ियाँ चुरा कर गिरफ्तारी से बचने के लिए भाग जानेवाला उद्दण्ड अभियुक्त वही है।

दूसरी जानी पहचानी किस्म का चोर वह है जो कालर पहनता है। वह अपने वास्तविक जीवन में जुआरी होता है। दिन में वह सदा एक सज्जन बना रहता है। सही सूट पहनकर नाश्ता करता है और दीवार पर कागज लगाने वाला बना फिरता है। पर रात होते ही अपना चोरी का नीच धंधा अपना लेता है। उसकी माँ ओसन ग्रीव की प्रतिष्ठित और अत्यन्त धनवान औरत होती है और जेल की कोठारी में प्रवेश करते ही वह कीलकांटों और पुलिस गजट की माँग करता है। अमरीका के हर राज्य में उसकी एक पत्नी और हर प्रान्त में एक मँगेतर होती है। जिन महिलाओं का पाँच पाँच डाक्टरों द्वारा इलाज भी असफल हो जाय और उसके बाद एक ही खुराक से जिन्हें काफी चैन पड़ जाय और एक पूरी बोतल में तो पूरा आराम, उन्हीं की तस्वीरों को अदल बदल कर अखबार वाले उसकी शादी के समाचार छापते हैं।

इस चोर ने एक नीला स्वेटर पहिन रखा था। वह न जुआरी किस्म का था और नरक के कीड़ों जैसा। उसका वर्गीकरण करने में तो पुलिस भी पशोपेश में पड़ जाती। उन्होंने अभी तक ऐसे कुलीन और विनीत चोरों के बारे में सुना तक नहीं था जो अपने दर्जे से न अधिक और न कम हैं।

तो इस तीसरे किस्म के चोर ने अब खोज शुरू की। उसने नकाब या काला चश्मा या रबर के जूते — कुछ भी नहीं पहन रखे थे। उसकी जेब में

एक तमन्चा था और वह चिन्तामग्न एक पीपरमेंट की गोली चूस रहा था।

गर्मियो की धूल से बचाने के लिए फर्नीचर पर गिलाफ चढे हुए थे। सोना चाँदी वहाँ से दूर किसी बैंक के तहखाने मे होगे। चोर को कोई विशष रकम प्राप्त होने की आशा नही थी। उसका निर्दिष्ट स्थान तो वह हल्की रोशनी वाला कमरा था, जहाँ घर का मालिक, अपने एकाकीपन का जैसे तैसे उपचार करके, सन्तोषपूर्वक, गहरी नीद मे सो रहा था। वहाँ से कुछ मामूली माल ही हाथ आने की आशा थी, जिसे वाजिबी, व्यवसायिक लाभ कहा जा सकता है, जैसे कुछ रोजगारी, कोई घडी या जडाऊ पिन वगैरह और, सिगारदान पर कुछ नोट, एक पटा, चाबियाँ, दो तीन पोकर के खेल के टोकन, मसली हुई सिगारे, रेशमी बालो का एक गुलाबी बो और सवेरे खुमारी उतारने के लिए सोडा लेमन की बन्द बोतल—यही सब चीजें रखी थी। पास ही पलग पर एक आदमी सोया था।

चोर ने सिंगारदान की तरफ दो तीन कदम बढाये। एकाएक बिस्तर मे पडे हुए आदमी के मुँह से एक चीख जैसी कराह निकली और उसने अपनी आँखें खोल दी। उसका दाहिना हाथ तकिये के नीचे गया, पर वही रह गया।

बातचीत के लहजे मे चोर ने कहा, ' चुपचाप पडे रहो। " तीसरे दर्जे के चोर फुफकारते नही। बिस्तर मे पडे हुए नागरिक ने चोर की पिस्तौल के गोल मुँह की ओर देखा और चुपचाप पड रहा।

चोर ने आदेश दिया, "अब अपने दोनो हाथ ऊँचे करो।"

बिना दर्द दाँत निकालने वाले दत चिकित्सक की तरह दिखने वाले इस नागरिक के एक छोटी नुकीली, भूरी सफेद दाढी थी। वह समृद्ध, प्रतिष्ठित, चिडचिडा और नाराज लगता था। अपने बिस्तर पर ही बैठ कर उसने अपना दाहिना हाथ सिर से ऊँचा उठा लिया।

चोर ने हुक्म दिया " दूसरा हाथ भी। हो सकता है कि तुम दोनो हाथ चला सकते हो और अभी बाँये से गोली दाग दो। तुम दो तक तो गिन सकते हो? क्यो? जल्दी करो "।

अपने मुँह की रेखाओ को विकृत करते हुए नागरिक ने कहा, " दूसरा हाथ नहीं उठा सकता। "

"क्यो ? क्या तकलीफ है ?"

"कन्धे मे गठिया है।"

"सूजन भी है ?"

"थी, पर अब चली गयी है।"

चोर, एकाध क्षण उसकी तरफ पिस्तौल किये खड़ा रहा। उसने सिंगारदान पर पड़े हुए माल पर एक नजर फेकी और फिर कुछ हक्का बक्का होकर बिस्तरे पर बैठे आदमी की ओर देखा। तभी, उसका मुँह भी ऐंठ कर विरूप होने लगा।

नागरिक ने दर्द के साथ कहा, "वहाँ खड़े खड़े मुँह क्या बनाते हो ? चोरी करने आये हो तो करते क्यो नही ? इधर उधर कुछ माल बिखरा तो है ?"

खीसे निपोरते हुये चोर बोला, "माफ करना। तुम्हारी हालत से मुझे भी धक्का पहुँचा है। तुम्हे जानकर खुशी होगी कि गठिया और मै पुराने दोस्त है। मेरे भी बॉए हाथ मे गठिया था। मेरी जगह और कोई होता तो बॉया हाथ न उठाने पर तुम्हे जरूर गोली मार देता।"

नागरिक ने पूछा, "तुम्हारे गठिया कब से है ?"

"चार बरस से। मेरे ख्याल से अभी क्या हुआ है। एक बार तुम्हे यह लग जाय फिर तो जिन्दगी भर तुम गठिया गये—मेरा तो यही विश्वास है।'

नागरिक ने पूछा, "सॉप का तेल कभी इस्तेमाल किया ?"

चोर ने कहा, "सेरों ! जितने सॉपो का तेल मैने काम मे लिया, उतने अगर एक पंक्ति मे जमा दिये जायँ तो शनि नक्षत्र तक आठ बार पहुँच सकते है और उनकी सरसराहट वालपरेमो—इण्डियाना तक सुनाई दे सकती है।"

नागरिक बोला, ' कुछ लोग चाइसलम की गोलियॉ काम मे लाते है।"

चोर ने कहा, "हुत ! पॉच महीने तक ली है। कोई फायदा नही ! जिस साल मैने फिक्लहम एक्स्ट्रेक्ट, गाइलीड बाम और पोल्टिस और पॉट पेन पल्वेराइजर का प्रयोग किया, उस साल कुछ राहत हुई। पर मेरे ख्याल से तो जेब मे अखरोट रखना कारगर हो गया।

नागरिक ने पूछा, "तुम्हे सुबह ज्यादा तकलीफ होती है या रात मे ?"

चोर बोला, "रात में—जब मैं अधिक व्यस्त होता हूँ। अच्छा अब अपना हाथ नीचा कर लो। मेरे ख्याल से अब तुम—! अच्छा, तुमने कभी बिलफ़रस्टाक का ब्लड—बिल्डर काम में लिया?"

"नहीं, कभी नहीं! तुम्हें दर्द के दौरे आते हैं या हमेशा एक सा दर्द रहता है?"

चोर, बिस्तर के पैताने पर बैठ गया अपने घुटनों पर पिस्तौल रख ली।

उसने कहा, "मेरे तो टीस उठती है। जब मुझे उसकी कोई उम्मीद नहीं होती तभी दर्द होने लगता है। मुझे दूसरी मंजिलों पर चढ़ना इसीलिए छोड़ना पड़ा कि बीच में ही दर्द होने लगता है। क्या बताऊँ, मेरे ख्याल से डाक्टरों के पास भी इसका कोई इलाज नहीं है।"

"यही हालत यहाँ है। मैंने भी करीब एक हज़ार डॉलर खर्च कर दिये हैं, पर कोई फ़ायदा नहीं। तुम्हारा गठिया कभी सूजता है?"

"हाँ, सवेरे! और जब बरसात आने वाली होता है तब। हे भगवान!"

नागरिक ने कहा, "मेरे भी। मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि टेबल की चद्दर के नापके बादल का टुकड़ा कब फ्लोरिड़ा से उठकर न्यूयार्क की तरफ रवाना हो रहा है और अगर मैं किसी थियेटर के पास से गुजरता हूँ, जहाँ मेटिनी खेल चल रहा हो, तो उसके सीलेपन से मेरे बाँये हाथ में वैसा ही दर्द होता है जैसे दाँतों में होता है।"

"बिल्कुल ठीक।"

चोर ने अपनी पिस्तौल की तरफ देखा और खिसियाते हुये आसानी से उसे जेब में डाल लिया।

उसने विवशता से कहा, "यह तो बताओ, कभी तारपीन का मालिश किया है?"

कुछ गुस्से से नागरिक बोला "हट, यह तो होटल के मक्खन का मालिश करने के बराबर है।"

सहमति प्रकट करते हुये चोर ने कहा, "जरूर, यह तो बिल्ली के द्वारा उँगली के खरौंच लगा देने पर छोटे मुन्नों के लगाने लायक मरहम है। मैं तुम्हें बताता हूँ। हमारी एक ही तकलीफ़ है और इसको हल्का करने का एक ही उपाय मैं जानता हूँ। क्यों? वही स्वास्थ्यप्रद, सुधार करने वाली, ग़म दूर करने वाली शराब! कहो, है न ठीक! माफ करना! जल्दी से कपड़े

छहिन कर कुछ पीने के लिए वाहर चलें ! इतनी वेतकल्लुफी के लिए माफ करना. पर – ऊफ ! लो फिर हो गया ।"

नागरिक ने कहा, "एक हफ्ते से मैं बिना किसी की मदद के कपड़े भी नहीं पहन सकता हूँ ! थॉमस तो सो गया होगा, अब —"

चोर ने कहा. "बाहर निकलो. मैं तुम्हें कपड़े पहना दूँगा ।"

ज्वार की तरह उस नागरिक में फिर अपनी आदत लौट आयी । उसने अपनी अधपकी दाढ़ी पर हाथ फेरा और कहने लगा, "अजीब बात है—"

चोर बोला, "यह रहा तुम्हारा कमीज ! पहन लो । म एक आदमी को जानता हूँ जो कहता था कि ऊमवैरी आइन्टमैण्ट से वह दो हफ्तों में इतना अच्छा हो गया कि दोनों हाथों से टाई बाँधने लगा ।"

ज्यों ही वे दरवाजे से बाहर निकले, नागरिक घूम कर वापिस जाने लगा ।

उसने समझाया, "लगता है कि पैसे भूल आया हूँ । कल रात सिंगारदान पर रखे थे ।"

चोर ने उसकी दाहिनी बाँह पकड़ ली ।

उसने बड़े मजे से कहा," मैं कहता हूँ चलो ना ! छोड़ो उसे ! मेरे पास दाम हैं । कभी जैतून और विन्टरग्रीन के तेल का प्रयोग किया है ?"

# जीवन चक्र

'जस्टिस–ऑफ–दि–पीस' वेनाजा वाइडप अपने दफ्तर के दरवाजे में बैठे हुये पाइप पी रहे थे । जेनिथ से आधे–रास्ते पर ही कम्बरलैण्ड की पहाड़ियाँ, दोपहर के कुहासे में नीली और भूरी दिखाई दे रही थी । एक चितकबरी मुर्गी, बस्ती की मुख्य सड़क पर वेकार चूँ चूँ करती अकड़ कर चल रही थी ।

सडक पर चरमराते धुरे की एक आवाज सुनाई दी, फिर धूलका बादल और तब रेन्सी बिलब्रो तथा उसकी पत्नी को लिये हुये एक बैलगाडी आयी। जे पी के दरवाजे पर बैलगाडी रुकी और वे दोनो उतरे। रेन्सी, छ फुट लम्बा, पीले भूरे रग का दुबला पतला आदमी था जिसक बाल सुनहरे थे। पहाडो–सी निश्चलता उगने कवच की तरह धारण कर रखी थी। औरत जहाँ-तहाँ नसवार के दाग पडा बिना छपा हुआ सफेद कपडा पहिने, फँसी हुई सी और अपनी अनजान इच्छाओं के भार से थकी हुई लगती थी। उसमे से, अपने नुकसान से बेखबर, किसी छले गये यौवन की हल्की-सी फरियाद चमक रही थी।

मर्यादा का पालन करने के लिए जे पी साहब ने जूते पहिन लिये और उन्हे अन्दर आने दिया।

देवदार के झुरमुट मे से निकलने वाली हवा के स्वरो मे महिला ने कहा, "हम दोनो तलाक चाहते है।" उसने रेन्सी की तरफ देखा मानो उससे पूछ रही हो कि उसकी बात मे कोई कमी, अस्पष्टता, दुराव, एकागीपन या पक्षपात तो नहीं है।

रेन्सी ने स्वीकारोक्ति मे अपना सिर हिलाते हुये कहा, "तलाक! अब हम दोनो साथ नही रह सकते। जब एक आदमी और एक औरत एक दूसरे का ध्यान रखते हो तो इन पहाडो मे जीवन काफी आकर्षक लगता है। पर जब कोई औरत जगली बिल्ली की तरह गुर्राती हो और उल्लू की तरह धिक-धिक करती हो तो उसके साथ रहना, आदमी के वश का रोग नही।"

बिना किसी नाराजी के औरत ने कहा, "जब वह बेकार का कीडा हो, दारू बनाने वाले निकम्मो के साथ घूमता हो, जौ की शराब पीकर दिन भर पडा रहता हो और भूखे शिकारी कुत्तो को पालकर उनके गिरोह से लोगो को तग करता हो।"

रेन्सी का जबाब आया, "जब वह बार बार देगचियाँ फेकती हो और उबलता पानी कम्बरलैण्ड के सर्वश्रेष्ठ कुत्तो पर डाल देती हो, जब वह आदमी के खाने योग्य भोजन भी नही पका सकती हो और उसे बिना किसी कसूर के अभियोग लगाती हुई रात भर सोने नही देती हो।"

"जब वह पैसे माँगने वालो से हमेशा झगडा करता हो और सारे पहाडी इलाके मे नालायक आदमी होने की बदनामी अर्जित करता हो, तो रात भर कैसे सो सकता है?"

जे. पी. साहब अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए सक्रिय हो गये। उन्होंने अपनी कुर्सी और एक स्टूल प्रार्थियों के लिए रखी। उन्होंने कानून की पुस्तक टेबल पर रखी और उसकी तालिका की छानबीन की। उन्होंने अपने चश्मे को पोंछा और स्याही की दवात को दूर हटाया।

वे बोले, "जहाँ तक इस न्यायालय के अधिकारों का सम्बन्ध है, कानून की धाराएँ, तलाक जैसे विषय पर मौन हैं। परन्तु समानता, वैधानिकता और चिरंतन नियमों के अनुसार जिस काम मे परस्पर समाधान न हो वह अच्छा सौदा नहीं है। अगर एक जस्टिस ऑफ दि पीस, दो प्राणियों को विवाहबन्धन में बाँध सकता है तो वह उन्हें तलाक दिलवाने का भी हक रखता है। यह न्यायालय तलाक का आदेश देगा और सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इसे मंजूर करने के निर्णय का पालन करेगा।

रेन्सी बिलब्रो ने अपने पेंट की जेब में से एक तम्बाकू की थैली निकाली। उसमें से पाँच डॉलर का नोट निकाल कर उसने टेबल पर रख दिया। उसने कहा, "इसके लिए मैंने लोमड़ी के फर और मृगछाला बेची है। यही हमारी सारी पूँजी है।"

न्यायाधीश ने कहा, "इस न्यायालय में तलाक की सामान्य फीस पाँच डॉलर है।" उन्होंने अनासक्ति का ढोंग करते हुए, वह नोट हाथ से बुने हुए कपड़े से अपने कोट की जेब में ठूँस लिया। लम्बे कागज़ के आधे भाग पर अत्यन्त शारीरिक और मानसिक श्रम के बाद उन्होंने आदेश लिखा और बाकी के आधे भाग पर उसकी नकल थी। रेन्सी बिलब्रो और उसकी पत्नी ने उस इकरार नामे की इबारत सुनी, जो उन्हें एक दूसरे से मुक्त करने वाला था।

"हर खास व आम को इत्तिला की जाती है कि रेन्सी बिलब्रो और उसकी पत्नी अरीला बिलब्रो आज की तारीख मेरे सामने हाज़िर हुए और अपने ठीक होशहवास में प्रतिज्ञा की कि आज से वे एक दूसरे को न प्यार करेंगे न इज्जत देंगे; न भले के लिए, न बुरे के लिए, एक दूसरे का कहना नहीं मानेंगे, और राज्य की शान्ति और महत्ता के अनुसार तलाक के आदेश का पालन करेंगे। इसमें चूक नहीं होगी। भगवान उनकी मदद करे। टेनेसी राज्य, के अन्तर्गत पीडमॉण्ड गाँव का, जस्टिस आफ दि पीस, बेनाजा वाइडप।"

न्यायाधीश यह इकरारनामा रेन्सी के हाथ मे देने ही वाले थे कि अरीला की आवाज ने उन्हे इस काम से रोक दिया। दोनो आदमी उसकी ओर देखने लगे। उनकी नीरस मर्दानगी को एक औरत की अचानक और अप्रत्याशित बात का सामना करना पडा।

' जज साहब, इस आदमी को अभी से यह कागज मत देना। अभी तक सब कुछ तय नही हो गया है। अपनी बीवी के पास एक कौडी भी नही छोडकर, उसे तलाक दे देने का यह कौन सा तरीका है ? मै हॉगबेक पहाडी पर अपने भाई एड के घर जाने का विचार करती हूँ। मुझे एक जोडी जूते, नसवार और कुछ दूसरी चीजे भी चाहिये। अगर रेन्सी, तलाक देने की ताकत रखता है तो उसे मेरे भरण पोषण के लिए भी पैसे देने पडेंगे।"

रेन्सी बिलब्रो हक्का बक्का रह गया। भरण पोषण की रकम के बारे मे पहले कभी चर्चा भी नही हुई थी। औरते हमेशा अप्रत्याशित और घबरा देने वाले मसले खडे कर देती है।

न्यायाधीश बेनाजा वाइडप को लगा कि यह प्रश्न कानून द्वारा ध्यान देने योग्य है। अधिकार के नियम भी भरण पोषण की रकम पर चुप हैं। लेकिन औरत के पैर नगे थे और हॉगबैक पहाडी की पगडडी ढलाऊ और पथरीली थी।

उन्होने अधिकारपूर्ण स्वर मे कहा, " अरीला बिलब्रो, तुम भरण-पोषण के लिए इस के सामने रखे गये मामले में कितना रुपया वाजबी और काफी समझती हो ? "

उसने जवाब दिया " मेरे जूतो और दूसरी चीजो के लिए पॉच डालर तो चाहिये ही। भरण-पोषण के लिए यह कोई बडी रकम नहीं है पर इससे मैं अपने भाई एड के घर पहुँच जाऊँगी।"

न्यायाधीश ने कहा " रकम अनुचित तो नहीं है। रेन्सी बिलब्रो, तलाक स्वीकार करने से पहले प्रार्थी को पॉच डॉलर देने के लिए तुम्हे न्यायालय आदेश देता है"।

भारी सॉस लेते हुए रेन्सी बोला, " मेरे पास अब पैसे नहीं है। जो कुछ थे वे मैने दे दिये "।

अपने चश्मे के ऊपर से कठोर दृष्टि डालते हुए न्यायाधीश बोले, " वर्ना, तुम पर न्यायालय की मानहानि का अभियोग लगाया जायेगा। "

पति ने समझाते हुए कहा, "अगर आप मुझे कल तक का समय दे सकें तो मैं किसी तरह माँगकर या छीन कर इतना पैसा ला दूँगा। मुझे यह रकम देने का पता तक नहीं था।"

बेनाजा वाइडप ने कहा, "कल तक के लिए मामला मुल्तवी। कल फिर तुम दोनों आकर न्यायालय का आदेश स्वीकार करोगे। इसके बाद तलाक का फैसला दिया जायगा।"

न्यायाधीश दरवाज़े में आकर फिर बैठ गये और अपने जूतों के बन्ध ढीले करने लगे।

रेन्सी ने तय किया, "हमें जीया चाचा के यहाँ चल कर रात बितानी चाहिये।" गाड़ी के एक ओरसे वह चढ़ा और दूसरी ओर से अरीला। अपनी लगाम के खिंचाव का कहना मान कर वह लाल बैल पगडंडी पर आ गया और गाड़ी के पहियों की चरमराहट के बीच धीरे धीरे सरकने लगा।

जस्टिस–ऑफ–द–पीस, बेनाजा वाइडप अपना चुरुट पीने लगे। दोपहर बीत जाने पर उनका साप्ताहिक पत्र आ गया और वे उसे, संध्या तक जबकि अक्षर धुँधले दिखाई पड़ने लगे, पढ़ते रहे। तब उन्होंने चर्बी की बनी हुई मोमबत्ती जला कर टेबल पर रख दी और चाँद उगने तक पढ़ते रहे जिससे भोजन करने का समय हो जाय। चिनार के वृक्षों की कतार के पास वाली ढलाऊ जमीन में वे एक दो कमरों वाले लकड़ी के मकान में रहते थे। खाना खाने के लिए घर जाते समय वे लॉरेल की झाड़ियों के पास से गुजरे। लॉरेल से एक आदमी की काली मूर्ति निकली और उनके सीने पर बन्दूक तान कर खड़ी हो गयी। उसके माथे का टोप नीचे खिंचा हुआ था और उसका बाकी का चेहरा किसी चीज़ से ढँका था।

उस मूर्ति ने कहा, "चुपचाप अपने पैसे मेरे हवाले करो। मैं घबरा रहा हूँ और. मेरी उँगली बन्दूक के घोड़े पर घूम रही है।"

अपने कोट की जेब से नोट निकालते हुए न्यायाधीश साहब ने कहा, "मेरे पास तो सिर्फ पाँ–आँ–च डॉलर ही हैं।"

हुक्म हुआ, "इसको समेट कर बन्दूक की नली में खोंस दो।"

नोट नया और करारा था। वे उँगलियाँ भी, जो बेडौल थीं और काँप रही थीं, उसे मोड़ने में और बन्दूक की नाली में डालने में अधिक कठिनाई नहीं महसूस कर रहीं थीं।

डाकू ने कहा, "अब सीधे घर चले जाओ।"

न्यायाधीश भी रास्ते मे कही नही रुके।

दूसरे दिन वही लाल बैल न्यायालय के दरवाजे के सामने गाडी खीच लाया। इस बार वाइडप साहब जूते पहिने हुए थे क्योकि वे उनके आने की राह देख रहे थे। उनकी उपस्थिति मे रेन्सी बिलब्रो ने पाँच डालर का नोट अपनी पत्नी के हाथ मे रख दिया। न्यायाधीश की नजरो ने गौर से उसे देखा। वह वैसा ही समेटा हुआ लगता था जैसे किसी ने बन्दूक की नली मे खोसने के लिये मोडा हो। यह माना कि दूसरे नोट भी उसी तरह मोडे जा सकते है। उन्होने दोनो को तलाक के आज्ञापत्र सौप दिये। दोनो कुछ देर तक अपनी स्वतत्रता के परवानो को मोडते हुए अजीब खामोशी मे खडे रहे। महिला ने विवश होकर लजाते हुए रेन्सी की ओर देखा।

वह बोली, "मेरे ख्याल से तुम इस बैलगाडी द्वारा वापिस घर जा रहे हो! तावदान पर डिब्बे मे रोटी रखी है। मैने भुना हुआ माँस, तपेली मे ढँक रखा है, जिससे कुत्ते उसे न पा सके। रात मे घडी को चाबी देना मत भूलना।"

रेन्सी ने लापरवाही दिखाते हुए कहा, "तुम तो अपने भाई एड के यहाँ जा रही हो न?"

"मेरा अन्दाज है कि रात होने से पहले ही मै वहाँ पहुँच जाऊँगी। मै नही समझती कि वहाँ मेरा स्वागत करके वे खुश होगे, पर मेरे लिए जाने की दूसरी जगह ही कहाँ है? रास्ता बडा खराब है और अब मुझे चल देना ही चाहिये। रेन्सी, अगर तुम मुझे विदा देने की परवाह करो तो मै भी तुम्हे 'अलविदा' कह दूँ।"

रेन्सी ने किसी शहीद के स्वरो मे कहा, "मैने तो अभी तक ऐसा एक भी नरपशु नही देखा जो जाने वाले को 'अलविदा' न कहे। लेकिन अगर तुम बिना सुने ही जाने के लिए आतुर हो तो मै नहीं जानता।"

अरीला चुप थी। उसने अपने पाँच डालर का नोट और तलाक का अनुमतिपत्र मोडकर अपने ब्लाउज मे खोस लिया। वाइडप ने चश्मे के पीछे गीली आँखो से, उस धन को जाते हुए देखा।

और तभी अपने अगले शब्दों से ही अपनी विचारधारा के अनुसार उन्होंने सहानुभूति प्रकट करने वाले, ससार के अनेक व्यक्तियो की बडी भीड में या महान उद्योगपतियो की छोटी भीड मे स्थान प्राप्त कर लिया।

अरीला बोली, "रेन्सी, आज रात को पुराने कमरे में तुम्हें अकेलापन तो महसूस होगा।"

रेन्सी विलञ्जो, धूप के कारण साफ नीले कम्बरलैण्ड की ओर देखता रहा। उसने अरीला की ओर नहीं देखा।

उसने कहा, "मैं मानता हूँ वहाँ बड़ा सूना सूना-सा होगा पर जब लोग पागल हो जाँय और तलाक लेना चाहें तो उन्हें कौन रोक सकता है?"

लकड़ी के स्टूल को सुनाती हुई अरीला बोली, "जब कोई किसी को अपने घर में रहने देना ही नहीं चाहे तो तलाक ही माँगना पड़े।"

"किसने रहने से मना किया?"

"तो किसी ने रहने के लिए भी नहीं कहा। मेरे विचार से अब एड के घर जाने के लिए रवाना हो जाना चाहिए।"

"उस पुरानी घड़ी के कोई चाबी नहीं लगायेगा।"

"क्या तुम्हारी मर्जी है कि मैं गाड़ी में साथ चलकर तुम्हारे लिए उसके चाबी लगाऊँ?"

उस पहाड़ी आदमी की नीरवता उसके उद्वेग को छिपा रही थी। पर उसने अपना बड़ा सा हाथ आगे करके अरीला के पतले गोरे हाथ को पकड़ लिया। महिला की पवित्र आत्मा की आभा उसके सूने चेहरे पर चमक उठी।

रेन्सी बोला, "वे शिकारी कुत्ते अब तुम्हें कभी तंग नहीं करेंगे। मैं महसूस करता हूँ कि वह मेरी ज्यादती थी। अरीला, तुम उस घड़ी के चाबी लगा दो।"

वह फुसफुसाई, "रेन्सी, उस कमरे में तुम्हारे साथ मेरे हृदय की धड़कन गूँजती है। अब मैं कभी पागलपन नहीं करूँगी। अब हमें चलना चाहिये, रेन्सी, ताकि सूरज डूबने तक घर पहुँच जायें।"

न्यायाधीश की उपस्थिति से बेखबर, ज्योंही वे दोनों दरवाजे की ओर बढ़े कि बेनाजा वाइडप ने उन्हें बीच ही में रोक दिया।

वे बोले, "टेनेसी राज्य की सत्ता के नाम पर मैं तुम्हें विधान और न्याय का उल्लंघन करने से रोकता हूँ। यह न्यायालय, दो प्रेमी हृदयों से गलतफहमी और क्षोभ के बादल हटते हुए देख कर बहुत खुश और राजी है। लेकिन न्यायालय को राज्य की नैतिकता और महत्ता की रक्षा करने का कर्तव्यपालन करना पड़ता है। यह न्यायालय तुम्हें इस बात की याद दिलाता है कि तुम दोनों अब पति और पत्नी नहीं हो, बल्कि नियमानुसार तलाक ले चुके हो। इसलिये तुम दोनों को विवाहित व्यक्तियों की सुविधाएं और फायदे

नहीं मिल सकते।"

अरीला ने रेन्सी की बाँह पकड़ ली। क्या इन शब्दों का मतलब यह है कि मैं उसे उस समय खो दूँ जब हम जीवन का पहला सबक अभी अभी पढ़ चुके हैं?

न्यायाधीश कहते रहे, "परन्तु न्यायालय तलाक द्वारा निर्धारित बन्धन हटाने के लिए भी तैयार है। विवाह की पवित्र रस्म अदा करने के लिए, समझौता करने के लिए और अपनी इच्छानुसार विवाहित जीवन का आनन्द उपभोग कराने में उनकी सहायता करने के लिए न्यायालय यहीं पर तैयार है। यह रस्म पूरी करने का शुल्क इस दशा में पाँच डॉलर होगा।"

अरीला ने न्यायाधीश के शब्दों से निकलने वाले विश्वास की किरन छू ली। शीघ्रता से उसका हाथ अपनी छाती की ओर गया। उन्मुक्त कबूतर की तरह वह नोट न्यायाधीश की टेबल पर उड़ आया। उसके गोरे गाल लाल हो गये और वह रेन्सी के हाथों में हाथ डाले, उन्हें गठबन्धन में बाँधने वाले शब्दों को सुनती रही।

रेन्सी उसे बैलगाड़ी तक लाया और उसके साथ साथ गाड़ी में बैठा। वह लाल बैल एक बार और घूमा और वे दोनों एक दूसरे का हाथ थामे पहाड़ों की ओर चल पड़े।

जस्टिस-ऑफ-दि-पीस बेनाजा वाइडप फिर दरवाज़े में आ बैठे और उन्होंने अपने जूते खोले। एक बार फिर उन्होंने अपने कोट की जेब में पड़े उस नोट को सहलाया। एक बार फिर उन्होंने अपना चुरुट सुलगाया। एक बार फिर वह चितकबरी मुर्गी बेकार चूँ चूँ करती हुई बस्ती की मुख्य सड़क पर अकड़ कर चल पड़ी।

# एक अखबार की कहानी

सुबह आठ बजे गिसीपी की दुकान पर प्रेस से आये हुये ताज़े अखबार पड़े थे। अपनी बिरादरी की धूर्तता से लाभ उठाता हुआ वह सामने ही मटरगश्ती कर रहा था। उसने ग्राहकों को अपना काम अपने आप करने को छोड़ दिया और दूर खड़े खड़े गल्ले पर नज़र भी रख ली—एक पंथ दो काज!

यह अखबार अपनी नीति और रुचि के कारण लोगों का शिक्षक, मार्गदर्शक, रहबर, हितरक्षक, घरेलू सलाहकार, और रोजनामचा—सभी कुछ था।

उसकी बहुत-सी विशेषताओं में से हम सिर्फ तीन सम्पादकीय लेख उदाहरण के तौर पर पेश करते हैं। इनमें से पहला सरल, शुद्ध और ओजस्वी भाषा में, अभिभावकों और शिक्षकों को सम्बोधित करके लिखा गया था, जिसमें बच्चों को शारीरिक दंड देने की निन्दा की गयी थी।

दूसरे में एक कुख्यात मज़दूर नेता पर अभियोग लगाते हुए, उसे स्पष्ट चेतावनी दी गयी थी। यह नेता अपने अनुयायियों को एक दुखदायी हड़ताल करने के लिए उकसाने की तैयारी में था।

तीसरे में, लच्छेदार भाषा में यह माँग की गयी थी कि पुलिस दल की हर प्रकार से सेवा और सहायता की जाय ताकि वह जनता की सेवा अधिक क्षमता से कर सके।

इसी प्रकार के महत्वपूर्ण उपदेशों और हिदायतों के अलावा शहर के निवासियों की सेवा में 'वैयक्तिक कॉलम' के सम्पादक के कारगर नुसखे और व्यवहारिक सूचनाएँ भी उपलब्ध हो सकती थीं। किसी नवयुवक द्वारा अपनी प्रियतमा के जिद्दीपन की शिकायत करने पर, प्रेयसी को जीतने का तरीका सिखाया गया था।

इसी प्रकार सौंदर्य के स्तम्भ में किसी युवती द्वारा चमकीली आँखें, गुलाबी गाल और सुन्दर चेहरा प्राप्त करने के उपाय पूछे जाने पर उपचार सुझाये गये थे।

एक और आकर्षक विज्ञापन 'वैयक्तिक कॉलम' में छपा हुआ था — "प्यारे जैक! मुझे माफ करना। तुम्हारा कहना ही सही था। आज सुबह साढ़े आठ बजे मैडिसन चौक में मुझे मिलना। हम दोपहर को चल देंगे —तुम्हारी गुनहगार।"

आठ बजे एक युवक, गिसिपी की दुकान के पास से गुजरा। उसकी आँखें थकान और बुखार की हरारत से जल रही थी। जाते जाते उसने गल्ले में एक पैनी डाल कर ऊपर का अखबार उठा लिया। रात भर करवटें बदल कर गुजारने के बाद, सुबह वह बहुत देर से उठा। नौ बजे आफिस पहुँचना था, पर उससे पहिले भागदौड़ करते दाढ़ी बनवाना, और एक कप काफी पीना भी जरूरी था।

जल्दी से दाढ़ी बनवा कर वह आगे बढ़ा। खाने की छुट्टी में आराम से पढ़ने के विचार से उसने अखबार मोड़ कर जेब में ठूँस लिया, परन्तु अगले चौराहे पर अखबार उसकी जेब से गिर गया और साथ में नये दस्ताने भी। काफी दूर जा कर उसे यह मालूम पड़ा और भुनभुनाता हुआ वह वापिस मुड़ा।

ठीक साढ़े आठ बजे वह उस नुक्कड़ पर पहुँचा जहाँ उसका अखबार और दस्ताने फुटपाथ पर पड़े हुए थे। परन्तु आश्चर्य की बात है कि जिन चीजों को ढूँढ़ने वह इतनी दूर वापस आया, उनकी ओर उसने नजर उठा कर भी नहीं देखा। इसके बजाय वह किसी के दो छोटे छोटे नाजुक हाथों को अपने हाथों में कसे और उसकी नशीली, झुकी हुई आँखों में आँखें गड़ाये खड़ा रहा। उसके हृदय में खुशी समा नहीं रही थी।

लड़की बोली, "प्यारे जैक, मैं जानती थी कि तुम ठीक समय पर आ जाओगे।"

वह अपने आप से बोला, "समझ में नहीं आता कि इसका मतलब क्या है! पर ठीक है — क्या बुराई है!"

पश्चिमी हवा के एक झोंके ने अखबार को फुटपाथ से उठाया और उसके पन्नों को बिखेर कर बराबर की गली में उड़ा दिया। उसी गली से अपनी पुरानी बग्घी में बैठा हुआ, वह युवक गुजर रहा था जिसने 'वैयक्तिक

कॉलम ' के सम्पादक से अपने सपनो की रानी को जीतने का नुसखा पूछा था।

एक शरारत भरी सरसराहट से हवा के झोके ने, उस उडते हुए अखबार के पन्ने को बग्घी मे जुते टट्टू की आँखो पर ढँक दिया। टट्टू भडका और बग्घी को लेकर काफी दूर तक इतनी तेजी से भागा कि गाडी आर टट्टू मिलाकर एक धुँधले धब्बे से दिखाई देने लगे। इसके बाद सडक के किनारे के नल ने होनी मे अपना योगदान दिया और बग्घी चकनाचूर हो गयी। उसे चलाने वाले महाशय उछल कर कोलतार की सडक पर जा गिरे। सामने ही लाल पत्थर से बनी एक इमारत थी।

उस मकान मे से कुछ आदमी दौडे हुए आये और उसे जल्दी से उठा कर अन्दर ले गये। अन्दर उसकी मुलाकात उस लडकी से हुई, जो उसे आराम पहुँचाने के लिए उसके सिरहाने का तकिया बनने को भी तैयार थी। उपस्थित लोगो की जिज्ञासु आँखो की परवाह किये विना, वह उसके ऊपर झुक कर बोली, " ओ बॉबी – तो तुम थे ? क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि अगर तुम मर जाते तो मै भी तुम्हारे साथ ही —"

छोडिये भी, हम इस तूफान मे आगे बढे और अखबार के दूसरे पन्नो का सम्पर्क साधे।

पुलिसमैन ओब्राइन ने उस उडते हुए कागज को वाहन व्यवहार मे बाधक मान कर गिरफ्तार कर लिया। शेनडन बैल्स काफे के विशेष दरवाजे के सामने खडे हो कर उसने उन अस्तव्यस्त पन्नो को अपनी लम्बी उँगलियो से मोड कर पढा। एक शीर्षक को उसने विशेष ध्यान से दोहराया—" पुलिस की सहायता करने के लिए अखबारो को आगे बढना चाहिये। "

अरे ! यह तो डैनी कलाल की आवाज है। दरवाजे मे खडा हुआ वह कह रहा है, " माइक, प्यारे दोस्त, आओ – ये दो घूँट तुम्हारे ही लिए है।

अखवार के उन मोटे मोटे सुखद शीर्षको के पीछे मुँह छिपाये हुए, पुलिस मैन ओब्रायन ने उस अमृत के दो घूँट चढा लिये। न्याय का यह हट्टा कट्टा रक्षक नयी ताजगी और तैयारी से अपने काम पर लग गया। क्या इस बात से सम्पादक महाशय को गर्व नही होगा कि उसने कष्ट का इतनी जल्दी इतना बढिया फल पुलिस के सिपाही को मिल गया।

सिपाही ने अखबार को मोड कर सडक पर चलते हुए एक लडके की बगल में खिलवाड से थमा दिया। लडके का नाम जॉनी था। वह उस

अखबार को घर ले गया। उसकी बहिन का नाम ग्लैडीज था। इसी ने अखबार के सौंदर्य स्तम्भ के सम्पादक से चेहरे की सुन्दरता बढ़ाने का रामबाण उपाय पूछा था। इस बात को कई हफ्ते बीत चुके थे इसलिये उसने उत्तर की राह देखना छोड़ दिया था। ग्लैडीज, श्रीहीन आँखोंवाली, निस्तेज लड़की थी, जिसके चेहरे पर हमेशा असन्तोष झलकता था। वह इस समय नया जूड़ा खरीदने के लिए बाजार जाने की तैयारी में कपड़े बदल रही थी। उसने जल्दी में जॉनी के लाये हुए अखबार के पन्नों को घाघरे के भीतर पिन से टाँग लिया। चलते समय इससे जो सरसराहट हुई, वह असली रेशम की सरसराहट से मिलती जुलती थी।

सड़क पर उसे नीचे की मंजिल पर रहने वाली ब्राउन नामक लड़की मिली। वह एक क्षण उससे बातचीत करने को रुकी परन्तु ईर्ष्या से जल भुन गयी। ग्लैडीज के चलते समय जो सरसराहट हो रही थी, वह तो सिर्फ पाँच डॉलर प्रतिगज वाले असली रेशम से ही हो सकती थी। विद्वेष की आग में जलती हुई उस लड़की ने कोई घृणा सूचक बात कही और मुँह सिकोड़ती हुई आगे बढ़ गयी।

ग्लैडीज भी आगे चली। उसकी आँखें इस समय सितारों सी चमक रही थी। उसके गालों पर एक हलकी सी सुर्खी छा गयी और चेहरे पर विजेता की सी धीमी संजीवनी हँसी का उजाला फैल गया। वह सुन्दर थी। यदि अखबार के सम्पादक ने उसे उस वक्त देखा होता! मेरे खयाल से उस संपादक के उत्तर में कुछ ऐसी बात लिखी हुई थी कि अपने सादे चेहरे को आकर्षक बनाने के लिए दूसरों के प्रति दया का भाव उत्पन्न करना चाहिये।

जिस मजदूर नेता के विरुद्ध अखबार के सम्पादकीय ने अत्यन्त प्रभावपूर्ण ढंग से आवाज उठायी थी, वह ग्लैडीज और जॉनी का पिता था। उस अखबार के बचे खुचे पन्ने उसने उठा लिये जिनसे ग्लैडीज ने रेशमी कपड़े की सरसराहट का आविष्कार किया था। उस सम्पादकीय लेख को तो वे नहीं पढ़ सके परन्तु उनके हाथ वह 'शब्द–पहेली' लग गयी जो मूर्ख और बुद्धिमान सभी को उलझन में डाल देती है।

मजदूर नेता ने आधा पन्ना फाड़ लिया और कागज-पेन्सिल लेकर उस पहेली को सुलझाने के लिये टेबल पर जा बैठा।

तीन घण्टे तक उस नेता की नियत स्थान पर बाट जोहने के बाद, दूसरे कई दक्षिणपक्षी नेताओं ने पंचों द्वारा फैसला कराने के निर्णय की घोषणा कर दी और इस प्रकार वह हड़ताल और उसके दुष्परिणाम उस समय तो टल गये। अखबार के अगले संस्करणों ने, रंगीन स्याहियों में, उस मजदूर नेता को परास्त करने विषयक, अपने सम्पादकीय की प्रशंसा की।

इस कर्मठ अखबार के बाकी वाले पन्ने भी उसकी शक्ति को सिद्ध करने के लिए इधर उधर चले गये।

जब जॉनी स्कूल से घर लौटा तो उसने अपने ढँके हुये अंगों को टटोला और अपने कपड़ों के भीतर से अखबार के बाकी वाले टुकड़ों को निकाला। अपनी विद्वता की खींचतान में शरीर के जिन अगों पर सबसे अधिक मार पड़ती है, उन्हीं की रक्षा करने के लिए, अखबार के पन्नों को, अत्यन्त कलात्मक ढंग से जमाया गया था। जॉनी एक गैरसरकारी स्कूल में पढ़ता था और अपने शिक्षक से उसकी अनबन थी। जैसा पहले कहा जा चुका है, अखबार के सबेरे वाले संस्करण में विद्यार्थियों को शारीरिक दण्ड देने के विरुद्ध एक शानदार सम्पादकीय प्रकाशित हुआ था। इसमें कोई शक नहीं कि उसका काफी असर हुआ।

इतना सब कहने के बाद भी क्या आपको अखबारों की अपार शक्ति में विश्वास नहीं होता?

# शहर की आवाज

पच्चीस वर्ष पहिले स्कूलों में बच्चे अपना सबक रटा करते थे। पाठ याद करने का यह तरीका किसी पादरी के उपदेश और लकड़ी चीरने की मशीन की थकी हुई आवाज के बीच की आवाज में शुमार किया जा सकता है। मेरा मतलब किसी का अनादर करने का नहीं है। क्योंकि हमें लकड़ी और भूसे की भी उतनी ही जरूरत है।

शरीर शास्त्र की कक्षा में से सुनाई देने वाला एक सुन्दर और बोधप्रद मिसरा अब तक याद है, " पाँव की हड्डी इस शरीर में सब से लम्बी है ! "

भौतिक शास्त्र और आध्यात्म विद्या सम्बन्धी सारा ज्ञान यदि इसी तरह सुरीले और तर्क संगत ढंग से विद्यार्थियों के दिमाग में उतारा जाय तो कितना अमूल्य वरदान सिद्ध हो ! परन्तु हमारा शरीर शास्त्र, संगीत और दर्शन का ज्ञान अधूरा ही रह गया।

उस दिन मैं बड़े पशोपेश में पड़ गया। मुझे किसी विषय पर प्रकाश डालना था। मदद के लिए मैंने स्कूल के दिनों की याद की, परंतु वहाँ की सख्त बैंचों पर बैठकर गुनगुनाते स्वर में रटी हुई तुकबन्दियों ने मेरी कुछ भी सहायता नहीं की। शहर की सामूहिक आवाज का वर्णन करने वाली एक भी अर्द्धाली मुझे याद नहीं आयी।

मेरा मतलब है—विशाल जनसमुदाय का जबानी सन्देश ! या दूसरे शब्दों में कहें तो—बड़े शहर की आवाज !

शहरों में व्यक्तिगत आवाजों की तो कमी नहीं। कवियों की कविता, झरनों की कलकल, अगले सोमवार तक पाँच डॉलर उधार माँगने वाले की विनती, अतीत के सम्राटों की कब्रों पर खुदी इबारतें, फूलों की मूक भाषा, बस के कण्डक्टर द्वारा दी गयी सावधानी की सूचना या सुबह चार बजे से ही सुनाई देने वाली दूध के डिब्बों की खटखटाहट—यह सब तो समझ में आ सकता है। बहुत से लम्बकर्ण यह भी दावा करते है कि मिस्टर जेम्स की नासिका से छूटी हवा के कारण उनके कान के पर्दे पर हुई हलचल भी उन्हें साफ सुनाई पड़ती है। परंतु शहर की आवाज का अर्थ समझने की शक्ति किसमें है ?

एक बार मैंने इसे सुननेकी कोशिश की।

सब से पहले मैंने ओरेलिया से पूछा। वह सफेद कपड़े पहने हुए थी। उसके टोप में कुछ फूल खोंसे हुए थे और जहाँ—तहाँ फीते और झालरें लहरा रही थीं।

हकलाते हुये मैंने पूछा. " इतना तो बताओ कि यह महान, विशाल और बिखरा हुआ शहर क्या कहना चाहता है ? इसकी कुछ न कुछ आवाज तो जरूर होगी ? क्या यह तुमसे कभी बोलता है ? तुम उसका क्या अर्थ लगाती हो ? माना कि आदमियों का विशाल समूह यहाँ रहता है, परन्तु इसका कुछ न कुछ हल तो होना ही चाहिये। "

ओरेलिया ने पूछा, "भानमती के पिटारे की तरह?"

मैंने कहा, "नहीं, नहीं, यह पिटारे-विटारे की बात नहीं। मेरा अन्दाज़ है कि हर शहर की कुछ न कुछ आवाज़ जरूर होती है। जिसके कानों में सुनने की शक्ति है, उसे वह कुछ न कुछ सुनाता ही है। यह बड़ा शहर तुमसे क्या कहता है?"

ओरेलिया समझदारी से बोली, "हर शहर की एक ही कहानी है। हर शहर की आवाज़ में फिलाडेल्फिया की आवाज़ प्रतिध्वनित होती है और इसलिये वे सब एकमत हैं।"

मैंने विद्वत्ता छाँटते हुये कहा, "इस शहर में चालीस लाख की आबादी है जिसका हर आदमी इस छोटे से टापू पर घिरा हुआ है—सटोरिये रूपी भेड़ियों से घिरे हुये निरे मेमने। इतनी छोटी-सी जगह में इतने व्यक्तियों के समावेश के कारण विविधता में भी साम्य के दर्शन होने चाहिये—एक प्रकार की समानता जो किसी साधारण माध्यम से अपनी आवाज़ सुना सके। विविधता में छुपा यह सामञ्जस्य किसी एक विचार में घनीभूत होकर जरूर दिखाई देना चाहिये जिसे हम शहर की आवाज़ कह सकें।"

ओरेलिया मोहक ढंग से मुस्करायी। वह एक ऊँचे चबूतरे पर बैठी थी और दीवार पर उगी हुई बेल की एक शोख टहनी उसके कान से खिलवाड़ कर रही थी। उसके चेहरे पर चाँदनी की किरणें झिलमिला रही थी। परंतु मैं वज्र के समान निश्चल खड़ा हुआ था। अन्त में मैंने कहा, "इस शहर की आवाज़ क्या है, मुझे ढूँढना ही चाहिये। और शहरों की भी आवाज़ें होती हैं। मेरे शहर की आवाज़ जानना मेरा फर्ज़ है। मैं इस चुनौती को स्वीकार करता हूँ। न्यूयॉर्क को मैं यह कहने का मौका नही दूँगा कि 'दोस्त, मेरे पास कहने सुनने लायक कोई बात ही नहीं'। "और किसी शहर की यह हालत नहीं है। शिकागो बिना किसी संकोच के कहता है—मैं अवश्य कहूँगा। फिलाडेल्फिया कहता है—मुझे कहना चाहिये। न्यू ओर्लियन की आवाज़ है—मैं ऐसा कहा करता था। और लुईविले का नारा है—कह दूँगा; मुझे कोई परवाह नहीं। सेंट लुई की सकुचाती आवाज है—माफ करना; जब कि पिट्सबर्ग की लताड़ है—भाड़ में जाओ। तो फिर न्यूयॉर्क ने ही क्या बिगाड़ा है?"

ओरेलिया मुस्करा दी।

मैंने कहा, "अच्छा, तो मैं और कहीं जा कर ढूँढ़ता हूँ।"

मैं एक महल में पहुँचा -- संगमरमर का फर्श, शीशम की छतें, और कानून की नज़र में पाक। पीतल की रेलिंग पर पाँव जमाते हुये उस इलाके के सब से बढ़िया कलाल बिल मॅगनस से मैंने पूछा, "बिल, तुम न्यूयॉर्क में कई वर्षों से रहते हो! यह तुम्हें नाच और गाने की कौन सी आवाज़ सुनाता है? क्या यह कोलाहल कभी एकत्रित होकर तुम्हारे मयखाने में टकराता है या तुम्हारी इस किलेबन्दी पर शहर की आवाज़ एक चुटकला बन कर कभी हमला करती है! तुम्हारी शराब में ... "

बिल घबराकर बोल उठा, "एक मिनट के लिए माफ करना, कोई दरवाजे की घण्टी बजा रहा है।"

वह चला गया, फिर कुछ देर बाद ही एक खाली बाल्टी लिये हुए आया और बाल्टी को बीयर से भर ले गया। थोड़ी ही देर में फिर वापिस आया और बोला, "मेम थी, दो बार घण्टी वही बजाती है। शाम के खाने के बाद बीयर पीने की उसे आदत है। बच्चे को भी! अगर आप उस गुण्डे को ऊँची कुर्सी पर बैठ कर बीयर पीते हुए देखें—पर माफ करना, तुम क्या माँग रहे थे? दो बार घण्टी की आवाज़ सुनकर मैं कुछ परेशान हो जाता हूँ। हाँ तो तुमने क्या माँगा? एक गिलास जिन? या तुम बेसबॉल का स्कोर जानना चाहते थे।"

मैंने कहा, "एक गिलास जिंजरएल।" और पी कर चुपचाप चलता बना।

इसके बाद मैं ब्रॉडवे गया। नुक्कड़ पर ही एक पुलिस के सिपाही से मुठभेड़ हो गयी। उनकी आदत होती है कि वे बच्चों को गोद में उठा लेते हैं, औरतों को सड़क पार करने में मदद करते हैं और पुरुषों को दबाते हैं। मैंने उससे पूछा, "अगर आपके काम में खलल न पड़ती हो तो एक बात पूछना चाहता हूँ। आप न्यूयॉर्क शहर को घण्टों तक चलते फिरते देखते हैं। शहर की आवाज़ पर नियंत्रण रखना आपका और आपके भाइयों का ही काम है। इस हालत में शहर की आवाज़ आपकी समझ में जरूर आयी होगी। रात की नीरवता में पहरा देते हुए आपने उसे जरूर सुना होगा। इस कोलाहल और चिल्लपों की आत्मा क्या है? शहर आपसे क्या कहता है?"

अपना डंडा घुमाते हुये सिपाही बोला, "दोस्त, शहर तो मुझसे कुछ भी नहीं कहता। मुझे तो मेरा अफसर आज्ञा देता है। तुम्हारे होशहवास

तो कायम हैं न! कुछ मिनट यहीं ठहरो और जरा गश्त वाले का ध्यान रखना।"

सिपाही बराबर की गली के अन्धकार में विलीन हो गया। दस मिनट बाद ही वह वापिस लौट आया।

वह बोला, "मेरी शादी पिछले मंगलवार को ही हुई है। तुमने तो दुनियाँ देखी है; हर रोज़ रात को नौ बजे वह मुझसे मिलने अगले चौराहे पर आ जाती है और मैं भी किसी न किसी तरह वहाँ पहुँच ही जाता हूँ। कुछ देर पहले तुम क्या पूछ रहे थे? शहर में क्या हो रहा है! विशेष तो कुछ नहीं, थोड़ी दूर चल कर दो एक छतों पर बगीचे बने हैं।"

ट्राम की पटरियों का जाल पार कर के मैं एक घने बगीचे के इर्द गिर्द घूमने लगा। मुलम्मा चढ़ी हुई, चाँद की एक बनावटी प्रतिमा अपने आधार पर, दर्प से खड़ी हवा के झोंकों से लड़खड़ा रही थी। आकाश का चाँद उसे अपनी चाँदनी से नहला रहा था। इतने में मेरा एक कवि मित्र दिखाई दिया जो अस्तव्यस्त बालों पर टोपी दबाये कवित्त, सवैया गुन-गुनाता तेजी से जा रहा था। मैंने उसे पकड़ लिया।

मैं बोला, "विल, मेरी मदद करो (उसका उपनाम तो क्लिओन था) मेरे ऊपर शहर की आवाज़ ढूँढ़ने की जिम्मेदारी आ पड़ी है। वैसे तो ऐसी बातों का निर्णय करने के लिए हेनरी क्लूज़, जोन सलीवान, एडविन मार्कहम, मे इरविन और चार्ल्स श्वाब की मिली जुली राय ही काफी है। लेकिन यह मामला ज्यादा संगीन है। हमें तो शहर की आत्मा के अर्थ की व्यञ्जना करने वाली विशाल काव्यमय और रहस्यपूर्ण आवाज़ की जरूरत है। इस काम में तुम ही मेरी सहायता कर सकते हो। कुछ वर्ष पहिले एक आदमी ने नियाग्रा के प्रपात का स्वर निश्चित किया। पियानो के खरज सप्तक के सा से भी दो फुट नीचे उसकी आवाज़ कायम हुई। न्यूयॉर्क जैसे शहर की आवाज़ के लिए हमें इससे तो कुछ बहतर स्थान चुनना पड़ेगा। तुम यह बताओ कि यह शहर यदि बोल सके तो क्या कहेगा? इसकी आवाज़ गम्भीर और दूरगामी तो अवश्य होगी। इसमें दिन भर के वाहन व्यवहार का कोलाहल, रात का संगीत और अट्टहास, डाक्टरों की राय का गम्भीर स्वर, पायल की झंकार, दुखियों का क्रंदन, गाड़ी के पहियों की चरमराहट, अखबारवालों की चिल्ल पों, होटलों के फव्वारों की कलकल, सब्जी बेचने वालों की तू तू मैं मैं, पत्रिकाओं के मुखपृष्ठों की अर्धनग्न तस्वीरों की पुकार, पार्क में

बैठे हुए प्रेमियों की कानाफूसी—इन सब का शहर की आवाज़ में सादा मिश्रण ही नहीं बल्कि घुटा हुआ काढ़ा होना चाहिये और उस काढ़े का सत निकाल कर उसका अर्क बनाना चाहिये ; ऐसा अर्क जो कानों से सुनाई दे। उसी अर्क की एक बूँद की मुझे आवश्यकता है।"

हँसते हुये कविराज बोले, "पिछले हफ्ते स्टीवर की चित्रशाला में जो केलिफोर्निया की लड़की मिली थी, वह तुम्हें याद है? मैं इस समय उसी से मिलने जा रहा हूँ। उसने पिछली बार मेरी 'वसन्त के प्रति' नामक कविता अक्षरशः दुहरायी थी। आजकल वह शहर की सब से सुन्दर लड़की है। भई, यह तो बताना कि यह टाई कैसी जँचती है? चार टाइयाँ खराब करके मैं इसे ठीक से बाँध पाया हूँ।"

मैं बीच में ही कह उठा, "पर मैं तो तुमसे शहर की आवाज़ के बारे में पूछ रहा था।"

कवि बोला, "नहीं, वह गाना तो नहीं गाती। पर मेरी 'पूर्वी पवन की परी' कविता उसके मुँह से सुनो तो मज़ा आ जाय।"

मैं आगे बढ़ा। मैंने एक अखबार बेचने वाले लड़के को पकड़ा। इस मसीहा के हाथ में गुलाबी कागजों का एक बण्डल था जिनमें होने वाली घटनाओं का समाचार दो घण्टे पहले ही प्रकट हो जाता था।

जेब में रेज़गारी खनखनाते हुये मैंने उससे पूछा, "बेटा, क्या तुम्हें ऐसा महसूस नहीं होता कि यह शहर कभी कभी बोलता भी होगा। यह भागदौड़, यह व्यवहार, यह रोज होने वाली विचित्र घटनाएं—ये सब यदि मुखरित हो उठें तो क्या कहेंगे?"

"लड़का बोला, मुझे बनाइये मत। मेरे पास फालतू समय नहीं है। सीधी बात बताइये कि कौनसा अखबार दूँ। आज मैगी का जन्मदिन है, और उसके लिए उपहार खरीदने के लिए मुझे तीस सैंट की सख्त जरूरत है।"

यह तो शहर के सन्देश का मुखपत्र दिखाई नहीं पड़ा। इसलिये मैंने उससे एक अखबार खरीद लिया और उसे उसकी अघोषित सन्धियाँ, पूर्वयोजित हत्याएं और बिना लड़ी लड़ाइयों के साथ कूड़े की टोकरी में फेंक दिया।

मैं वापिस पार्क में पहुँचा और चाँदनी में जा बैठा। मैंने बहुत विचार किया कि मेरे प्रश्न का उत्तर कोई क्यों नहीं देता!

एकाएक अवतारे के प्रकाश की तरह मुझे इसका उत्तर मिल गया। मैं उठा और वापिस भागा। हर तार्किक की यही दशा होती है। उसे अपने ही

बनाये वृत्त में वापिस घूमना पड़ता है। मुझे मेरी शका का समाधान मिल गया था। मैं उसे सीने में दबाये भाग खड़ा हुआ, मानो कोई मुझे रोक कर मेरा राज़ मुझसे छीन लेगा।

ओरेलिया अभी तक उसी चबूतरे पर बैठी थी। चाँद कुछ ऊपर चढ़ चुका था और बेल की छाया उसके चेहरे पर आँखमिचौनी खेल रही थी। मैं उसके पास जा बैठा। हम दोनों ने देखा कि बादल के एक छोटे से टुकड़े ने कुछ क्षणों के लिए तो चाँद पर घूँघट डाल दिया पर जल्द ही अप्रतिभ और निस्तेज हो कर वह दूर भाग गया।

और फिर, महान आश्चर्य और बेहद खुशी! हमारे हाथ मिले और उँगलियों ने एक दूसरे को जकड़ लिया। यह बन्धन खुला ही नहीं।

कोई आध घण्टे बाद अपनी मादक हँसी चेहरे पर ला कर ओरेलिया बोली, "अजीब बात है, पर जब से तुम आये हो तब से एक शब्द भी बोले नहीं।

समझदारी से सिर हिलाते हुए मैंने कहा, "बस, यही इस शहर की आवाज़ है।"

# एक हजार डालर

वकील साहब ने सख्ती और गंभीरता से दोहराया, "यह लो, एक हजार डॉलर।"

गिलियन पचास पचास डॉलरों की, उस पतली-सी गड्डी को, उँगलियों से सहलाते हुये, मज़े से हँस पड़ा।

उसने वकील को समझाया, "यह तो बहुत ही बेढंगी-सी रकम है। अगर दस हजार डालर हों, तो उन्हें फूँक कर काफी तमाशा देखा जा सकता है। अगर पचास डालर हों, तब भी इससे कम तकलीफ हो।"

वकील टोलमैन अपने व्यवसायिक शुष्क स्वर में बोला, "मैंने अभी तुम्हारे चाचा की वसीयत पढ़ कर सुनायी। परंतु ऐसा लगता है कि तुम्हारा उस ओर ध्यान ही नहीं था। खैर, उसमें की एक शर्त मैं तुम्हें फिर से सुना देता हूँ। यह एक हजार डालर की रकम, खर्च होते ही तुम्हें इसका हिसाब पेश करना होगा। वसीयत की यह स्पष्ट शर्त है और मुझे विश्वास है कि तुम अपने स्वर्गीय चाचा की इस इच्छा को जरूर पूरी करोगे।"

नौजवान नम्रता से बोला, "हाँ हाँ जरूर। आप विश्वास रखिये। यद्यपि इसमें मेरा खर्च ज्यादा हो जायगा। हिसाब लिखने के लिए मुनीम रखना पड़ेगा, क्योंकि मुझे तो हिसाब किताब रखना आता नहीं।"

गिलियन वहाँ से सीधा अपने क्लब पहुँचा। वहाँ उसने ब्रायसन नामक व्यक्ति को ढूँढ़ निकाला। यह ब्रायसन कोई चालीसेक वर्ष का शान्त और सम्पत्ति से अलगाया हुया आदमी था। वह एक कोने में बैठा किताब पढ़ रहा था। पर जैसे ही उसने गिलियन को अपनी ओर आते देखा, एक ठंडी साँस छोड़ कर उसने किताब रख दी और चश्मा उतार दिया।

गिलियन बोला, "कहो दोस्त, नींद में हो कि जाग रहे हो? आओ, तुम्हें एक दिलचस्प बात सुनाऊँ।"

ब्रायसन ने जबाब दिया, "कृपा करके बिलियर्ड रूम में जाओ और वहाँ किसी को सुनाओ। मुझे तो तुम्हारी बकवास से सख्त नफरत है।"

सिगरेट सुलगाते हुये गिलियन बोला, "भई सुनो तो, आज की बात हमेशा से कहीं अच्छी है, और मुझे तो तुम्हें ही सुनाने में आनन्द आता है। बात इतनी विचित्र और गम्भीर है कि बिलियर्ड की गेंदों से उसका मेल नहीं खायगा। मैं अभी अभी चचा साहब के वकील के दफ्तर से आ रहा हूँ। वे मुझे पूरे एक हजार डालर दे गये हैं। अब यह बताओ कि इस रकम से आदमी क्या कर सकता है?

सिरके की चटनी से मधुमक्खी को जितनी दिलचस्पी होती है, उतने ही लगाव के साथ ब्रायसन ने पूछा, "मेरा तो अन्दाज़ था, कि स्वर्गीय सैप्टिमस गिलियन के पास कम से कम पाँच लाख डालर थे।"

खुश होकर गिलियन ने कबूल किया, "बिलकुल सही है। और यही तो सारा मज़ाक है। वह अपने धन की थैलियाँ किसी रोग के कीटाणुओं के नाम कर गये हैं। मतलब यह कि उनकी जायदाद का कुछ हिस्सा तो उसे मिलेगा, जो किसी नये रोग के कीटाणुओं का आविष्कार करेगा और बाकी

का हिस्सा उन्हीं कीटाणुओं का नाश करने के लिए, एक अस्पताल की स्थापना में खर्च किया जायगा। इसके अलावा दो तीन छोटी छोटी वसीयतें और हैं। उनके रसोइये और नौकरानी को एक एक अँगूठी और दस दस डालर मिले हैं। और उनके भतीजे को एक हज़ार डालर!"

ब्रायसन ने टोका, "लेकिन अब तक तो खर्च करने के लिए वे तुम्हें बहुत सा रुपया देते थे।"

गिलियन बोला, "बेशक, जहाँ तक मेरे जेब खर्च का सवाल है, चचा साहब मेरे लिए कुबेर से कम नहीं थे।

ब्रायसन ने पूछा, "उनका और कोई वारिस भी है"

सुलगती हुई सिगरेट की तरफ त्यौरी चढ़ा कर और सामने के कोच को पाँवों से ठोकर मारते हुए, गिलियन बेचनी से बोला, "कोई नहीं। मिस हाइडन नामक एक लड़की जरूर है, जो उन्हीं के मकान में रहती है, और जिसे उन्हीं ने पाला पोसा है। दुर्भाग्य से उनके पिता, चचासाहब के मित्र थे। लड़की बिल्कुल शान्त और संगीतप्रेमी है। मैं कहना भूल गया, कि यह अँगूठी और दस डॉलर वाला मज़ाक उसके साथ भी किया गया है। इससे तो कहीं अच्छा होता, कि मुझे भी वही मिलता। मजे से दो बोतल शराब की पीते और वह अंगूठी वेटर को टिप दे देते। दस मिनट में किस्सा खत्म हो जाता और छुट्टी होती। अब देखो ब्रायसन, अधिक समझदार होने का ढोंग करके मेरा अपमान मत करो। यह बताओ कि इन हजार डालरों से मैं क्या कर सकता हूं।"

चश्मे के काँच पोंछता हुआ ब्रायसन मुस्कराया। गिलियन समझ गया कि अब यह आदमी और भी अधिक करारी चोट पहुँचायगा।

वह बोला, "एक हजार डॉलर, कुछ भी नहीं है और बहुत कुछ। मनुष्य चाहे तो इनसे मकान खरीद सकता है और रॉकफेलर जसे करोड़पति को भी तुच्छ समझ सकता है। अपनी बीमार पत्नि को पहाड़ पर भेज कर उसकी जान बचायी जा सकती है। एक हजार डॉलर से एक सौ मासूम बच्चों के लिए जून, जुलाई और अगस्त—तीन महीने तक बढ़िया दूध खरीदा जा सकता है और उनमें से कम से कम पचास की जान बचायी जा सकती है। किसी जुआखाने में पत्ते खेलकर आध घण्टे तक मनोरंजन किया जा सकता है। किसी महत्वाकांक्षी विद्यार्थी की शिक्षा पूरी की जा सकती है। कल ही मैंने सुना कि नीलाम में 'कोरोट' का एक असली तैलचित्र

इन्हीं दामों पर बिका था। न्यूहैम्पशायर के किसी छोटे से शहर में जा कर इतनी रकम के सहारे दो साल तक इज्जत की जिन्दगी गुजारी जा सकती है या एक शाम के लिए मैडिसन स्क्वैयर का बगीचा किराये पर ले कर श्रोताओं को (यदि तुम्हें कोई सुननेवाला हो तो) यह बताया जा सकता है कि किसी लखपति के वारिस होने का पेशा, कितना खतरनाक होता है!"

गिलियन अविचल भाव से बोला, "एक बात है ब्रायसन! अगर तुम उपदेश देना छोड़ दो तो लोग शायद तुम्हें पसन्द करने लगें। मैं तो पूछ रहा था कि एक हजार डॉलर से मैं क्या कर सकता हूँ?

हँसते हुये ब्रायसन बोला, "तुम? प्यारे दोस्त, तुम्हारे लिए तो एक ही रास्ता खुला है। इस रकम से मिस लोता लॉरियर के लिए हीरे का लॉकट खरीद सकते हो और फिर अपनी नापाक सूरत लिये इडाहो के किसी निर्जन गोचर में गर्क हो सकते हो। मेरी राय में तुम्हारे लिए भेड़ों की चरागाह बहुत अच्छी रहेगी, क्योंकि मुझे भेड़ों से विशेष नफरत है।"

उठते हुए गिलियन बोला, "धन्यवाद, ब्रायसन, मैं जानता था कि इस मामले में तुम पर विश्वास किया जा सकता है। तुमने मेरी मनचाही बात कह दी। मैं इस रकम को एक मुश्त खर्च कर देना चाहता हूँ, क्योंकि मुझे इसका हिसाब पेश करना है और लम्बा चौड़ा हिसाब लिखने से मुझे सख्त नफरत है।"

गिलियन ने टेलीफोन करके एक बग्घी मँगवायी और कोचवान से बोला, "कोलम्बिया थियेटर के पिछवाड़े की ओर चलो।"

मिस लोता लोरियर मैटिनी शो की तैयारी करती हुई, एक पाउडर पफ की सहायता से, कुदरत के अधूरे काम को पूरा कर रही थी। दरबान ने आकर गिलियन के आने की सूचना दी।

मिस लोरियन बोली, "आने दो।" और, गिलियन के भीतर आने पर कहा, "बोलो बॉबी, क्या है? मेरे पास सिर्फ दो मिनट का समय है।"

गिलियन ने उसे सरसरी नजर से देखते हुये कहा, "दाहिने कान के नीचे कुछ पाउडर और लगाओ...हाँ अब ठीक है। मेरे लिए तो दो मिनिट भी ज्यादा हैं। मैं तो सिर्फ यह पूछने आया हूँ कि एक छोटे से लॉकेट के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है? इसके लिए मैं एक के आगे तीन बिन्दियों तक रकम खर्च कर सकता हूँ।

मिस लोरियर प्यार से बोली, "वाह, नेकी और पूछ पूछ। "आदम्स, मेरे दस्ताने दो।" "हाँ बॉबी उस दिन शाम को डैला स्टॅसी के गले का नेकलैस तुमने देखा था? टिफैनी के स्टोर से उसे बाईस सौ डॉलर में खरीदा गया था। लेकिन खैर,–" आदम्स, मेरी ओढ़नी को जरा बाँयी ओर खींचो।"

इतने में एक लड़के ने आकर कहा, "मिस लॉरियर, पहला सीन शुरू हो रहा है।"

गिलियन उठ खड़ा हुआ और बाहर प्रतीक्षा करती हुई बग्घी में जा बैठा। उसने कोचवान से पूछा, "अगर तुम्हें एक हज़ार डॉलर मिल जाय तो तुम क्या करोगे?"

ललचाये हुए स्वर में कोचवान ने जवाब दिया, "मैं तो तुरन्त एक शराबखाना खोल दूँ। मेरी नज़र में एक जगह है जहाँ रुपयों की वर्षा हो सकती है। चौराहे के नुक्कड़ पर एक तिमंज़िला पक्का मकान है। और मेरी योजना भी तैयार है। पहिली मंज़िल पर कटलेट और कवाब, दूसरी पर सिंगार-फरोश और विदेशी माल और ऊपरवाली मंज़िल पर जुआखाना! अगर आपका इरादा हो तो–"

गिलियन बोला, "नहीं नहीं, मैं तो सहज पूछ रहा था। और देखो अब से तुम्हारी बग्घी घण्टे के हिसाब से किराये पर रही। जब तक म रुकने को न कहूँ, हाँके जाओ।"

ब्रॉडवे से कोई आठ ब्लॉक आगे आने पर गिलियन ने अपनी छड़ी के इशारे से गाड़ी रुकवायी और बाहर आया। एक अन्धा आदमी फुटपाथ पर बैठा पेन्सिलें बेच रहा था। गिलियन उसके सामने जा खड़ा हुआ।

उसने कहा, "माफ करना, पर क्या तुम मुझे बता सकते हो कि यदि तुम्हारे पास एक हजार डॉलर हों तो तुम उनका क्या करो?"

अन्धे ने पूछा, "क्या तुम उसी बग्घी से उतरे हो जो अभी यहाँ आयी थी?"

गिलियन बोला, "हाँ।"

पेन्सिलों के व्यापारी ने कहा, "तुम दिनदहाड़े भी बग्घी में बैठ कर घूमते हो इसलिये काफी रईस लगते हो। अब जरा इसे भी देख लो।"

उसने अपनी जेब से एक छोटी-सी नोटबुक निकाल कर दिखलाई। गिलियन ने उसे खोल कर पढ़ा तो मालूम हुआ कि वह बैंक की एक पासबुक थी, जिसके अनुसार अन्धे के खाते में १,७८५ डॉलर जमा थे।

गिलियन ने पासबुक लौटा दी और बग्घी में जा बैठा।

उसने कोचवान से कहा, "मैं कुछ भूल गया था। ब्रॉडवे पर टोलमैन अएड शार्प नामक वक़ील के दफ्तर चलो।"

वकील टोलमैन ने अपने सोने की कमानी वाले चश्मे में से उसकी ओर नाराज होकर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

"गिलियन उत्साहपूर्वक बोला," माफ करना वकील साहब, पर म आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ। आशा करता हूँ कि आप उसे असंगत नहीं समझेंगे। क्या, मेरे चाचा की वसीयत के अनुसार मिस हेडन को एक अँगूठी और दस डालर के सिवाय और भी कुछ मिला है?"

श्री टोलमैन ने उत्तर दिया, "नहीं, कुछ भी नहीं।"

"बहुत बहुत शुक्रिया जनाब," कह कर गिलियन बग्घी में वापिस आया और कोचवान को अपने चचा के घर का पता बताया।

मिस हेडन, लायब्रेरी में बैठी कुछ चिठ्ठियाँ लिख रही थीं। वह एक नाटी और दुबली पतली लड़की थी और उसने काले कपड़े पहन रखे थे। उसकी आँखें आकर्षक थीं। गिलियन उस कमरे में, हवा के झोंके की तरह इस तरह बढ़ा, मानो उसे दुनिया की कोई परवाह नहीं।

अपने आने का कारण समझाते हुए वह बोला, " म अभी अभी टोलमैन वकील के यहाँ से आ रहा हूँ। चाचा साहब के कागज़ात में उन्हें एक–एक—। " उपयुक्त कानूनी शब्द ढूँढ़ते हुये वह कुछ हकलाया।" उनकी वसीयत में कुछ रद्दोबदल करने वाले कागज़ मिले हैं। ऐसा मालूम देता है कि मरने से पहले बुढ़ऊ को कुछ दया आ गयी और वे तुम्हें एक हज़ार डॉलर दे गये हैं। मैं इसी तरफ आ रहा था इसलिये टोलमैन ने यह रकम तुम्हें देने के लिए भेज दी है। इन्हें गिन लो, पूरे हैं या नहीं।"

गिलियन ने, उसके हाथ के पास, टेबल पर रकम रख दी।

मिस हेड़न का चेहरा फक हो गया और दो तीन बार 'ओफ' के सिवाय उसके मुँह से और कुछ नहीं निकल सका।

गिलियन घूम कर खिड़की से बाहर देखने लगा। धीमे स्वर में वह बोला,

"मेरा अन्दाज है कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, यह बात तो तुम जानती होगी।"

रुपये उठाते हुये मिस हेडन ने कहा, "माफ कीजिये महाशय।"

गिलियन ने मज़ाक के स्वर में पूछा, " क्या इसकी कोई संभावना नहीं ? "

वह बोली, " मैंने आपसे कहा न, मुझे माफ करिये । "

मुस्कराते हुए गिलियन ने पूछा, " क्या मैं एक चिट्ठी लिख सकता हूँ ? " वह उस बड़ी टेबल के पास जा बैठा। मिस हेडन ने उसे कागज़ और कलम दी और अपनी मेज़ पर जा बैठी।

गिलियन ने अपने खर्च का हिसाब निम्नलिखित शब्दों में लिखाः—

" अभागे, कपूत, राबर्ट गिलियन द्वारा एक हज़ार डॉलर उस लड़की को दिये गये, जो संसार में सब से सुन्दर और प्यारी है : जिससे उसे अक्षय सुख और स्वर्गीय आनन्द प्राप्त हुआ है। "

इस चिट्ठी को लिफाफे में रख कर गिलियन ने नमस्कार किया और बाहर चला गया।

बग्घी फिर एक बार टोलमैन एण्ड शार्प के दफ्तर के सामने जा कर रुकी।

सुनहरे चश्मे वाले टोलमैन को गिलियन ने यह सुख-समाचार सुनाया— "मैंने वे हज़ार डॉलर खर्च कर दिये हैं और वादे के अनुसार उनका हिसाब पेश करने आया हूँ। मौसम में बसन्त की बहार छा रही है। सच है न मिस्टर टोलमैन ! " वकील साहब की टेबल पर एक सफेद लिफाफा फेंकते हुए वह आगे बोला, " इस लिफाफे में हिसाब का कागज़ है जिसमें उन एक हज़ार डॉलरों के लोप होने का ब्यौरा दिया गया है। "

लिफाफे को हाथ लगाये बिना मिस्टर टोलमैन ने दरवाज़े के पास जा कर अपने साझी मिस्टर शार्प को बुलाया। दोनों ने एक भारी भरकम तिजोरी खोली, जिसकी गहराई में से काफी देर ढूँढ़ने के बाद, उन्होंने एक मुहरबन्द लम्बा लिफाफा निकाला। उसे खोल कर अन्दर का कागज़ पढ़ते ही दोनों आदरणीय व्यक्तियों के सिर हिलने लगे। टोलमैन ने औपचारिक स्वर में कहना शुरू किया।

" मिस्टर गिलियन, आपके चचा ने अपनी वसीयत में, अन्तिम समय, कुछ संशोधन किया था। हमारे ऊपर यह जिम्मेदारी उन्होंने गुप्त रूप से डाली थी और यह हिदायत की थी कि तुम्हें दिये गये एक हज़ार डॉलर का ब्यौरेवार हिसाब तुम पेश न कर दो तब तक यह मुहरबन्द लिफाफा न खोला जाय। तुमने उनकी यह शर्त पूरी कर दी है, इसलिये मैंने और मेरे साझी ने अभी अभी उनकी वसीयत का परिशिष्ट पढ़ा। मैं तुम्हारे दिमाग़

पर कानूनी शब्दों का बोझ डालना नहीं चाहता। परन्तु इसका सार तुम्हें सुना देता हूँ।

तुम्हारे एक हज़ार डॉलर खर्च करने के ढ़ंग से, यदि यह प्रमाणित हो, कि तुममें कुछ ऐसे गुण भी हैं, जिनकी कद्र होनी चाहिये, तो तुम्हें बहुत फायदा हो सकता है। इस बात का फैसला मिस्टर शार्प और मेरे ऊपर छोड़ दिया गया है। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि अपना कर्त्तव्य निभाने में हम न्याय और उदारता से काम लेंगे। मिस्टर गिलियन, हम आपके विरोधी नहीं हैं, परन्तु वसीयत की शर्तों को अक्षरशः पूरा करना हमारा कर्त्तव्य है। शर्त यह है कि यदि आपका एक हजार डॉलर खर्च करने का ढ़ंग, समझदारी भरा विवेकपूर्ण या निस्वार्थ प्रमाणित हो, तो हम आपको पचास हजार डालर की हुंडियाँ दे सकते हैं। इतनी रकम हमारे पास जमा करा दी गयी है। साथ ही हमारे स्वर्गवासी मुवक्किल की यह भी स्पष्ट शर्त है कि यदि तुम इस रकम को उस ढ़ंग से खर्च करो, जैसा कि आज तक करते आये हो — माफ करना, ये शब्द मेरे नहीं, स्वर्गीय मिस्टर गिलियन के हैं — और अपने निकम्मे दोस्तों की सोहबत में रुपया बरबाद कर दो, तो गिलियन द्वारा पालित मिस मरियम हेडन को यह रकम तुरन्त दे दी जाय। अब मिस्टर शार्प और मैं आपके हिसाब को जाँच कर तय करेंगे कि आपने रुपया किस तरह खर्च किया है। हिसाब तो आप लिखकर लाये ही हैं, और मुझे आशा है कि हमारे फैसले को आप स्वीकार भी करेंगे।"

मिस्टर टोलमैन ने लिफाफे की ओर हाथ बढ़ाया, परन्तु गिलियन ने झपट्टा मार कर उसे छीन लिया। हिसाब की पर्ची और लिफाफे के टुकड़े-टुकड़े कर के गिलियन ने उन्हें अपनी जेब में ठूँस लिया और मुस्कराते हुये बोला, "सब ठीक हो गया महाशय! अब आप लोगों को इस विषय में कष्ट करने की जरूरत नहीं। रेस के जुए की बारीकियाँ तो शायद आप नहीं समझेंगे, इसलिए इतना ही कहना काफी है कि मैं उस रकम को रेस में हार गया। धन्यवाद महाशय! नमस्ते!"

गिलीयन के बाहर जाते ही टोलमैन और शार्प ने एक दूसरे के सामने देखते हुए दुख से सिर हिलाया। बाहर बरामदे में लिफ्ट की राह देखते हुये गिलियन आनन्द से सीटी बजा रहा था।

# स्नेह दीप

हर सवाल के दो पहलू होते हैं। पर आज इस दूसरे पहलू को ही पहले देखें। हम अक्सर 'दुकानदार लड़कियों' की बात सुनते हैं। इस नाम की कोई चिड़िया नहीं होती। 'दुकानों में काम करने वाली लड़कियाँ' बेशक बहुत होती हैं। यह उनका रोज़ी कमाने का ढ़ंग है। परंतु उनकी आजीविका के तरीके को उनके नाम के साथ विशेषण बना कर जोड़ना, कहाँ तक उचित है? पाँचवी सड़क पर रहने वाली हर लड़की को हम विवाह की इच्छुक नहीं कह सकते!

लू और नेन्सी सहेलियाँ थीं। वे दोनों इस बड़े शहर में काम ढूँढ़ने आयी थीं, क्योंकि घर में खाने को आटा नहीं था। नेन्सी की उम्र उन्नीस वर्ष थी और लू की बीस। दोनों सुन्दर और चपल, देहाती लड़कियाँ थीं, जिनके मन में फिल्मस्टार बनने की कोई महत्वाकाँक्षा नहीं थी।

भाग्य के अदृष्ट हाथ ने उन दोनों को एक ही सस्ते, पर प्रतिष्ठित होटल में ला पटका। दोनों को काम मिल गया और दोनों अपनी अपनी रोज़ी कमाने लगीं। मित्रता उनकी कायम रही। वहाँ रहने के छः महीने बाद, मैं आपका उनसे परिचय करवा रहा हूँ। आप हैं—मेरे दखलन्दाज़ पाठक, और आप हैं—मेरी दोस्त महिलाएं, मिस नान्सी और मिस लू। हाथ मिलाते मिलाते आप सावधानी से उनके कपड़ों पर एक नज़र डाल लें। मेरा मतलब है—एक सरसरी नज़र। क्योंकि घूरने वालों से उन दोनों को उतनी ही नफरत है, जितनी किसी तमाशे में, बॉक्स में बैठने वाली किसी सम्भ्रान्त महिला को हो सकती है।

लू एक लाण्ड्री में कपड़ों पर इस्त्री करने का काम करती है। वह एक ढीला ढाला बैंगनी फ्रॉक पहने हुए है जो उसके शरीर पर फबता नहीं। उसके हैट में खोंसा हुआ रंगीन पंख, ज़रूरत से भी चार इञ्च ज्यादा लम्बा है। परन्तु यह अरमीन के फर का मफलर, उसने पच्चीस डॉलर में खरीदा

है। यह दूसरी बात है कि मौसम बीतते बीतते उसकी कीमत आठ डॉलर से भी कम रह जायगी। उसके गाल गुलाबी हैं और नीली आँखों में चमक है तथा उसके चेहरे पर सन्तोष की एक झलक।

नेन्सी को आप चाहें तो दुकानदार लड़की कह सकते हैं; क्योंकि आपको यह आदत पड़ गयी है। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि इस नाम की कोई चिड़िया होती नहीं, परन्तु आज कल के ज़िद्दी समाज को 'किस्म' ढूँढ़ने की आदत पड़ गयी है। तो फिर यह किस्म ही क्या बुरी है? उसका बाल बनाने का ढंग आकर्षक है और कपड़ों पर टीम टाम! उसका फ्राक है तो घटिया पर है भड़कीला। शिशिर की हवाओं से बचने को, उसके पास फर का कोट तो नहीं है, परन्तु साधारण पोपलीन के तंग जाकिट को उसने इस अदा से कस रखा है मानो वह असली ईरानी ऊन से बना हो। मेरे अथक 'किस्म' ढूँढ़नेवाले पाठक! उसके चेहरे और आँखों में दुकानदार लड़की का विशेष भाव झलकता है। इस भाव को हम किसी ठगी हुई नारी का मूक और घृणासूचक विद्रोह कह सकते हैं, जिससे प्रतिशोध की भविष्यवाणी मुखरित होती है। जोर से हँसते समय भी उसके चेहरे का यह भाव वैसा ही रहता है। इसी तरह का भाव रूस के किसानों की आँखों में भी दिखाई देता है और हममें से जो ज़िन्दा रहेंगे, उन्हें कयामत के दिन गैबरियल की आँखों में भी यही भाव दिखाई देगा। इस दृष्टि के सामने मनुष्य को कुण्ठित हो कर लज्जित हो जाना चाहिये, परन्तु देखा यह गया कि वे बनावटी हँसी हँसते हुए उसे फूलों का उपहार देने आते हैं, चाहे उस उपहार के साथ कोई शर्त लगी हो।

टोपी उठाकर इन दोनों का अभिवादन कीजिये और आगे बढ़िये। लू तो खुशी से "फिर मिलेंगे" कह देगी, पर नान्सी अपनी निर्मम और मोहक मुस्कराहट से आपको विदा देगी। यह मुस्कराहट आपको पीछे छोड़ कर पतंग की तरह छतों से ऊपर सीधी किसी तारे की ओर फड़फड़ाकर उड़ती हुई प्रतीत होगी।

दोनों, सड़क के मोड़ पर खडी, डैन की राह देख रहीं थी। डैन, लू का अभिन्न मित्र था। वफादार! 'मेरी' को अपना मेमान ढूँढ़ने के लिए भी कोर्ट के बेलिफ से मदद लेनी पड़ती, पर डैन तो हर समय हाज़िर था!

लू बोली, "तुझे सर्दी तो नहीं लग रही है, नेन्सी! कैसी बेवकूफ है कि आठ डॉलर प्रति सप्ताह के लिए उस सड़ियल दुकान में मज़दूरी करती है!

मैंने तो पिछले सप्ताह भी साढ़े अठारह डॉलर कमाये। माना, कि कपड़ों पर इस्त्री करना गल्ले के पीछे खड़े होकर गोटा बेचने जैसा बढ़िया काम तो नहीं है, पर उससे रुपया मिलता है। हमारी लाण्ड्री में दस डॉलर से कम तो शायद ही कोई कमाता हो! और यह भी नहीं कहा जा सकता कि यह कोई हेठा काम है।"

नेन्सी ने नाक चढ़ाते हुये कहा, "तुम्हारा काम तुम्हें ही मुबारिक हो। मैं अपने आठ डालर और साधारण कमरे से ही खुश हूँ। अपनी अपनी पसन्द है। मुझे बढ़िया चीज़ों और सम्भ्रान्त व्यक्तियों से घिरे रहना ज्यादा अच्छा लगता है। और यह भी तो सोचो, कि मुझे कसे कसे अवसर मिल सकते हैं? अभी उस दिन की बात है, कि हमारे ही स्टोर की एक लड़की की, पिटसबर्ग के एक करोड़पति से शादी हो गयी, जिसका वहाँ कोई इस्पात का कारखाना या लोहार की दुकान, ऐसा ही कुछ है। इसी तरह का कोई करोड़पति, मैं भी किसी दिन फाँस लूँगी। मुझे अपने रूप पर गर्व हो, सो बात नहीं; पर जब जीवन में इतनी सम्भावनाएँ हैं, तो मैं अवसर चूकने वाली नहीं। लाँड्री में काम करने वाली लड़की के सामने क्या भविष्य है?"

विजेता के से गर्व से लू बोली, "क्यों नहीं? मेरी और डैन की मुलाकात, वहीं तो हुई थी। वह अपने इतवार के कपड़े धुलवाने आया था और पहली टेबल पर ही उसने मुझे इस्त्री करते हुये देखा। यह पहली टेबल प्राप्त करने की, हममें से हर एक, कोशिश करती है। उस रोज़ इला मैगिन्निस बीमार थी, इसलिये पहली टेबल मुझे मिल गयी। डन का कहना है कि पहले उसने मेरी गोरी और सुडौल बाँहों को देखा। मैंने आस्तीनें ऊपर चढ़ा रखी थी न! लाण्ड्रियों में भी सम्भ्रान्त लोग आते जाते रहते हैं। बस उन्हें पहिचानने के दो तरीके हैं—एक तो यही कि वे धुलवाने के कपड़े सूटकेस में बन्द करके लाते हैं और दूसरा यह कि दरवाज़े में एकाएक, तेजी से घुसते हैं।

"लू, इतना भद्दा ब्लाउज़ पहनने की तू हिम्मत कैसे कर सकती है?" अपनी उनींदी आँखों में मीठा उलाहना भर कर, उस खटकने वाली पोशाक की तरफ देखते हुये, नेन्सी ने पूछा, "इससे जाहिर होता है कि तेरी पसन्द बहुत हल्की है।"

रोष से आँख निकाल कर लू बोली, "यह ब्लाउज़ ? तुझे क्या मालूम मैंने इसके सोलह डॉलर चुकाये हैं। वैसे इसकी कीमत पच्चीस से कम नहीं। इसे एक औरत हमारी लॉण्ड्री में धुलने दे गयी थी, पर वापिस लेने, कभी नहीं आयी। इसलिये मालिक ने इसे मेरे हाथों बेच दिया। देखती नहीं हो, इस पर कितना कसीदा हो रहा है ? तुम खुद जो भद्दी और बदसूरत चीज़ पहने हुये हो, उसकी तो कहो !"

नान्सी ने शान्ति से जवाब दिया, "यह भद्दी और बदसूरत चीज़ श्रीमती वान फिशर की ड्रेस के नमूने से बनायी गयी है। उनके कपड़ों का बिल, सालाना १२ हजार डॉलर का बनता है। अपनी ड्रेस मैंने अपने हाथों से बनायी – खर्च हुआ सिर्फ डेढ़ डॉलर – पर दस फुट की दूरी से कोई पहचान नहीं सकता कि दोनों पोशाकों में क्या अन्तर है !"

लू ने जवाब दिया, "ठीक है, भूखे मर कर झूठा दिखावा करने का तुम्हें पूरा अख्तियार है। पर मेरे लिए तो मेरी नौकरी और मेरी अच्छी तनख्वाह भली। काम से छूटते ही मैं अपनी मनपसन्द, बढ़िया, से बढ़िया, चीज खरीद सकती हूँ।"

परन्तु इतने में ही डैन वहाँ आ पहुँचा। वह, सड़क की तड़क भड़क से दूर, गम्भीर प्रकृति का युवक दिखाई देता था। वह रेडीमेड़ नेकटाई बाँधे हुए था। वह कहीं बिजली का काम करता था और ३० डॉलर प्रति सप्ताह कमाता था। लू की ओर उसने रोमियो की सी उदास नज़र से देखा और सोचने लगा कि उसके ब्लाउज के कसीदे की जाल में फँस जाने पर, किसी भी मक्खी को कितना आनन्द हो सकता है !

लू ने परिचय करवाया, "आप मेरे मित्र – मिस्टर ओवन्स। मेरी सहेली – मिस डैनफोर्थ। हाथ मिलाइये।"

हाथ आगे बढ़ाते हुये डैन बोला, "आपसे मिल कर बड़ी खुशी हुई मिस डैनफोर्थ ! लू तो अक्सर आपका जिक्र किया करती है।"

अपनी ठंडी उँगलियों से उसकी उँगलियों को छूते हुए नैन्सी ने उत्तर दिया, "धन्यवाद, दो एक बार उसने, आपका जिक्र, मुझसे भी किया है।"

लू खिलखिला पड़ी। उसने पूछा, "नैन्सी, हाथ मिलाने का यह ढंग भी क्या तूने श्रीमती वान फिशर से सीखा ?"

की अदा या मोहक मुस्कराहट या मित्रों को अभिवादन करने का तरीका या नौकरों से पेश आने का सलीका—ऐसी अनेक बातें सीखीं। उसका अत्यन्त प्रिय आदर्श थीं—श्रीमती वॉन फिशर। उनसे, उसने अपनी सर्वश्रेष्ठ सिद्धि हासिल की थी। बुलबुल की चहक के समान स्पष्ट, चांदी की खनक के समान सुरीली, धीमी और मधुर आवाज, उसने उन्हीं से सीखी थी। सामाजिक रईसी और कुलीनता के इस मोहक वातावरण में रात दिन डूबे रह कर भी, उसके प्रभाव से बच जाना, उसके लिए असम्भव बात थी। जिस तरह अच्छी आदतों का स्थान, अच्छे सिद्धान्तों से ऊँचा है, उसी तरह शायद अच्छी तहजीब का स्थान, अच्छी आदतों से भी ऊचा कहा जा सकता है। आपके माता पिता की शिक्षा, आपके नैतिक सिद्धान्तों को चाहे जाग्रत न रखें, परन्तु खूँटी से चोटी बाँध कर, रामायण की चौपाइयों को आप रोज़ चालीस बार दोहरायें तो शैतान खुद ब खुद दूर भाग जायगा। नेन्सी भी, जब श्रीमती वॉन फिशर की आवाज में बोलती, तो ऐसा लगता, मानो कुलीनता के बीज, उसमें जन्म से ही मौजूद हैं।

उस विशाल स्टोर में शिक्षा प्रात करने का एक और भी जरिया था। जब कभी आप दुकान की दो चार लड़कियों को इकट्ठी होकर अपनी चूड़ियाँ खनकाते हुए गपशप करते हुए देखें, तो यह न मान लें कि वे सिर्फ अपनी सखी के बाल बनाने के ढंग की आलोचना करने को ही एकत्रित हुई हैं। इन गोष्ठियों में, पुरुषों की सभाओं सी शान शौकत और कार्यवाही तो आपको नहीं मिलेगी, पर उनमें, उस प्रसंग के महत्त्व की पूरी झलक जरूर मिल जायगी; जिसमें हव्वा की बेटियों ने पहली बार मिलकर आदम के वंशज को, घर में उसका उचित स्थान बता दिया था। इन गोष्ठियों को हम आत्मरक्षा और मोर्चाबन्दी के उपायों पर सोचविचार करने के लिए आयोजित, स्त्रियों की असाधारण सभा कह सकते हैं, जिसमें इस संसार रूपी रंगमंच पर, पुरुष रूपी दर्शन द्वारा फेंके गये, पुष्पहारों से बचने के उपाय सोचे जाते हैं। नारी, संसार में किसी जानवर के पिल्ले से भी ज्यादा असहाय है; हरिण के बच्चे सी कोमल, पर उसकी चपलता से रहित; पंछी सी सुन्दर, पर उड़ने की शक्ति से वंचित; मधुमक्खी के समान माधुर्य से सनी, पर उसके डंक—छोड़िये भी इन उपमाओं को। इस डंक का अनुभव शायद हममें से कइयों को हो चुका होगा।

युद्ध की इन परिषदों में, एक दुसरे को नये हथियार और नये दाँव पेच बरतने की तालीम दी जाती है जिन्हें उन्होंने जीवन संग्राम में सीखा है।

उनमें से कोई कह सकती है, "मैं तो उसे वापस ऐसा जवाब देती हूं कि 'तुम मुझे समझते क्या हो, जो मुझसे ऐसी बात कहते हो? बताओ मेरे ऐसा कहने पर वह क्या बोलेगा?"

इसके बाद, भूरे, काले, मटमैले, लाल, पीले बालों वाली वे लड़कियाँ इकठी होकर सोचती हैं, और सार्वजनिक दुश्मन 'पुरुष' से भिड़न्त होते समय, अमल में लाये जाने वाले हथियारों की योजना बनायी जाती है।

नान्सी ने आत्मरक्षण की इस कला को पूरी तरह आत्मसात कर लिया था और स्त्रियों के सम्बन्ध में, सफल आत्मरक्षण का अर्थ होता है–विजय!

स्टोर में ज्ञान के विषयों की कोई कमी नहीं थी। इसके जीवन का ध्येय था–सफल विवाह; और इस साध्य को हासिल करने में किसी कालिज ने भी, उसकी इससे ज्यादा सहायता शायद ही की होती।

दुकान में उसकी कद्र थी। पास ही में संगीत के वाद्यों का विभाग था, जिससे उसे बड़े बड़े उस्तादों के गाने, अनायास ही सुनाई पड़ जाते थे। उसे संगीत का शौक हो या न हो, इस प्रकार प्राप्त की हुई जानकारी से, उन सामाजिक क्षेत्रों में उसकी कीमत बढ़ जाती थी, जहाँ डरते, डरते कदम बढ़ाने की वह कोशिश कर रही थी। कला के कीमती नमूने, सुन्दर और कीमती कपड़े, और अनेक प्रकार की सजावट की चीजें, जो संभ्रान्त महिलाओं को प्राणों से भी अधिक प्यारी होती हैं, उसके हृदय को प्रभावित कर रहीं थीं।

नेन्सी की यह महत्वाकांक्षा, दुकान में काम करनेवाली अन्य लड़कियों से भी छिपी न रही। कोई धनी ग्राहक, जब कभी उसके गल्ले पर पहुँचता, तो कोई न कोई कह उठती, 'नेन्सी, तेरे करोड़पति सेठ आ गये।" लोगों को यह आदत सी हो गयी थी कि जब उनकी पत्नियाँ दुकान के अन्य विभागों में खरीददारी करतीं होती, तब वे बेमतलब ही नेन्सी के काउण्टर पर आकर, रूमालों से खिलवाड करने लगते। इस आकर्षण के मूल में दो कारण थे; नेन्सी का सहज सौन्दर्य और कुलीनता का बनावटी आडम्बर! इस तरह कई लोग उसके सामने गुणों का प्रदर्शन कर चुके थे। हो सकता है कि उनमें से कुछ, सचमुच के करोड़पति हों, परन्तु अधिकतर तो नकलची बन्दर ही होते थे। इन दोनों में विभेद करना, नेन्सी

खूब जानती थी। वह बराबर की खिड़की से, नीचे सड़क पर खड़ी हुई, दूकान में आनेवाले ग्राहकों की मोटरों को, देख सकती थी और उसका अनुभव था ; कि 'जैसी गाड़ी वैसा आदमी'।

एक बार एक आकर्षक पुरुष ने, चार दर्जन रूमाल खरीदने के बाद, उसकी प्रेमाराधना करने की कोशिश की। उसके जाने के बाद दुकान की एक लड़की ने पूछा, "क्यों नेन्सी, भला उस बिचारे की ओर ध्यान क्यों नहीं दिया? देखने में तो बड़ा रईस लगता था!"

अपनी अत्यन्त शान्त, मधुर और श्रीमती वान फिशर जैसी, अवैयक्तिक मुस्कराहट से नेन्सी ने जवाब दिया, "वह? अजी राम का नाम लो। मैंने उसकी गाड़ी देखी,—१२ हॉर्सपावर का पुराना छकड़ा! और आयरिश ड्राइवर। और तुमने यह नहीं देखा – उसने रूमाल कौन से लिये थे– केवल रेशमी! और उँगलियों में नकली अँगूठियाँ! ना भई, अपना तो यह हाल है – कै हंसा मोती चुगै कै लंघन कर जाय।"

दुकान की दो लड़कियों की गिनती, 'संभ्रान्त' महिलाओं में होती थी। रोकड़ पर काम करने वाली और दूसरी देखरेख करने वाली। इन दोनों की, कुछ उतने ही 'संभ्रान्त' मित्रों से जान पहिचान थी, जिनके साथ वे कभी कभी खाना खाने जाया करती थी। एक बार उन्होंने नेन्सी को भी न्यौता दिया। यह खाना एक ऐसे शानदार होटल में आयोजित किया गया, जहाँ नये वर्ष की साझ को बैठने की जगह बहुत पहले से सुरक्षित करवानी पड़ती है। उन दो संभ्रान्त मित्रों में से एक तो बिल्कुल गंजा था और 'क्वचित् खल्वाट निर्धनः' के अनुसार उसका धनवान होना स्वयंसिद्ध था। दूसरे नौजवान के पास अपनी कुलीनता प्रमाणित करने के दो साधन थे—वह हर शराब को घाटिया बताता था और आस्तीनों में हीरों के बटन लगाता था। इस नवयुवक ने नेन्सी में दुर्निवार सौंदर्य के दर्शन किये। स्वभाव से ही वह दुकानों में काम करने वाली लड़कियों का शौकीन था, और इस लड़की में उसने मुक्त सौन्दर्य के साथ अभिजात समाज के तौर तरीकों का विचित्र सा मेल पाया। इसलिये दूसरे ही दिन वह दुकान में पहुँचा और रूमालों के ढेर के पीछे खड़ी हुई नेन्सी से विवाह का प्रस्ताव कर बैठा। नेन्सी ने इन्कार कर दिया। दुकान में काम करने वाली एक और छबीली कोई दस कदम दूर खड़ी सतर्कता से, देख और

सुन रही थी। ठुकराये हुए उम्मीदवार के जाते ही उसने नेन्सी को आड़े हाथों लिया।

"तू कितनी बेवकूफ है; वह एक करोड़पति है। वह खुद वान स्किंटल का भतीजा है और बात भी ईमानदारी से कर रहा था। क्या तू पागल हो गयी है, नेन्सी ?"

नेन्सी बोली, "जाने भी दो। मुझे पसन्द नहीं है। वह अगर करोड़पति हो भी तो वैसा दिखाई तो नहीं देता। और मुझे मालूम है, कि उसे सिर्फ बीस हजार डॉलर, सालाना जेबखर्च मिलता है। कल शाम को इसी बात को लेकर, गंजे महाशय उसका मज़ाक उड़ा रहे थे।"

लड़की ने जरा पास आ कर, अपनी आँखें मिचकायीं और च्यूईंग गम के अभाव में सूखी हुई आवाज़ में पूछा, "यह तो बता, तू चाहती क्या है ? क्या इतना काफी नहीं है ? क्या तू धन्नासेठ की लड़की है जो किसी रॉकफैलर, या ग्लैडस्टन डोवी या स्पेन के बादशाह से ही शादी करेगी ? क्या बीस हजार डॉलर से तेरे पूरा नहीं पड़ेगा ?"

लड़की की काली आँखों की तीक्ष्ण दृष्टि के सामने नेन्सी कुछ शर्मा सी गयी। समझाते हुये वह बोली, "नहीं कैरी, यह बात नहीं। मैं सिर्फ पैसे की ही भूखी नहीं हूँ। कल रात वह अपने मित्र के सामने झूठ बोलते पकड़ा गया था। किसी लड़की के साथ नाटक देखने जाने की बात थी। और, मैं झूठ बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर सकती। सारांश यह कि वह मुझे पसन्द नहीं। किस्सा खतम हुआ। मेले से खरीदी हुई चीजें, मैं पसन्द नहीं करती। मैं तो उसे चाहती हूँ जो चाहे और कुछ न हो, पर मनुष्य जरूर हो। शिकार फाँसना तो मेरा उद्देश्य है ही परन्तु सिर्फ रुपयों की थैली के गले बँधना भी मैं नहीं चाहती।"

लड़की ने जाते हुये ताना कसा, "पागलखाने जाना पड़ेगा !"

आठ डॉलर प्रति सप्ताह पर, इसी तरह की महत्वाकांक्षायें नेन्सी अपने हृदय में संजोती रही, चाहे आप उसे सिद्धान्त मानें या न मानें। रूखी सूखी खाकर, और पेट के पट्टी बाँध कर, वह अपने अज्ञात 'शिकार' का संधान करती रही। उसके चेहरे पर विवश नर भक्षक की सी मधुर, हल्की, बहादुर और निश्चयात्मक मुस्कराहट छायी रहती। दुकान उसकी नज़रों में एक जंगल के समान थी, जिसमें आनेवाले कई मोटे ताजे शिकारों की ओर उसने निशाना तो कई बार ताका, परन्तु हमेशा किसी अचूक सहज ज्ञान ने उसे

तीर छोड़ने से रोक कर, नये शिकार की राह देखने को विवश किये रखा। इस कौशल में 'नारी' का हिस्सा अधिक था या 'शिकारी' का; राम जाने!

उधर लॉण्ड्री में, लू की तरक्की हो रही थी। साढ़े अठारह डॉलर प्रति सप्ताह में से छः डॉलर तो कमरे के किराये और खाने में खर्च हो जाते थे; बची हुयी रकम का अधिकांश कपड़ों की भेंट चढ़ जाता था। नेन्सी की तुलना में; उसके सामने अपनी पसन्द या रहन सहन को ऊँचा कर पाने की संभावना बहुत कम थी। धुँए से भरी उस लॉण्ड्री में काम, काम–और काम के सिवाय कुछ नहीं था। शाम के भावी मनोरंजनों का खयाल रह रह कर आजाता था। तरह तरह के कीमती और भडकीले कपड़े उसकी इस्त्री के नीचे होकर गुजरते और हो सकता है कि बढ़िया कपड़ों की उसकी ललक; इस्त्री की गर्मी पा कर उसके दिमाग में पहुँच जाती थी।

दिन भर का काम पूरा होते ही, छाया के समान उसके सुख दुख का साथी डैन, उसे बाहर खड़ा मिलता।

कभी कभी वह परेशान नज़रों से लू के कपड़ों के बढ़ते हुए दिखावटी-पन और घटती हुई पसन्द को, विषाद से देखता, पर इससे उसकी वफा-दारी में कोई फर्क नहीं पड़ता। कपड़ों के कारण राहगीर लू को घूरते; सिर्फ यही उसे नापसन्द था।

लू भी अपने साथी के प्रति कुछ कम वफादार नहीं थी। उनकी आदत थी कि वे जब कभी घूमने जाते तो नेन्सी को भी साथ ले जाते। इसमें जो अलावा खर्च होता उसे बर्दाश्त करने को डैन तैयार था। मनोरंजन ढूँढने वाली इस त्रिमूर्ति के बीच काम का विभाजन इस प्रकार होता था–लू के हिस्से में चटक मटक, नेन्सी के हिस्से में बातचीत का लहजा और बोझ उठाने के लिए डैन! अपने साफ सुथरे, पर रेडिमेड़ सूट पर रेडिमेड़ टाई लगाये और उतनी ही अचूक, खुशमिजाज और रेडीमेड़ हाज़िर जवाबी के कारण, डैन ने उन दोनों के बीच में, कभी एक दूसरे से चौंकने या झगड़ने की नौबत नहीं आने दी। वह उन सज्जन लोगों में से था, जिन्हें हम उनकी हाज़िरी में तो भुला देते हैं पर गैर हाज़िरी में याद करते हैं।

नेन्सी के बढ़े चढ़े दिमाग में, इन रेडीमेड़ चीजों का रेडीमेड़ आनन्द, कभी कभी बुरा प्रभाव छोड़ जाता था। लेकिन वह जवान थी और जवानी तो दरजी की सुई है, जो मखमल में भी चलती है और गाढे में भी!

लू ने एक बार अपनी सहेली से कहा, डैन की इच्छा है कि हम लोग तुरन्त विवाह कर लें। लेकिन मै ऐसा क्यों करूं? इस समय मैं आजाद हूँ! अपना कमाया हुआ रुपया, चाहूँ जैसे खर्च कर सकती हूँ और शादी बाद, वह मुझे काम करने देगा? नहीं। लेकिन नेन्सी, एक बात तो बता— तू उस सड़ियल दुकान में पड़ी हुई अपने आप को अधनंगी और अधभूखी क्यों रख रही है? यदि तू चाहे तो मैं तुझे आज ही लाण्ड्री म नौकरी दिलवा दूँ। मुझे तो ऐसा लगता है कि अगर तू थोड़ा सा और कमा ले तोभी तुझे कम तंगी महसूस होगी।

नेन्सी बोली, "लू, दर असल तो मुझ किसी बात की तंगी नहीं और अगर हो भी, तो आधे पेट रहकर भी मैं नहीं रहना पसन्द करूँगी। मुझे उसकी आदत सी पड़ गयी है। और यह तो तू जानती ही है कि म मौके की तलाश में हूँ। गल्ले के पीछे खड़े खड़े जीवन बिता देना मेरा ध्येय नहीं है। रोज मैं, कोई न कोई नयी बता सीखती हूँ। सेवक और नौकर के रूप में ही सही, कुलीन और धनवान लोगों से तो मेरा वास्ता पड़ता है! जिसकी मुझे तलाश है, ऐसा एक भी मौका, मैं हाथ से नहीं जाने देती!"

लू ने उसे चिढ़ाते हुए हँस कर पूछा, "तो क्या तुझे तेरा करोड़पति मिल गया?"

नेन्सी ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं कइयों की जाँच पड़ताल कर रही हूँ; अभी तक किसी को चुना नहीं है।"

"शाबाश! तो आप इस समय करोड़पतियों का चुनाव कर रही हैं? देखना, नेन्सी, कोई बचने न पाये, चाहे उसके पास दस बीस डॉलर कम ही क्यों न हों। पर मैं समझ गयी तू मज़ाक कर रही है! करोड़पतियों को मामूली नौकरानियों के पीछे मारे मारे फिरने की गरज़ नहीं होती।" नेन्सी ने शान्ति और समझदारी से जबाब दिया, "ऐसा करने में उन्हीं की भलाई है। हममें से कोई भी, उन्हें पैसों की देखभाल करना सिखा सकती है।"

हँसते हुए लू बोली, "मुझसे तो कोई सेठ, अगर बात भी करले तो मैं चकरा जाऊँ।"

"इसलिये कि तेरा कभी उनसे वास्ता नहीं पड़ा। साधारण मनुष्यों में और करोड़पति सेठों में कोई विशष फर्क नहीं है– सिर्फ थोड़ी सी देखभाल ज्यादा करनी पड़ती है। लू, तेरे इस कोट के लिए, लाल रेशम का अस्तर कुछ ज्यादा भड़कीला तो नहीं लगता!"

अपनी सहेली के भद्दे और सादे जम्पर की ओर देख कर लू बोली, "नहीं, मेरा तो ऐसा खयाल नहीं। तेरे इस बेतुके कोट के बारे में, यह बात बेशक कही जा सकती है।"

आत्मश्लाघा के स्वर में नेन्सी ने कहा, "इस जाकिट की कटाई-छँटाई, श्रीमती वान फिशर के जाकिट के नमूने पर हुई है, कपड़े के दाम करीब चार डॉलर लगे, पर मेरा ख्याल है कि उनके जाकिट में इससे सौ डॉलर अधिक लगे होंगे।"

लू ने बात उड़ाते हुये कहा, "हो सकता है, लेकिन मुझे यह किसी करोड़पति को फँसाने जैसा काँटा नहीं लगता। अगर यही रफ्तार रही तो तुमसे पहिले मैं किसी करोडपति को फँसा लूँ, इसकी सम्भावना ज्यादा है।"

इन दोनों सखियों के सिद्धान्तों का सही मूल्यांकन करना तो शायद किसी दार्शनिक के लिए ही संभव हो। लू में उस गर्व और ऊँची पसन्द का सम्पूर्ण अभाव था, जिसकी वजह से लड़कियाँ आधे पेट खा कर भी बड़े बड़े स्टोर या दफ्तरों की टेबलों के आसपास मँडराती रहती हैं। इसी वजह से वह उस शोरगुल भरे, दम घोट देने वाले, कारखाने में इस्त्री कर के भी खुश थी। उसकी तनख्वाह उसके लिए चैन की जिन्दगी हासिल कर देने से भी कुछ अधिक ही थी। इसी वजह से 'उसकी सुन्दर कपड़े पहिनने की चाह भी उस स्तर तक ऊँची बढ़ गयी थी जहाँ से वह कभी अपने सनातन, अचल और एकनिष्ठ मित्र डैन के, साफ सुथरे, पर तड़क भड़क हीन कपड़ों की ओर भी, अरुचि भरी दृष्टि से देखने लगी।

नेन्सी का किस्सा तो लाखों में एक था। वह तो मानती थी कि रेशम, हीरे, जवाहरात, किनखाब, आभूषण, इत्रफुलेल, संगीत और कुलीनता या सुरुचि से उत्पन्न दुनिया की हर नियामत यदि नारी के लिए पैदा हुई हो, तो उन पर उसका जन्मसिद्ध अधिकार है। यदि वह इन सब को अपने जीवन का आवश्यक अंग मानती है और इन्हें प्राप्त करना चाहती है, तो उसका फर्ज है कि इन्हें आँखों से ओझल न होने दे। 'ईसो' की तरह वह अपने आपको कभी धोखा नहीं देगी। उसे अपने अधिकारों की रक्षा भी करनी है और उसकी आमदनी भी मर्यादित है।

इस प्रकार के वातावरण में नेन्सी जीती रही। अपने मन में निश्चय और सन्तोष भर कर, आधा पेट खाकर, और अपने सस्ते कपड़ों पर निर्भर रह कर, वह लौ लगाये रही। औरतों को तो वह जानती थी; अब वह

पुरुष जाति का अध्ययन कर रही थी, जो अपनी योग्यताओं और आदतों से सिर्फ पशु हैं। किसी दिन वह अपनी मंज़िल पा ही लेगी। उसने अपने मन में प्रतिज्ञा कर ली थी कि उसका प्राप्य सबसे बड़ा और सब से अच्छा होगा – जरा भी कम नहीं।

इस प्रकार वह अपने दीपक में स्नेह ढालती रही, जिससे उसके दूल्हे के आने पर वह उसका स्वागत कर सके।

पर उसने अनजाने ही एक और सबक सीख लिया। जीवन के मूल्यों के प्रति उसका दृष्टिकोण बदलने लग गया। कभी कभी डॉलर की आकृति उसकी नजर में धुँधली पड़ने लगती और उसके स्थान पर "सच्चाई," "मान" "दया" आदि अक्षर उभर आते। उसकी दशा की तुलना, हम उस शिकारी से कर सकते हैं, जो घने जंगल में साँभर या बारहसिंगे का शिकार कर रहा है। वह एक हरा भरा, आच्छादित गड्ढा देखता है, जिसमें से किसी छोटे झरने की कलकल ध्वनि, उसे आराम करने के लिए बुला रही है। ऐसे समय पर तो अर्जुन के तीर भी मन्द पड़ जाते!

नेन्सी भी कभी कभी आश्चर्य से सोचती कि उस पर जान देने वाले, क्या वास्तव में अपने प्राणोंका त्याग कर सकते थे!

एक गुरुवार की शाम, नेन्सी जब अपने स्टोर से निकली, तब छटी सड़क से पश्चिम में लॉण्ड्री की तरफ मुड़ गयी। आज उसे, लू और डैन के साथ एक संगीत नाटक देखने जाना था।

जब वह वहाँ पहुँची तो डैन लॉण्ड्री से बाहर आ रहा था। उसके चेहरे पर निराशा और थकावट महसूस हो रही थी।

उसने कहा, "मैंने सोचा उसका कोई समाचार आया हो तो ले लूँ।"

नेन्सी ने पूछा, "किसका समाचार? क्या लू नहीं है?"

डैन बोला, "मैंने सोचा तुम्हें पता होगा। वह सोमवार से न यहाँ आती है, न घर पर ही उसका कोई पता है! उसने घर से तो अपना सारा सामान भी उठा लिया। लाण्ड्री में काम करने वाली एक लड़की से कह गयी है कि वह यूरोप जा रही है।"

नेन्सी पूछ उठी, "क्या उसको किसी ने कहीं नहीं देखा?"

अपनी कठोर आँखों से एक फौलादी नजर डालते हुए, अपने दाँतों को भींच कर उसने नेन्सी की ओर देखा।

उसने कुछ रुखाई से कहा, " लॉरड्री से पता चला है कि वह कल, इधर से एक मोटर में बैठी जा रही थी। शायद उसके साथ कोई करोड़पति सेठ था, जिनके लिये तुम दोनों ही अपना अपना सिर फोड़ रही थी।"

जीवन में पहिली बार नेन्सी, किसी पुरुष के सामने हतप्रभ हो गयी। उसने अपना काँपता हाथ, डैन की बाँह पर रख दिया।

" मुझे क्यों सुनाते हो डैन। इसमें मेरा क्या कसूर है ? "

डैन थोड़ा नरम हो कर बोला, " मेरा यह मतलब नहीं था।" उसने अपनी जेब में हाथ डाला और कुछ टटोलते हुए बड़ी बहादुरी के साथ इस प्रकार कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं– " मेरे पास आज रात के नाटक के टिकट हैं; अगर तुम ...

नेन्सी जहाँ कहीं साहस देखती, उसकी कद्र करती।

वह बोली, " मैं तुम्हारा साथ दूँगी, डैन ! "

नेन्सी और लू को एक दूसरे से मिले, तीन महीने बीत गये।

एक दिन संध्या के धुँधलके में यह दुकानदार-लड़की, एक छोटे बगीचे के सहारे सहारे, अपने घर की ओर जा रही थी। किसी ने उसे नाम ले कर पुकारा और पीछे मुड़कर देखते ही, लू उसकी बाँहों में समा गयी।

इस आलिंगन के छूटते ही उन्होंने अपने अपने सिर, इस तरह पीछे उठा लिये मानो दो नागिनें, एक दूसरे को डसने के लिए, अथवा एक दूसरे को वश में करने के लिए खड़ी हों। दोनों की लपलपाती जीभों पर हजारों प्रश्न एक साथ मुखरित हो उठे। नेन्सी ने गौर कर लिया कि लू के शरीर पर कीमती फरकोट, हीरे जवाहरात के गहने और सुन्दर कपड़ों के रूप में समृद्धि के चिन्ह दिखाई दे रहे थे।

लू प्यार भरे लहजे में जोर से बोली, " क्यों री बेवकूफ ! मालूम देता है कि तू अब तक उसी दुकान में काम कर-रही है। तेरे मैले कुचेले कपड़ों से यही जाहिर होता है। और जो शिकार फँसने वाला था, उसका क्या हुआ ? उसकी तो शायद फसल पक रही है ? "

और तब लू को एकाएक मालूम पड़ा कि नेन्सी को समृद्धि से भी अधिक कीमती ' कोई ऐसी चीज प्राप्त हो चुकी है, जिसने उसकी आँखों में ' हीरे से भी ज्यादा चमकीली दमक, उसके गालों पर गुलाब से भी अधिक सुर्खी और उसकी जीभ पर बिजली से भी ज्यादा चंचल शब्द पैदा कर दिये थे।

नेन्सी बोली, "हाँ, मैं अब तक तो वहीं काम कर रही हूँ, पर अगले सप्ताह मैं नौकरी छोड़ दूँगी। मैंने शिकार फाँस लिया है—ऐसा शिकार, जो आज तक संसार में किसी शिकारी ने नहीं फाँसा होगा। तुझे शायद अब बुरा तो नहीं लगेगा—मैं डैन से शादी करने वाली हूँ—डैन! वह अब मेरा है!"

बगीचे के नुक्कड़ के पास ही पुलिस का एक ऐसा कमसिन सा रँगरूट, गश्त लगा रहा था, जिनकी वजह से पुलिस दल कुछ अधिक दर्शनीय बन जाता है। उसने देखा कि कीमती फरकोट पहिने, और हीरे की अंगूठियों से उँगलियों को चमकाये, एक लड़की बाग की लोहे की चहारदीवारी पर झुकी हुई सिसक रही थी और सादे कपड़े पहिने हुए एक दुबली पतली लड़की, पास ही खड़ी उसे धीरज बँधा रही थी। सिपाही चूँकि नया रँगरूट था, कुछ भी नहीं देखने का बहाना करता हुआ, आगे बढ़ गया। वह नया नया था, परन्तु इतना अनुभव तो उसे भी हो चुका था कि इस संसार की बहुत बातें ऐसी हैं जिनका समाधान उसकी सामर्थ्य के परे है, कम से कम पुलिस के तो! वह अपनी लकड़ी को फर्श पर इतनी जोर से ठोकता हुआ आगे बढ़ा कि आसमान के तारे भी उस आवाज को सुन सकें।

# मेडिसन चौक की अलिफलैला

चौक के पास वाले उसके मकान में, कार्सन चामर्स को, उसके नौकर फिलिप ने शाम की डाक ला कर दी। रोजमर्रा की साधारण चिट्ठियों के अलावा दो चीजें ऐसी थीं, जिन पर एकही विदेशी डाक की मुहर लगी हुई थी।

इनमें से एक पार्सल में एक औरत की तस्वीर थी और दूसरी में एक लम्बा चौड़ा पत्र; जिसे चामर्स बड़ी देर तक ध्यान से पढ़ता रहा। यह चिट्ठी भी एक दूसरी औरत द्वारा लिखी गयी थी, जिसमें तस्वीर वाली

औरत के प्रति विष बुझे तीरों को, शहद में डुबो कर, अन्योक्ति शैली में छोड़ा गया था।

चामर्स ने इस पत्र को टुकड़े टुकड़े कर के फेंक दिया और अपने कीमती कालीन पर उनको रौंदने के लिए टहलने लगा। किसी जंगली जानवर को पिंजड़े में बन्द कर देने पर वह भी उसी तरह चक्कर काटता है और शंका के जंगल में फँसे हुए किसी बन्दी की भी यही दशा होती है।

कुछ समय के बाद उसकी परेशानी दूर हुई। कालीन कोई जादुई तो था नहीं, उसके ऊपर तो सोलह फुट के दायरे में ही घूमा जा सकता था; तीन हज़ार मील दूर उड़ा ले जाना, उसकी शक्ति से परे था।

फिलिप्स प्रकट हुआ। वह कभी प्रवेश नहीं करता था; अलिफ लैला के जिन्द की तरह प्रकट हुआ करता था। उसने पूछा, "आप खाना यहाँ खायेंगे या बाहर?"

चामर्स ने कहा, "यहीं; और आध घण्टे में ही।" वह सुस्ती से बिस्तर पर पड़ गया। बाहर सड़क पर चलने वाली जनवरी की आँधी के ताण्डव को सुनता रहा।

विलीन होते हुए जिन्द से उसने कहा, "ठहरो। जब मैं घर आ रहा था तो चौराहे के पास ही कुछ लोग इकट्ठे हो रहे थे और एक आदमी चबूतरे पर खड़ा हो कर उनसे कुछ कह रहा था। यह भीड़ किन लोगों की है और वे वहाँ क्यों जमा हुए हैं?"

फिलिप्स ने उत्तर दिया, "ये लोग बेघरबार हैं साहब! चबूतरे पर खड़ा आदमी उनके लिए रैन बसेरा ढूँढ़ने की कोशिश करता है। कुछ लोग उसे पैसे दे जाते हैं और उन पैसों में से वह अधिक से अधिक लोगों को सुविधा पहुँचाने की कोशिश करता है। इसी कारण वे लोग कतार में खड़े रहते हैं। बारी बारी से उनकी व्यवस्था की जाती है।"

चामर्स ने कहा, "खाना तैयार होते ही उनमें से किसी एक को यहाँ बुला लाना। हम दोनों साथ ही खाना खायेंगे।"

अपनी लम्बी नौकरी में फिलिप्स पहली बार हकलाते हुए बोला, "क... क...किसे?"

चामर्स ने उत्तर दिया, "तुम किसी को भी पसन्द कर सकते हो। सिर्फ इतना ध्यान रखना कि उसके होशोहवास कायम हों और वह बहुत ज्यादा गन्दा न हो।"

बगदाद के खलीफा का पार्ट अदा करना, कारसन चामर्स के लिये एक नयी बात थी। परन्तु आज रात को, उदासी को जीतने के परम्परागत उपाय उसे अधूरे मालूम पड़ रहे थे। अपनी उदास वृत्ति को कुछ हलका करने के लिए आज वह कोई अजीबोग़रीब तरीका आजमाना चाहता था।

ठीक आधे घण्टे में फिलिप्स की तैयारी पूरी हो गयी। नीचे की होटल के वेटर ने स्वादिष्ट खाना ला कर टेबल पर सजा दिया। मोमवत्तियों के धीमे गुलाबी प्रकाश में दो व्यक्तियों के लिए सजाया गया वह टेबल आकर्षक दिखाई दे रहा था।

कुछ ही देर में फिलिप्स उन ठिठुरते हुए भिखारियों की पंक्ति में से एक को पकड़ लाया और उसे किसी बड़े पादरी या पकड़े गये डाकू की तरह पेश किया।

ऐसे लोगों को अभागा कहने का एक रिवाज़ सा पड़ गया है। यदि इनकी तुलना किसी चीज़ से करनी हो तो जले हुए जहाज़ से बढ़कर कोई उपमा नहीं। जिस तरह उसके बहते हुए ढाँचे से धधकती हुई आग की एकाध ज्वाला दिखाई दे ही जाती है उसी तरह इसके मैल शरीर से अभी अभी धोये हुए हाथ मुँह चमक रहे थे। फिलिप्स ने मानो रस्मोरिवाज़ की कब्र पर फातिहा पढ़ने के लिए ही उसे इस बात पर मजबूर किया था। मोमबत्ती की रोशनी में वह उस कमरे की सजावट पर धब्बा सा दिखाई दे रहा था। उसके चेहरे पर मुर्दनी छायी हुई थी और कई दिनों की गन्दी दाढ़ी बढ़ी हुई थी। फिलिप्स के बहुत कोशिश करने पर भी उसके मटमैले बाल काबू में नहीं आ सके थे और जटा की तरह उलझे हुए थे। सिर पर का गोल निशान यह सूचित कर रहा था कि उसे हमेशा टोपी पहने रखने की आदत थी। शैतान लड़कों द्वारा घेरे हुए किसी कुत्ते के समान उसकी आँखों में एक निराश और वंचक चुनौती झलक रही थी। उसके फटे पुराने कोट के बटन गले तक बन्द किये हुए थे; फिर भी ऊपर से कमीज़ का कॉलर दिखाई दे रहा था। उसके बर्ताव में झिझक या संकोच का नामोनिशान भी नहीं था। चामस ने खड़े होकर उसका स्वागत करते हुए कहा, "अगर आप मुझ पर अनुग्रह करें, तो आपके साथ खाना खाने से मुझे बड़ा आनन्द होगा।"

अपनी कठोर और आक्रामक आवाज़ में वह दरवेश बोला, "मेरा नाम प्लूमर है। और अगर आप मेरे स्थान पर हों तो आप अपने मेज़बान का का नाम जरूर जानना चाहेंगे।"

चामर्स ने जल्दी से उत्तर दिया, "मैं आपसे कहने ही वाला था। मुझे चामर्स कहते हैं। क्या आप सामने बैठना पसन्द करेंगे?!"

बिखरे हुए रंगढ़ंग वाला प्लूमर, फिलिप्स द्वारा आगे सरकायी गयी कुर्सी पर बैठ गया। उसके तौर तरीके से ऐसा लगता था कि इस तरह के सोफियाने ढ़ंग से वह पहले भी भोजन कर चुका है।

फिलिप्स ने तरह तरह के फल और मछलियाँ ला कर टेबल पर रख दीं।

प्लूमर बोल पड़ा, "बहुत अच्छे! तो जिन्स पर जिन्स आयेंगी। शाबाश, भई बगदाद के खलीफा! तो मैं खाना खत्म होने तक आपकी शहज़ादी हुई। एक लम्बी मुद्दत के बाद मुझे एक असली अरबी खलीफा मिला है। तकदीर तो अच्छी दिखाई देती है। कतार में अपना नम्बर ४३ वाँ था। मैं गिन ही रहा था कि आपका दूत मुझे भोजन करने ले आया। आज रात को आसरा मिलने की संभावना उतनी ही थी, जितनी कि मेरे अमरीका के राष्ट्रपति बनने की। तो जनाब, हारून अल रशीद आप मेरी रामकहानी भी सुनना चाहेंगे? आप क्या पसन्द करेंगे – खाते खाते उसका एक एक प्रकरण सुनाऊँ या अंत में सिगार और कॉफी पीते हुये पूरा संस्करण एक साथ।"

"चामर्स ने मुस्कराते हुये पूछा, आज की परिस्थिति से तुम्हें आश्चर्य होता नहीं दिखाई देता।"

मेहमान ने कहा, "पैगम्बर की दाढ़ी की कसम, न्यूयॉर्क में सस्ते हारून अल रशीदों की बस्ती बगदाद के पिस्सुओं से भी ज्यादा है। बीसीयों बार मुझे पकड़ कर और भोजन की बंदूक मेरे सिर पर तान कर, मुझे अपनी रामकहानी सुनाने को मजबूर किया गया है। न्यूयॉर्क के निवासी, और बिना मतलब किसी को कुछ दे दें? उनके कोष में तो दया और जिज्ञासा, दोनों का एक ही अर्थ मिलता है। कुछ तो एक चवन्नी और रोटी का टुकड़ा दे कर ही अपना काम बनाना चाहते हैं और कुछ खलीफा का पार्ट पूरी तरह से निभा कर, अच्छी खातिरदारी कर देते हैं। पर सभी जगह एक बात समान रूप से पायी जाती है – कि जब तक फुटनोट और उपक्रमणिका के साथ आपकी अप्रकाशित आत्मकथा पूरी तौर पर न जान लें तब

तक आपके सिर पर सवार खड़े रहेंगे। जब कभी बहुत उदारता से भोजन के थाल के थाल मेरे सामने पेश किये जाते हैं, तो मैं समझ जाता हूँ कि मुझे क्या करना चाहिये। दीवार से तीन बार सिर टकरा कर, मैं गप्पों की परम्परा तैयार कर लेता हूँ और अपने भोजन की कीमत उन्हें सुना कर अदा करता हूँ। मैं 'टॉमी टंकर' का वंशज होने का दावा करता हूँ, जो गा बजा कर दाल रोटी कमाया करता था।"

चामर्स बोला, "मैं तो आपकी रामकहानी जानना नहीं चाहता। विश्वास रखिये, मुझे तो यूँ ही बैठे बैठे किसी अजनवी के साथ खाना खाने की धुन सवार हो गयी थी। मेरी जिज्ञासा से आपको बिल्कुल परेशान नहीं होना पड़ेगा।"

सूप पीते हुये मेहमान उत्साह से बोला, "कोई हर्ज नहीं, मुझे इसमें कोई परेशानी नहीं होती। किसी खलीफा के सामने तो मैं किसी लाल जिल्द वाली पूर्वीय पत्रिका से कम नहीं हूँ। दरअसल हम रैन बसेरा ढूँढ़ने वाले खानाबदोशों ने इस प्रकार के कार्यों के लिए अपने भाव भी बाँध रखे हैं। हम इतनी गिरावट तक कैसे पहुँचे, यह जानने की इच्छा सब को होती है। इसलिये हमने निश्चित भावों की तालिका बना रखी है। एक गिलास बीयर और एक सैण्डविच के बदले में मैं यह सुनाता हूँ कि मेरी यह दुर्दशा शराब के कारण हुई। माँस और गोभी का सालन और एक कप कॉफी के बदले में जो कहानी सुनाई जाती है, उसकी रूपरेखा इस प्रकार होती है—निर्दय मकान मालिक, छः महीने अस्पताल में बीमार और बेकारी! पेट भर भोजन और रात को सोने की व्यवस्था के लिए अठन्नी के बदले में, शेयर बज़ार में नुकसान, दिवाला और पतन की कहानी सुनानी पड़ती है। आज आपने जो खातिरदारी की है, इसका अनुभव जीवन में पहली बार हुआ है। उसके उपयुक्त कोई कहानी भी मेरे पास नहीं है। परन्तु मिस्टर चामर्स! यदि आप सुनना चाहें तो मैं आपको अपनी सच्ची रामकहानी सुना सकता हूँ। मेरा विश्वास है, कि गढ़ी हुई किसी भी कहानी से, इस कहानी पर विश्वास करना ज्यादा मुश्किल होगा।"

एक घण्टे बाद, आगन्तुक सन्तोष की साँस छोड़ कर, आराम से बैठ गया। फिलिप्स ने टेबल साफ कर के कॉफी और सिगार ला दी।

चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कराहट ला कर आगन्तुक ने पूछा, "आपने कभी शेरार्ड प्लूमर का नाम सुना है?"

चामर्स बोला, "हाँ नाम तो सुना है। शायद वह एक चित्रकार था, जिसकी कुछ वर्ष पहिले काफी ख्याति थी।"

मेहमान बोला, "हाँ, कोई पाँच वर्ष पहिले। परन्तु उसके बाद तो मैं ऐसा गिरा कि फिर सम्हल ही न पाया। वह शेरार्ड प्लूमर मैं ही हूँ। मैंने अपना आखिरी चित्र, दो हजार डालर में बेचा था। परन्तु उसके बाद तो मुझसे कोई मुफ्त में भी चित्र बनवाने को तैयार न हुआ।"

चामर्स यह पूछने का लोभ संवरण न कर सका, "क्यों? ऐसी क्या बात हो गयी?"

प्लूमर ने गम्भीरता से उत्तर दिया, "बात इतनी विचित्र थी कि मैं खुद भी समझ नहीं सका।" कुछ दिन तक तो चैन की बंसी बजी, बड़े बड़े लोगों से मुलाकात हो गयी और चित्रों की माँग दनादन बढ़ती गयी। अखबारों ने भी प्रशंसा के पुल बाँध दिये। परन्तु उसके बाद ही विचित्र बातें होने लगीं। जैसे ही मैं कोई चित्र पूरा करता, लोग उसे देखने आते और एक दूसरे की ओर देखते हुए, कानाफूसी करने लगते।

"जल्द ही मुझे इस रोग की जड़ मालूम पड़ गयी। अनजाने ही, जिन व्यक्तियों के मैं चित्र बनाता, उनके चेहरों पर, उनके हृदय के गुप्त भावों को अंकित करने की, मुझ में शक्ति आ गयी। मैं नहीं जानता कि ऐसा क्यों हुआ? वैसे तो मैं जैसा देखता था वैसा ही चित्रित करता था, परन्तु परिणाम कुछ और ही निकलता। मेरे कुछ ग्राहक तो इतने नाराज़ हुए कि उन्होंने अपने चित्र खरीदने से इन्कार कर दिया। एक बार मैंने एक अत्यन्त सुन्दर और प्रसिद्ध महिला का चित्र बनाया। पूरा होने पर महिला के पति बहुत देर तक तो उसे घूर घूर कर देखते रहे और अगले हफ्ते उन्होंने तलाक की दरखास्त दे दी।

"इसी तरह एक साहूकार का किस्सा भी मुझे याद है। मैंने एक बार उनका चित्र अपने स्टूडियो की प्रदर्शनी में लगा दिया। उनके किसी परिचित ने मुझसे आ कर पूछा, 'क्या वह सचमुच ऐसा दिखाई देता है?' मैंने उत्तर दिया, कि मैंने अपना काम ईमानदारी से किया है। इस पर वह महाशय बोले, 'परन्तु मैंने उसकी आँखों में ऐसे भाव तो कभी नहीं देखे। मैं फौरन उसकी पेढ़ी पर जाता हूँ और अपना रुपया छुड़ा कर किसी दूसरे बैंक में जमा करवा देता हूँ।' भागता हुआ वह साहूकार की

पेढ़ी पर पहुँचा परन्तु उसका रुपया और साहूकार दोनों गायब हो चुके थे।

"उसके बाद जल्द ही मेरी आजीविका बन्द हो गयी। लोग नहीं चाहते थे कि उनके गुप्त दुर्गुणों का दर्शन उनके चित्रों में हो। चेहरे पर बनावटी मुस्कराहट ला कर और मुँह मटकाकर वे किसी को भी धोखा दे सकते थे, परन्तु मेरे चित्रों से यह आशा रखना व्यर्थ था। इसके बाद मुझे एक भी तस्वीर बनाने का आर्डर नहीं मिला और मुझे काम बन्द करना पड़ा। कुछ दिनों तक मैंने एक अखबार में काम किया और फिर एक प्रेस में। परन्तु वहाँ भी वही परेशानी आ खड़ी हुई। यदि मैं किसी फोटोग्राफ को देख कर उसकी नकल बनाने की कोशिश करता तो मेरे बनाये हुए चित्र में कुछ ऐसी विशेषताएँ और भाव दिखाई देते कि जिनका फोटो में तो नामोनिशान भी दिखाई नहीं देता। परन्तु मेरा अन्दाज़ है कि उन व्यक्तियों में वे गुण अवश्य रहे होंगे। इससे ग्राहक झगड़ा करते, औरतें तो मेरा सिर फोड़ देने को उतारू हो जातीं और मेरी नौकरी चली जाती। गम गलत करने को मैंने शराब पीना शुरू कर दिया और जल्द ही गप्पें सुना कर पेट भरने और खानाबदोशों की कतार में खड़े हो कर आसरा ढूँढ़ने की नौबत आ गयी। खलीफा साहब, मेरी आपबीती सुन कर आप ऊब तो नहीं गये? आप चाहें तो मैं शेयर बजार वाली दिलचस्प कहानी भी सुना सकता हूँ पर उसके लिए आँखों में आँसू लाने की ज़रूरत पड़ेगी जो इतना बढ़िया खाना खाने के बाद सम्भव नहीं।"

चामर्स उत्साह से बोला, "नहीं, नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं। मैं आपकी बात दिलचस्पी से सुन रहा हूँ। आपके बनाये हुए हर चित्र में, ये अप्रिय भाव दिखाई देते थे या कुछ चित्र आपकी तूलिका की करामात से बच भी जाते थे?"

प्लूमर बोला, "कुछ क्यों, कई बच्चों के चित्रों में तो यह बात अक्सर दिखाई नहीं देती थी और बहुत सी औरतें और पुरुष भी इससे बच जाते थे। आप जानते हैं—हर आदमी तो बुरा नहीं होता। जब उनके मन में कोई मैल नहीं होता था तो मेरे चित्रों में भी उसकी झलक नहीं आ पाती थी। ऐसा क्यों और कैसे होता था, इसकी मीमांसा तो मैं नहीं कर सकता, परन्तु ऐसा होता जरूर था।"

विदेशी डाक से आया हुआ वह फोटो चामर्स की टेबल पर अब तक यों ही पड़ा था। दस मिनट बाद उसने प्लूमर से रंगीन खड़िया द्वारा उसकी नकल करने को कहा। कोई एक घण्टे बाद कलाकार अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और उसने अँगड़ाई ली। जम्हाई लेता हुआ वह बोला, "काम पूरा हो गया। माफ करना, मुझे बहुत देर लग गयी, पर काम बहुत दिलचस्प रहा। कल रात भी बिस्तर नसीब नहीं हुआ और आज तो मैं इतना थक गया हूँ कि अब आज्ञा चाहता हूँ। अच्छा, गरीब-नवाज, खलीफा साहब, नमस्ते।"

चामर्स उसे बाहर के दरवाजे तक छोड़ने गया। जाते समय उसने उसके हाथ में कुछ नोट थमा दिये।

प्लूमर बोला, "वाह वाह, मुझे इनकी जरूरत भी थी। इसके लिए और बढ़िया भोजन के लिए, बार बार धन्यवाद। आज की रात तो मैं फूलों की सेज पर सो कर बगदाद के स्वप्न देखूँगा। मुझे आशा है कि सुबह उठने के बाद, आज रात की घटनाएँ कहीं ख्वाब की बातें न मालूम हों। अच्छा, जनाब खलीफा साहब, फिर एक बार सलाम।"

चामर्स फिर कालीन पर चक्कर काटने लगा। कमरे के दायरे में उस टेबल पर वह बार बार जाता, जिस पर प्लूमर द्वारा बनाया हुआ चित्र रखा था। दो तीन बार, उसने पास जा कर चित्र को देखने की कोशिश की पर असफल रहा। चित्र के नीले और सुनहरे और भूरे रंगों की आभा तो उसने देखी, परन्तु उसके हृदय की आशंका ने चित्र के चारों ओर मानो ऐसी दीवारें खड़ी कर दी थीं जो उसे दूर ही रोक देती थीं। वह बैठ कर स्वस्थ होने की कोशिश करने लगा। सहसा उसने घण्टी बजा कर फिलिप्स को बुलाया।

"इसी मकान में रीहनमैन नामक एक कलाकार रहता है। क्या तुम उसके कमरे का नम्बर जानते हो?"

फिलिप्स बोला, "हाँ साहब, वह सबसे ऊपर की मंजिल पर, पहले ही कमरे में रहता है।"

"उनसे जाकर कहो कि दो चार मिनट के लिए नीचे आने की कृपा करें।"

तुरन्त ही रीहनमैन नीचे आ गया। अपना परिचय दे कर चामर्स बोला, "मिस्टर रीहनमैन, सामने के टेबल पर खड़िया से बनाया हुआ एक

चित्र पड़ा है । यदि आप उसे देख कर, उसके कलात्मक गुण-दोषों के विषय में अपनी राय दे सकें, तो बड़ी कृपा होगी।"

नौजवान कलाकार टेबल के पास गया और चित्र को उठा कर देख लगा । चामर्स पीठ फेर कर एक कुर्सी पर झुका हुआ खड़ा रहा । अन्त में उसने पूछा, "कहिये, आपकी क्या राय है?"

कलाकार बोला, "इसकी जितनी प्रशंसा की जाय, कम है। यह सचमुच किसी कलागुरु की कृति मालूम पड़ती है, जिसकी हर रेखा स्पष्ट, मोहक और खरी है! बड़े आश्चर्य की बात है कि खड़िया का इतना सुन्दर चित्र मुझे इन वर्षों में देखने को नहीं मिला!"

"नहीं भाई, मैं जानना चाहता हूँ कि जिस व्यक्ति का यह चित्र है उसके चेहरे के बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं?"

रीहनमैन बोला, "यह चेहरा? यह तो किसी देवी का ही हो सकता है। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि यह कौन ......."

"मेरी पत्नी!"

चामर्स चिल्लाया और उसने उस आश्चर्यचकित कलाकार को आलिंगन में कस के, उसका हाथ झकझोरते हुए उसकी पीठ थपथपायी।

"मेरे दोस्त वह मेरी पत्नी है, जो इस समय यूरोप की यात्रा कर रही है। यह खड़िया का चित्र ले जाओ और इसके आधार पर एक ऐसा चित्र बनाओ, जो तुम्हारे जीवन का सब से महान चित्र हो। मैं तुम्हें मुँहमाँगा मूल्य दूँगा।"

# लालपरी की शान में एक रुबाई

इस कहानी का निर्देश, "शराबबन्दी के भाषण" और "मधुशाला के निमंत्रण" के बीच कहीं भी हो सकता है। "मधुशाला का निमंत्रण" इसलिए, कि शराब ही कहानी का प्रधान विषय है, जिसकी तो नदियाँ

बहेंगी और 'शराब बन्दी का भाषण' इसलिए कि पियक्कड़ों के दर्शन नहीं होंगे।

बाब वेविट आजकल 'खुश्क' था! इसका मतलब रंगीलों के शब्द-कोश में यह होता है कि उसने शराब पीना छोड़ दिया था और आजकल वह पानी पी कर जिन्दा रहता था। सुधारकों द्वारा 'राक्षसी सुरा' कहलायी जाने वाली लाल परी से बाब के एकाएक मुख मोड़ लेने का कारण, सुधारकों और कलालों दोनों के लिए दिलचस्प होगा।

जो आदमी नशा उतरने के बाद यह कबूल नहीं करता कि उसे कभी नशा चढ़ा था, उसको सुधारने की तो कुछ उम्मीद भी है। परन्तु जो मनुष्य शब्दों के जादूगर की तरह यह कहता फिरे कि कल रात तो मैं सातवें आसमान पर था, उसे सुधारने के लिए दवा से ज्यादा दुआ की जरूरत है।

एक दिन शाम को घर लौटते समय, बाब, ब्राडवे के एक ऐसे मयखाने में जा पहुँचा, जो उसे बहुत पसन्द था। आसपास के दफ्तरों में काम करने वाले, दो चार जान पहचान के लोग भी उसे वहाँ अक्सर मिल जाया करते थे। इसके बाद शराब और गपशप के दौर चलते और खाने के लिए घर पहुँचने में उसे अक्सर देर हो जाया करती। इस समय उसकी नज़रों में स्टेण्डर्ड आयल कम्पनी भी तुच्छ दिखाई देती। आज वह जैसे ही अन्दर घुसा, उसे सुनाई पड़ा, "कल रात को तो वेविट पी कर धुत् हो गया था।"

वेविट ने आगे बढ़कर शीशे में अपना मुँह देखा। उसका चेहरा खड़िया की तरह सफेद, फक पड़ा हुआ था। आज पहली बार, उसे सचाई के दर्शन हुए। उसके मित्रों ने झूठ बोला था, और उसने खुद भी अपनी प्रवंचना की थी। वह माने या न माने, इसमें कोई शक नहीं कि वह पक्का पियक्कड़ था। जिसको उसने एक मधुर और उत्साहवर्धक चीज़ माना था, वही एक जानलेवा नशा प्रमाणित हुई। जिसे उसने हाज़िरजवाबी माना था, वह एक शराबी की बकवास थी और जिसे वह हँसीमज़ाक समझता था, वह एक पियक्कड़ की धमाचौकड़ी थी। परन्तु अब कान पकड़ लिया!

उसने कलाल से कहा, "एक गिलास सोडा।"

उसके मित्रों पर, जो उसका साथ देने की राह देख रहे थे, एक खामोशी छा गयी।

उनमें से एक ने नम्रता से पूछा, "क्यों बाब, क्या तौबा कर ली ?" उसके स्वर में एक ऐसी औपचारिकता थी, जो अक्सर शराबियों में नहीं पायी जाती।

बाबी ने स्वीकारात्मक उत्तर दिया।

साथ में बैठे हुए किसी व्यक्ति ने अधूरी छोड़ी गयी कहानी का सूत्र पकड़ा और आगे कहना शुरू किया। कलाल ने कुछ सिक्के, गल्ले में डाल कर रेज़गारी गिनना शुरू किया और बाब वहाँ से चल पड़ा।

बाब घरबारी था और उसकी शादी हो चुकी थी। लेकिन यह एक दूसरी कहानी है और मैं वही कहानी कहूँगा जिससे आप 'अच्छी आदत और बुरी कहानी' वाले फिकरे की चरितार्थता समझ सकें।

यह किस्सा सुलीवान प्रदेश से शुरू हुआ, जहाँ से कई नदियों और कई तकलीफों का जन्म होता है। जुलाई का महीना था और पहाड़ों के किसी होटल में 'जेसी' गर्मियाँ बिताने के लिए ठहरी हुई थी। बाब ने अभी अभी कालेज की शिक्षा समाप्त की थी। उसने जेसी को देखा और सितम्बर में उनका विवाह हो गया। यही इस कथा का सार है—एक घूँट पानी पीकर इसे दवाई की तरह गुटक सकते हैं।

लेकिन वे जुलाई के दिन!

अब इस विस्मय के चिन्ह को ही समझाने दीजिये—मैं बीच में नहीं बोलूँगा। अधिक जानकारी के लिए पढ़िये—'रोमियो जूलियट' और अब्राहम लिंकन का "तुम कुछ लोगों को बेवकूफ बना सकते हो" के विषय में रोमांचकारी गीत, अथवा डारविन का कोई ग्रन्थ !

लेकिन आपको एक बात बता देता हूँ। वे दोनों ही उमर खैयाम की रुबाइयों पर फिदा थे। उस बूढ़े स्पष्टवादी का एक एक छन्द उन्हें कण्ठस्थ था; तरतीबवार तो नहीं, पर जैसे किसी होटल के सस्ते खाने में से हम चुन चुन कर कुकुरमुत्ता निकालते हैं, उसी प्रकार उन्होंने इधर उधर से चुन चुन कर कुछ रुबाइयाँ याद कर रखीं थी। सुलीवान प्रदेश पहाड़ों और पेड़ों से भरा हुआ है; और जेसी भी उन पर बैठा करती थी—मेरा मतलब है—पहाडों पर! बाब उसके पीछे खड़ा हो कर, उसके कन्धों पर से अपने हाथ ले जाकर, उसके हाथ अपने हाथों से पकड़े रखता। उसका चेहरा जेसी के चेहरे से सटा होता और वे दोनों, उस बूढ़े तम्बू बनाने वाले की रुबाइयों को दुहराते रहते! उन दिनों,

वे उन रुबाइयों के दार्शनिक तत्व और काव्य सौन्दर्य को ही देख पाते थे। वे मानते थे कि शराब तो एक रूपक है जो किसी अलौकिक वस्तु—प्रेम या जीवन को व्यक्त करता है। जो भी हो, उन्होंने उस समय तक उस शराब का स्वाद नहीं चखा था जो साठ सैंट वाले सस्ते होटलों में मिलता है।

हाँ, तो मैं क्या कह रहा था? अच्छा, उन्होंने शादी कर ली और वे न्यूयार्क आ गये। बाब के पास कालिज की डिग्री थी, इसलिए उसे पन्द्रह डालर प्रति सप्ताह पर एक वकील के दफ्तर में क्लर्की मिल गयी। दो वर्ष समाप्त होते होते, उसे पचास डालर मिलने लगे और उसने पहली बार इस स्वच्छन्द रस का स्वाद चख लिया।

उनके पास दो सजे हुए कमरे और एक रसोईघर था। गाँवों की सुन्दर और हरीभरी पृष्ठभूमि से परिचित, जेसी के लिए तो शराब शक्कर और मसाले सी लज्जतदार थी। उसने अपने कमरे की दीवारों पर मछली पकड़ने के जाल लटका लिये, एक टूटीफूटी आलमारी ले आयी और बैंजो बजाना सीख लिया। हफ्ते में दो तीन बार वे उन फ्रैंच और इटालियन होटलों में खाना खा आते, जहाँ धुँए से दम घुटता है, जहाँ हर कोई शेखी बघारता है और अधिकांश के बाल बिना छँटे ही होते हैं। जरा मस्ती लाने के लिए जेसी ने शराब पीना सीख लिया। घर पर भोजन करने के बाद वह एकाध सिगार पीने लगी। उसने 'केआराटी' शराब का उच्चारण भी सीख लिया और वेटर को टिप देने लगी। एक बार एक भीड़ के सामने उसने ला, ला, ला, गाना शुरू किया, लेकिन दो अक्षरों तक ही कह सकी। होटलों में खाते समय उनकी मुलाकात एक दो परिवारों से भी हो गयी और वे उनके मित्र बन गये। उसकी आलमारी में चुरपुन और सुगन्धवाली शराब भरी रहने लगी। वे अपने नये नये दोस्तों को खाने पर बुलाते और रात के एक बजे तक बिना बात हँसते रहते। एक बार नीचे वाले कमरे की छत का चूना भी गिर पड़ा और बाब को उसके लिए साढ़े चार डालर चुकाने पड़े। इस प्रकर वे उस सीमा प्रदेश के दुर्गम स्थानों पर मजे करते रहे जहाँ न कोई शासन है न कोई सीमा।

जल्दी ही बाब पियक्कड़ों का दोस्त हो गया और दोपहर को घर लौटने से पहले, करीब घंटे भर शराबखाने में बिताता। शराब से उसमें उमंग चढ़ जाती और खोञ्चा लगानेवाले लड़के की तरह खुशखुश

घर लौटता। जेसी, उसे दरवाजे में ही मिल जाती और दोनों एक दूसरे का अभिवादन करने के लिए अपने फर्श पर पागलों की तरह कोई नाच नाचने लगते। एक बार नाचते समय जब बाब का पैर उच्चट कर एक स्टूल से उलझ गया तो उसके सिर के बल गिरने पर जेसी इतनी हँसी कि बाब को उस पर पलंग के सारे तकिये फेंक कर खामोश करना पड़ा।

इस प्रकार उसकी जिन्दगी चलती रही जब कि एक दिन वह भी आया जब बाबी वेबिट को इसका असर महसूस हुआ।

पर छोड़िये, हम अपनी कहानी जारी रखें।

उस शाम जब बाब घर लौटा तो उसने जेसी को एक लम्बा झब्बा पहने हुए एक केंकड़े को काटते पाया। सामान्यतः जब मयखाने में अपना समय बिता कर, मस्त झूमता बाब घर आता तो उसका प्रसन्नतापूर्वक स्वागत किया जाता यद्यपि उसमें भी शराब की गन्ध मिली रहती।

चीखों से या गीतों की एक दो कड़ियों से अथवा गृहस्थी के आनन्द को प्रदर्शित करनेवाले कुछ विशिष्ट शब्दों द्वारा उसका आगमन घोषित किया जाता। नीचे के बड़े कमरे में रहने वाली बुढ़िया, सीढ़ियों पर बाब द्वारा पैर रखते ही, अपने कानों में रूई ठूँस लेती। पहले पहले कई दिनों तक तो जेसी इन अलौकिक अभिवादनों के रूखेपन और चटपटेपन से दूर रही, पर धीरे धीरे ज्यों ज्यों इस झूठी स्वच्छन्दता का धुँवा उसे अभिभूत करने लगा, त्यों-त्यों वह इन्हें प्रेम के सच्चे और सही अभिवादन मानने लगी।

आज बाब चुपचाप घर आया। उसने मुस्करा कर जेसी को धीमे से चूमा और एक अखबार ले कर पढ़ने बैठ गया। नीचे के बड़े कमरे में रहने वाली बुढ़िया चिंतित हो कर अपने कानों में रूई ठूँसते ठूँसते रह गयी।

जेसी ने अपने हाथ का चाकू और केंकड़ा डाल दिया और चौकन्नी आँखों से वह उसकी ओर भाग कर आयी।

"क्या बात है बाब, तुम्हारी तबियत तो ठीक है?"

"हाँ, बिल्कुल!"

"तो फिर आज तुम्हें हुआ क्या है?"

"कुछ भी तो नहीं।"

ध्यान देकर सुनना, भाइयों! जब कभी तुम्हारे रंग ढंग में परिवर्तन देख कर, वह औरत, जिसे सब कुछ पूछने का अधिकार है, अगर तुम्हारे बारे में

कुछ पूछ बैठे, तो उसे इस प्रकार जवाब देना; उसे कहना कि तुमने एका-एक गुस्सा आ जाने के कारण अपनी दादी की हत्या कर दी है; उसे बताना कि तुमने आज किसी अनाथ को लूट लिया है और इसलिए पश्चाताप कर रहे हो; उसे कहना कि तुम्हारा दिवाला निकल गया है; कि तुम्हारे दुश्मन पीछे पड़े हुए हैं; कि तुम्हारे पैर में सूजन आ गयी है; कि तुम्हारी तकदीर खराब है; परन्तु अगर तुम, अपने सुख और शांति की एक तिलभर भी परवाह करते हो तो कभी "कुछ नहीं" कह कर जवाब मत देना।

जेसी, चुपचाप अपने केंकड़े को काटने चली गयी। उसने बाब की ओर सन्देह भरी दृष्टि से देखा। उसने वैसा व्यवहार पहले कभी नहीं किया था।

जब टेबल पर शाम का खाना लगाया गया तो जेसी ने शराब की एक बोतल और दो गिलास भी सजा दिये। पर बाब ने अस्वीकार कर दिया। वह बोला, "सच्ची बात यह है जेस, कि मैंने शराब पीना छोड़ दिया है। फिर भी, तुम पी सकती हो। अगर तुम्हें एतराज न हो, तो मैं सीधा सादा सोडा ले लूँ!"

उसकी तरफ बिना मुस्काराये, घूरती हुई वह बोली, "क्या कहा? तुमने पीना छोड़ दिया? किसलिए?"

बाब बोला, "उससे मुझे कोई फायदा नहीं होता था। क्या तुम्हें यह बात अच्छी नहीं लगी?"

जेसी ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं और एक कन्धा उचका लिया। बनावटी मुस्कराहट के साथ उसने कहा, "बिल्कुल। मैं भी अपने शुद्ध अन्तःकरण से किसी को दारू या बीड़ी पीने के लिए, या रविवार को सीटी बजाने के लिए, सलाह नहीं दे सकती।"

लगभग बिना किसी बातचीत के गुमसुम खाना समाप्त हो गया। बाब ने बात करने की कोशिश की पर और दिनों की तरह उसकी बात में जान नहीं थी। वह दयनीय हो उठा। एक दो बार उसकी नज़र, बोतल पर टिक गयी, पर हर बार उसके शराबी मित्र का ताना उसके कानों में गूँज उठता और उसका मुँह कठोर हो जाता।

इस परिवर्तन का जेसी पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसे लगा कि एकाएक जैसे उनके जीवन का सार विदा हो गया है। बोतल का ढक्कन खोलते समय जो बेचैनी और उन्माद, जो झूठी प्रफुल्लता, और अप्राकृतिक स्वच्छ-न्दता की जो उत्तेजना होती थी, वह सहसा चली गयी मालूम होती थी।

उदासीन बाब की ओर उसने जिज्ञासा और निरुपाय नज़रों से देखा। बाब किसी बीवी को मारने वाले पति या अत्याचारी की तरह दिखता था।

खाने के बाद, हब्शी नौकरानी हमेशा की तरह बर्तन साफ करने के लिये आयी। एक अजीब अदा से जेसी शराब की बोतल, कुछ ग्लास और बर्फ के टुकड़े रखने का एक बर्तन ले आयी और उन्हें टेबल पर सजा दिया।

अपने स्वर में बर्फ सी कठोर सर्दी ढाल कर उसने कहा, "क्या मैं पूछ सकती हूँ कि, आपके अनायास अच्छेपन के दौरे में क्या मुझे भी शरीक होना पड़ेगा? अगर नहीं, तो मैं तो अपने लिए ढाल लूँ। न जाने क्यों, आज कुछ ज्यादा ठंड है!"

बाब ने खुश होकर कहा, "ओह जेस, मेरे साथ इतनी रुखाई मत दिखाओ। तुम तो पियो। तुम्हारे ज्यादा पी कर धुत होने का कोई खतरा नहीं है। यह डर तो मुझे था और इसीलिए मैंने छोड़ दिया। तुम पियो और बाद में बैंजो निकालना, नयी धुन बजायेंगे।"

किसी दैवी आदेश के समान जेसी ने कहा, "मैंने सुना है कि सिर्फ पीना ही हानिकारक आदत है। कुछ भी हो, मैं आज बैंजो नहीं बजा सकती। अगर हमें सुधरना है तो बैंजो बजाने की बुरी आदत भी छोड़नी पड़ेगी।"

उसने एक किताब उठायी और टेबल की दूसरी तरफ अपनी आराम कुर्सी में पढ़ने बैठ गया। आधे घण्टे तक उनमें से कोई नहीं बोला।

उसके बाद बाब ने अपना अखबार रख दिया और एक अजीब अदा से उसकी कुर्सी के पीछे जा कर खड़ा हो गया। उसके कन्धों पर से अपने हाथ निकाल कर उसने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये और उसके चेहरे से अपना चेहरा सटा लिया।

एक क्षण में ही जेसी की आँखों के सामने से जाल लटकायी हुई कमरे की दीवारें अन्तर्ध्यान हो गयीं और उसकी जगह सुलीवान प्रदेश की पहाड़ियाँ दिखाई देने लगीं। ज्योंही बाब ने बूढ़े खैयाम की रुबाई पढ़ना शुरू किया, उसे लगा कि उसके हाथों में पड़े, जेसी के हाथ सिहर उठे।

"आओ, प्याला भरो, बहारों को सिंगारो।
सर्दी की पश्चातापों के वस्त्र उतारो।
अरे, समय के उड़ जाने में देर कहाँ है!
वह, पंछी सा अपनी पाँखें खोल रहा है!"

इसके बाद वह टेबल के पास गया और एक ग्लास में शराब ढाल कर ले आया।

लेकिन उसी क्षण, न जाने कैसे, पहाड़ों की ठंडी हवा का एक झोंका कमरे में घुस आया और उसने उस झूठी स्वच्छन्दता के कुहरे को छिन्न भिन्न कर दिया।

जेसी उछली और अपने हाथ के एक झटके से उसने बोतल और ग्लास को टेबल के नीचे गिरा कर चूर चूर कर दिया। हाथ का वही अन्दाज़, उसके हाथ को बाब के गले के चारों ओर ले गया। उसने अपने साथी को बाँहों में कस लिया।

"ओह बाबी, यह रुबाई नहीं! हे भगवान, अब समझ में आया। मैं ऐसी बेवकूफ हमेशा तो नहीं थी? वह दूसरी रुबाई—वह, जिसमें कहा है—'और इसे मनमाना फिर से'—वह सुनाओ बाब—"और इसे मनमाना —"

बाब बोला, "हाँ, हाँ, मुझे वह भी याद है। कहा है —"

"ओ प्यारे, क्या तुम मैं दोनों,
उससे साज़िश कर सकते हैं!
उससे निर्मित दुख दर्दों की,
इस रचना को धर सकते हैं?
टुकड़े टुकड़े इस दुनिया के,
हम दोनों कर... "

जेसी, बीच ही में बोल उठी, "इसे मुझे पूरा करने दो।"

"टुकड़े टुकड़े इस दुनिया के
हम दोनों कर, क्यों न फेंक दें!
और इसे मनमाना फिर से,
क्या न किसी दिन घड़ सकते हैं?"

बाब ने अपने पैरों के नीचे पड़े काँच के टुकड़ों को कुचलते हुए कहा, "इसके तो टुकड़े टुकड़े हो चुके हैं।"

नीचे किसी गहराई में मालकिन श्रीमती पिकन्स के सधे हुए कानों ने इस तोड़फोड़ की ध्वनि पहचान ली।

उसने कहा, "यह वही जँगली मिस्टर बाबिट है। फिर धुत होकर घर आया है और तोड़-फोड़ कर रहा है। और उसकी बहू तो देखो, बिचारी कितनी अच्छी है!"

## धन्यवाद दिवस

साल में एक दिन ऐसा होता है जो हमारा अपना है। उस एक दिन हम सब अमरीकावासी, जिन्होंने अपना भाग्य स्वयं अपने हाथों नहीं गढ़ा है, बिस्किट खाने के लिए अपने पुराने घर में जाते हैं और आश्चर्य करते हैं कि वह पुराना पम्प, महराब के कितना नजदीक दिखाई पड़ने लग गया है! भला हो इस दिन का! राष्ट्रपति रूजवैल्ट ने यह दिन हमें दिया है। हम 'प्यूरिटन' लोगों की बातें सुनते हैं, पर हमें याद नहीं कि वे कौन थे। मैं शर्त लगाता हूँ कि अगर वे फिर से यहाँ पाँव रखें तो हम उन्हें पीट दें। प्लाइमाउथ रॉक? यह नाम अधिक परिचित लगता है! जब से टर्की ट्रस्ट ने अपना काम शुरू किया, हममें से कइयों को मुर्गियों पर उतर आना पड़ा। लेकिन वाशिंगटन से कोई न कोई इस धन्यवाद दान की घोषणा का पूर्व समाचार उनको चुपचाप जरूर दे रहा है।

गुलाब की झाड़ियों के दलदल के पूर्व वाले बड़े शहर ने तो इस धन्यवाद दिवस को एक प्रथा सा बना लिया है। नवम्बर का आखरी गुरूवार ही एकमात्र वह दिन है, जब समुद्र के इस पार बसे हुए अमरीका का महत्व प्रकट होता है। यह एक दिन ऐसा है जो अमरीकन है। हाँ, त्यौहार का दिन – सिर्फ अमरीकन।

और अब लीजिये वह कहानी जो सिद्ध कर देगी कि महासागर के इस पार वाले देश में भी, साहस और अध्यवसाय की कृपा से, कुछ परम्पराएँ हैं जो इंगलैण्ड की परम्पराओं से भी अधिक तेजी से पुरानी और मजबूत पड़ रही हैं।

यूनियन स्क्वेयर में अगर आप पूरब की तरफ से घुसें तो फव्वारे के सामने वाले रास्ते की दाहिनी ओर वाली तीसरी बैंच पर स्टफी पीट अपनी जगह पर बैठा मिलेगा। पिछले नौ वर्षों से हर धन्यवाद दिवस पर ठीक एक बजे वह इसी स्थान पर बैठा मिलता है। हर बार उसमें वही बीतती है—ऐसी बातें जिनका उल्लेख चार्ल्स डिकन्स की रचनाओं में मिलता है और जिनसे उसका सीना और पेट दोनों फूल उठते।

पर आज अपने सालाना नियत स्थान पर बैठा हुआ स्टफी पीट ऐसा लगता था मानो आज वह केवल अपनी आदत के फलस्वरूप ही वहाँ आया हो, न कि हर साल की तरह भूख के कारण जैसा कि दानी मानी लोग बहुत दिनों के बाद कभी-कभी इन गरीबों पर दया करते समय सोचते हैं।

निश्चय ही, पीट आज भूखा नहीं था। वह एक दावत में से इतना खा कर आया था कि उसमें सिर्फ साँस लेने और चलने फिरने की शक्ति ही शेष रह गयी थी। उसकी छोटी छोटी दो आँखें ऐसी दिखाई देती थीं मानों माँस के रसे से सने सिरमिट के फूले हुए चेहरे पर दो बेर ऊपर से चिपका दिये गये हों। उसका साँस रुक रुक कर बज उठता था; उसकी हिचकी के नीचे गले के पास लटकने वाले माँस के कारण, ऊँचे उठाये हुए कोट के कालर की शोभा घट गयी थी। ममतामयी समाज सेविकाओं द्वारा, एक हफ्ते पहिले उसके कोट के ऊपर जो बटन लगाये गये थे, वे भुट्टों की तरह उछल कर उसके चारों ओर जमीन पर बिखरे पड़े थे। उसके कपड़े फटे हुए थे और उसके कमीज के आगे का भाग पसलियों तक खुला था। लेकिन बर्फ के कण लिये हुए नवम्बर की ठंडी हवा भी उसके लिए सुखद शीतलता ला रही थी क्योंकि उसका पेट दावत से गले तक भरा हुआ था—और खाने की भी कोई हद होती है! आरम्भ में ओयस्टर और अन्त में पुडिंग के बीच उसे तो ऐसा मालूम दिया था मानो दुनिया भर के आलू और तीतर और मुर्गियाँ, कचौड़ियाँ और आइसक्रीम उसी के पेट में समा गये हों। इस समय तो वह गले तक भरा, दुनिया को तुच्छ मान रहा था। पेट में पड़ जाने पर दूर की सूझती भी है।

दावत अप्रत्याशित रूप से ही मिल गयी थी। वह पाँचवी सड़क के मोड़ से एक लाल ईंटों के मकान के सामने से जा रहा था, जिसमें परम्परा की भक्त, दो वृद्धाएँ रहती थीं। उनकी नज़र में न्यूयार्क की कोई हस्ती नहीं थी। वे तो ऐसा मानती थीं

कि धन्यवाद-दिवस की उत्पत्ति ही केवल वाशिंगटन चौक के निवासियों के लिए हुई है। उनकी परम्परागत आदतों में से एक यह भी थी कि मकान के पिछवाड़े के दरवाज़े पर एक नौकर को यह सूचना दे कर बिठा दिया जाता कि दोपहर के बारह बजे बाद जो भी कोई भूखा व्यक्ति वहाँ से गुजरे, उसे अन्दर ले आया जाय। उसके बाद उसे भरपेट भोजन कराया जाता। स्टफी पीट पार्क में जाते समय आज संयोग से इसी रास्ते पर निकला और नौकर ने उसे पकड़ कर उस मकान की पुरानी प्रथा का पालन किया।

पार्क में पहुँच कर स्टफी पीट कोई दस मिनट तक तो सामने देखता रहा; परन्तु फिर उसे नजर फेरने की इच्छा हुई। बड़े कष्ट से बाँयी ओर सिर घुमाया। भय से उसकी आँखें फैल गयीं और उसका दम घुटने लगा। उसके पाँव मानो मन मन भर के हो कर लड़खड़ाने लगे क्योंकि चौथी सड़क से एक वृद्ध महाशय सीधे उसी की बैंच की ओर आ रहे थे।

पिछले नौ वर्ष से, हर धन्यवाद दिवस पर, इन वृद्ध महाशय ने पीट को इसी बैंच पर पड़ा पाया था। वृद्ध इस घटना की परम्परा निर्माण करना चाहते थे। इसीलिए पिछले नौ वर्षों से आज के दिन स्टफी पीट को किसी शानदार होटल में ले जा कर बढ़िया खाना खिलाया करते थे। इंगलैण्ड में तो ऐसी बातें लोग सहज ही कर दिया करते हैं परन्तु इस देश का इतिहास अभी बहुत पुराना नहीं है, और नौ वर्ष की परम्परा भी कोई बुरी नहीं। ये वृद्ध महाशय एक पक्के अमरीकन थे—कट्टर देशभक्त! और इस देश में परम्पराओं का निर्माण करने वालों का अपने आप को अगुआ मानते थे। किसी भी रिवाज की गणना, आकर्षक परम्पराओं में करवाने के लिए यह आवश्यक होता है कि हम उस बात को बीमा के साप्ताहिक प्रीमियम इकट्ठा करने, या सड़कें साफ रखने की तरह, विना किसी तरह की ढील दिये, लगातार करते जाँय।

वृद्ध महाशय शान से सीधे उसी संस्थान के पास आये जिसे वे पाल रहे थे। यह सच है कि स्टफी पीट को साल में एक दिन खाना खिलाने में राष्ट्रीयता का कोई महत्व नहीं है जैसा कि इंगलैण्ड में 'मेगना कार्टा' का अथवा नाश्ते के साथ मुरब्बा खाने का। लेकिन यह भी तरीका है बहुत कुछ सामंती इससे भी, कम से कम, यह तो पता चलता है कि न्यूया...। माफ करना, अमरीका में भी रिवाज चलाना असम्भव नहीं है!

वृद्ध महाशय कोई साठ साल के, दुबले, लम्बे व्यक्ति थे। उनके कपड़े काले थे और उन्होंने एक पुराने ढंग का चश्मा धारण कर रखा था जो नाक पर नहीं टिकता। उनके केश, पिछले वर्ष की अपेक्षा अधिक सफेद और कम थे। वे अपनी लम्बी और गँठीली छड़ी का अधिक उपयोग करने लगे थे जिसका हत्था मुड़ा हुआ था।

इस माने हुए शुभचिन्तक को देखते ही स्टफी को रोमाञ्च हो आया और वह आवारा कुत्ते को देख कर काँपने वाले किसी मोटे ताजे पालतू पिल्ले की तरह घिघियाने लगा। वैसे तो वह भाग भी जाता, परन्तु आज तो किसी भीम की शक्ति भी उसे इस बैंच से हिला नहीं सकती थी। उन बुढ़ियाओं के भोजन ने अपना असर जमा लिया था।

वृद्ध महाशय बोले, "नमस्कार! मुझे इस बात से खुशी है कि साल भर की सरदी-गरमी के बावजूद भी तुम इस सुन्दर संसार में विचरने को बचे हुए हो। आज का दिन इसी बात के लिए प्रकृति को धन्यवाद देने के लिए बनाया गया है। मेरे दोस्त! यदि तुम मेरे साथ चलो तो मैं तुम्हें ऐसा खाना खिलाऊँ कि जिससे तुम्हारे पेट को भी उतनी ही तृप्ति मिले, जितनी तुम्हारे दिमाग को।"

पिछले नौ वर्ष से आज के दिन वृद्ध महाशय इन्हीं शब्दों को दुहराते थे। अब तो ये शब्द भी उस परम्परा का अंग बन गये थे। आज से पहले ये शब्द स्टफी के कानों को संगीत जैसे मधुर लगते थे, परन्तु आज वृद्ध महाशय के चेहरे की ओर देखते समय उसकी आँखें पीड़ा की आशंका से भर उठीं। उसके पसीने से भरे ललाट पर पड़ने वाले तुषार बिन्दु, गर्म तवे पर पड़ी पानी की बूँद की भाँति जलने लगे। दूसरी ओर, वृद्ध महाशय सर्दी से काँप रहे थे। ठंडी हवा से अपनी रक्षा करने के लिए उन्होंने अपनी पीठ फेर ली।

स्टफी को हमेशा आश्चर्य होता था कि वृद्ध महाशय, अपने परम्परागत शब्दों को कुछ खिन्नता से क्यों बोलते हैं! उसे यह मालूम नहीं था कि उनके मन में उत्तराधिकारी पुत्र की इच्छा कितनी बलवती थी। वे यह चाहते थे कि उनके बाद उनका कोई शक्तिशाली वारिस, गर्व से खड़ा हो कर, स्टफी के किसी वंशज से कह सके, "मेरे स्वर्गवासी पिता की याद में।" परम्परा का पूर्ण निर्वाह तो तभी हो सकता था!

परन्तु इन वृद्ध महाशय के कोई रिश्तेदार नहीं था। बाग के पूर्वी ओर की तंग गलियों के टूटे-फूटे मकानों में एक कमरा किराये पर ले कर वे रहते थे। सर्दियों में किसी छोटे मोटे जहाज के कद की अपनी वाड़ी में वे बागवानी करते; वसन्त में वे घूमते फिरते और गर्मियों में न्यूजर्सी की पहाड़ियों में स्थित छोटे-से देहाती मकान में जा रहते। इन दिनों बेंत की आरामकुर्सी पर बैठे हुए वे तितलियों की चर्चा करते रहते और किसी दिन दुनिया की सब से अजीब तितली पकड़ने की धुन में समय बिता देते। पतझड़ का आगमन होते ही वे स्टफी को भोजन कराते। उनका यही वार्षिक कार्यक्रम था।

उनकी ओर कोई आधे मिनट तक देखता हुआ स्टफी पीट अपनी दयनीय दशा पर सिहर उठा। वृद्ध की आँखें दान की आभा से चमक रही थीं। हर वर्ष उनके चेहरे पर झुर्रियों की संख्या तो कुछ बढ़ जाती थीं, परन्तु उनकी काली नकटाई हमेशा की तरह भड़कीली, उनके कपड़े उतने ही साफ-सुथरे और सुन्दर, और उनकी मूँछें हमेशा की तरह रौबदार ढंग से ऐंठीं हुई दिखाई देती थीं। स्टफी के मुँह से उबलते हुए मटर के दानों की सी फुसफुसाहट सुनाई दी। उसके बोलने का यही ढंग था और चूँकि वृद्ध महाशय इसी तरह की आवाज़ आज से पहले नौ बार सुन चुके थे, उन्होंने इसे स्टफी की स्वीकृति माना।

"धन्यवाद, महाशय! मैं आपके साथ चलूँगा। आपने बड़ी कृपा की—मैं बहुत भूखा हूँ, साहब!"

अति भक्षण की बेहोशी के बावजूद भी स्टफी के दिमाग में यह विश्वास तो पैदा हो चुका था कि वह एक परम्परा के निर्माण में सहायता दे रहा है। आज के दिन भूख लगना या न लगना, उसके हाथ की बात नहीं। यह तो उस पवित्र प्रथा का एक आवश्यक अंग था। कानून की पाबन्दी चाहे न हो, इस परम्परा के जनक उन वृद्ध महाशय के प्रति उसका यह कर्तव्य था। माना कि अमरीका एक स्वतंत्र देश है, परन्तु ऐसे महान आदर्शों की स्थापना के लिए किसी न किसी को होली का नारियल तो बनना ही चाहिये। दुनियाँ के सब महारथियों के भाग्य में फौलाद या सोना ही नहीं आते। हमारे चरित्रनायक के हथियार भी मुलम्मा किये हुए लोहे और टीन के थे।

वृद्ध महाशय अपने वार्षिक महमान को दक्षिणी हिस्से के उसी होटल के उसी टेबल पर ले गये, जहाँ यह दावत हमेशा होती आयी थी। लोगों ने उन्हें पहचान लिया।

वेटर बाला, "हर धन्यवाद दिवस पर इस देहाती पेटू को भोजन कराने वाले बुड्ढ़ा आ पहुँचे हैं।"

भविष्य की परम्परा के आधारशिलारूप, पीट को देख देख कर वृद्ध महाशय खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। वेटरों ने टेबल पर बढ़िया खाने के ढेर लगा दिये जिन्हें देख कर स्टफी घबरा उठा। उसकी इस घबराहट को किसी भूखे व्यक्ति की आतुरता माना गया। छुरी काँटा ले कर उसने अपनी ख्याति के वृक्ष का बीजारोपण किया।

आज तक, दुश्मन के व्यूह में, कोई योद्धा इतनी बहादुरी से नहीं घुसा होगा। मुर्गी, चाप, सूप, भाजी, कचौरी जैसे-ही परोसी जातीं सफाचट हो जाती। होटल में पाँव रखते समय उसका पेट गले तक भरा हुआ था और भोजन की सुगन्ध मात्र से उसकी शान खतरे में पड़ी हुई दिखाई दी थी; परन्तु वह अन्त तक किसी सच्चे महारथी की तरह लड़ता रहा। वृद्ध के चेहरे पर उदारताजनक सुख की आभा झलक रही थी, ऐसी चमक जो शायद उनके बाग में उगे हुए फूलों को देखकर या दुनियाँ की सब से अजीब तितली को पा कर भी न आती। स्टफी उनकी इस खुशी को मुर्झाते हुए नहीं देख सकता था।

कोई एक घण्टे बाद, मैदान सर कर के, स्टफी सहारा ले कर बैठ गया। बायलर से छूटी हुई भाप की सी आवाज में वह बोला, "शुक्रिया साहब, भरपेट भोजन कराने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद!"

पथराथी हुई आँखें और लड़खड़ाते हुए कदमों से उठकर, वह चौके की तरफ जाने लगा। एक वेटर ने उसकी बाँह पकड़ कर उसे दरवाज़े की ओर मोड़ दिया। वृद्ध महाशय ने सावधानी से पैसे गिन कर एक डालर तीस सैंट का बिल चुकाया और तीस सैंट वेटर को टिप दी।

हर वर्ष की तरह, होटल के दरवाज़े के बाहर वे बिछड़े। वृद्ध महाशय दक्षिण की ओर चले और स्टफी उत्तर की ओर।

पहले ही मोड़ पर घूम कर स्टफी एक क्षण के लिए रुका। दूसरे ही क्षण वह पंख टूटे हुए उल्लू की तरह तड़प कर फुटपाथ पर लू लगे घोड़े सा गिर गया।

तुरन्त ही अम्बुलैन्स आ गयी। अम्बुलैन्स के ड्राइवर और परिचारक ने उस भारी लाश को उठाते हुए मन ही मन शाप दिया। शराब की बदबू तो आ नहीं रही थी जिससे थाने ले जाया जाय, इसलिये स्टफी और उसकी दोनों दावतों को उठा कर अस्पताल पहुँचा दिया गया। डाक्टरों ने उसे बिस्तर पर लिटा कर, कोई असाध्य रोग ढूँढ़ने की आशा में, उसकी परीक्षा की, परन्तु छुरी चाकू का प्रयोग करने जैसा कोई लक्षण दिखाई नहीं दिया।

और आश्चर्य की बात; कोई एक घण्टे बाद ही एक दूसरी अम्बुलैन्स गाड़ी में वृद्ध महाशय को भी अस्पताल लाया गया। उन्हें एक दूसरे बिस्तर पर लिटा कर, अपेन्डिसाइटिस की बातें होने लगीं, क्योंकि सूरत शक्ल से वे आपरेशन का खर्च उठाने लायक दिखाई दे रहे थे।

कुछ देर बाद, नौजवान डाक्टर साहब, इन दोनों मरीजों के विषय में एक नर्स से गपशप करने लगे, जिसकी आँखें उन्हें बेहद पसन्द थीं। वे बोले, "इन वृद्ध महाशय को बीमारी तो कुछ नहीं—उपवास के कारण यह हालत हुई थी। मेरा खयाल है, कि उनका खानदान पुराना और अभिमानी है। अभी मुझसे कह रहे थे कि तीन दिन से उन्होंने कुछ नहीं खाया।"

# ग्राहक

यह तो यों कहिये कि टेक्साज़ प्रदेश में, काक्टस शहर के आसपास स्वास्थ्यप्रद वातावरण होने के कारण, सर्दी जुकाम नहीं होता, वर्ना 'नवारो अण्ड प्लैट" के वस्तु भण्डार के सामने खाँसना या छींकना कोई मामूली बात नहीं है।

काक्टस शहर के बीस हजार लोग अपनी मनपसन्द चीजों को खरीदने के लिए अपने चाँदी के सिक्के खुले हाथों बिखेरते हैं। इस कीमती धातु

का अधिकांश भाग, 'नवारो अगड प्लैट' की तिजोरी में जाता है। उनकी विशाल अट्टालिका का क्षेत्रफल इतना है कि उसमें कई दर्जन भेड़ें चर सकती हैं। आप वहाँ से साँप की केंचुली सी नेकटाई, मोटरें, और नवीनतम फैशन के, अस्सी डालर वाले, औरतों के कोट, बीस अलग अलग रंगों में खरीद सकते हैं। कालोराडो नदी के पश्चिम की ओर के प्रदेशों में 'नवारो अगड प्लैट' ने ही सब से पहिले पैनी का सिक्का चलाया था। वे मवेशी पालने का धन्धा करने वाले पक्के बनिये थे, जिन्होंने सोचा कि मुफ्त घास बन्द हो जाने से दुनिया में कोई प्रलय नहीं हो जायगा।

हर साल, बसन्त में, बड़े सेट नवारो, जो पचपन वर्ष के एक योग्य और चतुर व्यक्ति थे, सामान खरीदने के लिए न्यूयार्क जाया करते थे। इस साल इस लम्बी यात्रा से उन्हें कुछ झिझक हो आयी। निश्चय ही वे अब बूढ़े हो रहे थे और दिन में आराम करने का समय होने तक वे बीस बार घड़ी देख लेते थे।

उन्होंने अपने छोटे साझीदार से कहा, "जोहन, इस साल सामान खरीदने के लिए तुम क्यों नहीं चले जाते!"

प्लैट का मुँह उतर गया।

उसने कहा, "सुनते हैं कि न्यूयार्क बड़ा नीरस शहर है। लेकिन मैं चला जाऊँगा। रास्ते में सान अगटोन में भी कुछ दिन घूम फिर लूँगा!"

दो हफ्ते बाद, टेक्साज़ फैशन का सूट पहने—काला लम्बा कोट, चौड़े छज्जे का सफेद टोप, ३/४ इंच ऊँचा कॉलर, काली टाई—एक आदमी ब्राडवे में 'झिझबाम अगड सन्स' नाम की थोक कपड़ों की दुकान में घुसा।

बूढ़े झिझबाम की आँख बगुले सी, याददाश्त हाथी सी और दिमाग सुथार के तीन तहों में मुड़ने वाले गज के समान था। वे दुकान के दरवाज़े पर टंड्रा के भालू की तरह दौड़ते आये और प्लैट से हाथ मिलाया।

उन्होंने पूछा "क्यों, टेक्साज में नवारो सेठ कैसे हैं? इस साल उनको यह लम्बी यात्रा सहन नहीं हुई, क्यों? खैर, उनकी जगह हम मिस्टर प्लट का स्वागत करते हैं।"

प्लैट बोला, "खूब! अगर आप यह बता दें कि आपने यह सब कैसे जान लिया तो मैं अपने गाँव की बिना जुती चालीस एकड़ जमीन आप पर वार दूँ।"

झिम्मवाम ने दाँत निपोरते हुए कहा, "मैं जानता हूँ; ठीक उसी तरह जैसे मैं जान सकता हूँ कि 'अल पासो' में इस साल २८·५ इंच वर्षा हुई है, जो हर साल से पन्द्रह इंच ज्यादा है और इसलिए इस साल बसन्त में 'नवारो अएड प्लैट' कम्पनी वाले दस हजार डालर की जगह पन्द्रह हजार डालर के सूट खरीदेंगे। लेकिन छोड़ो, ये बातें कल होंगी। मेरे दफ्तर में चल कर, एक बढ़िया सिगार पीलो, जिससे तुम्हारे मुँह की बदबू दूर हो। रास्ते में तो तुम्हें तस्कर व्यापार के घटिया सिगार ही मिले होंगे?"

सन्ध्या हो चुकी थी और दिन का कामकाज समाप्त हो गया था। प्लैट को सिगार पीता छोड़ कर, झिम्मवाम अपने लड़के के पास आया, जो जाने की तैयारी में, शीशे के सामने खड़ा, अपनी हीरे की टाईपिन ठीक कर रहा था।

झिम्मवाम बोला, "देखो बेटा, आज शाम को तुम मिस्टर प्लैट को घुमाने ले जाना। वह दस साल पुराना ग्राहक है। जब मिस्टर नवारो माल खरीदने आते थे तो हम दोनों बैठ कर शतरंज खेला करते थे। इसमें कोई बुराई तो नहीं, पर प्लैट जवान आदमी है और न्यूयार्क पहिली बार आया है। उसे खुश करना बहुत आसान काम होगा।'

अपनी पिन की घुएडी को दबा कर बन्द करते हुए लड़का बोला, "बहुत अच्छा! मैं उन्हें ले जाऊँगा। पहले तो मैं उन्हें फ्लैटिरान होते हुए होटल अस्टोर ले जाऊँगा और फिर ग्रामोफोन पर कुछ मनोरंजक गीत सुनते सुनते साढ़े दस बज जायेंगे; तब तक उनका सोने का समय हो जायगा। साढ़े ग्यारह बजे मुझे एक दावत में जाना है—तब तक वे निद्रादेवी की शरण हो चुके होंगे।"

दूसरे दिन सुबह दस बजे प्लैट, धन्धे के लिए तैयार हो कर, स्टोर पहुँचा। उसके कोट के कालर पर फूलों का गुच्छा लग रहा था। झिम्मवाम ने खुद उसकी आवभगत की। 'नवारो अएड प्लैट' उनके आदरणीय ग्राहक थे जो हमेशा रोकड़ दाम चुकाते थे।

मैनहटनवासियों की बनावटी मुस्कराहट चेहरे पर ला कर झिम्मवाम ने पूछा, "कहिये, हमारा शहर पसन्द आया?"

टैक्साज का वह निवासी बोला, "रहने के काबिल जगह नहीं है। कल रात आपके लड़के ने मुझे काफी घुमाया। यहाँ का पानी तो अच्छा है, पर रोशनी हमारे 'कैक्टस' में बेहतर होती है।"

"नहीं मिस्टर प्लैट, यहाँ भी ब्राडवे पर तो बहुत रोशनी होती है।"

प्लैट,बोला "अँधेरा भी उतना ही गहरा होता है। घोड़े आपके यहाँ लाजवाब होते हैं। शहर में आने के बाद आइडियल टट्टू तो एक भी नहीं देखा।"

सूट के नमूने दिखाने के लिए झिम्झबाम उसे ऊपर ले गये।

उन्होंने एक क्लर्क से कहा, "मिस आशर को भेजो।"

मिस आशर आयी। 'नवारो अगड प्लैट' के साझीदार मिस्टर प्लैट को जीवन में पहली बार रोमांस का अद्भुत उज्वल प्रकाश और गौरव उतरता दिखाई दिया। वह, उस पर आँखें गड़ाये, कालोराडो घाटी की किसी विशाल चट्टान की तरह, निश्चल खड़ा रहा। उसे इस तरह घूरते देख कर लड़की कुछ शरमा सी गयी, जो उसकी आदत के खिलाफ थी। 'झिम्झबाम अगड सन्स' की दुकान की मिस आशर सर्वश्रेष्ठ माडल थी। वह मँझले कद की गोरी लड़की थी और उसके शरीर का नाप सौन्दर्य के आदर्श ३८–२५–४२ से भी कुछ बेहतर ही था। उसे झिम्झबाम की दुकान में काम करते हुए दो साल हो चुके थे और वह अपने काम में पटु थी। उसकी आँखें चमकीली पर शान्त थीं। यदि उसकी आँखें किसी नागिन की आँखों से भी मिलतीं तो हमें विश्वास है कि नागिन की विषैली नजरों को भी झुकना पड़ता। वैसे वह ग्राहकों की नस खूब पहचानती थी।

झिम्झबाम बोला, "देखिये मिस्टर प्लैट, ये हल्के रंगों के कुछ नयी फैशन के गाउन हैं। आपके यहाँ की आबोहवा में ये बहुत चलेंगे। मिस आशर, जरा पहन कर दिखाइये।"

झिम्झबाम का वह तुरप का इक्का, बिजली की गति से कपड़े बदलने के कमरे से बाहर-भीतर जाने-आने लगा। हर बार वह नयी किस्म का गाउन पहिन कर आती, जिससे प्लैट की आँखें चकाचौंध हो जातीं। अभिभूत हुआ वह ग्राहक निस्तब्ध और निर्वाक मुँह बाये खड़ा रहा। पूरे आत्म-विश्वास से मिस आशर अपनी कला का प्रदर्शन कर रही थी और झिम्झबाम अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से उसे फुसला रहा था। मिस आशर के चेहरे पर एक हल्की सी व्यवसायिक मुस्कराहट छायी हुई थी, जो उसकी थकान और तिरस्कार को ढँकती हुई सी मालूम दे रही थी।

यह तमाशा खत्म होते ही, प्लैट कुछ पशोपेश में पड़ गया। झिम्झबाम को आशंका हुई कि चिड़िया हाथ से निकल न जाय, परन्तु प्लैट के दिमाग में कैक्टस शहर की सम्भ्रान्त बस्तियाँ घूम रही थीं, जहाँ वह अपनी भावी

पत्नि के लिये बँगला बनवाना चाहता था, जो इस समय कपड़े बदलने के कमरे में फिरोजी रंग का गाउन उतार कर, अपने कपड़े पहिन रही थी।

झिम्झबाम बोला, "मिस्टर प्लैट, जल्दबाजी की कोई आवश्यकता नहीं। तुम आज का दिन विचार कर लो। मुझे विश्वास है कि और कहीं भी तुम्हें ऐसा माल, इन दामों, नहीं मिलेगा। न्यूयार्क में शायद तुम्हारी तबियत नहीं लगी। और ठीक भी है, जवान आदमी हो—अकेले ऊब गये होओगे। आज शाम को किसी सुन्दर लड़की के साथ भोजन करने जाना पसन्द करोगे? अपने ही स्टोर की मिस आशर बहुत अच्छी लड़की है। वह तुम्हारा दिल बहला देगी।"

प्लैट सकपकाते हुए बोला, "परन्तु वह तो मुझे जानती भी नहीं—वह मेरे बारे में कुछ भी नहीं जानती। क्या वह चलना पसन्द करेगी? मेरी तो उससे जानपहिचान भी नहीं हुई है!"

भौंहें चढ़ा कर झिम्झबाम बोला, "पसन्द करेगी, हुँ! नहीं क्यों? जान पहिचान—मैं अभी कराये देता हूँ! वह जरूर जायेगी।"

उसने मिस आशर को पुकार कर बुलाया। सफेद ब्लाउज और काला स्कर्ट पहिने, वह अन्दर आयी। उसके चेहरे पर तिरस्कारयुक्त शान्ति छायी हुई थी।

"आज शाम को मिस्टर प्लैट तुम्हारे साथ भोजन करना पसन्द करेंगे।" इतना कहते हुए झिम्झबाम बाहर चला गया।

छत की ओर शून्य दृष्टि से ताकती हुई मिस आशर बोली, "जरूर! मुझे बहुत खुशी होगी। मेरा पता है—नं. ८११, बीसवीं सड़क। कितने बजे?"

"यही करीब सात बजे।"

"बहुत अच्छा। पर कृपया समय से पहिले मत आइयेगा, क्योंकि मैं एक मास्टरनी के साथ रहती हूँ, जो कमरे में किसी पुरुष का आना पसन्द नहीं करती। बैठक का कमरा हमारे यहाँ है नहीं और आपको व्यर्थ ही बरामदे में खड़ा रहना पड़ेगा। सात बजे मैं तैयार रहूँगी।"

साढ़े सात बजे ब्राडवे के एक होटल में, एक टेबल के आमने सामने, प्लैट और मिस आशर बैठे थे। मिस आशर ने पारदर्शक कपड़े पहन रखे थे। प्लैट को यह मालूम नहीं था कि यह भी उसके रोजमर्रा के काम का एक अंग था।

होशियार वेटर की मदद से उसने शानदार खाने का आर्डर दिया जिसमें ब्राडवे की प्रचलित औपचारिकता का अभाव था।

मिस आशर ने उसकी ओर एक नशीली मुस्कराहट फेंकी और बोली, "मैं कुछ पीना चाहती हूँ।"

प्लैट बोला, "वाह, जरूर! जो चाहो मँगवा लो।"

उसने वेटर से कहा, "एक प्याला मार्टिनी लाओ।"

जैसे ही यह चीज़ ला कर उसके सामने रखी गयी, प्लैट ने हाथ बढ़ा कर उसे उठा लिया और पूछा, "यह क्या है?"

"क्यों? शराब है।"

"मैं तो समझा था कि तुमने किसी तरह की चाय मँगवायी है। पर यह तो दारू है! यह तुम नहीं पी सकती। तुम्हारा नाम क्या है?"

सुननेवाले को सर्द कर देने वाली आवाज़ में मिस आशर ने कहा, "मेरे घनिष्ठ मित्र मुझे हैलन के नाम से पुकारते हैं।"

टेबल पर झुकते हुए प्लैट बोला, "सुनो हैलन! कई वर्षों से, जब हमारे यहाँ के मैदानों में वसन्त के स्वागत में पहिली बार फूल खिलते हैं, तब मैं किसी का सपना देखने लगता हूँ, जिसे मैंने न कभी देखा, न सुना। कल तुम्हें देखते ही मैं जान गया कि मेरे सपनों की रानी तुम्हीं हो। कल मैं वापिस घर लौट रहा हूँ और तुम्हें मेरे साथ चलना होगा। कल तुमने मेरी ओर जिस दृष्टि से देखा, उससे मैं समझ गया कि तुम्हें यही करना होगा। विरोध करने से कोई फायदा नहीं। तुम्हें मेरी बात माननी ही होगी। तुम्हारे लिए एक नाचीज़ सा उपहार लाया हूँ जो मैंने आते आते खरीद लिया था।"

दो कैरट के हीरे की चमकदार अँगूठी उसने टेबल पर रख दी, पर मिस आशर ने अपने हाथ में पकड़े काँटे से उसे पीछे सरका दी।

वह सख्ती से बोली, "मुझे यह छेड़खानी पसन्द नहीं।"

प्लैट ने कहा, "मेरे पास एक लाख डालर हैं, और मैं तुम्हारे लिए पूरे पश्चिमी टेक्साज का सबसे बढ़िया मकान बनवा दूँगा।"

मिस आशर बोली, "अच्छा, तो ग्राहक महाशय, आप मुझे खरीदने आये हैं? लाख तो क्या, आपके पास दस करोड़ डालर भी हों तो यह सम्भव नहीं। आप इस तरह पेश आओगे— ऐसा तो मैंने नहीं सोचा था।

श्रीमान टेक्साज निवासी, मेरा खयाल है कि अब अगर थोड़ी सी शराब मँगवा लें तो खाने में मजा आ जाय।"

"नहीं नहीं, मैं तुम्हें शराब नहीं पीने दूँगा। यह बहुत बुरी बात है। कल सुबह मैं तुम्हें लेने आऊँगा। जाने से पहिले हमें एक मोटर खरीदनी है। यहाँ से अब और कोई चीज ले जाने की आवश्यकता नहीं।"

"मैंने कहा न, बकवास बन्द करो। मैं इस तरह की बातें सुन कर ऊब गयी हूँ।"

भोजन के बाद वे दोनों ब्राडवे के रास्ते से एक छोटे से बाग में पहुँचे। पेड़ों के एक झुरमुट के नीचे मुड़ कर देखते ही प्लैट ने देखा कि मिस आशर की आँखें डबडबा आयीं। वह बोला, "क्यों क्या बात है?"

"छोड़िये, कोई खास बात नहीं। तुम्हें पहली बार देखते ही मैंने सोचा था कि तुम औरों से कुछ भिन्न होओगे। पर तुम भी वैसे ही निकले। और अब तुम मुझे सीधी तरह घर पहुँचाते हो या मैं पुलिस को बुलाऊँ?"

प्लैट ने उसे उसके डेरे तक पहुँचा दिया। बरामदे में वे एक मिनट के लिए रुके। उसने प्लैट की ओर ऐसी नफरत भरी दृष्टि से देखा कि उसका मजबूत हृदय भी काँप उठा। ज्यों ही उसने उसकी कमर में हाथ डाला, मिस आशर ने एक सनसनाता तमाचा उसके चेहरे पर जड़ दिया।

वह घबरा कर पीछे हटा। इतने में फर्श पर अँगूठी गिरने की अवाज़ आयी। प्लैट ने अँधेरे में टटोलकर अँगूठी उठा ली।

वह बोली, "अब यह कूड़ाकरकट उठाओ और चलते बनो।"

उस सोने के छल्ले को सहलाता हुआ वह टेक्साज निवासी बोला, "देखो, तुम गलत समझ रही हो। यह तो हमारी शादी की अँगूठी है।"

उस झुटपुटे में मिस आशर की आँखों में एक ज्योति चमक उठी।

"क्या मतलब?"

प्लैट बोला, "नमस्कार। कल सुबह स्टोर में मुलाकात होगी।"

मिस आशर भाग कर अपने कमरे में पहुँची। सोती हुई मास्टरनी को झकझोर कर उसने बैठा दिया। मास्टरनी चिल्लायी – आग! आग!

मिस आशर बोली," आग वाग कुछ नहीं लगी। मैं एक बात पूछना चाहती थी। देखो एम्मा! तुमने भूगोल पढ़ी है – तुम जानती होओगी। यह – केक – केक – केर – केरकास नामक शहर कहाँ है?"

मास्टरनी बोली, "इतनी सी बात के लिए मुझे नींद से जगाने की तुम्हें हिम्मत कैसे हो गयी? केरकास शहर वेनेजूयेला में है।"

"कैसा है यह शहर?"

"क्या खाक कैसा है? अधिकतर भूचाल और हब्शी, और लंगूर और मलेरिया, और ज्वालामुखी!"

मिस आशर आनन्द से बोली, "कोई परवाह नहीं, मैं कल वहीं जा रही हूँ।"

# सिपाही का तमगा

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि कभी कभी स्त्री और पुरुष का पहिली नज़र में ही प्यार हो जाता है। एक दूसरे के सम्बन्ध में कुछ भी जानकारी प्राप्त किये बिना, यह पहली नज़र का प्रेम बहुत खतरनाक भी सिद्ध होता है। परन्तु ऐसी घटनाएँ होती ही रहती हैं और इस कहानी का विषय भी वही है। भगवान का शुक्र है कि जीवन की अन्य आवश्यक बातें, जैसे शराब, पुलिस, घोड़े और ताल्लुकेदार आदि को भी इस कहानी में बिसराया नहीं जायगा।

किसी युद्ध में फौज का एक दस्ता, जो अपने आपको 'रईस रिसाला' कहता था, दो एक लड़ाइयों में भाग लेकर ही इतिहास में अमर हो गया इस रिसाले के रँगरूट, कुछ तो पश्चिम के आवारों के खानदानों से आये थे और कुछ, पूरब के खानदानी आवारों में से। खाकी वर्दी पहनने के बाद, आदमियों को अलग करके देखना वैसे भी मुश्किल होता है; फिर कुछ ही दिनों में ये लोग आपस में मिलजुल भी गये।

लड़ाई के दौरान में एक दिन 'रईस रिसाले' के पड़ाव में धूनी के पास बैठा एल्सवर्थ रेम्सेन, डब्बे का पका हुआ माँस खा रहा था। उसका

जन्म, प्रसिद्ध निकरबाकर घराने में हुआ था, इसलिए उसे अपने सिर्फ एक करोड़ डालर के मालिक होने पर कोई अफसोस नहीं था। इस लड़ाई में वह केवल मनबहलाव के लिए आया था, इस कारण उसे पोलो का खेल और शैड मछली का स्वादिष्ट भोजन न मिलने पर भी कोई शिकायत नहीं थीं।

उसी दस्ते में, एक हृष्ट पुष्ट, हँसमुख और शान्त स्वभाव का नौजवान भी था, जो अपने आप को ओ' रून कहा करता था। उससे रेम्सन की दोस्ती हो गयी। स्पेन वाले और प्रजातंत्रवादियों के विरूद्ध किये गये एक प्रसिद्ध आक्रमण में वे दोनों कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़े थे।

लड़ाई के बाद, रेम्सन पोलो और शैड़ मछली वाली जिन्दगी में लौट आया। एक दिन वह अपने क्लब में बैठा था कि उसका वह हृष्ट-पुष्ट, हँसमुख और शान्त स्वभाव वाला मित्र वहाँ आ पहुँचा। बहुत दिनों के बिछड़े बचपन के दोस्त जब मिलते हैं तब जैसी गाली गलौज और धौलधप्पा होना स्वभाविक है, वही कुछ देर तक होता रहा। ओ'रून की बदनसीबी भी उसके चेहरे के सन्तोष को ढँक नहीं सकी थी, परन्तु यह भी स्पष्ट था कि यह सन्तोष, दिखावा मात्र था।

वह बोला, "रेम्सन, मुझे कोई नौकरी दिलवा दो। अपनी जेब का आखिरी शिलिंग मैं अभी अभी बाल कटवाने में खर्च कर चुका हूँ।"

रेम्सन बोला, "इस में क्या मुश्किल है! इसी शहर में मेरी जान पहिचान के कई लोगों की दुकानें और बैंक हैं। क्या तुम कोई खास नौकरी चाहते हो!"

दिलचस्पी से ओ'रून ने कहा, "हाँ खास ही चाहता हूँ। आज सुबह मैं सेन्ट्रल पार्क में घूम रहा था। अगर मुझे घुड़सवार पुलिस की नौकरी मिल जाये तो मैं खुश हूँ। मैं इस काम को कर भी सकूँगा और इसके सिवाय मैं कुछ जानता भी तो नहीं। घुड़सवारी मैं अच्छी कर लेता हूँ और खुली हवा मुझे बहुत पसन्द है। क्या यह नौकरी मिल सकेगी?"

रेम्सन को विश्वास था कि ऐसा हो जायेगा। कुछ ही दिनों में काम हो भी गया। जो लोग घुड़सवार सिपाहियों को नफरत की नजर से नहीं देखते, उन्हें सेंट्रल पार्क के इर्द गिर्द, यह हृष्टपुष्ट, हँसमुख और शान्त नौजवान, गहरे कत्थई रंग के घोड़े पर बैठा, अपनी नौकरी बजाता हुआ, दिखाई दे सकता था।

इसके बाद की कहानी से, हाथ में लकड़ी ले कर चलने वाले वृद्धों और कमर झुकी बुढ़ियाओं को कुछ शिकायत—लेकिन नहीं, दादी माँ को अब तक उस बेवकूफ, पर अमर 'रोमियो' की कहानी अच्छी लगती है, जिससे यह प्रमाणित होता है कि पहली नजर का प्रेम कोई उतनी गैरमुनासिब बात नहीं।

एक दिन जब रेम्सन अपने क्लब से निकल कर पाँचवी सड़क पर टहल रहा था, तब ऐसा ही कुछ हुआ।

सड़क पर भीड़ के कारण एक मोटर अत्यन्त धीमी चाल से जा रही थी। मोटर में ड्राइवर के अलावा, एक बूढ़े महाशय बैठे थे जिनके सफेद बाल, ऊनी टोपी से ढँके हुए थे। मोटर में बैठ कर भी इस टोपी को पहनने की जुर्रत, महान विभूतियाँ ही कर सकती हैं। शराब के किसी बड़े ठेकेदार की भी यह हिम्मत नहीं हो सकती। मोटर की ये दोनों सवारियाँ कोई महत्व नहीं रखतीं—सिवाय इसके कि एक तो मोटर चला रहा था और दूसरे ने उसकी कीमत चुकायी थी। वृद्ध महाशय के पास, अनार की कली से भी ज्यादा सुन्दर और खजूर के वृक्षों के पीछे से झाँकते हुए दूज के चाँद से भी ज्यादा मोहक, एक युवती बैठी थी। रेम्सन ने उसे देखा और उसके भाग्य का वहीं निर्णय हो गया। उसका वश चलता तो वहीं मोटर के पहियों के नीचे दब जाता, परन्तु उसे मालूम था कि ऐसी तुच्छ घटनाओं से मोटर में बैठने वालों का ध्यान नहीं बँटा करता। मोटर धीरे धीरे आगे बढ़ गयी और कवि को यदि हम ड्राइवर से श्रेष्ठ मानें, तो यह कह सकते हैं कि रेम्सन के हृदय को भी अपने साथ लेती गयी। इस शहर में लाखों की बस्ती थी, जिसमें निस्सन्देह सैंकड़ों स्त्रियाँ ऐसी होंगी जो कुछ दूरी से अनार की कली सी सुन्दर दिखाई देती हों। परन्तु फिर भी उसे आशा थी कि उसके दुबारा दर्शन अवश्य होंगे। उसके भाग्य को संचालित करने वाले स्वर्ग के देवता, इतने कमजोर नहीं हो सकते।

रेम्सन के सौभाग्य से, कुछ ही दिनों बाद मनबहलाव का एक बहाना उपस्थित हो गया। 'रईस रिसाले' के पुराने मित्रों ने एकत्रित हो कर गोठ करने की ठानी। उनकी संख्या कुछ ज्यादा नहीं थी—कोई बीस होंगे। नाच गाना, खाना पीना और स्वाँग खेलना—सबकी व्यवस्था थी। रात भर रंगरेलियाँ होती रहीं। सूरज की पहली किरण से डर कर ही लोग बिछड़ने को तैयार हुए थे परन्तु कुछ बहादुर अब भी मैदान में डटे रहे।

इनमें से एक ओ'रून भी था। ओ'रून को शराब पचा जाने की आदत नहीं थी, इसलिए सुबह उसकी टाँगों ने पुलिस के महकमे का कर्त्तव्य पालन करने से मना कर दिया।

ओ'रून ने अपने मित्र से कहा, "रेम्सन, मैं तो मारा गया! मुझे पूरा होटल बैलगाड़ी के पहिये की तरह चक्कर खाता दिखाई देता है। वे लोग मेरा बिल्ला छीन लेंगे और बड़ी बेइज्जती होगी। मेरे हवास कायम हैं, और मैं ब–ब–ब–बोल भी लूँगा पर मेरे पाँव ह–ह–हकला रहे हैं। तीन घण्टे में मुझे काम पर हाज़िर हो जाना है। बनी बनायी बात बिगड़ गयी रेम्सन,—बिगड़ गयी!"

रेम्सन मुस्करा रहा था। अपने चेहरे की ओर संकेत करता हुआ वह बोला, "मेरी ओर देखो। क्या दिखाई देता है?"

नशो में चूर, ओ'रून बोला, "शाबाश दोस्त, शाबाश!"

रेम्सन ने कहा, "क्या शाबाश? तुम कुछ नहीं समझे! तुम्हारे सामने इस समय, घुड़सवार पुलीस ओ'रून खड़ा है। अपना चेहरा देखो—लेकिन बिना शीशे के अपना चेहरा कैसे देखोगे? तो मेरा चेहरा देख कर अपने चेहरे की कल्पना कर लो। कितना साम्य है! जैसे टेबल पर परोसी हुई खाने की दो थालियाँ! तुम्हारा बिल्ला लगाये, तुम्हारी वर्दी पहने और तुम्हारे घोड़े पर बैठे हुए यदि मैं सेन्ट्रल पार्क में घूमूँ तो लोग क्या मुड़ कर नहीं देखेंगे। तुम्हारा बिल्ला और तुम्हारी इज्जत—दोनों सुरक्षित भी रहेंगे और मेरा मनोरंजन भी हो जायगा। पिछली लड़ाई में स्पेन वालों को हराने के बाद, कोई मजेदार घटना हुई ही नहीं।"

ठीक समय पर पार्क में, अपने कत्थई रंग के घोड़े पर बैठा, नकली घुड़सवार, पुलीस ओ'रून घूमने लगा। वर्दी में तो दो मनुष्य, ज़िनमें कुछ भी समानता न हो, एक से ही दिखाई देते हैं; तो फिर जिनके चेहरे मोहरे में काफी साम्य हो, ऐसे दो व्यक्ति यदि जुड़वाँ भाई से दिखाई दें, तो क्या आश्चर्य! रेम्सन को पार्क के चारों ओर चक्कर लगाने में बड़ा आनन्द आ रहा था। करोड़पतियों के भाग्य में भी सात्विक आनन्द के ऐसे मौके कम ही आते हैं। जाड़े की उस सुहावनी भोर में दो चंचल घोड़ों से जुती बग्घी, पार्क के चारों ओर चक्कर काट रही थी। यह एक विचित्र सी बात थी, क्योंकि स्वास्थ्य, गरीबी और बुद्धि के पीछे दौड़ने वाले, कुछ महत्वहीन लोगों के सिवाय, इस समय पार्क म

शायद ही कोई आता हो। बग्घी में, ऊनी टोपी से अपने सफेद बालों को ढँके, वही वृद्ध महाशय बैठे थे। ऐसी टोपी पहिनने की हिमाकत सिर्फ महान विभूतियाँ ही कर सकती हैं। उनके पास ही अनार की कली और दूज के चाँद सी सुन्दर, रेम्सन के हृदय की रानी बैठी थी।

रेम्सन ने उन्होंने आते हुए देखा। बग्घी सामने से गुजरते ही, उनकी आँखें चार हो गयीं और एक प्रेमी के हृदय की डरपोक धड़कन को कुछ समय के लिए दबा दिया जाय, तो यह विश्वासपूर्वक कहा जहा सकता है कि लड़की का मुख लज्जा से गुलाबी हो गया। वह कोई बीस गज आगे बढ़ गया, परन्तु इतने में ही भागते हुए घोड़ों की टापों की आवाज़ सुन कर वापिस मुड़ा। घोड़े बग्घी को ले कर बेतहाशा भाग रहे थे।

अपने घोड़े पर बैठा रेम्सन, बग्घी के पीछे तीर की तरह भागा। पुलिस-मैन ओ'रून के उस नकलची ने अपना काम बड़ी सफाई से अदा किया। उसका कत्थई घोड़ा कोई तीस सेकण्ड में ही बग्घी के पास पहुँच गया और अपनी गोल आँखों की मूक भाषा में मानो रेम्सन से कहने लगा:

"अरे बेवकूफ, यही मौका है। क्या तू अपना पार्ट पूरा कर सकेगा! माना कि तू ओ 'रून नहीं है परन्तु इन भागते हुए टट्टुओं की लगाम पकड़ लेना कोई मुश्किल बात नहीं। हाँ, शाबास! ऐसे ही। इससे बढ़िया ढंग से तो यह काम खुद ओ 'रून भी नहीं कर सकता था!"

रेम्सन की बलिष्ट भुजाओं ने भागते हुए घोड़ों को तुरन्त काबू में कर लिया। बग्घी का कोचवान, लगाम छोड़ कर नीचे कूदा और अदब से एक ओर खड़ा हो गया। कत्थई घोड़ा अपने नये सवार से बेहद खुश हो कर, आनन्द से नाच रहा था, मानो गाड़ी में जुते हुए उन विजित घोड़ों का मजाक उड़ा रहा हो। रेम्सन वहीं रुक गया और गाड़ी में बैठे, ऊनी टोपी वाले, बूढ़े की अस्पष्ट, निरर्थक और असम्भव बातों को, अन्यमनस्क-सा सुनता रहा। उसकी सारी चेतना तो एक जोड़ी जामुनी आँखों, मोहक हँसी और मादक दृष्टि की ओर खिंच रही थी। ऐसी आँखें, जिन्हें देखकर मन्दिर की मूर्ति भी जाग उठे और ऐसी नजर, जिसका सच्चे प्रेमी की जन्मजात कायरता के कारण वह कोई अर्थ नहीं लगा सका। वे लोग उसका नाम पूछने लगे और उसकी बहादुरी के लिए अनेक तरह से धन्यवाद देने लगे। ऊनी टोपीवाले वृद्ध की बड़बड़ाहट तो जारी थी पर युवती की आँखे मूक सराहना से झुकी गयीं।

रेम्सन के मन में सन्तोष की एक लहर दौड़ गयी। बिना किसी अहंकार के वह अपना नाम बता सकता था, जिसे अभिजात समाज में भी याद किया जाता था और उचित गर्व से वह अपनी समृद्धि की चर्चा भी कर सकता था, जिसके सहारे उसे जीवन में बेइज्जती उठाने की कोई शंका नहीं थी।

उसके होंट उत्तर देने के लिए खुले, पर तुरन्त ही बन्द हो गये।

वह कौन था? उसे याद आ गया कि वह तो घुड़सवार ओ'रून था। उसके दोस्त का बिल्ला और इज्जत, इस समय उसके हाथ में थी। यदि वह यह कहता कि अनार की कली और ऊनी टोपी को मौत के मुँह से बचाने वाला, वह निकरबाकर खानदान का प्रसिद्ध करोड़पति एल्सवर्थ रेम्सन है तो पुलिस के सिपाही ओ 'रून की क्या दशा होगी? नौकरी छूट जायगी, बेइज्जती होगी और दर दर की ठोकरें खाता फिरेगा। इस वक्त, दाँव पर प्रेम की बाजी लगी हुई थी परन्तु प्रेम से भी महान एक चीज़, जिसे हम लड़ाई के मैदान में विदेशी दुश्मनों के खिलाफ लड़ने वाले वीरों की दोस्ती कह सकते हैं, उसका दरवाज़ा खटखटा रही थी।

रेम्सन ने अपनी टोपी को छुआ और घोड़े के कानों के बीच देखता हुआ, देहाती भाषा में, अल्हड़ता से बोला, "धन्यवाद की कोई बात नहीं। यह तो मेरा फर्ज़ था। हमें इसी बात की तनखाह मिलती है।"

मन ही मन अभिजात होने के अभिशाप को गालियाँ देता, वह आगे बढ़ गया। जो कुछ हुआ, उसके अलावा वह कर भी क्या सकता था।

दिन डूबते ही रेम्सन ने घोड़े को अस्तबल में भिजवा दिया और ओ'रून के कमरे में पहुँचा। पुलिस का वह हृष्टपुष्ट, हँसमुख और शान्त सिपाही खिड़की के पास बैठा, सिगार पी रहा था।

रेम्सन तुनक कर बोला, "जो लोग धुत् हुये बिना दो गिलास शराब भी नहीं पी सकते, वे और उनका पुलिस दल और उनके बिल्ले और घोड़े और उनके पीतल के चमकते बटन, सब के सब जहन्नुम में जाओ।"

ओ 'रून के चेहरे पर संन्तोष था।

मुस्कराते हुए वह प्यार से बोला, "प्यारे दोस्त, मुझे सब मालूम हो चुका है। उन लोगों ने मुझे ढूँढ निकाला और कोई दो घण्टे पहले ही पकड़ लिया। मैंने तुम्हें अब तक बताया नहीं, पर मैं झगड़ा कर के घर से भाग आया था और घर वालों को परेशान करने के लिए ही, यहाँ आ छिपा

था। मेरे पिता आर्डली के जमींदार हैं। बड़े आश्चर्य की बात है कि तुम्हारी उन लोगों से पार्क में मुठभेड़ हो गयी। अगर तुमने मेरे घोड़े को चोट पहुँचायी, तो मैं उसे खरीद कर अपने साथ ले जाना चाहता हूँ। और हाँ, एक बात और – मेरी बहन लेडी ऍंजेला – तुम उसे देख चुके हो – उसने खास तौर से कहा है कि आज शाम को, तुम भी मेरे साथ उसके होटल पर चलो। और रेम्सन, मेरा बिल्ला तुमने खो तो नहीं दिया? इस्तीफा देते समय मैं उसे लौटा देना चाहता हूँ।"

# आखिरी पत्ती

वाशिंगटन चौक के पश्चिम की ओर एक छोटा सा मुहल्ला है जिसमें टेढ़ी मेढ़ी गलियों के जाल में कई बस्तियाँ बसी हुई हैं। ये बस्तियाँ बिना किसी तरतीब के बिखरी हुई हैं। कहीं कहीं सड़क अपना ही रास्ता दो तीन बार काट जाती है। इस सड़क के सम्बन्ध में एक कलाकार के मन में एक अमूल्य सम्भावना पैदा हुई कि कागज़, रंग और कनवास का कोई व्यापारी यदि तकादा करने यहाँ आये तो रास्ते में उसकी अपने आप से मुठभेड़ हो जायगी और उसे एक पैसा भी वसूल किये बिना वापिस लौटना पड़ेगा।

इस टूटेफूटे और विचित्र, 'ग्रीनविच ग्राम' नामक मुहल्ले में दुनियाँ भर के कलाकार आकर एकत्रित होने लगे। वे सब के सब उत्तर दिशा में खिड़कियाँ, अठारवीं सदी की महराबें, छत के कमरे और सस्ते किरायों की तलाश में थे। बस छठी सड़क से कुछ काँसे के लोटे और टीन की तश्तरियाँ खरीद लाये और गृहस्थी बसाली।

एक नीचे से मकान की तीसरी मंज़िल पर, सू और जान्सी का स्टूडियो था। जान्सी, जोना का अपभ्रंश था। एक 'मेईन' से आयी थी और

दूसरी 'कैलीफोर्निया' से। दोनों की मुलाकात, आठवीं सड़क के एक अत्यन्त सस्ते होटल में हुई थी। दोनों की कलारुचि और खाने पहिनने की पसन्द में इतनी समानता थी कि दोनों के मिले जुले स्टूडियो का जन्म हो गया।

यह बात मई के महीने की थी। नवम्बर की सर्दियों में, एक अज्ञात अजनबी ने, जिसे डाक्टर लोग 'निमोनिया' कहते हैं, मुहल्ले में डेरा डाल कर, अपना बर्फीली उँगलियों से लोगों को छेड़ना शुरू किया। पूर्वी इलाके में तो इस सत्यानाशी ने बीसियों लोगों की बलि ले कर तहलका मचा दिया था, परन्तु पश्चिम की तंग गलियों वाले जाल में, उसकी चाल कुछ धीमी पड़ गयी।

मिस्टर 'निमोनिया' स्त्रियों के साथ भी कोई रिआयत नहीं करते थे। केलिफोर्निया की आँधियों से जिसका खून फीका पड़ गया हो, ऐसी किसी दुबली पतली लड़की का इस भीमकाय फुंकारते दैत्य से कोई मुकाबला तो नहीं था, फिर भी उसने जान्सी पर हमला बोल दिया। वह बिचारी चुपचाप अपने लोहे की खाट पर पड़ी रहती और शीशे की खिड़की में से सामने के ईंटों के मकान की कोरी दीवार को देखा करती।

एक दिन उसका इलाज करने वाले बूढ़े डाक्टर ने, थर्मामीटर झटकते हुये, सू को बाहर के बरामदे में बुला कर कहा, "उसके जीने की संभावना रुपये में दो आना है। और, वह भी तब, यदि उसकी इच्छा शक्ति बनी रहे। जब लोगों के मन में जीने की इच्छा ही नहीं रहती और वे मौत का स्वागत करन को तैयार हो जाते हैं तो उनका इलाज धन्वंतरि भी नहीं कर सकते। इस लड़की के दिमाग पर भूत सवार हो गया है कि वह अब अच्छी नहीं होगी। क्या उसके मन पर कोई बोझ है?'

सू बोली, "और तो कुछ नहीं, पर किसी रोज नेपल्स की खाड़ी का चित्र बनाने की उसकी प्रबल आकांक्षा है।"

"चित्र? हूँ! मैं पूछ रहा था, कि उसके जीवन में कोई ऐसा आकर्षण भी है कि जिससे जीने की इच्छा तीव्र हो? जैसे कोई नौजवान!"

बिच्छू के डंक की सी चुभती आवाज़ में सू बोली, "नौजवान? पुरुष और प्रेम – छोड़ो भी – नहीं डाक्टर साहब, ऐसी कोई बात नहीं है।"

डाक्टर बोला, "सारी बुराई की जड़ यही है। डाक्टरी विद्या के अनुसार जो कुछ भी मुझसे मुमकिन है, उसे किये बिना नहीं छोड़ूँ-गा। पर जब

कोई मरीज अपनी अरथी के साथ चलनेवालों की संख्या गिनने लग जाता है तब दवाइयों की शक्ति आधी रह जाती है। अगर तुम उसके जीवन में कोई आकर्षण पैदा कर सको, जिससे वह अगली सर्दियों में प्रचलित होने वाली कपड़ों की फैशन के बारे में चर्चा करने लगे, तो उसके जीने की संभावना कम से कम दूनी हो जायगी।"

डाक्टर के जाने के बाद, सू अपने कमरे में गयी और उसने रो रो कर कई रूमाल निचोड़ने काबिल कर दिये। कुछ देर बाद, चित्रकारी का सामान ले कर, वह सीटी बजाती हुई जान्सी के कमरे में पहुँची।

जान्सी, चद्दर ओढ़े, चुपचाप, बिना हिले डुले, खिड़की की ओर देखती पड़ी थी। उसे सोई हुई जान कर उसने सीटी बजाना बन्द कर दिया।

तख्ते पर कागज़ लगा कर वह किसी पत्रिका की कहानी के लिए, कलम स्याही से एक तस्वीर बनाने बैठी। नवोदित कलाकारों को 'कला' की मंजिल तक पहुँचने के लिए, पत्रिकाओं के लिए तस्वीरें बनानी ही पड़ती हैं, जैसे साहित्य की मंजिल तक पहुँचने के लिए, नवोदित लेखकों को पत्रिकाओं की कहानियाँ लिखनी पड़ती हैं।

ज्यों ही सू, एक घुड़सवार जैसा ब्रीजस पहने, एक आँख का चश्मा लगाये, किसी इड़ाहो के गडरिये के चित्र की रेखाएँ बनाने लगी कि उसे एक धीमी आवाज़, अनेक बार दुहराती-सी सुनाई दी। वह शीघ्र ही बीमार के बिस्तरे के पास गयी।

जान्सी की आँखें खुली थीं। वह खिड़की से बाहर देख रही थी और कुछ गिनती बोल रही थी। लेकिन वह उल्टा जप कर रही थी।

वह बोली, "बारह" फिर कुछ देर बाद "ग्यारह"; फिर "दस" और "नौ" और तब एक साथ "आठ" और "सात"।

सू ने उत्कण्ठा से, खिड़की से बाहर नज़र डाली। वहाँ गिनने लायक क्या था? एक खुला, बंजर चौक या बीस फीट दूर ईंटों के मकान की कोरी दीवार!

एक पुरानी, ऐंठी हुई, जड़ें निकली हुई, सदाबहार की बेल दीवार की आधी ऊँचाई तक चढ़ी हुई थी। शिशिर की ठंडी साँसों ने उसके शरीर की पत्तियाँ तोड़ ली थीं और उसकी कंकाल शाखाएँ, एकदम उघाड़ी, उन टूटी फूटी ईंटों से लटक रही थीं।

सू ने पूछा, "क्या है जानी?"

अत्यन्त धीमे स्वरों में जान्सी बोली, "छः! अब वे जल्दी जल्दी गिर रही हैं। तीन दिन पहले वहाँ करीब एक सौ थीं। उन्हें गिनते गिनते सिर दुखने लगता था। वह, एक और गिरी। अब बचीं सिर्फ पाँच!"

"पाँच क्या? जानी, पाँच क्या? अपनी सू को तो बता!"

"पत्तियाँ। उस बेल की पत्तियाँ। जिस वक्त आखिरी पत्ती गिरेगी, मैं भी चली जाऊँगी। मुझे तीन दिन से इसका पता है। क्या डाक्टर ने तुम्हें नहीं बताया?"

अत्यन्त तिरस्कार के साथ सू ने शिकायत की, "ओह, इतनी बेवकूफ तो कहीं नहीं देखी। तेरे ठीक होने का इन पत्तियों से क्या सम्बन्ध है? तू उस बेल से प्यार किया करती थी—क्यों इसीलिए? बदमाश! अपनी बेवकूफी बन्द कर। अभी सुबह ही तो डाक्टर ने बताया था कि तेरे जल्दी से ठीक होने की संभावना—ठीक किन शब्दों में कहा था—हाँ, कहा था, संभावना रुपये में चौदह आना है। और न्यूयार्क में, जब हम किसी टैक्सी में बैठते हैं या किसी नयी इमारत के पास से गुजरते हैं, तब भी जीने की संभावना इससे अधिक नहीं रहती। अब थोड़ा शोरवा पीने की कोशिश कर और अपनी सू को तस्वीर बनाने दे, ताकि उसे सम्पादक महोदय के हाथों बेच कर, वह अपनी बीमार बच्ची के लिए थोड़ी दवादारू और अपने खुद के पेट के लिए कुछ रोटी पानी ला सके।"

अपनी आँखों को खिड़की के बाहर टिकाये जान्सी बोली, "तुम्हें अब मेरे लिए शराब लाने की जरूरत नहीं। वह, एक और गिरी! नहीं मुझे शोरवे की भी जरूरत नहीं। अब सिर्फ चार रह गयीं। अन्धेरा होने से पहिले उस आखिरी पत्ती को गिरते हुए देख लूँ—बस! फिर मैं भी चली जाऊँगी।"

सू, उस पर झुकती हुई बोली, "प्यारी जान्सी! तुझे प्रतिज्ञा करनी होगी कि तू आँखें बन्द रखेगी, और जब तक मैं काम करती हूँ खिड़की से बाहर नहीं देखेगी! कल तक ये तस्वीरें पहुँचा देनी हैं। मुझे रोशनी की ज़रूरत है, वर्ना अभी खिड़की बन्द कर देती।"

जान्सी ने रुखाई से पूछा, "क्या तुम दूसरे कमरे में बैठकर तस्वीरें नहीं बना सकती?"

सू ने कहा, "मुझे तेरे पास ही रहना चाहिये। इसके अलावा, मैं तुझे उस बेल की तरफ देखने देना नहीं चाहती।"

किसी गिरी हुई मूर्ति की तरह निश्चल और सफेद, अपनी आँखें बन्द करती हुई, जान्सी बोली, " काम खतम होते ही मुझे बोल देना क्योंकि मैं उस आखिरी पत्ती को गिरते हुए देखना चाहती हूँ। बाट जोहते जोहते हैरान हो गयी हूँ। सोचते सोचते थक गयी हूँ। अब अपनी हर पकड़ को ढीला छोड़ना चाहती हूँ और उन बिचारी थकी हुई पत्तियों की तरह तैरती हुई नीचे-नीचे-नीचे चली जाना चाहती हूँ। "

सू ने कहा, " तू सोने की कोशिश कर। मैं खान के मजदूर का माडल बनने के लिए उस बेहरमैन को बुला लाती हूँ। अभी, एक मिनट में आयी। जब तक मैं नहीं लौटूँ, तू हिलना मत ! "

बूढ़ा बेहरमैन उनके नीचे ही एक कमरे में रहता था। वह भी चित्रकार था। उसकी उम्र साठ साल से भी अधिक थी। उसकी दाढ़ी, मायकल ऍंजेलो की तस्वीर के मोजेस की दाढ़ी की तरह, किसी बदशक्ल बंदर के सिर से किसी भूत के शरीर तक लहराती मालूम पड़ती थी। बेहरमैन एक असफल कलाकार था। चालीस वर्षों से वह साधना कर रहा था, लेकिन अभी तक अपनी कला के चरण भी नहीं छू सका था। वह हर तस्वीर को बनाते समय यही सोचता कि यह उसकी उत्कृष्ट कृति होगी, पर कभी भी वैसी बना नहीं पाता। इधर कई वर्षों से उसने व्यावसायिक या विज्ञापन-चित्र बनाने के सिवाय, यह धन्धा ही छोड़ दिया था। उन नवयुवक कला-कारों के लिए माडल बन कर, जो किसी पेशेवर माडल की फीस नहीं चुका सकते थे, वह आजकल अपना पेट भरता था। वह जरूरत से ज्यादा शराब पी लेता और अपनी उस उत्कृष्ट कृति के विषय में बकवास करता जिसके सपने वह सँजोता था। वैसे वह बड़ा खूँखार बूढ़ा था, जो नम्र आदमियों की जोरदार मजाक उड़ाता, और अपने को इन दोनों जवान कलाकारों का पहरेदार कुत्ता समझा करता।

सू ने बेहरमैन को अपने अँधेरे अड्डे में पड़ा पाया। उसमें से बेर की गुठलियों सी गन्ध आ रही थी। एक कोने में वह कोरा कनवास खड़ा था, जो उसकी उत्कृष्ट कलाकृति की पहिली रेखा का अंकन पाने की, पच्चीस वर्षों से बाट जोह रहा था। उसने बूढ़े को बताया कि कैसे जान्सी उन पत्तों के साथ अपने पत्ते जैसे कोमल शरीर का सम्बन्ध जोड़ कर, उनके समान बह जाने की भयभीत कल्पना करती है, और सोचती है कि उसकी पकड़ संसार पर से ढीली हो जायगी।

बूढ़े बेहरमैन ने इन मूर्ख कल्पनाओं पर गुस्से से आँखें निकाल कर अपना तिरस्कार व्यक्त किया।

वह बोला, "क्या कहा? क्या अभी तक दुनियाँ में ऐसे मूर्ख भी हैं, जो सिर्फ इसलिए कि एक उखड़ी हुई बेल से पत्ते झड़ रहे हैं, अपने मरने की कल्पना कर लेते हैं। मैंने तो ऐसा कहीं नहीं सुना! मैं तुम्हारे जैसे बेवकूफ पागलों के लिए कभी माडल नहीं बन सकता। तुमने उसके दिमाग में इस बात को घुसने ही कैसे दिया? अरे, बिचारी जान्सी!"

सू ने कहा, "वह बीमारी से बहुत कमजोर हो गयी है और बुखार के कारण ही उसके दिमाग में ऐसी अजीब अजीब कलुषित कल्पनाएँ जाग उठी हैं। अच्छा; बुड्ढे बेहरमैन, तुम अगर मेरे लिए माडल नहीं बनना चाहते तो मत बनो। हो तो आखिर उल्लू के पट्ठे ही!"

बेहरमैन चिल्लाया, "तू तो लड़की की लड़की ही रही! किसने कहा कि मैं माडल नहीं बनूँगा? चल, मैं तेरे साथ चलता हूँ। आधे घण्टे से यही तो झींक रहा हूँ कि भई चलता हूँ—चलता हूँ! लेकिन एक बात कहूँ—यह जगह जान्सी जैसी अच्छी लड़की के मरने लायक नहीं है। किसी दिन जब मैं अपनी उत्कृष्ट कलाकृति बना लूँगा तब हम सब यहाँ से चले चलेंगे। समझी? हाँ!"

जब वे लोग ऊपर पहुँचे तो जान्सी सो रही थी। सू ने खिड़कियों के पर्दे गिरा दिये और बेहरमैन को दूसरे कमरे में ले गयी। वहाँ से उन्होंने भयभीत दृष्टि से खिड़की के बाहर उस बेल की ओर देखा। फिर उन्होंने, बिना एक भी शब्द बोले, एक दूसरे की ओर देखा। अपने साथ बर्फ लिये हुए ठंडी बरसात लगातार गिर रही थी। एक केटली को उल्टा कर के उस पर नीले कमीज में बेहरमैन को बिठाया गया जिससे वह चट्टान पर बैठे हुये, किसी खान के मजदूर का माडल बन जाय।

एक घण्टे की नींद के बाद जब दूसरे दिन सुबह, सू की आँख खुली तो उसने देखा कि जान्सी जड़ हो कर, खिड़की के हरे पर्दे की ओर आँखें फाड़ कर देख रही है।

सुरसुराहट के स्वर में उसने आदेश दिया, "पर्दे उठा दे, मैं देखना चाहती हूँ।"

विवश हो कर सू को आज्ञा माननी पड़ी।

लेकिन यह क्या! रात भर वर्षा, आँधी, तूफान, और बर्फ गिरने पर भी ईंटों की दीवार से लगी हुई, उस बेल में एक पत्ती अभी तक टिकी हुई थी! उस बेल की वह आखिरी पत्ती थी। अपने डंठल के पास कुछ गहरी हरी, लेकिन अपने किनारोंके आसपास पकावट और झड़ने की आशंका लिए पीली पीली, वह पत्ती जमीन से कोई बीस फुट ऊँची अभी तक अपनी डाली से लटक रही थी।

जान्सी ने कहा, "यही आखिरी है। मैंने सोचा था कि यह रात में जरूर ही गिर जायगी। मैंने तूफान की आवाज़ भी सुनी,। खैर, कोई बात नहीं, यह आज गिर जायगी और उसी समय मैं भी मर जाऊँगी।"

तकिये पर अपना थका हुआ चेहरा झुका कर सू बोली, "क्या कहती है पागल! अपना नहीं तो कम से कम मेरा तो खयाल कर! मैं क्या करूँगी?"

पर जान्सी ने कोई जवाब नहीं दिया। इस दुनियाँ की सब से अकेली वस्तु यह 'आत्मा' है, जब वह अपनी रहस्यमयी लम्बी यात्रा पर जाने की तैयारी में होती है। ज्यों ज्यों संसार और मित्रता से बाँधने वाले उसके बन्धन ढीले पड़ते गये त्यों त्यों उसकी कल्पना ने उसे अधिक जोर से जकड़ना शुरू कर दिया।

दिन बीत गया और संध्या के क्षीण प्रकाश में भी, दीवार से लगी हुई बेल से लटका हुआ वह पत्ता, उन्हें दिखाई देता रहा। पर तभी, रात पड़ने के साथ साथ, उत्तरी हवाएँ फिर चलने लगीं और वर्षा की झड़ियाँ खिड़की से टकरा कर छज्जे पर बह आयीं।

रोशनी होते ही निर्दय जान्सी ने आदेश दिया कि पर्दे उठा दिये जाँय।

बेल में पत्ती अब तक मौजूद थी।

जान्सी बहुत देर तक उसी को एक टक देखती रही। उसने सू को पुकारा, जो चौके में स्टोव पर मुर्गी का शोरवा बना रही थी।

जान्सी बोली, "सूडी, मैं बहुत ही खराब लड़की हूँ। कुदरत की किसी शक्ति ने, उस अन्तिम पत्ती को वहीं रोक कर, मुझे यह बता दिया है कि मैं कितनी दुष्ट हूँ। इस तरह मरना तो पाप है। ला, मुझे थोड़ा-सा शोरवा दे और कुछ दूध में शहद मिला कर ला दे। पर नहीं, उससे पहले मुझे जरा शीशा दे और मेरे सिरहाने कुछ तकिये लगा, ताकि मैं बैठे बैठे तुझ खाना बनाते हुए देख सकूँ।

कोई एक घण्टे बाद वह बोली, "सूडी, मुझे आशा है कि मैं कभी न कभी नेपल्स की खाड़ी का चित्र जरूर बनाऊँगी।"

शाम को डाक्टर साहब फिर आये और सू, कुछ बहाना बना कर, उनसे बाहर जा कर मिली।

सू के दुर्बल काँपते हाथ को अपने हाथों में ले कर डाक्टर साहब बोले, "अब संभावना आठ आना मानी जा सकती है। अगर परिचर्या अच्छी हुई तो तुम जीत जाओगी। और अब मैं, नीचे की मंज़िल पर, एक दूसरे मरीज़ को देखने जा रहा हूँ। क्या नाम है उसका—बेहरमैन!—शायद कोई कलाकार है—निमोनिया हो गया है। अत्यन्त दुर्बल और बुड्ढा आदमी है और झपट जोर की लगी है। बचने की कोई संभावना नहीं। आज उसे अस्पताल भिजवा दूँगा। वहाँ आराम ज्यादा मिलेगा।"

दूसरे दिन डाक्टर ने सू से कहा, "जान्सी, अब खतरे से बाहर है। तुम्हारी जीत हुई। अब तो सिर्फ पथ्य और देखभाल की जरूरत है।"

उस दिन शाम को सू, जान्सी के पलंग के पास आ कर बैठ गयी। वह नीली ऊन का एक बेकार-सा गुलूबन्द, निश्चिन्त होकर बुन रही थी। उसने तकिये के उस ओर से, अपनी बाँह, सू के गले में डाल दी।

सू बोली, "मेरी भोली बिल्ली, तुझसे एक बात कहनी है। आज सुबह अस्पताल में, मिस्टर बेहरमैन की निमोनिया से मृत्यु हो गयी। वह सिर्फ दो रोज़ बीमार रहा। परसों सुबह ही चौकीदार ने उसे अपने कमरे में दर्द से तड़पता पाया था। उसके कपड़े— यहाँ तक कि जूते भी पूरी तरह से भीगे हुए और बर्फ के समान ठंडे हो रहे थे। कोई नहीं जानता कि ऐसी भयानक रात में वह कहाँ गया था ?. लेकिन उसके कमरे से एक जलती हुई लालटेन, एक नसैनी, दो चार ब्रश, और फलक पर कुछ हरा और पीला रंग मिलाया हुआ मिला। जरा खिड़की से बाहर तो देख—दीवार के पास की उस अन्तिम पत्ती को। क्या तुझे कभी आश्चर्य नहीं हुआ कि इतनी आँधी और तूफान में भी वह पत्ती हिलती क्यों नहीं ? प्यारी सखी, यही बेहरमैन की उत्कृष्ट कलाकृति थी। जिस रात को अन्तिम पत्ती गिरी उसी रात उसने उसका निर्माण किया था।"

# एक बदनाम नोट की कहानी

वैसे तो रुपया बोलता है, पर न्यूयार्क निवासी एक छोटे से, दस डालर के बदनाम नोट की कहानी एक फुसफुसाहट से अधिक नहीं हो सकती। खैर, जो कुछ भी हो। आप यदि चाहें तो इस अजनबी की धीमे स्वर में सुनायी गयी कहानी का प्रचार भी कर सकते हैं। यदि आप भी उन लोगों में से हैं जो किसी प्रसिद्ध करोड़पति की कर्णभेदी झङ्कार ही सुनना पसंद करते हैं, तब तो कोई चारा नहीं। पर इतना मत भूलिये कि छोटे सिक्के भी कभी-कभी पते की बात कर सकते हैं। भविष्य में जब कभी आप अपने मोदी के नौकर को चवन्नी इनाम देकर उसके मालिक की चीज़ें आपको झुकते हुए तौल से देने का प्रलोभन दें, तो चांदी के उस सिक्के पर छपी स्वतंत्रता की देवी के सिर की ओर खुदे हुए चार शब्दों पर भी अवश्य ध्यान दें। प्रभावशाली व्यंग की दृष्टि से ये शब्द कुछ बुरे नहीं हैं।

मैं सन् १९०१ में छपा दस डालर का एक नोट हूँ। मुझ जैसे कइयों को आपने अपने मित्रों के हाथ में देखा होगा। मेरे चेहरे पर बीच में अमरीकन जंगली भैंसे का चित्र छपा हुआ है जिसे पाँच–छः करोड़ अमरीका निवासी गलती से भैंस कहते हैं। दोनों सिरों पर कैप्टन लुई और कैप्टन क्लार्क के चित्र शोभायमान हैं। मेरी पीठ पर स्वतंत्रता देवी या अन्नपूर्णा की सुंदर मूर्ति अंकित है, जो रंगभूमि पर खड़ी नाजुक पौधों से घिरी हुई मैक्साइन इलियट के समान दिखाई देती है। मेरी पहचान है: दफा ३५८८ (नये नियमों के अनुसार)। आप यदि मुझे भुनाना चाहें, तो अमरीका की सरकार मेरे बदले में दस नगद डालर गिन देने को बाध्य है–यह मुझे मालूम नहीं कि वे डालर सोने या चाँदी के होंगे या सीसे के या लोहे के।

मेरी इस बातचीत में यदि कहीं रुकावट पड़ जाय, तो आपसे मैं क्षमा की आशा रखता हूँ। धन्यवाद! मुझे विश्वास था कि आप अवश्य

क्षमा कर देंगे। किसी अज्ञात कुलशील के प्रति भी आपके मन में कुछ आदर और हमदर्दी की भावना है। आप शायद समझ गये होंगे कि किसी दस डालर के कलंकित नोट के लिए अपनी बात दिल खोल कर कहने के, शास्त्र-शुद्ध ढंग की संभावना बहुत ही कम होती है। मेरी तो अब तक किसी ऐसे सुसंस्कृत या सुशिक्षित व्यक्ति से मुलाकात ही नहीं हुई, जो दस डालर का नोट हाथ में आते ही सबसे नज़दीक के शराबखाने या चाट की दूकान की ओर न भागता हो।

छः साल की इस छोटी-सी उम्र में ही मैंने कई घाटों का पानी पिया है व दुनियाँ को खूब गहराई से देखा है। मैंने उतने सब प्रकार के कर्ज चुकाये हैं, जो साधारण मर्त्य मनुष्य के हिस्से में आते हैं। अनेक प्रकार के लोगों से मेरा पाला पड़ा है। परंतु एक दिन, एक फटे–पुराने, गीले और गंदे पाँच डालर के नोट ने मानो मुझे नींद में से जगाया। एक कसाई के दुर्गंधयुक्त मोटे से बटुए में हम दोनों पासपास रखे हुए थे।

मैंने कहा, "भई बैल छाप! भीड़ क्यों बढ़ा रहे हो? अब तो तुम्हारे पुनर्जन्म का समय हो चुका! तुम तो १८९९ की पैदाइश हो! अब काफी बूढ़े भी हो चुके हो!"

पाँच का नोट बोला, "माना कि तुम भैंसा छाप हो। पर इतना अकड़ो मत। यदि ८५ अंश तापमान में, मोटी डोरी से बंधे हुए, किसी की अंटी में रहना पड़े, तो तुम्हारी भी यही दशा होगी।"

मैंने कहा, "मोटी डोरी? क्या ऐसा भी कोई बटुआ होता है? कभी सुना तो नहीं। तुम किसके पास थे?"

वह बोला, "एक दूकानदार लड़की के पास।"

मुझे पूछना पड़ा, "दूकानदार लड़की? यह क्या बला होती है?"

पाँच का नोट बोला, "उनका भी युग आ रहा है। तब सब मालूम पड़ जायगा।"

इतने में ही, मेरे पीछे रखा हुआ, जार्ज वाशिंग्टन की छाप वाला, एक दो डालर का नोट बोला, "बकवास बंद करो जी। क्या मोटी डोरी का बटुआ कोई बहुत बुरी चीज होती है? आज मेरी जो दशा हुई, वैसी तुम्हारी होती तब तो शिकायत की कोई बात भी थी। दिन भर कारखाने की धूल से दम घुट गया। और उस मोटी ताजी औरत ने छींक छींक कर नाकों दम कर दिया, सो अलग।"

न्यूयार्क में मेरा यह दूसरा ही दिन था। मैं ब्रूकलिन के एक बैंक में पाँच सौ डालर की एक गड्डी में बैंक की पेन्सिलवानिया शाखा से आया था। मेरे पाँच और दो डालर के मित्रों के सस्ते बटुओं से अबतक मेरी जानपहचान नहीं हुई थी। अपनी तो अबतक आराम से कटी थी। जब रहा, रेशमी बटुए में ही रहा।

मैं भाग्यवान था, और हमेशा चलता फिरता रहा। कभी कभी तो दिन में बीस बीस बार मेरा भुगतान होता था। मैं हर धंधे की भीतरी बातें जान गया और अपने मालिक की हर खुशी के लिए झगड़ता रहा। शनिवार की रात को अकसर मुझे शराबखानों के गल्लों पर लापरवाही से फेंका जाता। दस के नोट हमेशा इसी तरह फेंके जाते हैं। एक या दो के नोट मोड़ कर, चुपचाप, अदा किये जाते हैं। यहाँ मुझे एक नयी आदत पड़ गयी। जब कभी मौका मिलता, मैं गल्ले पर पड़ी शराब की बूँदों को चूस लेता। एक बार मैं एक ठेलेवाले की पतलून की जेब में एक मोटी-सी गंदी और चिकनी गड्डी में बँधा, कई दिनों तक पड़ा रहा। मैं तो सोचने लगा था कि यहाँ से शायद मुक्ति कभी नहीं होगी—क्योंकि मेरा मालिक भविष्य में किसी बड़ी भारी दूकान का एकछत्र अधिकारी बनने के स्वप्न देखता हुआ, सिर्फ आठ सैंट का सड़ियल मांस और प्याज़ खाकर गुज़ारा करता था। परंतु एक रोज वह अपनी हाथगाड़ी चौराहे के बहुत ही पास खड़ी करने के अपराध से परेशानी में पड़ गया और मेरा छुटकारा हुआ। जिस पुलिस के सिपाही के कारण मुझे मुक्ति मिली उसका मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगा। उसने तुरंत ही बावेरी के नज़दीक की एक दूकान से कुछ सिगार खरीद कर मुझे भुनाया। दूकान के पिछवाड़े में जूआ हो रहा था। वहाँ सीमाप्रदेश के एक कप्तान ने मेरे साथ सबसे अच्छा सलूक किया। दूसरे दिन शामको उसने, ब्राडवे के एक रेस्तराँ में शराब के बिल की अदायगी में मुझे पेश किया। मुझे इतना आनंद हुआ जितना बहुत दिन बाद मायके आने वाली किसी लड़की को अपने गाँव के झुरमुटों को देखकर होता है।

किसी बदनाम दस के नोट के लिए ब्राडवे ही सच्ची कर्मभूमि है। एकबार किसी त्यक्ता नारी को दिये हुए भरणपोषण के रूप में मेरा भुगतान हुआ और एक चमड़े के बटुए में मेरी बहुत-सी रेजगारी से जानपहचान हुई। इकन्नियाँ शेखी बघार रहीं थीं कि किस तरह ओसिनिंग में, आइस्क्रीम के मौसम में, जब कभी कई लड़कियाँ किसी भले मानस को घेर लेती हैं,

तो उन्हें कितना व्यस्त रहना पड़ता है। पर छोड़िये इन अनुभवों को। राजमार्गों पर भी, धीरे चलने वाली सवारियों को सड़क के एक किनारे चलना पड़ता है। और भैंसा छाप वाले हम दस के नोट तो निरंतर बदलते हुए इस भीड़भाड़ भरे वातावरण में, एक स्थान पर चिपके रहना बिलकुल पसंद नहीं करते।

'कलंकित या कलुषित धन' की बात पहली बार मैंने तब सुनी जब 'बान' नामक किसी सज्जन ने मेरे जैसे अन्य कई नोटों के बदले में नीले रंग के कुछ टिकट खरीदे।

आधीरात के करीब उस लंबेचौड़े और खुशमिजाज़ व्यक्ति ने हम जैसे कइयों को एक साथ लपेट कर एक मोटी-सी गड्डी बाँधी। उसका चेहरा किसी साधू के समान भारी भरकम था और आँखें उस चौकीदार के समान थीं जिसका वेतन हाल ही में बढ़ाया गया हो।

वह सराफ से बोला, "मुझे पाँच सौ के टिकट दे दो। और देखो चार्ली, संभल कर रहना। पहाड़ी के भाल से चांदनी लुप्त हो जाय उससे पहले मैं झुरमुट में घूमना चाहता हूँ। यदि कोई मुसीबत आ पड़े, तो तिजोरी की ऊपर वाली दराज़ के बाँयें कोने में ६० हजार डालर के नोट अखबार में लिपटे हुए रखे हैं। हिम्मत से काम लेना। जीवन में हर जगह हिम्मत से काम लेना चाहिये और किसी को अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिये। नमस्कार।"

मैंने अपने आपको बीस डालर के दो सुनहरे नोटों के बीच रखा हुआ पाया। उनमें से एक बोला, "कहिये जनाब भैंसा छाप! तुम्हारा भाग्य अच्छा दिखाई देता है। आज रात को तुम्हें जीवन की सच्ची झाँकी दिखाई देगी। आज जैक तहलका मचा देने का इरादा करके आया है।"

मैंने कहा, "पहेलियाँ मत बुझाओ, समझाकर कहो। जूए के अड्डों का अनुभव तो मुझे भी है, पर अर्थहीन बातों में दिमाग खपाने की मुझे आदत नहीं।"

बीस का नोट बोला, "मैं माफी चाहता हूँ। बात यह है कि जैक इस जूआखाने का संचालक है। उसने किसी गिरजे को ५० हजार डालर का दान देना चाहा था। परन्तु उन लोगों ने दान इस कारण से अस्वीकृत कर दिया कि उसका धन कलंकित है। इस वजह से उसे बहुत बुरा महसूस हुआ है व आज रात को वह बेहताशा रुपया उड़ायेगा।"

मैंने पूछा, "यह गिरजा क्या होता है जी?"

बीस का नोट बोला, "ओह, मैं भूल गया कि मैं एक दस के नोट से बातें कर रहा हूँ। ठीक तो है। तुम्हें कैसे मालूम हो सकता है? चन्दे के रूप में तुम दिये नहीं जा सकते क्योंकि तुम्हारी कीमत अधिक है। और गिरजों में जो प्रदर्शनी होती है, उसमें तुम्हारे द्वारा कुछ खरीदा नहीं जा सकता। हाँ, तो गिरजा? गिरजा एक ऐसे बड़े मकान को कहते हैं जहाँ आलपिनें या छोटे छोटे रूमाल बीस-बीस डालर में बेचे जाते हैं।"

इन बीस डालर वाले सुनहरे नोटों से मैं ज्यादा सिर नहीं खपाता। उनमें बड़ी ऐंठ होती है। चमकने वाली हर चीज़ सोना तो हुआ नहीं करती।

जैक, खिलाड़ी तो सचमुच ही ऊँचे दर्जे का था। जब कभी रुपया चुकाने का समय आता तो वेटर से हिसाब-किताब लेना तो उसने सीखा ही नहीं था।

धीरे धीरे जैक काबू से बाहर हो गया। ब्राडवे के सारे पियक्कड़ उसके इर्दगिर्द इकट्ठे हो गये। सागर भरते रहे और पैमाने ढ़लते रहे। हो सकता है कि उसका रुपया कलुषित हो। पर आज तो उसकी उदारता की सीमा नहीं। हर मिनट नया दौर चलता रहा। पहले उसके मित्र जमा हुए; फिर मित्रों के जान-पहचान वाले और अंतमें उसके कुछ दुश्मन भी पुराना बैर भुला कर आ जुटे। आखिर में तो उसने हर नाचने या गाने वाली की इस रजवाड़ी शान से खातिर करना शुरू किया कि होटल के प्रधान वेटर को, यह हंगामा रोकने के लिए, खुद जुलियन मिचेल को कई जगह टेलीफोन करना पड़ा।

अंत में हम शहर के ऊपरी हिस्से के एक ऐसे होटल में पहुँचे, जिससे मैं अच्छी तरह परिचित था। हमें देखते ही वेटरों के मुखिया ने अपने साथियों को कुछ सूचनाएँ दीं और वे बेचारे आने वाले संकट का मुकाबला करने को तैयार हो गये। परंतु उस रात को जैक का इरादा फरनीचर या शीशे के बर्तनों का उद्धार करने का नहीं था। इसलिए हम लोग शांति से बैठ कर गीत गाने लगे। गिरजे के पादरियों ने जैक के प्रस्ताव को ठुकरा कर उसे वाकई बड़ा गहरा सदमा पहुँचाया था।

मदिरा का यह दौर अविरत चलता रहा। उस रोज तो भगवान शंकर स्वयं भी आते तो अपने इन मदमाते गणों को वश में नहीं कर सकते थे।

जैक ने मेरे करीब के बीस डालर के नोट से एक दौर का रुपया चुकाया। अबकी मेरी बारी थी। नोट को टेबल पर रखकर उसने होटल के मालिक को बुलाया।

वह बोला, "माइक, इस रुपये को लेने से भले आदमियों ने तो इन्कार कर दिया है। पर शैतान के नाम पर, क्या इससे तुम्हारे यहाँ की नियामतें खरीदी जा सकती है? लोग कहते हैं कि यह रुपया कलुषित है!"

माइक बोला, "अवश्य! मेरे यहाँ कोई भेदभाव नहीं। मैं तुम्हारे नोट को उसी गड्डी में रखूँगा, जिसके नोट पादरी की लड़की ने गिरजे के मेले में चुंबन बेच बेच कर एकत्र किये हैं, ताकि उसके रहने के लिए मकान बन सके।"

रात को एक बजे, जब कि वेटरों ने बाहर के दरवाज़े बंद कर दिये, तब एक औरत होटल के दरवाजे में घुस कर जैक के टेबल के पास आ खड़ी हुई। इस किस्म की स्त्रियों से आप भी परिचित होंगे। काली शाल, रूखे बाल, फटे-पुराने कपड़े, निस्तेज मुख और बीमार बिल्ली की सी आँखें। यह स्त्री उनमें से थी जो भिखारियों को पकड़ ले जाने वाली पुलिस और मोटरगाड़ियों से सदा भयभीत रहती हैं। वह आकर चुपचाप खड़ी रही व टेबल पर पड़े हुए नोटों को घूरने लगी।

जैक उठ खड़ा हुआ। उसने मुझे लपेटा और झुक कर अभिवादन करते हुए उस औरत के हाथ में थमा दिया।

किसी अभिनेता की सी अदा से वह बोला, "बहन, यह रुपया कलंकित है। मैं एक जुआरी हूँ। इस नोट को मैंने आज ही एक बड़े प्रतिष्ठित आदमी के लड़के से जीता है। उसके पास यह कहाँ से आया—मुझे मालूम नहीं। यदि आप इसे स्वीकार करने की कृपा करें, तो यह आपका ही है।"

महिला ने काँपते हाथों से मुझे उठा लिया।

वह बोली, "भाई, मेरी अंगुलियों ने इसके समान हजारों को गिना है जब कि वे सरकारी छापेखाने से ताजे छप कर निकलते थे। मैं खजाने में नौकर थी। वहाँ के एक उच्च अधिकारी की कृपा से मुझे नौकरी मिली थी। और अब तुम कहते हो कि यह रुपया कलंकित है। आप यदि सिर्फ इतना जानते... पर नहीं, मैं कुछ नहीं कहूँगी। मैं अपने हृदय की गहराई से आपका अहसान मानती हूँ। भगवान तुम्हारा भला करे।"

करीब करीब भागती हुई वह औरत मुझे कहाँ ले गयी ? आप सोच सकते हैं ? सीधे नानाबाई की दूकान पर। जैसे उसके भाग्य का निपटारा होने वाला हो। उसने एक दर्जन भर मोटी रोटियाँ और कुम्हार के चाक के समान बड़ा, मीठा केक खरीदा और वहाँ से भागी। मेरा और उसका संबंध यहीं तक रहा, क्योंकि मैं भुनाया जा चुका था व अब नानबाई की दूकान में कैद था। मैं अपने भाग्य के संबंध में तर्कवितर्क करने लगा। कल मेरा क्या होगा ? फिटकरी के सौदे का भुगतान होगा ? या किसी सीमेंट के कारखाने में जाना पड़ेगा ?

एक सप्ताह बाद मेरी उस एक डालर के नोट से एकाएक मुलाकात हो गयी जो मेरे बदले में भठियारे ने उस स्त्री को दिया था।

मैंने कहा, "कहिये मिस्टर ई० ३५०३९६६९ क्या पिछले शनिवार की रात को मेरे बदले में तुम्हारा ही भुगतान हुआ था ?"

उस एकाकी ने बेतकल्लुफी से जवाब दिया, "बेशक।"

मैंने पूछा, "कुछ सुनाओ तो। यहाँ से जाने के बाद कैसी कटी ?"

एक डालर का नोट बोला, "उसने ई० १७०५१४३१ की सहायता से तो दूध और माँस खरीदा। मकान मालिक के आने तक उसने मुझे बचा रखा था। कमरे में एक बीमार बच्चा था। रोटी को देखते ही वह जिस तरह से झपटा—बस देखने से ही अन्दाज़ आ सकता है। शायद भूखों मर रहा था। उसके बाद उसने कुछ देर तक प्रार्थना की। भई दशक महाशय, सुन रहे हो न ? तुम जहाँ एक प्रार्थना सुनते हो वहाँ हम एक डालर वालों को दस सुननी पड़ती हैं। प्रार्थना के शब्द कुछ इसी तरह थे: "जो गरीबों की सहायता करता है..." पर छोड़ो इस अभाव की कहानी को। मैं तो इन दीन-दुखियों के साथ से ऊब सा गया हूँ। काश, मैं भी तुम्हारे समान बड़ा और कलंकित नोट होता ! सम्भ्रान्त समाज में घूम तो सकता।"

मैंने कहा, "चुप रहो जी। ऐसी कोई बात नहीं। मैं उस प्रार्थना का अंतिम हिस्सा भी जानता हूँ... 'वह ईश्वर की सहायता करता है'। अब पढ़ो, मेरी पीठ पर क्या छपा हुआ है।

"इस नोट से, व्यक्तिगत या सरकारी किसी भी प्रकार के ऋण की अदायगी की जा सकती है, जो कानूनी तौर से इस पर छपी हुई कीमत के बराबर मानी जायगी।"

और मैं बोला, "यह कलंकित धन की बात! उफ़, मेरा तो सिर घुमा देती है।"

# म्युनिसिपल रिपोर्ट

हर नगरी है शोख अन्य को
जो ललकार रही झट से।
एक पहाड़ी पर से अपनी,
एक कहीं सागर तट से॥

—रुडयार्ड किपलिंग

शिकागो या बफालो या नाशविले-टेनेसी को लेकर एक उपन्यास लिखने की कल्पना कीजिये! अमरीका भर में ऐसे बड़े शहर सिर्फ तीन हैं, "जिनको कहानी के शहर" कह सकते हैं—एक तो न्यूयार्क, दूसरा न्यू ओर्लियन्स और इन सबसे अच्छा, सान फ्राँसिस्को—**फ्रैंक नारिस!**

पूरब पूरब ही है, और केलिफोर्निया वासियों के अनुसार, पश्चिम सान फ्राँसिस्को है। केलिफोर्निया वाले, एक राज्य के निवासी मात्र नहीं हैं। वे तो एक जाति हैं। वे पश्चिम के दक्षिणी है। वैसे शिकागो वाले भी अपने शहर के प्रति कम वफादार नहीं हैं, पर अगर आप उन्हें इसका कारण पूछें तो वे हकला जावें और झील की, मछलियों की, या नयी 'ऑड फैलो' बिल्डिंग की बातें बताने लगें। पर केलिफोर्निया वाले विस्तार से बतायेंगे।

मौसम को ले कर ही, उनके तर्क ऐसे हैं, जो आध घण्टे तक चल सकते हैं, जब तक आप अपने कोयले के बिल और मोटे बनियान के बारे में चिन्ता करते रहें। पर ज्यों ही वे आपके मौन को, विश्वास की चुप्पी समझने लगे कि उन पर पागलपन सवार हुआ समझिये। अपने 'गोल्डन गेट' वाले शहर का वे ऐसा चित्र खींचेंगे मानो वह नयी दुनियाँ का 'बगदाद' हो। पर यह हुई अपनी अपनी राय; इसके खंडन की आवश्य-

कता नहीं। लेकिन प्यारे भतीजों और भानजों! (आदम और ईव की सन्तान होने के कारण) वह आदमी कितना अधीर और उतावला है, जो नक्शे में उँगली रख कर कह उठता है, "इस शहर में रोमांस नहीं हो सकता—वहाँ क्या हो सकता है?" निश्चय ही यह एक जल्दबाजी की चुनौति है—एक ही वाक्य में इतिहास, रोमांस और नक्शानवीस 'रान्द और मेकनैली' को चुनौति!

नैशविले—एक शहर, निर्यात का बन्दरगाह, टैनेसी राज्य की राजधानी, कम्बरलैण्ड नदी के किनारे बसा हुआ, दो रेलों का जंकशन! यह शहर सारे दक्षिण में विद्या का सब से बड़ा केन्द्र माना जाता है।

रात को कोई आठ बजे मैं गाड़ी से उतरा। अपने सम्पूर्ण ज्ञान भण्डार में इसके लिए विशेषणों को खोजने की असफल चेष्टा करने के बाद, मैं एक नुसखे की शरण लेता हूँ:

लन्दन का कुहरा—३० भाग; मलेरिया—१० भाग; गैस—२० भाग; सवेरे किसी आँगन में पड़ी हुई ओस—२५ भाग; मालती फूलों की सुगन्ध—१५ भाग। इन सब को मिला लें।

यह मिलाजुला रसायन, आपको नैशविले की बूँदाबाँदी का सही अन्दाज दे सकेगा। इसमें न तो फिनैल की गोली जैसी खुशबू है और न मटर के सूप का पतलापन। लेकिन यह काफी है, इससे काम चल जायगा।

एक गाड़ी में बैठ कर मैं होटल पहुँचा। इस गाड़ी के शिखर पर बैठ कर, 'सिडनी कार्टन' जैसे एक्टर की नकल करने से अपने आप को रोकने के लिए, मुझे काफी संयम से काम लेना पड़ा। इस गाड़ी को किसी बीते हुए युग के जानवर खींच रहे थे और इसे एक काला-काला, दास-प्रथा से मुक्ति पाया हुआ प्राणी, हाँक रहा था।

मैं थका हुआ था और मुझे नींद आ रही थी। इसलिए होटल के पास पहुँचते ही मैंने जल्दी से, उसकी माँग के अनुसार पचास सैंट चुका दिये। मैं उसकी आदतों से परिचित था और उसकी 'पुराने मालिक' और "युद्ध से पहले' की कोई बकवास नहीं सुनना चाहता था।

होटल ऐसा था की हम उसे 'जीर्णोद्धार' किया हुआ कह सकते हैं। इसका मतलब यह है कि उसमें बीस हजार डालर की कीमत के नये संगमरमर के खम्भे, फर्श, बिजली की बत्तियाँ, बरामदों में पीतल के पीकदान, नये टाइमटेबल और हर कमरे में 'लुकआउट माउन्टेन' के सुन्दर चित्र

लगाये गये थे। व्यवस्थापकों की निन्दा नहीं की जा सकती। दक्षिण की सारी नम्रता से आपकी ओर ध्यान दिया जाता है। सेवा इतनी धीमी, जितनी केंचुए की चाल और उतनी खुशमिजाज, जितना 'रिप वान विंकल'। खाना ऐसा कि आप सौ कोस से खाने आयँ, दुनियाँ के किसी होटल में आपको वैसी पकी हुई मसालेदार मुर्गी नहीं मिल सकती।

शाम के भोजन के समय मैंने हब्शी वेटर से, कोई तफरी की जगह पूछी। वह एक मिनट तक उदास सोचता रहा, फिर बोला, "श्रीमान, मेरे खयाल से, सूरज डूबने के बाद, शायद यहाँ कुछ भी नहीं है।"

सूरज तो डूब चुका था। वह तो उस बूँदाबाँदी में कभी का छिप चुका था। इसलिए वह दृश्य तो मैं नहीं देख सकता। तो भी, जो कुछ दिख सके, वही देखने के लिए, मैं सड़क पर निकल पड़ा।

यह सड़क, ऊबड़ खाबड़ जमीन पर बनी हुई थी और सालाना ३२,४७० डालर की कीमत पर उसे बिजली की रोशनी से प्रकाशित किया जाता था।

ज्यों ही मैं होटल से बाहर निकला कि कोई जातीय उपद्रव शुरू हो गया। दासता से मुक्त व्यक्ति, अरब या जुलू लोगों के एक दस्ते ने मेरे ऊपर हमला बोल दिया। भगवान का शुक्र है कि उनके हाथों में हथियारों के रूप में बन्दूकें नहीं थीं—केवल चाबुक थे। मुझे कई काली-काली, भद्दी गाड़ियों का एक कारवाँ, धुँधला सा दिखाई पड़ा। "शहर में कहीं भी चलिये, पचास सेंट में"—इन आवाजों को सुन कर मुझे विश्वास हो गया कि मैं उनका बलिपशु न हो कर, सिर्फ 'सवारी' हूँ।

मैं शहर की लम्बी लम्बी सड़कों पर चल पड़ा जो सब की सब ऊपर की ओर ही चढ़ती जान पड़ती थीं। मैं अचरज में पड़ गया कि ये वापिस कैसे उतरती होंगी। शायद वे उतरती ही नहीं। सीढ़ियों की तरह उनकी ऊँचाई घटती जाती है। किसी किसी मुख्य सड़क पर मुझे कहीं कहीं दुकानों में रोशनी दिखाई दी। इधर उधर नागरिकों को ले जाने वाली टैक्सी गाड़ियाँ भी थीं। मैंने कई व्यक्तियों को वादविवाद में डूबे हुए अपने पास से गुजरते देखा और एक सोडा वाटर व आइसक्रीम की दुकान से, उमंग भरा अट्टहास भी सुना। मुख्य सड़क के अलावा दूसरी सड़कों के किनारे शान्त, गृहस्थों के घर कतार में बँधे हुए थे। इनमें से कइयों की, पर्दे लगी हुई खिड़कियों के पीछे से, रोशनी चमक रही थी और पियानो की मीठी ध्वनियाँ सुनाई पड़ रहीं थीं। वास्तव में वहाँ तफरी लायक कुछ भी नहीं था। अच्छा

होता कि मैं सूरज डूबने से पहिले यहाँ आता। इसलिए मैं अपने होटल में लौट आया।

सन १८६४ के नवम्बर में, कनफेडरेट दल के सेनापति हुड ने नैशविले पर चढ़ाई की और जनरल थामस की राष्ट्रीय सेना को हरा दिया। फिर राष्ट्रीय सेना ने अपना गठन किया और कनफेडरेट सेना को एक भीषण युद्ध में हराया।

जीवन भर मैंने दक्षिण के, इन तम्बाकू खाने वाले क्षेत्रों के लोगों की, निशाने बाजी की बातें सुनी हैं, देखी हैं और उनकी सराहना की है। लेकिन मेरे होटल में एक आश्चर्य मेरी राह देख रहा था। बड़े बरामदे में बारह नये चमकीले, सुन्दर, बड़े, पीतल के पीकदान थे, इतने बड़े कि इन्हें घड़े कहा जा सकता है और इतने चौड़े मुँहवाले कि औरतों की बेसबाल टीम की कोई सदस्या, पाँच कदम दूर खड़ी हो कर, उसमें गेंद डाल सके। और हालाँ कि वहाँ एक भयंकर युद्ध हो चुका था, बल्कि अभी तक चल रहा था, दुश्मन का कोई नुकसान नहीं हुआ था। नये, चमकीले, सुन्दर, अछूते, वे वैसे ही खड़े थे। लेकिन भगवान की कसम! वह टाइल वाला फर्श—वह खूबसूरत टाइल वाला फर्श! मैं नैशविले के युद्ध को याद किये बिना और उन लोगों की निशानेबाजी के विषय में कई निष्कर्ष निकाले बिना नहीं रह सका, क्योंकि यह मेरी बेवकूफ आदत है।

यहाँ मैंने सब से पहिले मेजर ( झूठमूठ के ) वेन्टवर्थ कासवैल को देखा। ज्यों ही मेरी दृष्टि ने उसके दर्शन किये कि मुझे उसकी किस्म का पता चल गया। चूहों के भौगोलिक सीमाएँ नहीं रहती। मेरे पुराने दोस्त ए. टैनीसन ने हमेशा की तरह क्या ही अच्छा कहा है,

"ए जाहिद, बड़बड़ाते ओठों को
बुरा भला कह!
इंगलैण्ड को तबाह करने वाले चूहे को,
शाप दे।"

इस 'इंगलैण्ड' शब्द को, मान लो कि, बदल भी दें। चूहा तो चूहा ही रहेगा!

यह आदमी होटल के बरामदों को उस भूखे कुत्ते की तरह नाप रहा था, जो यह भूल गया हो कि उसने अपने खाने की हड्डी को कहाँ छिपाया है! उसका चेहरा बहुत चौड़ा, लाल, माँसल और भगवान बुद्ध की तरह

ध्यानावस्थित था। उसमें एक ही गुण था कि उसकी दाढ़ी चिकनी घुटी हुई थी। मनुष्य का पशुत्व तब तक अमर नहीं प्रतीत होता, जब तक उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई न हो। मेरा खयाल है कि अगर उसने उस दिन अपने उस्तरे का प्रयोग न किया होता तो मैं उसकी मनुहारों को ठुकरा देता और संसार के अभियुक्तों की सूची में एक नाम और जुड़ने से बच जाता।

मैं एक पीकदान से कोई पाँच फीट दूर खड़ा हुआ था कि मेजर कासवैल ने उस पर गोलीबारी करना शुरू किया। मैं यह देखने के लिए काफी सतर्क था कि हमलावर के पास छर्रे की बन्दूक न हो कर, ऐसी बन्दूक थी जिससे एक के बाद एक गोलियाँ छूटती हैं। इसलिए मैं फुर्ती से, एक तरफ हो गया। बस, मेजर को एक न लड़ने वाले से माफी माँगने का अवसर मिल गया। उसके होठ सदा बड़बड़ करने वाले थे। चार मिनट में ही वह मेरा दोस्त बन गया और मुझे 'बार' में घसीट ले गया।

मैं बीच ही में आपको यह बता दूँ कि मैं भी एक दक्षिणी हूँ लेकिन कर्म से नहीं। मैं डोरी की टाइयों से, टेढ़े किनारे वाले टोप से, राजकुमार अलबर्ट से, शरमन द्वारा नष्ट की गयी रुई की गाँठों से और लकड़ी आदि चबाने से घृणा करता हूँ। जब आरकेस्ट्रा पर 'डिक्सी' गाना बजता है, तो मैं ताली नहीं बजाता। मैं अपनी चमड़े से मँढ़ी कुर्सी पर और खिसक कर किसी तीखी शराब की फरमाइश कर देता हूँ और मेरी इच्छा होती है कि अगर 'लाँगस्ट्रीट'...लेकिन छोड़िये, क्या फायदा?

मेजर कासवेल ने अपने मुक्के से 'बार' के गल्ले पर इस प्रकार धमाका किया, मानो 'फोर्ट सुम्टर' में पहली गोली छूटने की प्रतिध्वनि हुई। जब उसने आखिरी गोली छोड़ ली तो मुझे कुछ सन्तोष हुआ। लेकिन तभी उसने वंश परम्परा की चर्चा छेड़ दी और यह सिद्ध कर दिया कि आदम भी कासवेल परिवार का कोई दूर का भतीजा था। वंशावली समाप्त करके, उसने मेरी बदनसीबी से, अपने व्यक्तिगत पारिवारिक विषयों की चर्चा शुरू कर दी। उसने अपनी पत्नी के बारे में कई बातें कहीं। उसका उद्गम हव्वा तक बताया और इस अफवाह का खंडन किया कि 'नॉड' के देश से उसका कोई सम्पर्क है।

अब तक मुझे सन्देह होने लग गया था कि वह इस सत्य को छिपाने के लिए ही इतने जोर से चिल्ला रहा है कि उसने शराब लाने के लिए

आदेश दे दिया है और उनका दाम चुकाते समय मैं घबरा जाऊँगा। लेकिन शराब आते ही उसने एक चाँदी का डालर जोर से बजा दिया। तब तो दूसरा दौर आना लाजिमी था। और जब मैंने उसके दाम चुका दिये तो उससे छुट्टी ली, क्योंकि मैं अब उससे ऊब गया था। पर इससे पहिले कि मैं उससे अपना पिण्ड छुड़ाऊँ उसने जोर शोर से अपनी पत्नी की आमदनी भी बता दी और कुछ मुट्ठी भर चाँदी के सिक्के भी दिखा दिये।

जब मैं होटल के क्लर्क के पास अपनी चाबी लेने गया, तो उसने अत्यन्त नम्रतापूर्वक मुझसे कहा, "अगर यह आदमी आपको परेशान करता हो और आप उसकी शिकायत करना चाहें, तो हम उस पर पाबन्दी लगा सकते हैं। वह बड़ा उत्पाती और 'लोफर' है और उसके जीवन-निर्वाह का कोई साधन दिखाई नहीं देता, यद्यपि उसके पास अक्सर पैसे मिलते हैं। लेकिन अब तक हम उसे कानूनन बाहर निकाल फेंकने की कोई तरकीब नहीं लगा सके।"

कुछ सोचने के बाद मैंने कहा, "नहीं तो, शिकायत करने जैसी तो कोई बात नहीं। लेकिन मैं इतना जरूर कह सकता हूँ कि मुझे उसका संग कतई पसन्द नहीं।" मैंने आगे कहा, "तुम्हारा शहर तो बड़ा खामोश मालूम देता है। अपने गाँव में आने वाले अजनबी को तुम क्या मनोरंजन, उत्साह या जीवट दिखाने का मौका दे सकते हो?"

क्लर्क बोला, "अच्छा साहब, अगले गुरुवार को यहाँ एक खेल होगा। मैं पक्का मालूम करके उसका इश्तिहार आपके पास, ठंडे पानी के साथ भेज दूँगा। अच्छा, नमस्ते।"

अपने कमरे में लौटने के बाद मैं खिड़की से बाहर देखने लगा। अभी सिर्फ दस ही बजे थे, फिर भी शहर एकदम शान्त था। बूँदाबाँदी हो रही थी और धुँधली बत्तियाँ भी चमक रही थीं, लेकिन एक दूसरे से इतनी दूर दूर जितनी औरतों की दुकान में मिलने वाली केक में दाखें!

ज्यों ही मेरा पहला पाँव, नीचेवाले की छत पर गिरा, मैंने अपने आप से कहा, "बड़ी शान्त जगह है। पूरब और पश्चिम के शहरों में मिलने वाली विविध रंगीनियों में से कुछ भी नहीं! सिर्फ एक सादा, अच्छा, साधारण, व्यापारिक शहर!"

देश के उत्पादन-केन्द्रों में नैशविले का बहुत ऊँचा स्थान है। यह अमरीका भर में जूतों की पाँचवे नम्बर की मण्डी है, दक्षिण भर की सब

से अधिक मिश्री और आतिशबाजी उत्पादन करने वाली जगह है और दवाइयों, गृहस्थी की चीजों और आटा दाल का यहाँ सब से अधिक धन्धा होता है।

मै आपको यह भी बतादूँ कि मैं नैशविले कैसे आया! आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इस विषयान्तरण से आपको जितनी परेशानी हो रही है, उतनी ही मुझे भी हो रही है। मैं अपने व्यापार के सम्बन्ध में और कहीं घूम रहा था, पर उत्तर के किसी साहित्यिक पत्र का आदेश पाकर मुझे यहाँ रुकना पड़ा। मुझे कहा गया कि मैं उस पत्र की एक लेखिका, अजेलिया अदेयर से, उस पत्र का व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करा दूँ।

अदेयर ने (जिसके व्यक्तित्व को जानने का उसके अक्षरों के सिवाय कोई तरीका नहीं था) कुछ लेख और कविताएँ भेजी थीं, जिन्हें सम्पादकों ने, अपने एक बजे वाले भोजन के समय, पढ़ कर स्वीकार किया था। इसलिए उन्होंने मुझे इस काम पर तैनात किया कि मैं, उस अदेयर को समझा बुझा कर, उससे नक्की कर लूँ कि वह इस पत्र को प्रति शब्द दो सैंट के हिसाब से अपना सारा लेखन दे दे। यह काम, दूसरे प्रकाशकों द्वारा दस या बीस सैंट का लालच देने से पहिले, हो जाना चाहिये था।

दूसरे दिन सुबह नौ बजे, मसालेदार मुर्गी खा पी कर (आप भी खा कर देखें यदि इस होटल को पा सकें तो) मैं उस बूँदाबाँदी में बाहर निकला, जो अभी तक रुकने का नाम नहीं ले रही थी। पहिले ही मोड़ पर मुझे चचा सीज़र मिल गये। वह एक हट्टाकट्टा हब्शी था—पिरामिड से भी पुराना, भूरे बाल, ब्रूटस की याद दिलाने वाला चेहरा, और कुछ देर बाद स्वर्गीय राजा कैटिवायो सा दिखने वाला! उसने एक इतना अजीब कोट पहिन रखा था, जैसा मैंने न कभी देखा था और न कभी भविष्य में देखने की आशा कर सकता हूँ। वह उसके पैर के टखनों तक लम्बा था और कभी कनफेडरेट सेना की वर्दी रह चुका था? पर वर्षा, धूप और उम्र ने उसे इतना रंग बिरंगा कर रखा था कि 'जोसफ' का कोट भी उसके सामने इकरंगा दिखाई देने लगता। मुझे इस कोट में उलझना पड़ रहा है क्योंकि इसका उस कहानी से सम्बन्ध है, जो बहुत देर बाद आ रही है, क्योंकि नैशविले में आप मुश्किल से ही किसी घटना की आशा कर सकते है।

कभी, यह किसी मिलिट्री अफसर का कोट रहा होगा। उसकी किनार की गोट तो गायब थी, पर सामने की तरफ, ऊपर से नीचे तक, उसके खूबसूरत बटन और रिबन वगैरह शानदार तरीके से लगे थे। लेकिन अब वे बटन और रिबन भी जा चुके थे। उनकी जगह पर सन के गुँथे हुए, ये बुने हुए बटन बहुत लापरवाही से लगाये गये थे। चतुराई से मरोड़े हुए, नये बटन, बड़ी शान्ति से बैठ कर लगाये गये थे। इन्हें, उन टूटे हुए शानदार बटनों की स्थानपूर्ति के लिए अत्यन्त अरुचि और कष्टसाध्य सतर्कता से लगाया गया होगा, क्योंकि वे उन टूटे हुए बटनों की गोलाई का बहुत सच्चाई के साथ काम पूरा कर रहे थे। और इस कोट के दर्द और सुख को पूरा करने के लिए एक बात और–एक बटन को छोड़ कर बाकी सब के सब झड़ चुके थे। सिर्फ, ऊपर से दूसरा बटन रह गया था। बटन के काजों में से और दूसरी तरफ नये छेद बना कर उनमें से, सन के डोरे निकाल कर बाँध लिये गये थे। इतनी मौज से सजाया गया बहुरंगी आकृति का ऐसा विलक्षण कोट कभी नहीं बना होगा। वह एकमात्र बटन, आधे डालर के नाप का था और पीले सींग पर खुरदरे सन को लपेट कर बनाया गया था।

वह हब्शी एक गाड़ी के पास खड़ा था, जो इतनी पुरानी थी कि खुद 'हैम' भी अपनी दो जानवरों से जुती नाव को छोड़ने के बाद, इसके साथ अपनी गाड़ी चलाने की इच्छा कर सकता था। ज्यों ही मैं उसके पास गया, उसने गाड़ी का फाटक खोला, पाँखों का एक झाड़ू निकाल कर उसको बिना काम में लिये, घुमाते हुए, गहरी और लड़खड़ाती आवाज़ में बोला, "अन्दर बैठिये सरकार, जरा भी धूल नहीं है–अभी अभी एक अंत्येष्टि से लौट कर आया हूँ सरकार!"

मैंने अन्दाज़ लगाया कि ऐसे महान अवसरों पर गाड़ियों की विशेष सफाई की जाती होगी। सड़क पर ऊपर नीचे देखा तो लगा कि सड़क पर खड़ी हुई गाड़ियों में से चुनाव करना कोई अर्थ नहीं रखता। वे सब एक सी हैं। मैंने अपनी डायरी में 'अज़ालिया अदेयर' के पते को टटोलना शुरू किया।

मैंने कहा, "मुझे ८६१ जैस्मीन स्ट्रीट जाना है।" मैं गाड़ी में चढ़ने ही वाला था कि एक क्षण के लिए उस हब्शी के गोरिला जैसे मोटे हाथ ने मुझे रोक दिया। एक क्षण के लिए उसके भारी, शनि जैसे चेहरे पर सन्देह और

शत्रुता झलक उठी। फिर शीघ्रता से अपने चेहरे पर विश्वास ला कर, उसने खुशामद करते हुए कहा, "क्यों सरकार, वहाँ क्यों जा रहे हैं?"

मैंने जरा रुखाई से पूछा, "तुम्हें इससे क्या मतलब?"

"कुछ नहीं साहब, कुछ नहीं! सिर्फ यही कि वह शहर के एकान्त में है और बहुत कम लोगों को वहाँ जाने का काम पड़ता है। अन्दर बैठिये। जगह एकदम साफ है—अभी अभी अंत्येष्टि से लौटा हूँ सरकार!"

हमारी यात्रा का अन्त कोई डेढ़ मील चलने के बाद हुआ होगा। ऊबड़खाबड़ जमीन पर उस टूटीफूटी गाड़ी की खड़खड़ाहट के सिवाय मैं और कोई ध्वनि नहीं सुन सका और उस बूँदाबाँदी के सिवाय मैं वहाँ और कुछ भी नहीं सूँघ सका। अब तो इसमें भी कोयलों का धुँवा और तारपीन मिश्रित फूलों की सुगन्ध मिल चुकी थी। उन धुँधली खिड़कियों में से धुँधले घरों के सिवाय कुछ भी नहीं दिखाई देता था।

इस शहर का क्षेत्रफल था दस वर्गमील; १८१ मील लम्बी सड़कें, जिनमें से १३७ मील पक्की; पानी के मुख्य नल ७७ मील लम्बे, जिनका खर्च २,०००,००० डालर।

जैसमीन स्ट्रीट का ८६ नं., एक टूटा हुआ मकान था—सड़क से कोई तीस गज अन्दर की तरफ पेड़ों के एक सुन्दर झुरमुट और जंगली झाड़ी से घिरा हुआ! मकान की चहारदीवारी भी झाड़ियों से अच्छादित थी और उसका फाटक रस्सी का एक फन्दा अटकाकर बन्द किया हुआ था। अन्दर जाने पर ऐसा लगता था कि ८६१ नं. का यह मकान, केवल एक खाली डब्बा, एक धुँधली छाया या अपनी पुरानी शानोशौकत और समृद्धि का प्रत था। लेकिन कहानी में, मैं अभी तक अन्दर नहीं पहुँचा हूँ।

जैसे ही बग्घी की खड़खड़ाहट रुकी और उसमें जुते हुए, थके माँदे चौपाये रुके, मैंने उस बूढ़े को पचास सैंट किराये के और पच्चीस सैंट इनाम के बतौर दिये। इनाम देते समय मैंने मन ही मन अपनी उदारता की सराहना की। लेकिन उसने पैसे लेने से इन्कार कर दिया और बोला, "दो डालर दीजिये, साहब।"

मैंने पूछा, "क्यों? होटल के पास खड़े तुम तो चिल्ला रहे थे कि शहर के किसी भी भाग में चलने का किराया पचास सैंट है।

उसने अपनी ज़िद कायम रखते हुए कहा, "नहीं साहब, दो डालर दीजिये! यह जगह होटल से बहुत दूर है!"

मैंने बहस की, "लेकिन है तो शहर के अन्दर ही। और कोई खास दूर भी नहीं। यह मत समझना कि किसी अनाड़ी से पाला पड़ गया है! पूरब में जो पहाड़ियाँ दिखाई दे रही हैं, उनके ठीक पीछे ही मेरा जन्म और पालन पोषण हुआ है (यह बात मैंने पूरब की ओर संकेत कर के कह तो दी, पर बूँदाबाँदी के कारण दिखाई कुछ भी नही दे रहा था।) बेवकूफ बुड्ढे! तुझे आदमियों की पहचान बिल्कुल नहीं!" किंग कैटिवायो के चेहरे की सख्ती, कुछ नरम हुई और वह बोला, "अच्छा तो आप भी उधर के ही हैं। मैं आपके जूतों से चकमा खा गया था क्योंकि दक्षिण वाले लोग अक्सर इतने नुकीले जूते नहीं पहिनते।"

मैंने भी अपना हठ आगे बढ़ाया और कहा, "अब तो किराया पचास सैंट ही होगा न?"

उसके चेहरे पर विद्रोह और गर्व के भाव कोई दस सैकण्ड तक, फिर से दिखाई दे कर गायब हो गये। वह बोला," मालिक, किराया तो पचास सैंट ही ठीक है, पर मुझे दो डालर की सख्त जरूरत है। उसके बिना मेरा काम चल ही नहीं सकता। आप दक्षिण के हैं, यह जानकर मैं जबर-दस्ती तो नहीं कर सकता, पर अर्ज यही है कि आज रात तक कैसे भी, मुझे दो डालर मिलने ही चाहिये और धंधा बिल्कुल मन्दा है।"

उसके मुर्झाये चेहरे पर शान्ति और आत्मविश्वास झलक उठा। उसका भाग्य उसकी कल्पना से भी ज्यादा बलवान निकला। किराये की दरों से अनभिज्ञ, किसी बेवूफ अनाड़ी के स्थान पर, उसका पाला एक रईस से पड़ गया था।

अपना बटुआ निकालते हुए मैंने कहा, "अबे, बेईमान, पाजी, बुड्ढे! तुझ तो पुलिस के हवाले कर देना चाहिये।"

लेकिन उसके चेहरे पर तो मुस्कराहट छा रही थी। वह समझ गया—समझ गया—समझ गया।

मैंने उसे एक एक डालर के दो नोट थमा दिये। देते समय मैंने देखा कि उनमें से एक नोट काफी पुराना था। दाहिने हाथ का ऊपर का कोना गायब था और नोट, बीच में से फटा हुआ भी था। 'नीले रंग के पतले कागज के एक टुकड़े से दोनों टुकड़ों को जोड़ देने के कारण ही, वह अब तक लनदेन के काम में आ रहा था।

उस अफ्रीकी लुटेरे के सम्बन्ध में अभी इतना ही कहना काफी है। वह खुश हो कर चला गया और मैंने रस्सी का फन्दा उठा कर चरमराते दरवाज़े को खोला।

जैसा कि मैं कहा चुका हूँ, मकान किसी भूतिया महल के समान था। पिछले बीस वर्षों से चूना सफेदी से उसका स्पर्श भी नहीं हुआ था। मेरी समझ में नहीं आया कि अब तक किसी भीषण आँधी में ताश के घर की तरह वह गिर क्यों नहीं गया! लेकिन इतने में ही मेरी नजर, उसे चारों तरफ से घेर कर खड़े हुए वृक्षों पर पड़ी। वे वृक्ष इतने पुराने थे कि उन्होंने नैशविले की लड़ाई भी देखी थी और अब भी वे आसरा माँगने वालों की, आँधी और शीत रूपी दुश्मनों से, अपनी डालियों रूपी बाँहों द्वारा रक्षा करते हैं।

अज़ेलिया अदेयर, पचास वर्ष की, सफेद बालों वाली, घुड़सवार सिपाहियों की वंशज और अपने मकान के समान ही जीर्ण शीर्ण महिला थी। उसने बहुत ही सस्ते, पर बिल्कुल साफ कपड़े पहिन रखे थे। किसी साम्राज्ञी की सी सौम्य अदा से उसने मेरा स्वागत किया।

स्वागत के कमरे में चीड़ के तख्ते की, बिना रँगी अलमारियों में, कुछ किताबें, एक टूटा हुआ संगमरमर का टेबल, एक फटी पुरानी दरी, पिचकी हुई गद्दियों वाला एक कोच और दो तीन कुर्सियों के सिवाय और कुछ न होने के कारण कमरा, मीलों लम्बा चौड़ा दिखाई देता था। दीवार पर रंगीन खड़िया से बना बेले के फूलों का, एक चित्र भी टँगा हुआ था। मैंने एण्ड्रू जैक्सन का चित्र और रुद्राक्ष के दानों से बना छींका ढूँढ़ने के लिए इधर उधर दृष्टि डाली परन्तु वहाँ ये चीज़ें दिखाई नहीं दीं।

अजेलिया अदेयर से मेरी बहुत सी बातें हुईं, जिसमें से कुछ आपको बताता हूँ। दक्षिण के पुराने रीति रिवाज़ों के बीच उसका जन्म हुआ था और जीवन के संघर्ष से बचा कर उसका पालन पोषण! उसका ज्ञान बहुत व्यापक तो नहीं था परन्तु अपनी संकीर्ण सीमाओं में उसकी जानकारी बहुत गहरी थी और विचार बहुत मौलिक! उसकी शिक्षा घर पर ही हुई थी इसलिए उसका दुनियादारी का ज्ञान और अनुमान सहज प्रेरणा पर ही आधारित था। निबन्धकारों का छोटा-सा पर अमूल्य समाज, ऐसे ही व्यक्तियों से बनता है। उससे बात करते समय मैं अपनी उँगलियों से, चमड़े से मँढ़े हुए, लैम्ब, चौसर, हैजलिट, मारकस आरेलियस, माराटेन

और हूड के ग्रन्थों को सहला रहा था मानो उनकी धूल झटक रहा हो, जिसका वहाँ सम्पूर्ण अभाव था। वह एक मूल्यवान खोज थी, जिसका कोई जवाब नहीं। आजकल तो हर किसी को दुनियादारी का कितना, ओह, कितना ज्ञान होता है!

यह तो स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि अजेलिया अदेयर बहुत ही गरीब थी। मकान और कुछ कपड़ों के सिवाय उसके पास और कुछ भी नहीं था ऐसा मेरा अन्दाज़ है। मैं दुविधा में पड़ गया। पत्रिका के सम्पादक के प्रति मेर कुछ कर्तव्य था, तो कम्बरलैएड की घाटी में, थामस के खिलाफ लड़ने वाले इन कवियों और निबन्धकारों के प्रति भी मेरा कोई कर्तव्य था। उसकी सितार की गूँज से भी मधुर आवाज़ को सुनते हुए मुझे मालूम दिया कि उसका विरोध करना कठिन है। विद्या की देवी और कला की अधिष्ठात्रियों से पुनीत, उस वातावरण में दो सैंट प्रति शब्द की हल्की बात करने को जी नहीं कर रहा था। मेरी व्यवसायिक बात पूरी होने पर शायद और कोई जिक्र छिड़ जाता। परन्तु जैसे ही मैंने काम की बात की, उसने हमारे प्रस्ताव की चर्चा करने के लिए दूसरे दिन दोपहर को तीन बजे का समय निश्चित कर दिया।

विदा होते समय, कुछ चिकनी चुपड़ी बातें करनी ही चाहिये, इसलिए मैंने कहा, "आपका शहर, बिल्कुल शान्त और सौम्य दिखाई देता है। कोई असाधारण घटना तो यहाँ शायद ही होती हो।"

पश्चिम और दक्षिण के प्रदेशों से, इस शहर का स्टोव और बर्तनों का व्यापार होता है और यहाँ की आटा पीसने की चक्की में, रोज दो हजार बोरी गेहूँ की खपत होती है।

अजेलिया अदेयर विचार में पड़ गयी। अपनी स्वाभाविक और अकृत्रिम गम्भीरता से उसने कहा, "मैंने इस बात पर तो कभी विचार ही नहीं किया। फिर भी क्या यह नहीं कहा जा सकता कि रोमाञ्चक घटनाएँ ऐसे शान्त स्थानों में ही हुआ करती हैं। मेरा अन्दाज है कि उस पहले सोमवार की सुबह जब ईश्वर ने सृष्टि का सृजन किया था, यदि हम अपनी खिड़की से बाहर झाँक कर देखते तो हमें क्या दिखाई देता—क्षितिज की वे सनातन पहाड़ियाँ और उस स्रष्टा के फावड़े पर से टपकता हुआ गारा। और वैसे दुनियाँ के सब से ज्यादा मुखर स्थान, बेबल के स्तूप के निर्माण

से भी क्या नतीज़ा निकला ? सिर्फ 'नार्थ अमेरिकन रिव्यू' में एस्परान्टो भाषा में एक डेढ़ पन्ने का लेख छप गया था !"

मैंने निरर्थक बातों का क्रम जारी रखते हुए कहा, "सो तो है ही ! मनुष्य स्वभाव सब जगह समान होता है । किसी शहर के जीवन में रंगीनी, गति और घटनाएँ अधिक होती हैं तो किसी में कम !"

अज़ेलिया अदेयर बोली, "फर्क सिर्फ ऊपरी सतह का है । मैं भी छाने और स्वप्न के पंखों की सहायता से एक सुनहरे जहाज़ में बैठ कर कई बार संसार का भ्रमण कर चुकी हूँ । अपनी इन काल्पनिक यात्राओं के दरम्यान, मैंने तुर्की के सुल्तान को अपनी पालकियों में से किसी एक को, बाज़ार में नकाब उठा देने के अपराध में, हण्टर से पीटते देखा है और इसी नैशिविले में, एक आदमी को, गुस्से में आकर, इस वजह से थियेटर के टिकट फाड़ते हुए भी देखा है कि उसकी पत्नी रास्ते में मुँह ढँक कर चल रहीं थी । सान फ्रॉसिस्को की चीनी बस्ती में, मैंने सिंङ यी नामक गुलाम लड़की को, उबलते हुए बदामरोगन में धीरे धीरे डुबो कर, उससे अपने अमरीकन प्रेमी से फिर कभी न मिलने की, प्रतिज्ञा करवाते हुए, लोग भी देखे हैं । खौलता हुआ तेल, जब उसके घुटनों से तीन इंच ऊपर पहुँचा, तो उसकी हिम्मत ज़बाब दे गयी । पूर्वी नैशविले की एक ताशपार्टी में उस दिन रात को मैंने देखा कि 'किट्टी मारगन' को उसकी स्कूल की सात सहेलियाँ, इसलिए डांट फटकार रही थीं कि उसने एक मकान रँगनेवाले, साधारण कारीगर से शादी कर ली थी । इस किस्से में उबलता हुआ तेल, उसके हृदय तक पहुँच चुका था । परन्तु टेबलों के बीच, घूमते हुए उसके चेहरे की मुस्कान आप देखते, तो देखते रह जाते : ठीक तो है, यह बिल्कुल ही साधारण शहर है । कुछ मील इधर उधर तक लाल ईंटों के मकान, कीचड़ से भरी सड़कें, दस बीस दुकानें और कुछ लकड़ी के गोदाम !"

किसी ने मकान के पिछवाड़े का दरवाजा खटखटाया । अजेलिया अदेयर ने मुझसे धीरे से माफी माँगी और आवाज का कारण ढूँढ़ने के लिए चली गयी । कोई तीन मिनट में ही वह वापिस लौटी तो उसकी आँखें चमक रहीं थीं और गालों पर हल्की सी सुर्खी छा गयी थी मानो उसके कन्धों से दस वर्षों का भार कम हो गया हो ।

वह बोली, "जाने से पहिले एक कप चाय और कुछ नाश्ता तो करते जाइये ।"

उसने घण्टी बजायी। कोई बारह साल की एक नीग्रो लड़की नंगे पाँव, मैले कुचैले कपड़े पहने, मुँह में अँगूठा चूसती हुई और आँखें फाड़फाड़ कर घूरती हुई कमरे में दाखिल हुई।

अज़ेलिया अदेयर ने अपना फटापुराना छोटासा बटुआ खोल कर, एक डालर का नोट निकाला। नोट का दाहिने हाथ का ऊपरी कोना गायब था और बीच में से फटा होने के कारण, उसे नीले रंग के पतले कागज़ के टुकड़े से जोड़ा गया था। इसमें शंका की कोई गुंजाइश नहीं कि यह वही नोट था जो मैंने उस लुटेरे हब्शी को दिया था।

लड़की के हाथ में नोट थमाती हुई वह बोली, "इम्पी, नुक्कड़ पर मिस्टर बेकर की दुकान से चौथाई पाउण्ड चाय और दस सैंट के मीठे केक ले आ। उनसे कहना कि चाय वही दें, जो हमेशा भेजते हैं। जल्दी आना! चाय घर में एकाएक समाप्त हो गयी है।" अन्तिम बात उन्होंने मुझे सुनाने के लिए कही थी।

इम्पी पीछे के दरवाज़े से निकल गयी। उसके कठोर और नंगे पैरों की पदचाप अस्पष्ट होने से पहिले, मकान के पिछवाड़े से एक चीख–मेरा विश्वास है कि यह उसी की थी–उस खोखले घर में गूँज उठी। उसके बाद किसी क्रुद्ध व्यक्ति की कर्कश आवाज़ें और लड़की के अस्पष्ट स्वर और चीखें!

अज़ेलिया अदेयर, बिना किसी कौतूहल या सन्देह के भाव लिये, उठी और गायब हो गयी। करीब दो मिनट तक मैंने उसी पुरुष की कठोर बड़बड़ाहट सुनी; फिर जरा सी छीना झपटी और गाली-गलौज; और तब वह चुपचाप लौट कर अपनी कुर्सी पर बैठ गयी।

वह बोली, "इस मकान में बहुत कमरे हैं। मैंने इसका कुछ हिस्सा किराये पर दे रखा है। मुझे चाय का निमंत्रण वापिस लेते हुए दुख हो रहा है, परन्तु मैं जिसकी आदी हूँ, वह चाय आज दुकान में भी समाप्त हो गयी है। मिस्टर बेकर कल तक शायद दे सकेंगे।"

मुझे विश्वास था कि इम्पी को मकान से बाहर जाने का भी मौका नहीं मिला था, इसलिए मैंने वापिस जाने के लिए बस के मार्ग की पूछताछ करके, विदा ली। काफी आगे बढ़ जाने पर मुझे याद आया कि मैंने अज़ेलिया अदेयर का असली नाम तो पूछा ही नहीं। लेकिन यह तो दूसरे दिन भी पूछा जा सकता था!

उसी दिन मैं उस अन्याय के मार्ग पर अग्रसर हुआ, जो इस घटनाहीन शहर ने मेरे सिर पर थोप दिया था। इस शहर में आये हुए मुझे अभी दो ही दिन हुए थे, लेकिन इसी बीच मैंने तार के द्वारा बेशर्मी से झूठ बोलना सीख लिया और एक हत्या में, यदि इसके लिए यही कानूनी शब्द है तो, 'सहायक' होने का दोषी भी हुआ। होटल से निकल कर मुड़ते ही, उस रंग-बिरंगे, अद्वितीय कोट वाले, हब्शी से मेरी मुठभेड़ हो गयी। उसने अपने प्रागऐतिहासिक रथ का नारकीय दरवाजा खोल कर, पंखों वाला झाड़ू हिलाते हुए अपना रटा रटाया भाषण शुरू किया, "बैठिये सरकार, गाड़ी बिल्कुल साफ है – अभी अभी अंत्येष्टि से लौटा हूँ – पचास सेंट में शहर के किसी भी भाग —"

सहसा वह मुझे पहचान गया और मुस्काराने लगा। "माफ करना मालिक, आप तो वही साहब हैं, जो आज सुबह ही मेरी गाड़ी में बैठे थे। आपकी कृपा के लिए धन्यवाद!"

मैंने कहा, "कल दोपहर को तीन बजे मैं फिर १६१ नं. के मकान में जाऊँगा। उस समय, तुम अगर हाज़िर रहोगे, तो मैं तुम्हारी बग्घी में ही जाना पसन्द करूँगा।" उस, एक डालर के नोट की बात को सोचते हुए मैंने उससे पूछा, "तो तुम मिस अदेयर को जानते हो?"

उसने उत्तर दिया, "हाँ साहब, मैं उनके पिता, न्यायाधीश अदेयर का गुलाम था।"

मैंने कहा, "लेकिन वह तो बहुत ही गरीब दिखाई देती हैं! उसके पास तो शायद फूटी कौड़ी भी नहीं है! क्यों, ठीक है न?"

एक क्षण तक तो मैं, किंग कैटिवायो के भयानक चेहरे की ओर देखता रहा; परन्तु दूसरे ही क्षण, वह बदल कर, वही बूढ़ा ताँगेवाला ठंग बन गया। वह धीरे से बोला, "लेकिन साहब, वह भूखी नहीं मरेगी। उसके पास भी साधन हैं—कई साधन!"

मैंने कहा, "लेकिन किराया, मैं पचास सेंट से ज्यादा नहीं दूँगा।"

उसने नम्रता से उत्तर दिया, "बिल्कुल वाजिब है साहब,। आज सुबह की बात तो अलग थी। मुझे दो डालर की सख्त जरूरत थी।"

होटल जा कर, मैंने बिजली के तार की सहायता से फिर एक बार सफेद झूठ बोला। पत्रिका के सम्पादक को मैंने तार किया, "अज़ेलिया अदेयर आठ सेंट प्रति शब्द पर अड़ी हुई है।"

इकरारनामा तय हो गया। हस्ताक्षर करने के बाद वह और भी ज्यादा सिमट सी गयी, अभी अभी मानो कुर्सी में विलीन हो जायगी। बिना किसी तकलीफ के, मैंने उसे उठा कर, बाबा आदम के ज़माने की उस कोच पर लिटाया और बाहर आकर उस काले कलूटे हब्शी से किसी डाक्टर को जल्दी से बुला लाने को कहा। एक अप्रत्याशित विवेक से, अपनी बग्घी को वहीं छोड़ कर, वह पैदल ही सड़क पर चल पड़ा। शायद वह समय की कीमत पहचान गया था। कोई दस मिनट में ही वह एक बूढ़े, गम्भीर और योग्य डाक्टर को ले आया। कुछ शब्दों में ही (जिनकी कीमत आठ सैंट प्रति शब्द से बहुत कम थी) मैंने उस रहस्यपूर्ण, खोखले घर में, अपनी उपस्थिति का कारण समझा दिया। उसने सारी बात को समझ कर, मुझे अभिवादन किया और बूढ़े हब्शी से बोला, "सीज़र चचा, भाग कर मेरे घर जाओ और मिस लूसी से बोलो, कि थोड़ा ताजा दूध, कुछ मक्खन और आधा ग्लास शराब दे। और देखो जल्दी आना। गाड़ी मत ले जाना—भागना! हफ्ते भर में तो वापिस आ जाओगे न?"

मुझे लगा कि डाक्टर मरीमैन को भी, उस लुटेरे हब्शी के घोड़ों की गति पर कोई विश्वास नहीं था। चचा सीज़र के, शीघ्रता से चले जाने के बाद, डाक्टर ने मेरी ओर नम्रता से देखा। उन्होंने मेरी काबलियत का अन्दाज़ लगा लिया।

वे बोले, "यह, आधा पेट खा कर रहने का नतीजा है। दूसरे शब्दों में गरीबी, अभिमान और भुखमरी का फल है। श्रीमती कासवेल के अनेक मित्र उनकी मदद करने को तैयार हैं पर यह, उस बूढ़े हब्शी के सिवाय किसी की मदत स्वीकार ही नहीं करती। यह चाचा सीज़र, पहले इनके परिवार का गुलाम था।"

मैंने आश्चर्य के साथ कहा, "श्रीमती कासवैल?" फिर मैंने उस इकरारनामे को पढ़ा, जिस पर उसने हस्ताक्षर किये थे—'अज़ेलिया अदेयर कासवैल।'

मैंने कहा, "मैं तो सोचता था कि वह कुमारी अदेयर है।"

डाक्टर बोला, "श्रीमान, उसका विवाह तो उस निकम्मे, लोफर, शराबी से हुआ है। सुना है कि वह इस बिचारी से वे चार पैसे भी लूट ले जाता है, जो उसका बूढ़ा नौकर उसे देता है।"

दूध और शराब के आने पर, डाक्टर उसे होश में ले आया। वह बैठ गयी और उस वसन्त के सौन्दर्य का वर्णन करने लगी जो उस वक्त अपनी जवानी पर था। उसने अपने बेहोश होने का भी जिक्र किया और उसका सम्बन्ध हृदय रोग से जोड़ कर बताया। वह कोच पर लेट गयी और इम्पी पंखा झलने लगी। डाक्टर को और कहीं जाना था, इसलिए मैं उसे दरवाज़े तक छोड़ने गया। मैंने उसे बताया कि मेरी इच्छा अजेलिया अदेयर को, पेशगी के रूप में काफी पैसे दे जाने की है। इससे उसे खुशी भी हुई।

उसने कहा, "शायद तुम्हें यह जान कर भी आश्चर्य होगा कि तुम्हें कोचवान भी राजवंश का मिला है। बूढ़े सीज़र का दादा 'कोंगो' का राजा था। सीज़र के तौरतरीके भी, जैसा आपने देखा होगा, राजसी हैं।"

जिस समय डाक्टर साहब जा रहे थे मैंने घर के भीतर चचा सीजर की आवाज सुनी, "क्या वे दो डालर भी, वह तुमसे ले गया?"

मैंने अजेलिया अदेयर को धीमे से जवाब देते भी सुना, "हाँ सीज़र!"

इसके बाद मैं भीतर गया और उस लेखिका से अपना इकरारनामा पूरा किया। मैंने अपनी जिम्मेदारी पर, अपने सौदे को पक्का करने के लिए, आवश्यक औपचारिकता के रूप में, उसे पचास डालर पेशगी दे दिये। फिर चचा सीज़र ने मुझे वापिस होटल पर छोड़ दिया।

यहाँ आकर, वह कहानी तो समाप्त होती है, जिसे मैं एक गवाह की तरह बयान कर सकता हूँ। बाकी तो सिर्फ तथ्यों का सीधा सादा ब्यौरा मात्र है।

लगभग छः बजे, मैं घूमने के लिए होटल से बाहर निकला। चाचा सीजर अपने नुक्कड पर खड़े थे। उन्होंने अपनी बग्घी का फाटक खोला, पाँखों का झाड़ू घुमाया और वही दुखदायी रटन्त आरम्भ कर दी, "अन्दर बैठिये सरकार! पचास सैंट में शहर के हर हिस्से में चलिये—गाड़ी एकदम साफ है—सरकार, अभी अभी अंत्येष्टि से लौटा हूँ।"

और तभी उन्होंने मुझे पहिचान लिया। मेरे खयाल से, उनकी आँखें कमजोर हो चलीं थीं। उनके कोट पर एक दो और, हल्के रंग जुड़ चुके थे और सन की डोरियाँ कुछ पुरानी और घिसने लगी थीं। उनके कोट पर लगा हुआ, वह पीले सींग का आखिरी बटन भी जा चुका था। चाचा सीज़र, किसी राजा का बहुरंगी वंशज जो था।

लगभग दो घण्टे बाद मैंने दवाई की दुकान के सामने एक उत्तेजित भीड़ देखी। जिस रेगिस्तान में कहीं कुछ नहीं होता, वहाँ तो यह भी पेड़ के समान था। इसलिए मैं भी भीड़ में घुसा। खाली बक्सों और कुर्सियों का कोच बना कर, उस पर, मेजर वैन्टवर्थ कासवैल के मर्त्य शरीर को लिटाया गया था। उनके अवशेष की डाक्टर जाँचपड़ताल कर रहा था। उसका मत था कि प्राण पँखेरू उड़ चुके हैं।

सुप्रसिद्ध मेजर साहब एक अँधेरी गली में मरे हुए पाये गये थे और जिज्ञासु नागरिकों द्वारा दवाई की दुकान पर ले आये गये थे। हालात से मालूम होता था कि मृतक को भयंकर संघर्ष करना पड़ा था। शराबी और लोफर होने पर भी, वे एक योद्धा तो थे ही। लेकिन हार उनकी हुई। उनके हाथ की मुट्ठी इतनी मजबूती से बन्द थी कि उसे खोला नहीं जा सका। उनको जानने पहचाने वाले, भोले भाले नागरिक उनके विषय में कुछ भले शब्द कहने के लिए, अपने ज्ञान कोश को टटोलते हुए, वहाँ खड़े थे। बहुत सोचने के बाद एक दयावान व्यक्ति बोल उठा, "जब 'कास' चौदह वर्ष का था तो उसके हिज्जे स्कूलभर में सब से सही थे!"

जब मैं वहाँ खड़ा था, तब उस मृत व्यक्ति की, बक्स की तरफ लटके हुए हाथ की उँगलियाँ, कुछ शिथिल पड़ीं और उसकी मुट्ठी में से कोई चीज़ मेरे पैरों के पास आ गिरी। मैंने चुपचाप अपना एक पाँव उस पर रख दिया और बाद में उसे उठा कर, अपनी जेब में डाल लिया। मैंने अन्दाज़ लगाया कि अपने अन्तिम संघर्ष में, उसने इस वस्तु को अनजाने पा लिया होगा और उसे कस कर पकड़ लिया होगा।

रात को होटल में भी राजनीति और दारूबन्दी के अलावा, मेज़र कास-वैल की हत्या ही चकचक का मुख्य विषय थी। मैंने एक आदमी को, अपने साथियों से कहते सुना :

"दोस्तों, मेरी राय में तो कासवैल की हत्या, इन निकम्मे काले गुलामों में से ही किसी ने, उसके पैसों को लूटने के लिए की है। आज दोपहर को उसके पास पचास डालर थे, जिन्हें उसने इसी होटल में, कई सज्जनों-को दिखाया भी था। जब वह लाश मिली, तब उसके पास कुछ भी नहीं था।"

दूसरे दिन सुबह, नौ बजे मैंने उस शहर से विदा ली। ज्यों ही मेरी गाड़ी कम्बरलैण्ड नदी के पुल पर आयी, मैंने अपनी जेब से एक पीले सींग का बड़ा बटन—आधे डालर के नाप का, सन के सूत के टुकड़ों से

लपेटा हुआ--खिड़की से बाहर हाथ निकाल कर लटका लिया और नीचे नदी के गँदले पानी में छोड़ दिया।

आश्चर्य होता है कि बफैलो में क्या हो रहा है-!

# मौसम की कामनाएँ

लिखने के लिए क्रिसमस की कहानियाँ भी नहीं बचीं। किस्से खतम हो गये। इसके बाद नम्बर आता है अखबारों का। लेकिन इनका उत्पादन भी वे चतुर और नवयुवक पत्रकार कर हैं, जो बचपन में शादी हो जाने के कारण, जीवन से उदासीन हो गये हैं। इसलिए, मौसमी आमोद प्रमोद के लिए केवल दो विकल्प रहे—तथ्य और दर्शन! आप उसे जो भी कहना चाहें, उसीसे हम शुरू कर देते हैं।

बच्चे बड़े उपद्रवी जन्तु होते हैं, जिनका मुकाबला करने के लिए हमें अजीब परिस्थितियों में से गुजरना पड़ता है। विशेषकर, जब उनका बचकाना दुख उन पर छा जाता है तब वह हमारी समझ में नहीं आ पाता। सान्त्वनाओं का पूरा कोष हम उन पर खाली कर देते और इसके बाद उन्हें पीटना शुरू करते हैं, जिससे वे सिसकते नींद ले लेते हैं। तब हम लाखों वर्षों की खाक छान कर, भगवान से इसका कारण पूछते हैं। बस, इस प्रकार इस चूहेदानी से बाहर निकलना पड़ता है। रही बच्चों की बात! बूढ़ी आयाओं, कुबड़ों और कुत्तों के सिवाय उन्हें कोई नहीं समझ सकता!

अब आप चिथड़ों की गुड़िया, फटेहाल आदमी और पच्चीसवीं दिसम्बर वाले मामले के तथ्यों पर आइये।

उस महीने की दसवीं तारीख को एक करोड़पति की बच्ची की चिथड़ों की गुड़िया खो गयी। करोड़पति के हडसन नदी पर के महल

में कई नौकर चाकर थे और उन्होंने सारे घर और मैदान को छान मारा पर वह खोया हुआ खजाना नहीं मिला। लड़की पाँच बरस की थी और उस जिद्दी किस्म की जानवर थी, जो हीरों से जड़ी मोटर या घोड़े की फिटन को छोड़ कर किसी भद्दे और सस्ते खिलौने पर अपना स्नेह उँडेल देने के कारण, अपने धनवान माँ बाप के मन पर गहरा आघात पहुँचाते हैं।

बच्ची को अत्यन्त दुख हुआ, और सच्चा ही हुआ। वे करोड़पति उसे कैसे समझ सकते थे, जिनके लिए गुड़ियों का बाजार भी उतना ही दिलचस्प था जितना शेयर बाज़ार; और बच्ची की माँ, वे श्रीमतीजी भी कैसे समझ पातीं जो बहुत सुन्दर थीं – सिर्फ सुन्दर, जैसा कि आप देखेंगे।

जमीन पर लोट लोट कर, घुटनों को पटक पटक कर और नाच नाच कर वह लड़की इतनी रोयी कि उसकी आँखें सूज गयीं और उसे धीरज बँधाना असम्भव हो गया। सेठजी ने बहुत विश्वासपूर्वक मुस्करा कर अपनी तिजोरी उसके सामने खोल दी। फ्राँस और जर्मनी के सर्वश्रेष्ठ खिलौने उस महल में एक क्षण में ही पहुँच गये, लेकिन राचल किसी तरह भी नहीं मानी। वह तो अपनी चिंथड़ों की गुड़िया के लिए रो रही थी। उसे इन विदेशी मूर्खताओं से क्या लेना देना था! तब उन डाक्टरों को बुलाया गया जिनमें मरीजों के पास रहने की तमीज होती है और जिनके पास स्टाप घड़ियाँ होती हैं। एक के बाद एक, उन सब ने लोहे को गलाने वाले रसायनों, समुद्री यात्राओं और बड़ी बड़ी दवाइयों की व्यर्थ चर्चाएँ कीं; जबतक उनकी स्टाप घड़ियों ने बता दिया, कि उनकी कीमत दो कौड़ी भी नहीं है। तब मनुष्यता के नाते उन्होंने यही सलाह दी कि वह चिंथड़ों की गुड़िया खोज निकाली जाय और अपनी शोकग्रस्त मालकिन को सौंप दी जाय! बच्ची ने दवाइयों से मुँह फेर लिया। वह अपना अँगूठा कुतरने लगी और अपनी बेट्सी के लिए विलाप करने लगी! और इस सारे समय में 'सान्ता क्लाज' के तार आ रहे थे कि वे जल्दी ही आकर क्रिसमस के उल्लास को प्रकट करने में हमारा साथ देने वाले हैं और अब जगमग कमरों को, बीमा पालिसियों को और क्रिसमस वृक्षों को स्वागत की तैयारी करने के लिए अधिक समय नहीं दे सकते।

चारों ओर क्रिसमस की छटा फैली हुई थी। बैंक उधार देने से मना कर रहे थे; गिरवी रखने वाले महाजनों की संख्या दूनी हो गयी थी, सड़क

पर लोग आपके पंजों को कुचल कर आगे बढ़ रहे थे, मयखानों में आपको एक पाँव पर खड़ा देख कर 'थामस' और 'जेरेमियाह' बड़बड़ा रहे थे, दुकानों के दरवाज़ों में अतिथि सत्कार के लिए 'स्वागतम्' के पवित्र पुष्प लटक रहे थे और जिनके पास अपने 'फर' के कोट थे, वे उन्हें बाहर निकाल रहे थे। आप जान नहीं सकते कि क्या पसन्द करना—थ्री बाल (महाजन की दुकान) हाई बाल (शराब) माथ बाल (डामर की गोलियाँ) या स्नो बाल (बरफ की गेंद)! प्राणों से भी प्यारी अपनी चिथड़ों की गुड़िया खोने का यह समय तो बिल्कुल नहीं था।

यदि डाक्टर वाटसन के खुफिया दोस्त को, इस गुड़िया के रहस्यपूर्ण ढंग से गुम हो जाने की छानबीन करने के लिए बुलाया जाता, तो वह निश्चय ही उस करोड़पति के महल की दीवार पर 'वेम्पायर' के चित्र को अवश्य देखता। इससे शीघ्र ही तर्क द्वारा यह नतीजा निकलता, "एक गुदड़ी, एक हड्डी और एक केशों का लच्छा!" बच्चों के प्राणों को चिथड़े की गुड़िया के बाद प्यारा, 'फ्लिप' नामक एक स्काच टैरियर कुत्ता, एक बार हाल में घुस आया। अहा, बालों का लच्छा! उस गुड़िया की शोभा वह बालों का गुच्छा। लेकिन हड्डी? जब कुत्तों को हड्डी—पा लिया! फ्लिप के पंजों की छानबीन करने का नतीजा निकल आया। देखो वाटसन, सूखी मिट्टी! कुत्ते के पंजों के बीच सूखी मिट्टी। बेशक उस कुत्ते ने—लेकिन शरलक वहाँ नहीं था। इसलिए यहा मामला वहीं रह गया। लेकिन वास्तुकला और नक्शानवीसी को हस्तक्षेप करना पड़ेगा।

करोड़पति के महल ने बहुत बड़ी जगह घेर रखी थी। उसके सामने महीन कटी हुई घास थी, जैसे किसी दक्षिण आयरलैण्ड वासी के मुँह पर हजामत करने के दो दिन बाद दाढ़ी होती है। उसके एक तरफ, दूसरी गली के सामने एक कुँज था जिसका एक एक पत्ता सँवारा हुआ था और वहीं पर एक गैरेज और एक अस्तबल था। वह स्काच कुत्ता, शिशुशाला से उस चिथड़े की गुड़िया को जबरदस्ती उठा कर लाया, बगीचे के एक कोने में घसीट ले गया, एक खड्डा खोदा और किसी लापरवाह ठेकेदार की तरह उसे गाड़ दिया। यह रहस्य सुलझ गया—न उन जासूसों का बिल चुकाना पड़ा और न सार्जेंट को कुछ देना। लेकिन मेरे थके हुए पाठकों! आओ, अब इस वस्तु की तह तक चलें।

फ़्ज़ी आज पिया हुआ था। इतना नहीं कि हंगामा करे या बकवास करे या गिर पड़े परन्तु अच्छी तरह से, ठीक ठीक और बिना बुराई के, जैसा कि उसके जैसे अभागे सज्जनों का गुण है।

फ़्ज़ी दुर्भाग्य का सिपाही था। सड़क, घास के ढेर, बगीचे की बेंच, रसोई की खिड़की, भिक्षा स्वरूप मिलने वाले छत टपकते सोने के स्थान, कुछ अनुचित कमाई और बड़े शहरों का नीचता से प्राप्त अन्न-दान—ये उसके जीवन के अध्याय थे।

फ़्ज़ी नदी की ओर चला, जो करोड़पति के घर और दूसरे मैदानों के बीच में से बहती थी। उसने उस खोई हुई चिथड़ों की गुड़िया 'बेट्सी' की एक टाँग देखी, जो लिलीपुट देश की हत्या का स्मरण दिलाती हुई चहारदीवारी के कोने में अपनी अकाल समाधि से झाँक रही थी। उसने उस सतायी हुई गुड़िया को खींच कर बाहर निकाला, अपनी बगल में दबाया और अपनी जात का एक गीत गाता हुआ सड़क पर चल पड़ा। वैसा गाना किसी भी संरक्षित गुड़िया ने कभी नहीं सुना होगा। अच्छा हुआ कि बेट्सी के कान नहीं थे। और यह भी ठीक है कि काले काले गोल दागों के सिवाय उसके आँखें भी नहीं थी—क्योंकि फ़्ज़ी और उस स्काच कुत्ते की शकलें भाई भाई जैसी थीं और किसी गुड़िया का दिल दो दो भयानक राक्षसों द्वारा सताया जाना सहन नहीं कर सकता।

शायद आप नहीं जानते होंगे कि ग्रोगन का शराबखाना नदी के पास और गली के आखिरी सिरे पर था जिस पर फ़ूजी यात्रा कर रहा था। उसके सेलून में क्रिसमस का उल्लास छाया हुआ था।

फ़ूज़ी अपनी गुड़िया के साथ अन्दर घुसा। उसने सोचा कि शनि की दावत में चेहरा लगा कर मज़ाक बनाने वाले के रूप में, उसे भी शराब के प्याले की बची हुई दो चार बूँदें प्राप्त हो जायेंगी।

उसने बेट्सी को 'बार' पर बिठा दिया और उसे जोर जोर से, मज़ाकिया ढंग में, बीच बीच में उसकी तारीफ और प्यार के शब्दों द्वारा, सम्बोधन करने लगा, मानो वह उसकी कोई महिला मित्र हो। आस पास बैठे हुए गुण्डों और पियक्कड़ों ने इस प्रहसन को देखा और खिलखिला कर हँस पड़े। कलाल ने फ़ूज़ी को एक पैग दिया। हाय, हममें से भी कितने ही गुड़ियों को साथ लिये फिरते हैं।

फूजी ने सुझाया, "एक इन श्रीमतीजी के लिए नहीं?" और अपनी कला के उपहार को अपने कोट के नीचे छिपाये वहाँ से चल दिया।

उसे बेट्सी में कई सम्भावनाएँ दिखाई दीं। उसकी पहली ही रात सफल हुई। उसे उस नाटक का प्रदर्शन करते शहर भर में चक्कर लगाने की सूझी।

एक स्टोव के पास 'कबूतर' मैकार्थी, ब्लेक रिले और 'कनकटा' माइक बैठे थे। नदी के इस पार वाले प्रदेश में, ये काफी बदनाम थे। वे आपस में एक अखबार को इधर उधर ले दे रहे थे। वह मद, जिस पर उनकी कठोर उँगलियाँ अटक रही थीं, एक विज्ञापन था जिसका शीर्षक था– "सौ डालर इनाम"। इस इनाम को पाने के लिए, वह चिंथड़ों की गुड़िया लौटानी पड़ेगी, जो खो गयी है, इधर उधर हो गयी है या करोड़पति के महल से चुरा ली गयी है। ऐसा लगता है कि उस निष्ठावान बच्ची के हृदय को वह दुख अभी तक साल रहा था। फिलप कुत्ता, उसके सामने नाचता, कूदता और अपनी मूँछों को हिलाता; पर बच्ची का ध्यान गुड़िया पर से नहीं हटा पाता। चलने वाली, बोलने वाली, नाचने वाली, आँखें मटकाने वाली फ्रेंच गुड़ियाओं को देख कर वह अपनी बेट्सी के लिए विलाप करने लगती। यह विज्ञापन उसे पाने का आखिरी तरीका था।

ब्लैक रिले, स्टोव के पीछे से निकला और फूजी के पास अपने एकांगी लाक्षणिक तरीके से पहुँचा।

सफलता से फूला हुआ क्रिसमस का मजाकिया, बेट्सी को अपनी बगल में दबाये, और कहीं भटकने के लिए विदा होने ही वाला था कि ब्लैक रिले बोला, "कहो यार, तुम यह गुड़िया कहाँ से मार लाये?"

इस बात का पक्का विश्वास कर लेने के लिए, कि बात उसी गुड़िया के बारे में कही गयी है, अपनी तर्जनी से बेट्सी को छू कर फूज़ी ने कहा, "यह गुड़िया? ओह यह तो बलूचिस्तान के बादशाह ने मुझे भेंट की थी। मेरे न्यूपोर्ट वाले घर में दूसरी सात सौ और रखी हैं। यह गुड़िया..."

रिले बोला, "बकवास बन्द करो। तुमने इसे पहाड़ी पर के इस मकान से–खैर कोई बात नहीं। इन चिंथड़ों के पचास सैंट चाहियें तो ये लो! घर पर मेरे भतीजे के खेलने के काम आयेगी। क्यों क्या जँची?"

उसने पैसे निकाले।

फूज़ी एक शराबी की तरह निर्लज्जता से खिलखिला कर हँसा। कभी आप 'साराह बर्नहार्ट' के मैनेजर के पास जाइये और उसके सामने यह प्रस्ताव पेश कीजिये कि आपकी साहित्यिक संस्था के सदस्यों का मनोरंजन करने के लिए, उसे एक रात के लिए छुट्टी दे दें। आप फूज़ी की हँसी का दूसरा संस्करण सुन सकते हैं।

ब्लैक रिले ने अपनी कानी आँख से फूज़ी को सरसरी निगाह से आँका, जैसे एक पहलवान करता है। उस क्षणिक विदूषक से, जो अनजाने ही उस अप्सरा का मनोरंजन कर रहा था, उस 'सेबाइन' रूपी चींथड़े को छीनने के लिए उसका हाथ, रोमन की तरह फड़क रहा था। फूज़ी मोटा, मजबूत और तगड़ा था। अपने गन्दे कपड़ों द्वारा, सर्द हवाओं से बचायी हुई तीन इंच की मजबूत माँशपोशियाँ उसके पेट पर दिखाई दे रही थीं। उसके कोट की आस्तीनों और घुटनों पर पड़ी हुई अनेक छोटी छोटी गोल सलवटें, उसकी हड्डियों की मजबूती प्रकट कर रही थी। खुशी और उन्माद से गीलीं, उसकी छोटी छोटी नीली आँखें, आप पर करुणा बरसातीं, पर शर्म नहीं करतीं। वह अपनी मूँछों से, चालढ़ाल से, शरीर से काफी मजबूत लगता था। इसलिये ब्लैक रिले रुक गया।

उसने पूछा, "तो फिर तुम क्या लोगे?"

भारी दृढ़ता के साथ फूज़ी ने कहा, "पैसा इसे नहीं खरीद सकता!"

उस पर किसी कलाकार की प्रथम उपलब्धि के मधुर प्याले का नशा चढ़ा हुआ था। धूल से भरी हुई, हल्के नीले रंग की चिंथड़ों की गुड़िया को 'बार' पर बिठाना, उसके साथ नकलची-सी बातें करना, और उससे अर्जित 'वाह वाह' से अपने हृदय को उछलता हुआ पाना तथा अपने सम्मान में कहे गये शब्दों से अपने गले को सँधा हुआ पाना—इतनी बड़ी उपलब्धि क्या उसे मामूली सिक्कों से हो सकती थी। आप देखेंगे कि फूज़ी में भी सहृदयता थी।

फूज़ी दूसरे होटलों पर विजय की खोज में किसी शेर की शान से निकल पड़ा।

अभी तक संध्या का धुँधलापन भी नहीं दिखाई पड़ा था, फिर भी किसी गहरी देगची में से उछलने वाले मटर की तरह जगह जगह प्रकाश की किरणें चमक उठीं थीं। आतुरता से प्रत्याशित, क्रिसमस की साँझ, समय की सीमा पर झाँक रही थी। लाखों लोगों ने उसे मनाने की तैयारी की थी।

सारा शहर लाल रँग दिया जायगा। आपने खुद भी उसके स्वागत म बजने वाले नगाड़े की आवाज सुन ली होगी।

ओगन के मयखाने के बाहर, 'कबूतर' मैकार्थी, ब्लैक रिले और 'कनकटे' माइक ने जल्दी से मशविरा किया। वे कायर और हल्के छोकरे थे जो खुल कर सामने तो नहीं लड़ सकते थे, पर अपने युद्ध कौशल में किसी खूँखार तुर्क से भी अधिक खतरनाक थे। आमने सामने की लड़ाई में फूजी इन तीनों को मार गिराता। अपनी मर्जी के अनुसार संघर्ष करने में वह पहले से ही पिट चुका था।

उन्होंने फूजी और बेट्सी को उस समय पकड़ा, जब वह कास्टिगन के होटल में घुस रहा था। उन्होंने उसका ध्यान खींचा और वह अखबार उसके नाक पर टिका कर बताया। फूजी पढ़ सकता था।

उसने कहा, "लड़कों, तुम तो वाकई मेरे सच्चे दोस्त हो! मुझे सोचने के लिए एक हफ्ते का समय दो।"

सच्चे कलाकार का मन बड़ी मुश्किल से सन्तुष्ट होता है।

तीनों लड़कों ने बहुत सावधानी से उसे समझाया कि विज्ञापनों के आत्मा नहीं होती और आज के दिन की पूर्ति कल से नहीं की जा सकती

बहुत सोच विचार के साथ फूजी ने कहा, "एकदम सौ?"

फिर वह बोला, "लड़कों, तुम मेरे सच्चे दोस्त हो। मैं अभी जाकर इस इनाम की माँग करता हूँ। आजकल नाटकों में भी पहले वाला दम नहीं रहा!"

रात घिरती आ रही थी। वे तीनों उसके साथ उस पहाड़ी तक गये, जहाँ करोड़पति का महल था। वहाँ पहुँच कर फूजी चिड़चिड़ा हो गया।

वह गुर्राया, "चिकने मुँह वाले शिकारी कुत्तों! चले जाओ यहाँ से।"

वे चले गये – थोड़ी दूर।

'कबूतर' मैकार्थी की जेब में कोई आठ इंच लम्बा, एक नल का टुकड़ा था। उसके सिरे पर और बीच में, सीसा (बंदूक की गोलियाँ) भरा था। उस नले के आधे हिस्से में धातु जोड़ने का मसाला भरा था। ब्लैक रिले, एक पुराना ठग होने के कारण, अपने साथ एक ढेलवाँस रखता था। 'कनकटा' माइक दो एक लोहे के पेचों पर ही भरोसा रखता था।

ब्लैक रिल बोला, "हम क्यों जा कर लायें, जब कोई हमारे लिए यह काम कर दे। उसे यहाँ तक लाने तो दो – क्यों?"

' कबूतर ' मैकार्थी ने कहा, " हम उसे पैरों में पत्थर बाँध कर इस नदी में फेंक देंगे। "

' कनकटा ' माइक उदास हो कर बोला, " तुम लोग मुझे हैरान कर देते हो। क्या तुम में से किसी का नये तरीके अपनाने का जी नहीं होता ? उस पर थोड़ा-सा पेट्रोल छिड़ककर, सड़क पर डाल दो—समझे ?"

फूज़ी उस करोड़पति के भवन की फाटक में घुसा और महल के द्वार की टेढ़ी मेढ़ी जगमगाती राह पर चलने लगा। वे तीनों पिशाच, दरवाज़े तक आ कर रुक गये—दो द्वार के दोनों ओर और एक सड़क के पार। वे विश्वास के साथ, अपनी जेबों में पड़े हुए अस्त्रों पर हाथ फेर रहे थे।

मूर्खतापूर्वक मुस्कराते हुए और सपनों में खोये, फूज़ी ने दरवाज़े की घण्टी बजायी। बचपन के किसी सहज ज्ञान से, उसने अपने दाहिने हाथ के मोज़े के बटन को छूना चाहा। पर उसने मोजा ही नहीं पहन रखा था, इसलिए उसका बाँया हाथ निराश हो कर लटक गया।

वह विशष नौकर जिसका काम, रेशम और लेस के कपड़ों वालों के लिए द्वार खोलना था, फूज़ी को देख कर, पहली नजर में तो सहम गया। पर दूसरी नजर में, उसे दिखा—उसका पासपोर्ट, उसका प्रवेश पत्र, उसके स्वागत का विश्वास, उसकी बगल में दबी हुई, मकान मालिक की लाड़ली की चिथड़ों की गुड़िया !

फूज़ी को एक हाल में ले जाया गया, जिसमें न जाने कहाँ से मन्द प्रकाश छन रहा था। नौकर अन्दर चला गया और एक आया तथा बच्ची के साथ लौटा। उस शोकसन्तप्त बच्ची को गुड़िया लौटा दी गयी। उसने अपनी खोई हुई, प्यारी गुड्डी को छाती से चिपटा ली, पर तभी अत्यधिक स्वार्थ और बचपन की स्वाभाविक सरलता से, उसने अपना पैर उछाल कर उस घृणित व्यक्ति के प्रति घृणा और भय व्यक्त किया, जो उसे दुख और निराशा की गहराई से उबार लाया था। फूज़ी ने अनुग्रह की मुद्रा में अपने शरीर को मरोड़ा और जरा मुस्करा कर छोटी छोटी बातें बोलने लगा, जो बच्चों के उगते हुए ज्ञान को अच्छी लगती मानी जाती हैं। बच्ची गला फाड़ कर रोने लगी और बेट्सी को छाती से चिपटाये, वह अन्दर ले जायी गयी।

उसके बाद सेक्रेट्री आया—दुबला पतला, संयत, चतुर, पम्पशू पर चलने वाला और शानशौकत का पुजारी ! उसने फूज़ी के हाथों में दस दस

डालर के दस नोट गिन दिये। उसने दरवाज़े की ओर निगाह फेरी; फिर उस दरवाज़े के रक्षक जेम्स पर। उस अजनबी इनाम पाने वाले की ओर इशारा कर वह जूतों पर सरकता हुआ, अपने कमरे में चला गया।

जेम्स ने भी अपनी आदेश देनेवाली नज़र फ़ूज़ी की ओर फेरी और उसे दरवाज़े तक पहुँचा दिया।

अपनी गन्दी हथेली में धन का स्पर्श पाते ही फ़ूज़ी के मन में आया कि वह भाग चले, पर फिर विचार करने पर वह इस बदतमीज़ी से बच गया। यह धन तो उसका है—उसे दिया गया है। उसके मन की आँखों के सामने जैसे स्वर्ग के द्वार खुल गये। वह अपने उत्थान की सीढ़ी तक पहुँच गया था। वह भूखा था, बेघर था, मित्रहीन था, फटे हाल, ठंडा, खिसकता हुआ—और उसके हाथों में उसकी आँकाक्षाओं के मधु स्वर्ग की चाबी थी। वह गुड़िया, परी की तरह उसके सूखे हाथ पर जादू का डंडा घुमा गयी थी। अब वह उन आकर्षक स्थानों पर चमकते कपड़ों में जा सकता था, जहाँ उसके लिए चमकते गिलासों में लाल जादुई तरल पदार्थ हाज़िर होगा।

वह जेम्स के पीछे पीछे द्वार तक गया।

जब तक नौकर ने बरामदे में जाने के लिए महान मुख्य द्वार को खोला, वह वहीं खड़ा रहा।

लोहे की फाटक के बाहर, काली सड़क पर, ब्लैक रिले और उसके दो दोस्त चक्कर काट रहे थे और उस गुड़िया से प्राप्त इनाम को पाने की आशा में अपने खूनी औजारों को सहला रहे थे।

फ़ूज़ी उस करोड़पति के द्वार पर रुका और सोचने लगा। किसी सूखे वृक्ष पर चढ़ने वाली सदाबहार की बेल के समान, उसके पशोपेश में पड़े हुए मन पर, सुनहरे खयाल और स्मृतियाँ सजने लगीं। ध्यान रखना, वह पिया हुआ था और उसके दिमाग से वर्तमान धुँधला हो रहा था। वे फूलों के गुच्छे और रंगीन गुब्बारे, हाल को सजानेवाली वे पट्टियाँ और झरिडयाँ—ऐसी चीजें, उसने पहले कब देखीं थीं? कहीं उसने चमकते फर्श और सर्दी के ताजे फूल की खुशबू देखी थी—कोई उस घर में एक गीत गा रहा था, जो उसने पहले भी कहीं सुना था। निश्चय ही आज क्रिसमस था—फ़ूज़ी को लगा कि वह काफी पिया हुआ है, तभी तो उसने इन पर ध्यान नहीं दिया!

फिर वह वर्तमान से बाहर निकल गया और उसे दिखाई दिया – कोई असम्भव, खोया हुआ, वापिस हाथ न आने वाला भूतकाल, साफ–सफेद झीना, भूला हुआ प्रेत – कुलीनता का मद ! सज्जन आदमी पर कई वस्तुएँ छा जाती हैं ।

जेम्स ने बाहर का दरवाज़ा खोल दिया । घास के मैदान को चीरती हुई प्रकाश की एक रेखा, लोहे के फाटक तक पहुँची । ब्लैक रिले, मैकार्थी और 'कनकटे' माइक ने देखा और फाटक के आस पास अपना डरावना मोर्चा अधिक मजबूत कर लिया ।

जेम्स के मालिक को कभी नसीब न हुई हो ऐसी शाही अदा से फूज़ी ने उस नौकर को दरवाज़ा बन्द करने पर मजबूर किया । कुलीन व्यक्तियों में कुछ अदाएँ तो सहज ही आ जाती हैं – विशेषकर क्रिसमस के दिनों में ।

चकाचौंध हुए जेम्स से वह बोला, "क्रिसमस की शाम को हर शरीफ आदमी, अपने मेजबान की गृहस्वामिनी की सेवा में मौसम की शुभकामनाएँ पेश करे, ऐसा रि-रि-रिवाज़ होता है । तुम समझे ? जब तक मैं इस फ़र्ज़ को पूरा नहीं कर लूँगा, एक कदम भी हटूँगा नहीं । समझे ?"

दोनों में कुछ देर वाद विवाद हुआ, जिसमें जेम्स हार गया । फूज़ी की क्रुद्ध आवाज़ पूरे मकान में गूँज उठी । वह सचमुच कुलीन था, यह तो हमने कहा नहीं । वह तो एक आवारा था, जिस पर इस समय कुलीनता का भूत सवार था ।

चाँदी की एक घण्टी की आवाज़ सुनाई दी । फूज़ी को अकेला छोड़ कर, जेम्स उसका उत्तर देने भीतर गया । वहाँ किसी ने उससे कुछ पूछा और कुछ सूचनाएँ दीं ।

बाहर आ कर, वह फूज़ी को बड़ी इज्जत से पुस्तकालय के कमरे में ले गया ।

एक क्षण बाद ही मकान मालकिन ने प्रवेश किया । फूज़ी के देखे हुए, सुन्दर से सुन्दर चित्र से भी वह अधिक सुन्दर और पवित्र दिखाई देती थी । उसने मुस्करा कर खोई हुई गुड़िया के सम्बन्ध में कुछ कहा, पर फूज़ी की समझ में कुछ नहीं आया, क्योंकि गुड़िया की बात वह भूल चुका था ।

चाँदी की एक तश्तरी में, नौकर ने दो प्याले, चमकती शराब ला कर रख दिये । महिला ने एक तो खुद उठा लिया और दूसरा फूज़ी की ओर बढ़ा दिया ।

पतले शीशे के उस सोफियाने जाम को पकड़ते समय, फूज़ी की उँगलियाँ अपनी अयोग्यता, कुछ समय के लिए भूल गयी। वह सीधा खड़ा हो गया और 'समयदेवता' जो अक्सर किसी की मदद नहीं करते इस समय फूज़ी की सहायता करने को फिर से लौट आये। इस आगन व्हिस्की में से शैतान की बनावटी दाढ़ी से भी अधिक सफेद, विस्मृत क्रिसमस के भूत, नृत्य करने लगे। इस करोड़पति के महल का और वर्जीनिया के किसी बड़े हाल की महराबों का क्या सम्बन्ध हो सकता है, जहाँ चाँदी की एक सुराही के चारों ओर इकट्ठे हो कर बहुत से घुड़सवार उस इमारत की शान में जाम पिया करते थे। इसी प्रकार बग्घी में जुते घोड़ों के खुरों की आवाज़ का शिकारियों के घोड़ों की टापों से क्या सम्बन्ध ? और यदि हो भी तो फूज़ी का उससे क्या लेन देन ?

महिला ने शराब के प्याले के ऊपर से देखते हुए, अपने चेहरे से बड़प्पन की मुस्कान लुप्त हो जाने दी। उसकी आँखें गम्भीर हो उठीं। उन फटे पुराने कपड़ो और स्काच टैरियर कुत्ते की सी मूँछों के नीचे, उसे कोई ऐसी चीज़ दिखाई दी जिसे वह समझ सकी। इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं थी।

अपना प्याला उठा कर सूनी हँसी हँसता हुआ फूज़ी बोला, "माफ़ करना श्रीमती जी, मौसम की शुभकामनाएँ मकान मालकिन की सेवा में अदा किये बिना मैं जा ही नहीं सकता था। यह बात शरीफ लोगों के व्यवहार के खिलाफ होती।"

उसने खड़े हो कर, उस जमाने का मुजरा किया कि जब मर्दों में भी भड़कीले कपड़े और पाउडर का प्रयोग करने का रिवाज़ था।

उसने आरम्भ किया, "नये वर्ष की शुभकामनाएँ..."

इतना कह कर फूज़ी की याददाश्त धोखा दे गयी। परन्तु महिला ने उसकी सहायता की।

"आपके दरो-दीवार पर बरसें।"

फूज़ी हलकाया, "और महमानों पर —"

मुस्कराते हुए महिला ने उसकी मदद की, "घर की मालकिन पर भी।"

सहसा फूज़ी बदतमीज़ी से बोला, "ओह छोड़ो भी, कुछ याद नहीं आता।"

फूज़ी तीर छोड़ चुका था। वे दोनों पीने लगे। महिला के मुख पर बड़े आदमियों की हँसी छायी हुई थी। जेम्स ने आकर फिर एक बार फूज़ी को घेर लिया और उसे दरवाज़े की ओर हाँक ले चला। पूरे मकान में सरोद का मधुर संगीत छाया हुआ था।

बाहर ब्लैक रिले, हाथ मलता हुआ फाटक के इर्द गिर्द चक्कर काट रहा था।

महिला अपने आप से बोली, "समझ में नहीं आता – कौन है? उन दिनों तो कई आया करते थे। इतने गहरे पतन के बाद, पुराने ज़माने की याद आना अभिशाप है या वरदान –कौन जाने!"

फूज़ी को लेकर जेम्स दरवाज़े तक पहुँच चुका था कि सहसा मालकिन ने उसे पुकारा। आज्ञाकारी नौकर फूज़ी को वहीं खड़ा छोड़ कर वापस चला गया। फूज़ी के अन्तर में उठने वाली वह क्षणिक चमक लुप्त हो चुकी थी।

बाहर ब्लैक रिले हाथ में नल का टुकड़ा दबाये, पिंजरे में बन्द जानवर की तरह चक्कर काट रहा था।

महिला ने जेम्स से कहा, "इन महाशय को सम्मान से नीचे पहुँचा दो और लुई से कहो कि मरसीडीज गाड़ी में जहाँ जाना चाहें, इन्हें पहुँचा दिया जाय।"